कौल-कल्पतरु

चण्डी

मन्त्र, तन्त्र एवं शक्ति-उपासना
पर प्रकाश डालनेवाली एकमात्र
प्रामाणिक मासिक पत्रिका

दश महा-विद्या स्तोत्र-संग्रह

(भाग ३)

श्री श्रीविद्या-स्तव-मञ्जरी

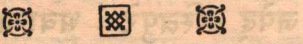

मानद सम्पादक

'कुल-भूषण' पण्डित रमादत्त शुक्ल, एम० ए०

सम्पादक

श्री ऋतशील शर्मा, एम० ए०

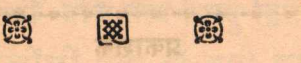

द्वितीय संस्करण : : फाल्गुन पूर्णिमा २०४३ वि० : : मार्च १९८७

अनुक्रमणिका

१ प्राक्कथन	...चार
२ श्री त्रिपुर-सुन्दरी प्रातः-स्मरण	...सात
३ श्री ललिता प्रातः-स्तोत्र-पञ्चकम्	...आठ
४ श्री त्रिपुर-सुन्दरी प्रातः-श्लोक-पञ्चकम्	...आठ
५ श्रीबाला-स्तोत्रं—वाणीं जपेद् यस्त्रिपुरे ! भवान्या बीजं निशीथे	...१
६ श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-कवचम्—ऐं वाग्भवं पातु शीर्षं	...३
७ श्रीत्रिपुर-सुन्दरी कवचम्—ककारः पातु शीर्षं मे एकारः पातु	...६
८ श्रीसौभाग्य-कवच-स्तोत्रम्—शिखाग्रं सततं पातु मम त्रिपुर-सुन्दरी	...९
९ श्रीललिता हृदय-स्तोत्रम्—हृदयाम्बुज-मध्यस्था ब्रह्मात्मैक्य	...२१
१० श्रीमत् त्रिपुर-सुन्दरी-हृदय-स्तोत्रम्—श्रीविद्यां जगतां धात्री	...२६
११ श्रीत्रिपुर-सुन्दरी हृदय-स्तोत्रम्—सुन्दरी सकल-कल्मषापहा	...४५
१२ श्रीललिता सौभाग्य-प्रदाष्टोत्तर-शतनाम-स्तोत्रम्—कामेश्वरी काम-शक्तिः	...४८
१३ श्रीललिताम्बिका दिव्याष्टोत्तर-शत-नाम स्तोत्रं—महा-मनोन्मनी शक्तिः	...५१
१४ श्रीललिता लकारादि-शतनाम-स्तोत्रम्—ललिता लक्ष्मी लोलाक्षी	...५४
१५ श्रीत्रिपुर-सुन्दरी वेद-सार-स्तवः—कस्तूरी-पङ्क-भास्वद्-गल-चलद्	...६१

प्रकाशक

पं० देवीदत्त शुक्ल स्मारक

शाक्त साधना पीठ

प्रयाग-६

मूल्य २५-०० रु०, सजिल्द मूल्य ३०-०० रु०

१६ कल्याण-वृष्टि-स्तवः—कल्याण-वृष्टिभिरिवामृत-पूरिताभिर्लक्ष्मोः ...६५
१७ श्रीत्रिपुरोपनिषत्—ॐ तिस्रः पुरस्त्रि-पथा विश्व-चर्षणी ...६८
१८ श्रीललितोपनिषत्—ॐ परम-कारण-भूता शक्तिः ...७२
१९ श्रीविद्यायाः शुद्ध-शक्ति-खड्ग-माला-स्तोत्रं—ॐऐंह्रींश्रीं नमस्त्रिपुर-सुंदरी ...७५
२० श्री श्रोविद्या वृहत् कर्पूर-स्तोत्रम्—कर्पूरं पूर-रेफैर्विरहितममलं ...७८
२१ श्रीत्रिपुर-सुन्दरी-सान्निध्य-स्तवः—कल्प-भानु-समान-भास्वर-धाम ...८२
२२ श्रीत्रिपुर-सुन्दरी विजय-स्तवः—कल्पान्तोदित-चण्ड-भानु-विलसद् ...८४
२३ श्रीत्रिपुर-सुन्दरी चक्र-राज-स्तोत्रम्—कर्तुं देवि ! जगत्-विलास-विधिना ...८७
२४ श्रीत्रिपुर-सुन्दरी-स्तोत्रम्—कदम्ब-वन-चारिणीं मुनि-कदम्ब-कादम्बिनीं ...८९
२५ सिद्धि-यामलोक्त श्रीत्रिपुर-सुन्दरी-स्तोत्रम्—श्वेत-पद्मासनारूढां ...९०
२६ श्रीललिताम्बा-नीराजनम्—जय देवि, जय देवि, जय सुन्दरि ...९२
२७ श्रीललिता-पुष्पाञ्जलि-स्तोत्रम्—ॐ समस्त-मुनि-यक्ष-किंपुरुष-सेविते ! ...९२
२८ श्रीत्रिपुर-सुन्दर्यपराध-क्षमापण-स्तवः—कञ्ज-मनोहर-पाद-चलन्मणि ...९३
२९ श्रीषोडशी-कवच-स्तोत्रम्—वाग्भवः पातु शीर्षे मां ...९६
३० श्रीतुरीया षोडशी त्रैलोक्य-विजय कवच-स्तोत्रम्—शिखायां मे हृसौः पातु ...९८
३१ श्रीषोडशी-कवचम्—पूर्वे मां भैरवी पातु बाला मां पातु दक्षिणे ...१०४
३२ श्रीपरा-महा-योनि-कवचम्—ॐ ह्रींस्त्रींहूंफट् उग्र-तारा मूलाधारं ममावतु...१०६
३३ षोडशी हृदय-स्तोत्रम्—सुन्दरी सकल-कल्मषामहा ...१०८
३४ श्रीराज-राजेश्वरी तर्पण-स्तोत्रम्—छन्दः-पाद-युगां निरुक्ति-सुमुखां ...११०
३५ श्रीत्रिपुर-सुन्दर्युपस्थान-सहस्राक्षरी—ऐं नमो भगवति, त्रिपुर-सुन्दरि ...११२
३६ श्रीषोडशी अष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम्—ॐ त्रिपुरा षोडशी माता ...११४
३७ श्रीमकरन्द स्तव-राजः—'ॐश्रीं'-वीजे नाद-विन्दु-द्वितीय-शशि-कला ...११५
३८ श्रीआवरण-सहस्राक्षरी—ॐऐंह्रींश्रीं हूंसः ॐ नमो भगवति ...११७
३९ श्री षोडशी सहस्रनाम स्तोत्रम्—कैलास-शिखरे रम्ये नाना-रत्नोप-शोभिते ...११९
४० श्री त्रिपुर-सुन्दरी-पुष्पांजलि स्तवः—कल्याण-दात्रि ! कमनीय-तनु-लते! ...१२६
४१ अपराध-क्षमापण स्तोत्रम्—किं किं द्वन्द्वं ...१२७
४२ चक्र-स्तोत्रम्—प्रोक्ता पञ्च-दशी विद्या महा-त्रिपुर-सुन्दरी ...१२८

प्राक्कथन

दश महा-विद्याओं में तृतीया महा-विद्या **श्री षोडशी** की ख्याति **'श्री श्रीविद्या'** नाम से विशेष रूप से साधक-समाज में व्याप्त है। इन महा-विद्या के तीन दिव्य स्वरूप हैं—१ श्रीबाला त्रिपुर-सुन्दरी, २ श्रीललिता त्रिपुर-सुन्दरी और ३ श्रीषोडशी महा-त्रिपुर-सुन्दरी। इन तीनों ही स्वरूपों की उपासना व्यापक रूप से अनादि-काल से होती आई है।

'श्रीबाला त्रिपुर-सुन्दरी' की पूजा-पद्धति **'श्रीबाला-नित्यार्चन'** के रूप में 'कौल-कल्पतरु' शुक्लजी द्वारा संवत् २००० में ही प्रस्तुत की जा चुकी है और उन्हीं की कृपा से **'श्रीबाला-स्तव-मञ्जरी'** में भगवती बाला त्रिपुर-सुन्दरी के स्तोत्रों का संग्रह भी उपलब्ध है।

'श्रीललिता त्रिपुर-सुन्दरी' और 'श्रीषोडशी महा-त्रिपुर-सुन्दरी' की पूजा-पद्धति बहुत कुछ समान है, जिसे स्व० 'कुल-मार्तण्ड' पंडित योगीन्द्रकृष्ण दौर्गादत्ति शास्त्री ने परिश्रम-पूर्वक प्रस्तुत करने की कृपा की थी। उसी समय उन्होंने कुछ स्तोत्रों का संग्रह भी भेज दिया था परन्तु उस संग्रह में केवल भगवती ललिता के संबंध के ही स्तोत्र थे। 'कौल-कल्पतरु' शुक्लजी ने उसे अपर्याप्त समझा और उसके साथ भगवती षोडशी के आवश्यक स्तोत्रों का संग्रह भी दे देना उचित समझा। फलतः श्रीललिता जी और श्री षोडशी जी दोनों ही स्वरूपों के स्तोत्रों से युक्त संग्रह सं० २०१२ में प्रकाशित किया गया। यह संग्रह बहुत समय से समाप्त था। उसी का संशोधित एवं परि-वर्धित संस्करण अब प्रकाशित हो रहा है।

जिस प्रकार श्री ललिता जी और भगवती षोडशी की पूजा-पद्धति में विशेष अन्तर नहीं है, उसी प्रकार अनेक स्तोत्र भी समान रूप से उपयोग में आते हैं। उदाहरण के लिए **'तर्पण-स्तोत्र'** को लीजिये। ललिता जी के उपासक इस स्तोत्र का पहला श्लोक नहीं पढ़ते; केवल शेष पन्द्रह श्लोकों का ही पाठ करते हैं। इसी प्रकार षोडशी के उपासक **'त्रिपुरोपनिषत्'** तथा **'बृहत्कर्पूर'** का भी पाठ करते हैं, यद्यपि ये दोनों स्तोत्र ललिता-खण्ड में सम्मिलित किए गए हैं। इसी प्रकार **'शक्ति-माला'** के विनियोग में श्री षोडशी के अनुसार परिवर्तन कर उसका उपयोग करते हैं।

आशा है, यह नवीन संस्करण भगवती ललिता (श्री विद्या) और भगवती षोडशी के उपासकों के लिए अधिक उपादेय सिद्ध होगा। इस नए संस्करण के लिये हम यहाँ स्वर्गीय पण्डित योगीन्द्रकृष्ण दौर्गादत्ति शास्त्री एवं गुप्तावतार बाबा श्री के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धाञ्जलियाँ अर्पित करना अपना कर्त्तव्य मानते हैं क्योंकि उन्हीं के प्रसाद से यह **'श्री श्रीविद्या-स्तव-मञ्जरी'** इस रूप में प्रस्तुत हो सकी है। **'बृहत्कर्पूर'** के लिए हम नेपाल के स्व० श्रीधन शम्शेर जंगबहादुर राणा महोदय के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि देते हैं क्योंकि यह दुर्लभ स्तोत्र उन्हीं की कृपा से सुलभ हो सका है।

श्रीराज-राजेश्वरी त्रिपुर-सुन्दरी देवी के प्रादुर्भाव एवं माहात्म्य का वर्णन 'त्रिपुरा रहस्यं' नामक ग्रन्थ में मिलता है। इस ग्रन्थ की रचना महर्षि परशुराम के शिष्य सुमेधा ऋषि द्वारा वैदिक काल में की गई थी। इसके 'माहात्म्य-खण्ड' में श्रीराज-राजेश्वरी त्रिपुर - सुन्दरी देवी की कथा एवं माहात्म्य का विस्तार से वर्णन किया गया है।

सत्ता, चेतना और आनन्द—इन तीनों का नाम 'त्रि-पुर' है, जिसकी अधिष्ठात्री त्रिपुरा हैं। भगवान् दत्तात्रेय के अनुसार त्रिपुरा भगवती पर-तत्व-रूप हैं और उनका स्वरूप मन और वाणी के अगोचर है। उनके अनुसार त्रिपुरा भगवती का प्रथम अवतार 'कुमारी' (श्री बाला) का है। इस अवतार के सम्बन्ध में जो कथा प्रचलित है, उसके अनुसार एक बार जब सभी देवता अपनी-अपनी शक्तियों को श्रेष्ठ मानने के दम्भ के कारण आपस में ही लड़ने लगे, तो इन्द्र ने विष्णु के पास जाकर अपनी व्यथा-कथा सुनाई कि स्वर्ग में उनके आदेशों का पालन अग्नि, सोम और वायु आदि नहीं करते हैं और स्वयं को दूसरे से श्रेष्ठ बताने के लिये तर्क प्रस्तुत करने में लगे हुए हैं।

सौ अश्वमेध करनेवाला इन्द्र यद्यपि त्रिभुवन का राजा है; मेघ, अग्नि और वायु उसके अधीन हैं तथा वही यज्ञों का स्वामी है किन्तु अग्नि का कथन है कि यज्ञ में उसके दिए हुये हवि-र्भाग को ही सब देवता भोगते हैं। उसी के कारण यज्ञ सम्पन्न हो पाते हैं। वही रूप की नेत्र-ज्योति है, जगत् का संहार-कर्त्ता है, अतः वही सब देवताओं में श्रेष्ठ है और सभी देवताओं को उसकी ही आराधना करनी चाहिए। सोम (चन्द्रमा) का कहना है कि उसकी कृपा से ही अन्न पैदा होता है। उसके अङ्गों से उत्पन्न अमृत से ही देव-गण की स्थिति बनी हुई है, अतः उसे ही सर्व-श्रेष्ठ माना जाना चाहिए। वायु का कथन है कि वह क्षण मात्र में ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का विनाश कर सकता है। उसके बिना शरीर में जीवन (स्पन्द) नहीं रह सकता। अतः वही सर्व-श्रेष्ठ होने के कारण अभि-नन्दनीय है।

भगवान् विष्णु ने सम्पूर्ण विवाद को सुनकर उसे हल करने के उपाय पर विचार किया, लेकिन उन्हें यह शंका हुई कि उनके द्वारा किये गए समाधान से देवता-गण सन्तुष्ट नहीं होंगे और अपने तर्क प्रस्तुत करते रहेंगे। अतः समस्या के निदान हेतु विष्णु भगवान् ने शंकर जी का ध्यान किया। भगवान् शंकर ने सारे संसार की धात्री भगवती त्रिपुरा की प्रार्थना की। ब्रह्मा और विष्णु ने भी माँ भगवती से देवताओं के कल्याण के लिए प्रार्थना की। माँ भगवती के प्रकट होने के साथ ही भीषण महा-नाद से भी अधिक भयानक शब्द सुनाई पड़ा, जो सारे ब्रह्माण्डों में समा गया। पूर्व और उत्तर दिशाओं में प्रकाश फैल गया तथा विद्युत्-गर्जन से सभी देवता-गण मूर्छित-से होकर गिर पड़े और उनके वस्त्राभूषण टूट-फूट गए।

माँ भगवती के उस रूप के तेज के समक्ष सूर्य भी निस्तेज हो गया और उनका तेज प्रकाश सारे ब्रह्माण्डों में व्याप्त हो गया। देवता-गण ने उस अद्भुत शक्ति के प्रभाव को देखकर उसकी स्तुति करना प्रारम्भ कर दिया—

'हे लोकों की माता! आपकी जय हो, हे सबसे उत्कृष्ट माहेश्वरी! आप सर्वोपरि विजयी हो, हे भक्तों के दुःखों को हरनेवाली, आपकी जय हो। सम्पूर्ण प्राणी-मात्र के अन्तर में स्थित चित्त-रूपवाली आपकी सदा जय बनी रहे।' इत्यादि।

माँ भगवती ने सभी देवताओं को समझाया कि उनकी शक्तियाँ वस्तुतः उन्हीं की दी हुई हैं और वे स्वयं में शक्ति-सम्पन्न नहीं हैं। अतः उन्हें माँ भगवती को आत्म-समर्पण कर सात्विक गुण-सम्पन्न बनने का प्रयत्न करना चाहिए। माँ भगवती ने सभी देवताओं को उन्हें सौंपे गए कार्यों

को करने का निर्देश दिया। इस प्रकार देवताओं के अभिमान को नष्ट करने के पश्चात् तथा ब्रह्मा, विष्णु और महेश को आशीर्वाद देकर उक्त मूर्ति अन्तर्धान हो गई।

भगवती श्री ललिता माहेश्वरी त्रिपुरा की कलात्मिका विभूति हैं। उनके माहात्म्य की कथा के साथ भण्ड नामक राक्षस के विनाश का प्रसङ्ग जुड़ा हुआ है। अपने तपोबल से भण्डासुर तीनों लोकों का शासक बन गया था। इन्द्रादि सभी देवता उससे हार गये। भण्डासुर ने उनके सभी ऐश्वर्य हर लिए, जिससे देवतागण दीन-हीन जीवन व्यतीत करने लगे। सब ओर से निराश देवताओं ने त्रिपुरा देवी का आह्वान किया। भक्ति-भाव से किये गये यज्ञ के कुण्ड की चिति-रूपी अग्नि से माँ भगवती त्रिपुराम्बिका प्रकट हुईं। पूर्णाहुति के साथ ही अग्नि की ज्वाला के एक योजना की ऊँचाई तक ऊपर उठने के साथ ही एक महा-भयानक शब्द सुनाई पड़ा, जिसे सुनकर ब्रह्मा, विष्णु, महेश एवं बृहस्पति को छोड़ सभी देवता संज्ञा-हीन हो गए। इस तेजमयी ज्वाला में से श्री त्रिपुराम्बिका का प्रादुर्भाव हुआ।

भण्डासुर ने माँ भगवती को सामने देखकर श्रद्धा-पूर्वक उन्हें प्रणाम किया और बाद में रहस्य-पूर्ण वचनों से उनकी भर्त्सना भी की। ललिताम्बिका उसकी गूढ़ बातों को सुनकर प्रसन्न हुईं और उस पर बाणों की वर्षा की। भण्ड ने माया का आश्रय लिया लेकिन श्री देवी ललिता के दिव्य बाणों ने भण्डासुर तथा असुरों को उनके शून्यक नगर सहित भस्मीभूत कर दिया। भण्डासुर के बध के साथ ही तीनों लोकों में पुनः शोभा व्याप्त हो गई, जिसे देखकर सभी देव-गण श्री भगवती ललिता की स्तुति करने लगे।

श्री राज-राजेश्वरी त्रिपुर-सुन्दरी ललिता देवी के माहात्म्य का वर्णन ब्रह्माण्ड-पुराण आदि ग्रन्थों में विस्तार से मिलता है। यहाँ यह संक्षिप्त विवरण डा० वल्लभदास जी बिन्नानी के विस्तृत लेख के आधार पर दिया गया है, जिसके लिए हम यहाँ उनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

प्रस्तुत नवीन संस्करण में विविध स्तोत्रों के हिन्दी-रूपान्तर भी दिए गए हैं। कुछ स्तोत्रों के शुद्ध पाठ और हिन्दी अनुवाद श्री भैरवानन्दनाथ जी की कृपा से प्रकाशित हुए हैं। अतः उन्हें हम यहाँ हृदय से धन्यवाद देते हैं। वयोवृद्ध पूर्णाभिषिक्त साधक-प्रवर पण्डित काशी-प्रसाद जी शुक्ल ने इस सन्दर्भ में जो सहयोग दिया है, उसके लिए हम उनके आभारी हैं।

भगवती बाला, भगवती ललिता एवं भगवती षोडशी के विविध मन्त्रों का प्रामाणिक विवरण **'मन्त्र-कोष'** नामक ग्रन्थ में द्रष्टव्य है। इसी प्रकार श्री त्रिपुरा के प्रसिद्ध पूजन-यन्त्र **'श्री-यन्त्र'** का सचित्र वर्णन **'श्रीचक्र-रहस्य'** नामक पुस्तक में विस्तार से उपलब्ध है। तथापि **'श्री-विद्या'** के संबन्ध में अभी बहुत से ऐसे ज्ञातव्य विषय हैं, जिनके लिए स्वतन्त्र कृतियों की आवश्यकता है। श्री जगदम्बा की कृपा से हम उन्हें भी कालान्तर में श्रीविद्योपासकों की सेवा में प्रस्तुत कर सकेंगे, ऐसी आशा है। अस्तु।

प्रयाग, फाल्गुन-पूर्णिमा २०४३

—'कुल-भूषण' पं० रमादत्त शुक्ल, एम० ए०

श्री त्रिपुर-सुन्दरी प्रातः-स्मरण

'क'स्तूरिका-कृत-मनोज्ञ-ललाम-भास्वदर्द्धेन्दु-मुग्ध - निटिलाञ्चल - नील - केशीम् ।
प्रालम्बमान-नव-मौक्तिक-हार-भूषां, प्रातः स्मरामि ललितां कमलायताक्षीम् ।। १

'ए'णाङ्क-चूड़-समुपार्जित-पुण्य-राशि, उत्तप्त-हेम-तनु - कान्ति - झरी - परीताम् ।
एकाग्र-चित्त-मुनि-मानस-राज-हंसी, प्रातः स्मरामि ललितां परमेश्वरीं ताम् ।। २

'ई'षद्-विकासि-नयनान्त-निरीक्षणेन, साम्राज्य - दान-चतुरां चतुराननेड्याम् ।
ईषाङ्क-वास-रसिकां रस-सिद्धि-दात्रीं, प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधि-नाथां ।। ३

'ल'क्ष्मीश-पद्म-भवनादि - पदैश्चतुर्भिः, संशोभिते च फलकेन सदा - शिवेन ।
मञ्चे वितान-सहिते स-सुखं निषण्णां, प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधि-नाथां ।। ४

'ह्रीं'कार-मन्त्र-जप-तर्पण-होम-तुष्टां, ह्रींकार-मन्त्र-जल - जात-सुराज - हंसीम् ।
ह्रींकार-हेम-नव-पंजर-शारिकां तां, प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधि-नाथाम् ।। ५

'ह'ल्लोस-लास्य - मृदु-गीत - रसं पिबन्तीमाकूणिताक्षमनवद्य - गुणाम्बु-राशिम् ।
सुप्तोत्थितां श्रुति-मनोहर-कीर-वाग्भिः, प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधि-नाथां ।। ६

'स'च्चिन्मयीं सकल-लोक-हितैषिणीं च, सम्पत्-करीं हय-मुखीं मुख-देवतेड्याम् ।
सर्वानवद्य-सुकुमार-शरीर-रम्यां, प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधि-नाथाम् ।। ७

'क'म्याभिरर्ध-शशि-मुग्ध-किरीट-भास्वच्चूडाभिरङ्क - गत - हृद्य-विपञ्चिकाभिः ।
संस्तूय-मान-चरितां सरसीरुहाक्षीं, प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधि-नाथाम् ।। ८

'ह'त्वाऽसुरेन्द्रमति-मात्र - बलावलिप्त - भण्डासुरं समर - चण्डमघोर - सैन्यम् ।
संरक्षितार्त-जनतां तपनेन्दु-नेत्रां, प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधि-नाथाम् ।। ९

'ल'ज्जावनम्र-रमणीय-सुखेन्दु - बिम्बां, लाक्षारुणांघ्रि - सरसीरुह-शोभ-मानाम् ।
रोलम्ब-जाल-सम-नील-सुकुन्तलाढ्यां, प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधि-नाथां ।। १०

'ह्रीं'कारिणीं हिम-महीधर-पुण्य-राशि, ह्रींकार-मन्त्र-महनीय- मनोज्ञ - रूपाम् ।
ह्रींकार-गर्भमनु-साधक-सिद्धि-दात्रीं, प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधि-नाथाम् ।। ११

'स'ञ्जात - जन्म - मरणादि - भयेन देवीं, सम्फुल्ल - निलयां शरदिन्दु-शुभ्राम् ।
अर्द्धेन्दु-चूड-वनितामणिमादि-वन्द्यां, प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधि-नाथाम् ।। १२

'क'ल्याण-शैल-शिखरेषु विहार-शीलां, कामेश्वराङ्क-निलयां कमनीय-रूपाम् ।
काद्यर्ण-मन्त्र-महानीय - महानुभावां, प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधि-नाथाम् ।। १३

'ल'म्बोदरस्य जननीं तनु-रोम-राजि, बिम्बाधरां च शरदिन्दु-मुखीं मृडानीम् ।
लावण्य-पूर्ण-जलधि जल-जात-हस्तां, प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधि -नाथां ।। १४

'ह्रीं'कार-पूर्ण-निगमैः प्रतिपाद्य-मानां, ह्रींकार-पद्म-निलयां हत-दानवेन्द्रम् ।
ह्रींकार-गर्भमनुराज-निषेव्यमानां, प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधि-नाथाम् ।। १५
'श्री'चक्र-राज-निलयां श्रित-काम-धेनुं, श्रीकाम-राज-जननीं शिव-भाग-धेयम् ।
श्रीमद्-गुहस्य कुल-मङ्गल-देवतां तां, प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधि-नाथाम् ।। १६

श्रीललिता प्रातः-स्तोत्र-पञ्चकम्

प्रातः स्मरामि ललिता-वदनारविन्दं, बिम्बाधरं पृथुल-मौक्तिक-शोभि-नासाम् ।
आकर्ण-दीर्घ-नयनं मणि-कुण्डलाढ्यं, मन्द-स्मितं मृग-मदोज्ज्वल-भाल-देशम् ।। १
प्रातर्भजामि ललिता-भुज-कल्प-वल्लीं, रक्तांगुलीय-लसदंगुलि-पल्लवाढ्याम् ।
माणिक्य-हेम-वलयाङ्गद-शोभ-मानां, पुण्ड्रेक्षु - चाप-कुसुमेषु सृणीर्दधानाम् ।। २
प्रातर्नमामि ललिता-चरणारविन्दं, भक्तेष्ट-दान-निरतं भव - सिन्धु-पोतम् ।
पद्मासनादि-सुर-नायक - पूजनीयं, पद्मांकुश-ध्वज - सुदर्शन - लांछनाढ्यम् ।। ३
प्रातः स्तुवे पर-शिवां ललितां भवानीं, त्रय्यन्त-वेद्य-विभवां करुणानवद्याम् ।
विश्वस्य सृष्टि-विलय-स्थिति-हेतु-भूतां, विश्वेश्वरीं निगम-वाङ्-मनसादि-दूराम् ।। ४
प्रातर्वदामि ललिते ! तव पुण्य नाम, कामेश्वरीति कमलेति महेश्वरीति ।
श्रीशाम्भवीति जगतां जननी परेति, वाग्-देवतेति वचसा त्रिपुरेश्वरीति ।। ५

फल-श्रुति

यच्छ्लोक-पञ्चकमिदं ललिताम्बिकायाः, सौभाग्यदं सु - ललितं पठति प्रभाते ।
तस्मै ददाति ललिता झटिति प्रसन्ना, विद्यां श्रियं विमल-सौख्यमनन्त-कीर्तिम् ।।

श्रीत्रिपुर-सुन्दरी प्रातः-श्लोक-पंचकम्

प्रातर्नमामि जगतां जनन्याश्चरणाम्बुजं । श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दर्या नमिता या हरादिभिः ।। १
प्रातस्त्रिपुर-सुन्दर्या नमामि पद-पङ्कजं । हरि-हरो विरञ्चिश्च सृष्ट्यादीन् कुरुते यथा ।। २
प्रातस्त्रिपुर-सुन्दर्या नमामि चरणाम्बुजं । यत्-पादमम्बु शिरसि भाति गङ्गा महेशितुः ।। ३
प्रातः पाशांकुश-शरान् चाप-हस्तां नमाम्यहं । उदयादित्य-सङ्काशां श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम् ।। ४
प्रातर्नमामि पादाब्जं ययेदं धार्यते जगत् । तस्यास्त्रिपुर - सुन्दर्या यत्-प्रसादान्निवर्तते ।। ५

फल-श्रुति

यः श्लोक-पञ्चकमिदं प्रातर्नित्यं पठेन्नरः । तस्मै ददात्यात्म-पदं श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरी ।।

।। श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः ।।

[१]

श्रीबाला-स्तोत्रम्

श्रीभैरव उवाच—अधुना देव ! बालाया स्तोत्रं वक्ष्यामि पार्वति !
पञ्चमाङ्गं रहस्यं मे श्रुत्वा गोप्यं प्रयत्नतः ।।

विनियोगः—अस्य श्रीबाला- त्रिपुरसुन्दरी - स्तोत्र - मन्त्रस्य श्रीदक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः श्रीबाला-त्रिपुरसुन्दरी देवता, ऐं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, श्रीबाला-प्रीतये पाठे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीदक्षिणामूर्ति-ऋषये नमः शिरसि । पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे । श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-देवतायै नमः हृदि । ऐं बीजाय नमः गुह्ये । सौः शक्तये नमः नाभौ । क्लीं कीलकाय नमः पादयोः । श्रीबाला-प्रीतये पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

षडङ्ग-न्यासः	कर-न्यासः	अङ्ग-न्यासः
ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्लीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सौः	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ऐं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
क्लीं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सौः	कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यानम्—

अरुण-किरण-जालै रञ्जिताशावकाशा । विधृत-जप-वटीका पुस्तकाभीति-हस्ता ।
इतर-कर-वराढ्या फुल्ल-कह्लार-संस्था । निवसतु हृदि बाला नित्य-कल्याण-रूपा ।।

मानसोपचारैः सम्पूज्य स्तोत्रं पठेत्—

वाणीं जपेद् यस्त्रिपुरे ! भवान्या बीजं निशीथे जड़-भाव-लीनः ।
भवेत् स गीर्वाण-गुरोर्गरीयान् गिरीश-पत्नि ! प्रभुतादि तस्य ।। १
कामेश्वरि ! त्र्यक्षरी काम-राजं जपेद् दिनान्ते तव मन्त्र-राजम् ।
रम्भाऽपि जृम्भारि-सभां विहाय भूमौ भजेत् तं कुल-दीक्षितं च ।। २

तार्तीयकं बीजमिदं जपेद् यस्त्रैलोक्य-मातस्त्रिपुरे ! पुरस्तात् ।
विधाय लीलां भुवने तथान्ते निरामयं ब्रह्म-पदं प्रयाति ।। ३
धरा - सद्म - त्रिवृत्ताष्ट - पत्र - षट्कोण - नागरे !
विन्दु-पीठेऽर्चयेद् बालां योऽसौ प्रान्ते शिवो भवेत् ।। ४
इति मन्त्र-मयं स्तवं पठेद् यस्त्रिपुराया निशि वा निशावसाने ।
स भवेद् भुवि सार्वभौम-मौलिस्त्रिदिवे शक्र-समान-शौर्य-लक्ष्मी ।। ५
इतीदं देवि ! बालाया स्तोत्रं मन्त्र - मयं परम् ।
अदातव्यमभक्तेभ्यो गोपनीयं स्व -योनि - वत् ।। ६
।। इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे भैरव-भैरवी-संवादे श्रीबाला-त्रिपुरसुन्दरी-स्तोत्रम् ।।

हिन्दी-रूपान्तर

श्रीबाला-स्तोत्रम्

विनियोग, ऋष्यादि-न्यास और षडङ्ग-न्यास कर ध्यान करे । यथा—

भगवती श्रीबाला त्रिपुरसुन्दरी के शरीर की आभा अरुणोदय-काल के सूर्य-बिम्ब की जैसी रक्त-वर्ण की है । उस आभा की किरणों से सभी दिशायें एवं अन्तरिक्ष लाल रंग से रँगे हुये हैं । चार कर-कमलों में जप-माला, पुस्तक, अभय और वर-मुद्रायें हैं । पूर्ण खिले हुए रक्त-कमल के पुष्प पर विराजमाना हैं । ऐसी श्रीबाला जगत् का नित्य कल्याण करनेवाली हैं । वे मेरे हृदय में निवास करें ।

हे त्रिपुरे ! जो आप भगवती के वाणी-बीज 'ऐं' का जप महा-रात्रि में भाव-निमग्न होकर करता है, वह देव-गुरु वृहस्पति से भी बढ़कर विद्वान् होता है और हे शम्भु-पत्नि ! सभी प्रकार का स्वामित्व उसे मिल जाता है ।। १

हे कामेश्वरि ! जो आपके तीन अक्षरवाले काम-राज 'क्लीं' का जप दिन के समाप्त हो जाने पर (सन्ध्या-काल) में करता है, उस कुल-मार्ग में दीक्षित साधक को वरण करने के लिए जृम्भासुर के विनाशक देवराज इन्द्र की भी सभा को त्याग कर रम्भा जैसी अप्सरा पृथ्वी पर चली आती है ।। २

हे त्रैलोक्य-माता त्रिपुरे ! जो तार्तीय-बीज 'सौः' का जप करता है, वह विश्व में अपने चरित से लोगों को चमत्कृत कर अन्त में आनन्द-मय ब्रह्म-पद को प्राप्त करता है ।। ३

भू-पुर, त्रि-वृत्त, अष्ट-दल-पद्म, षट्-कोणात्मक नगरवाली हे जगदम्बिके ! जो विन्दु-पीठ पर आप 'बाला' का अर्चन करता है, वह शिव-स्वरूप हो जाता है ।। ४

भगवती त्रिपुरा के इस मन्त्र-मय स्तव का जो दिन के अन्त में या निशा-काल में पाठ करता है, वह पृथ्वी पर सार्व-भौम महा-पुरुषों का नेता बनता है और स्वर्ग में इन्द्र के समान शौर्य-लक्ष्मी से युक्त होता है ।। ५

हे देवि ! भगवती बाला का यह मन्त्र-मय स्तोत्र अति श्रेष्ठ है । भक्ति-हीन व्यक्तियों को इसे नहीं बताना चाहिये और अत्यन्त गुप्त बनाए रहना चाहिए ।। ६

[२]

श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी कवचम्

श्रीभैरवी उवाच—देवदेव ! महादेव ! भक्तानां प्रीति-वर्द्धन !
सूचितं यत् त्वया देव्याः कवचं कथयस्व मे ।। १

श्रीभैरव उवाच—शृणु देवि ! प्रवक्ष्यामि कवचं देव-दुर्लभम् ।
अप्रकाश्यं परं गुह्यं साधकाभीष्ट-सिद्धिदम् ।। २

विनियोगः—अस्य श्रीबाला-त्रिपुरसुन्दरी-कवचस्य श्रीदक्षिणामूर्तिः ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी देवता, ऐं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, चतुर्वर्ग-साधने पाठे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीदक्षिणामूर्ति-ऋषये नमः शिरसि, पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे, श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-देवतायै नमो हृदि, ऐं बीजाय नमो गुह्ये, सौः शक्तये नमो नाभौ, क्लीं बीजाय नमः पादयोः, चतुर्वर्ग - साधने पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु ।

षडङ्ग-न्यासः	कर-न्यासः	अङ्ग-न्यासः
ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्लीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सौः	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ऐं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
क्लीं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सौः	कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यानम्—

मुक्ता-शेखर - कुण्डलाङ्गद - मणि - ग्रैवेय - हारोर्मिका,
विद्योतद्-वलयादि-कङ्कण-कटि - सूत्रां स्फुरन्-नूपुराम् ।
माणिक्योदर - बन्ध - कम्बु - कबरीमिन्दोः कलां विभ्रतीं,
पाशं चांकुश-पुस्तकाक्ष-वलयं दक्षोर्ध्व - बाह्वादितः ।।

मानसोपचारैः सम्पूज्य कवचं पठेत्—

ऐं वाग्भवं पातु शीर्षं क्लीं कामस्तु तथा हृदि ।
सौः शक्ति-बीजं च पातु नाभौ गुह्ये च पादयोः ।। १
ऐं क्लीं सौः वदने पातु बाला मां सर्व-सिद्धये ।
हसकलह्रीं सौः पातु भैरवी कण्ठ - देशतः ।। २
सुन्दरी नाभि - देशेऽव्याच्छीर्षिका सकला सदा ।
भ्रू - नासयोरन्तराले महा - त्रिपुर - सुन्दरी ।। ३
ललाटे सुभगा पातु भगा मां कण्ठ-देशतः ।
भगा देवी तु हृदये उदरे भग - सर्पिणी ।। ४
भग-माला नाभि - देशे लिङ्गे पातु मनोभवा ।
गुह्ये पातु महा - देवी राज - राजेश्वरी शिवा ।। ५
चैतन्य - रूपिणी पातु पादयोर्जगदम्बिका ।
नारायणी सर्व - गात्रे सर्व - कार्ये शुभङ्करी ।। ६
ब्रह्माणी पातु मां पूर्वे दक्षिणे वैष्णवी तथा ।
पश्चिमे पातु वाराही उत्तरे तु महेश्वरी ।। ७
आग्नेय्यां पातु कौमारी महा - लक्ष्मीश्च नैर्ऋते ।
वायव्यां पातु चामुण्डा इन्द्राणी पातु चेशके ।। ८
जले पातु महा - माया पृथिव्यां सर्व - मङ्गला ।
आकाशे पातु वरदा सर्वतो भुवनेश्वरी ।। ९

फल-श्रुति

इदं तु कवचं नाम देवानामपि दुर्लभम् ।
पठेत् प्रातः समुत्थाय शुचिः प्रयत - मानसः ।। १०
नाधयो व्याधयस्तस्य न भयं च क्वचिद् भवेत् ।
न च मारी-भयं तस्य पातकानां भयं तथा ।। ११
न दारिद्र्य-वशं गच्छेत् तिष्ठेन्मृत्यु - वशे न च ।
गच्छेच्छिव - पुरे देवि ! सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ।। १२
इदं कवचमज्ञात्वा श्रीविद्यां यो जपेच्छिवे !
स नाप्नोति फलं तस्य प्राप्नुयाच्छस्त्र-घातनम् ।। १३

।।इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे भैरवी-भैरव-संवादे श्रीबालात्रिपुर-सुन्दरी कवचम् ।।

श्री बाला त्रिपुरसुन्दर्यै नमः

हिन्दी-रूपान्तर

श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी कवचम्

विनियोगादि कर ध्यान करे। यथा--

भगवती बाला मोतियों से जड़े हुए चमकीले कुण्डल, अङ्गद, हार, वलय, कङ्कन, करधनी आदि आभूषण और पैर में गुञ्जायमान नूपुर धारण किए हैं। केश-पाश पर चन्द्रमा की कला शोभा पा रही है। दाएँ ऊर्ध्व हाथ से चार कर-कमलों में क्रमशः पाश, अंकुश, पुस्तक और अक्ष-माला लिए हैं।

वाग्भव-बीज 'ऐं' सिर की, काम-बीज 'क्लीं' हृदय की और शक्ति-बीज 'सौः' नाभि की, गुह्य तथा पैरों की रक्षा करें ।। १

'ऐं क्लीं सौः' बाला मुख-मण्डल में सर्व-सिद्धियों के लिए मेरी रक्षा करें। 'हसकलह्रीं सौः' भैरवी कण्ठ-देश में रक्षा करें ।। २

'सुन्दरी' नाभि देश में, 'सकला' शीर्ष-भाग में और भौंहों तथा नाक के मध्य भाग में महा-त्रिपुरी-सुन्दरी' सदा रक्षा करें ।। ३

ललाट में 'सुभगा', कण्ठ-देश में 'भगा', हृदय में 'भगवती देवी' और उदर में 'भग-सर्पिणी' मेरी रक्षा करें ।। ४

नाभि-देश में 'भग-माला' और लिङ्ग (योनि में 'मनोभवा' मेरी रक्षा करें। गुह्य में 'महा-देवी राज-राजेश्वरी शिवा' रक्षा करें ।। ५

दोनों पैरों में 'चैतन्य-रूपिणी जगदम्बिका', सारे शरीर में 'नारायणी' और सभी कार्यों में 'शुभङ्करी' रक्षा करें ।। ६

'ब्रह्माणी' पूर्व दिशा में और 'वैष्णवी' दक्षिण दिशा में मेरी रक्षा करें। 'वाराही' पश्चिम दिशा में और 'महेश्वरी' उत्तर दिशा में रक्षा करें ।। ७

'कौमारी' आग्नेय कोण में और 'महा-लक्ष्मी' नैऋत कोण में रक्षा करें। 'चामुण्डा' वायव्य कोण में और 'इन्द्राणी' ईशान कोण में रक्षा करें ।। ८

'महा-माया' जल में और 'सर्व-मङ्गला' पृथ्वी पर रक्षा करें। 'वरदा' आकाश में और 'भुवनेश्वरी' सभी ओर रक्षा करें ।। ९

यह 'कवच' देवताओं के लिए भी दुर्लभ है। प्रातःकाल उठकर पवित्र हो एकाग्र-मन से इसका पाठ करना चाहिए ।। १०

पाठ करनेवाले को आधि-व्याधियाँ नहीं होतीं, न कहीं किसी प्रकार का भय होता है। उसे न महा-मारी का डर रहता है, न पापों का ।। ११

वह दरिद्रता के वश में कभी नहीं होता और न मृत्यु के वशीभूत होता है। शिव के स्थान को ही वह प्राप्त होता है, यह मैं सर्वथा सत्य कहता हूँ ।। १२

इस 'कवच' को जाने बिना जो 'श्रीविद्या' के मन्त्र का जप करता है, उसे उस जप का फल नहीं मिलता, उलटे वह किसी शस्त्र की चोट का भागी बन जाता है ।। १३

॥ श्रीललिता (श्रीविद्या) त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः ॥

[१]

श्रीत्रिपुर-सुन्दरी कवचम्

श्रीईश्वर उवाच—शृणु देवि ! प्रवक्ष्यामि कवचं सुन्दरी-प्रियम् ।
रहस्याति - रहस्यं च मन्त्र-रूपमिदं प्रिये ॥
श्रीपार्वत्युवाच— भगवन् ! सर्व - लोकेश ! सर्व - लोकैक-वन्दित !
गुह्याद्-गुह्य-तमं तत्त्वं श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ॥

ॐ अस्य श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी कवच-स्तोत्र-मन्त्रस्य श्रीदक्षिणामूर्ति ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी देवता । ऐं क-५ वीजं । क्लीं ह-६ कीलकं । सौः स-४ शक्तिः । सर्वाभीष्ट-सिद्धचर्थं श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी कवच-स्तोत्र-पाठे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यासं कृत्वा मूल-मन्त्रेण षडङ्ग-न्यासं कुर्यात् ।

ध्यानम्—

स - कुंकुम - विलेपनामलिक-चुम्बि - कस्तूरिकाम्,
स-मन्द-हसितेक्षणां स-शर-चाप-पाशांकुशाम् ।
अशेष - जन - मोहिनीमरुण - माल्य - भूषाम्बरां,
जपा-कुसुम - भासुरां जप - विधौ स्मरेदम्बिकाम् ॥ १

चतुर्भुजे ! चन्द्र-कलावतंसे ! कुचोन्नते ! कुंकुम - राग-शोणे !
पुण्ड्रेक्षु-पाशांकुश-पुष्प-वाण-हस्ते ! नमस्ते जगदेक-मातः ॥ २

मानसोपचारेण भगवतीं सम्पूज्य विधिना कवचं पठेत्—

ककारः पातु शीर्षं मे एकारः पातु फालके ।
ईकारः पातु वक्त्रं मे लकारः कूर्प-युग्मके ॥ १
ह्रींकारः पातु हृदयं वाग्भवश्च सदाऽवतु ।
हकारः पातु जठरं सकारो नाभि - देशके ॥ २
ककारः पार्श्व - भागे च हकारः पातु पृष्ठके ।
लकारश्च नितम्बे मे ह्रींकारः पातु मूलके ॥ ३
काम-राजः सदा पातु जठरादि - प्रदेशके ।
सकारः पातु कटयां मे ककारः पातु लिङ्गके ॥ ४

लकारो जानुनी पातु ह्रीङ्कारो जङ्घ - युग्मके ।
शक्ति-बीजं सदा पातु मूल - विद्या सदाऽवतु ।। ५
त्रिपुरा मां सदा पातु त्रिपुरेशी च सर्वदा ।
त्रिपुरा सुन्दरी पातु वसु-पत्रस्य देवता ।। ६
त्रिपुरा - वासिनी पातु त्रिपुरा-श्रीः सदाऽवतु ।
त्रिपुरा मालिनी पातु त्रिपुरा सिद्धिदाऽवतु ।। ७
त्रिपुरा तथा पातु पातु त्रिपुरा - भैरवी ।
अणिमाद्यास्तथा पांतु ब्राह्म्याद्याः पांतु मां सदा ।। ८
नव-मुद्रास्तथा पान्तु कामाकर्षणि-पूर्विकाः ।
पान्तु मां षोडशारे तु अनङ्ग-कुसुमादिकाः ।। ९
पान्तु मामष्ट-पत्रेषु सर्व-संक्षोभणादिकाः ।
पान्तु चक्र-कोणेषु सर्व - सिद्धि - प्रदायिकाः ।। १०
पान्तु मां बाह्य - कोणेषु मध्यादि - कोणके तथा ।
सर्वज्ञाद्यास्तथा पान्तु सर्वाभीष्ट - प्रपूरिकाः ।। ११
वशिन्याद्यास्तथा पान्तु वसु - पत्रस्य देवताः ।
त्रिकोणस्यान्तरालेषु पान्तु मामायुधानि च ।। १२
कामेश्वर्यादिकाः पांतु त्रिकोणे कोण-संस्थिताः ।
विन्दु-चक्रे तथा पातु श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरी ।। १३
इदं श्रीकवचं नित्यं त्रि - सन्ध्यं यः पठेन्नरः ।
सर्व-सिद्धिमवाप्नोति सर्वाभीष्ट-फल-प्रदम् ।। १४

।। श्रीत्रिपुर-सुन्दरी कवचं सम्पूर्णम् ।।

हिन्दी-रूपान्तर

श्रीत्रिपुर-सुन्दरी कवचम्

श्रीपार्वती ने कहा—हे भगवन् ! आप सब लोकों के ईश्वर हैं, सब लोकों द्वारा वन्दित हैं। मैं तत्त्व-ज्ञान देनेवाले गुप्त-से-गुप्त ज्ञान को सुनना चाहती हूँ।

श्रीईश्वर ने कहा—हे देवि ! भगवती त्रिपुर-सुन्दरी को प्रसन्न करनेवाला 'कवच' बताऊँगा, जो मन्त्र-रूप है और रहस्यों का भी रहस्य है।

विनियोग—इस महा-त्रिपुर-सुन्दरी के कवच-स्तोत्र-रूपी मन्त्र के ऋषि श्रीदक्षिणामूर्ति, छन्द अनुष्टुप्, देवता श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी, बीज 'ऐं कएईलह्रीं', कीलक 'क्लीं हसकहलह्रीं', शक्ति 'सौः सकलह्रीं' हैं और इसका विनियोग सर्वाभीष्ट-सिद्धि के लिए किया जाता है।

ऋष्यादि-न्यास कर मूल-मन्त्र से षडङ्ग-न्यास करे। तब ध्यान करे। यथा—

जप करते समय केसर-युक्त उबटन वाली, जिनके मस्तक पर कस्तूरी लगी हुई है, मन्द-हास्य-युक्त नेत्रों वाली, धनुष, बाण, पाश और अंकुश से युक्त, सम्पूर्ण जनों को मोहित करनेवाली, लाल रंग की पुष्प-माला एवं रक्त-वस्त्र धारण करनेवाला, जपा - पुष्प के समान आभावाली माता का स्मरण करना चाहिए ।। १

हे चतुर्भुजे, हे चन्द्र-कला-रूपी - कर्णाभूषणवाली, उठे हुए स्तनोंवाली, केसर के रंग के समान लाल रंगवाली; इक्षु-धनुष, पाश, अंकुश और पुष्प-बाणों को हाथों में रखनेवाली, संसार की एक-मात्र पालन करनेवाली आपको नमस्कार है ।। २

मानसोपचारों से भगवती का पूजन कर विधि-पूर्वक 'कवच' का पाठ करे। यथा—

ककार मेरे शिर की रक्षा करे, एकार सीमन्त-भाग की रक्षा करे। ईकार मेरे मुख की रक्षा करे और लकार दोनों भौंहों की रक्षा करे ।। १

ह्रीङ्कार हृदय की रक्षा करे और वाग्भव सदा रक्षा करे। हकार उदर की और सकार नाभि की रक्षा करे ।। २

ककार पार्श्व-भाग की तथा हकार पृष्ठ-भाग की रक्षा करे। लकार मेरे नितम्ब की तथा ह्रीङ्कार मूल-स्थान की रक्षा करे ।। ३

काम-राज सदा उदरादि स्थानों की रक्षा करे। सकार मेरे कटि-स्थान की रक्षा करे और ककार लिङ्ग-स्थान की रक्षा करे ।। ४

लकार दोनों घुटनों की रक्षा करे और ह्रीङ्कार जंघाओं की। शक्ति-बीज सदा रक्षा करे। मूल-विद्या सदा रक्षा करें ।। ५

त्रिपुरा और त्रिपुरेशी मेरी रक्षा करें। अष्ट-दल की देवता त्रिपुरा-सुन्दरी रक्षा करें ।। ६

त्रिपुरा-वासिनी सदा रक्षा करें। त्रिपुरा-श्री सदा रक्षा करें। त्रिपुरा-मालिनी रक्षा करें। त्रिपुरा सिद्धिदा रक्षा करें ।। ७

त्रिपुराम्बा रक्षा करें और त्रिपुर-भैरवी रक्षा करें। अणिमा आदि रक्षा करें और ब्राह्मी आदि मेरी सदा रक्षा करें ।। ८

उसी प्रकार कामाकर्षिणी आदि नव-मुद्रायें रक्षा करें। अनङ्ग-कुसुमा आदि षोडशार में मेरी रक्षा करें ।। ९ सर्व-संक्षोभण आदि अष्ट-दलों में मेरी रक्षा करें, सर्व-सिद्धि-प्रदायिका चक्र-कोणों में मेरी रक्षा करें ।। १० सम्पूण मनोरथों को परिपूर्ण करनेवाली सर्वज्ञा आदि बाह्य-कोणों तथा मध्यादि कोणों में मेरी रक्षा करें ।। ११ इसी प्रकार अष्ट-दल की देवता वशिनी आदि रक्षा करें और सभी आयुध त्रिकोण के अन्तरालों में मेरी रक्षा करें ।। १२

कोणों में विराजमान कामेश्वरी आदि त्रिकोण में रक्षा करें और इसी प्रकार श्रीमती त्रिपुर-सुन्दरी बिन्दु-चक्र में रक्षा करें ।। १३

समस्त मनो-वांछित फल को प्रदान करनेवाले इस श्रीकवच को जो व्यक्ति तीनों सन्ध्याओं में पढ़ता है, वह सारी सिद्धियों को प्राप्त करता है ।। १४

[२]

श्रीसौभाग्य-कवच-स्तोत्रम्

॥ पूर्व-पीठिका ॥

कैलास-शिखरे रम्ये सुखासीनं सुरार्चितम्,
गिरीशं गिरिजा स्तुत्वा स्तोत्रैर्वेदान्त-पारगैः ।
प्रणम्य परया भक्त्या तमपृच्छत् कृतांजलिः,
रहस्यं रक्षणं किं वा सर्व - सम्पत् - करं वद ॥ १

श्रीशिवोवाच—शृणु देवि ! प्रवक्ष्यामि यस्मात् त्वं परिपृच्छसि,
यस्य श्रवण - मात्रेण भव - भीतिर्न जायते ।
एतत् सौभाग्य-कवचं रहस्याति - रहस्यकम्,
सौभाग्य - कवचं देवि ! शृणु सौभाग्य-दायकम् ॥ २

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीसौभाग्य-कवच-स्तोत्रस्य श्रीआनन्द-भैरवो ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । श्रीसौभाग्य-सुन्दरी देवता । ॐ क्लीं सौः बीजं । ह्रीं क्लीं शक्तिः । आं ह्रीं क्रों कीलकं । सर्व-सौभाग्य-सिद्धयर्थे पाठे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यासः—शिरसि श्रीआनन्द-भैरवाय ऋषये नमः । मुखे अनुष्टुप्-छन्दसे नमः । हृदि श्रीसौभाग्य-सुन्दरी-देवतायै नमः । गुह्ये ॐ क्लीं सौः बीजाय नमः । पादयोः ह्रीं क्लीं शक्तये नमः । नाभौ आं ह्रीं क्रों कीलकाय नमः । सर्वाङ्गे सर्व-सौभाग्य-सिद्धयर्थे पाठे विनियोगाय नमः

षडङ्ग-न्यासः	कर-न्यासः	अङ्ग-न्यासः
ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्लीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सौः	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ऐं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
क्लीं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सौः	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यानम्—ऐहिक-पर-फल-दात्रीमैशानीं मनसि भावये मुद्राम् ।
ऐन्दव - कलावतंसामैश्वर्य-स्फुरण-परिणतिं जगताम् ।। १
क्लीवत्व-दैत्य-हन्त्रीं क्लिन्न-मनस्कां महेश्वराश्लिष्टाम् ।
क्लृप्त-जनेष्ट-कर्त्रीं कल्पित-लोक-प्रभां नमामि कलाम् ।। २
सौभाग्य-दिव्यक-निधिं सौरभ-कच-वृन्द-विचलदलि-मालाम् ।
सौशील्यशेष-तल्पां सौन्दर्य - विभा - मंजरीं कलये ।। ३
पाश-पाणि सृणि-पाणि भावये चाप-पाणि शर-पाणि दैवतम् ।
यत्-प्रभा-पटल-पाटलं जगत् पद्म-राग-मणि-मण्डपायते ।। ४
हेमाद्रौ हेम-पीठ-स्थितामखिल-सुरैरीड्यमानां विराजत् ।
पुष्पेष्वेष्वास-पाशांकुश-कर-कमलां रक्त - वेषाति-रक्ताम् ।। ५
दिक्षूद्यद्भिश्चतुर्भिर्मणि-मय-कलशैः पञ्च-शक्त्याश्चितैः स्व-
भ्रष्टैः क्लृप्ताभिषेकां भजत भगवतीं भूतिदामन्त्य-यामे ।। ६

कवच-स्तोत्रम्

शिखाग्रं सततं पातु मम त्रिपुर - सुन्दरी ।
शिरः कामेश्वरी नित्या तत्-पूर्वं भग-मालिनी ।। १
नित्य-क्लिन्नाऽवतादक्षं भेरुण्डा तस्य पश्चिमम् ।
वह्नि-वासिन्यवेद् वामं मुखं विद्येश्वरी तथा ।। २
शिव-दूती ललाटं मे त्वरिता तस्य दक्षिणम् ।
तद्-वाम - पार्श्वमवतात् तथैव कुल - सुन्दरी ।। ३
नित्या पातु भ्रुवोर्मध्यं भ्रुवं नील - पताकिनी ।
वाम-भ्रुवं तु विजया नयनं सर्व - मङ्गला ।। ४
ज्वाला-मालिन्यक्षि वामं चित्रा रक्षतु पक्ष्मणी ।
दक्ष-श्रोत्रं महा - नित्या वामं पातु महोद्यमा ।। ५
दक्षं वामं च वटुका कपोलौ क्षेत्र - पालिका ।
दक्ष - नासा - पुटं दुर्गा तदन्यं तु भारती ।। ६
नासिकाग्रं सदा पातु महा - लक्ष्मीर्निरन्तरम् ।
अणिमा दक्ष - कटिं महिमा च तदन्यकम् ।। ७

दक्ष-गण्डं च गरिमा लघिमा चोत्तरं तथा ।
ऊर्ध्वोष्ठकं प्राप्ति - सिद्धिः प्राकाम्यमधरोष्ठकम् ।। ८
ईशित्वमूर्ध्व-दन्तांश्च ह्यधो-दन्तान् वशित्वकम् ।
रस-सिद्धिश्च रसनां मोक्ष-सिद्धिश्च तालुकम् ।। ९
तालु - मूल-द्वयं ब्राह्मी - माहेश्वर्यौ च रक्षताम् ।
कौमारी चिबुकं पातु तदधः पातु वैष्णवी ।। १०
कण्ठं रक्षतु वाराही चैन्द्राणी रक्षतादधः ।
कुकाटिकां तु चामुण्डा महा-लक्ष्मीस्तु सर्वतः ।। ११
सर्व-संक्षोभिणी - मुद्रा स्कन्धं रक्षतु दक्षिणम् ।
तदन्यं द्राविणी - मुद्रा पायादंस - द्वयं क्रमात् ।। १२
आकर्षणी वश्य - मुद्रा चोन्मादिन्यथ दक्षिणम् ।
भुजं महांकुशा वामं खेचरी दक्ष - कक्षकम् ।। १३
वाम - कक्षं बीज - मुद्रा योनि-मुद्रा तु दक्षिणम् ।
लसत् त्रिखण्डिनी - मुद्रा वाम - भागं प्रपालयेत् ।। १४
श्रीकामाकर्षिणी नित्या रक्षताद् दक्ष - कूर्परम् ।
कूर्परं वाममवतात् सा बुद्ध्याकर्षिणी तथा ।। १५
अहङ्काराकर्षिणी तु प्रकाण्डं पातु दक्षिणम् ।
शब्दाकर्षिणिका वामं स्पर्शाकर्षिणिकाऽवतु ।। १६
प्रकोष्ठं दक्षिणं पातु रूपाकर्षिणिकेतरम् ।
रसाकर्षिणिका पातु मणि-बन्धं च दक्षिणम् ।। १७
गन्धाकर्षिणिका वामं चित्ताकर्षिणिकाऽवतु ।
करभं दक्षिणं धैर्याकर्षिणी पातु वामकम् ।। १८
स्मृत्याकर्षिण्यसौ वामं नामाकर्षिणिकेतरम् ।
बीजाकर्षिणिका पायात् सततं दक्षिणांगुलीः ।। १९
आत्माकर्षिणिका त्वन्या अमृताकर्षिणी नखान् ।
शरीराकर्षिणी वाम - नखान् रक्षतु सर्वदा ।। २०
अनङ्ग-कुसुमा शक्तिः पातु दक्षिण - स्तनोपरि ।
अनङ्ग - मेखला चान्य - स्तनोर्ध्वमभि-रक्षतु ।। २१

अनङ्ग - मदना दक्ष - स्तनं तच्चूचुकं पुनः ।
रक्षतादनिशं देवी ह्यनङ्ग - मदनातुरा ।। २२

अनङ्ग-रेखा वामं तु वक्षोजं तस्य चूचुकम् ।
अनङ्ग - वेगिनी क्रोडमनङ्गास्यांकुशाऽवतु ।। २३

अनङ्ग - मालिनी पायाद् वक्षः-स्थलमहर्निशम् ।
सर्व-संक्षोभिणी शक्तिर्हृत् सर्व-द्राविणी परा ।। २४

कुक्षिं सर्वाकर्षिणी तु पातु पार्श्वं च दक्षिणम् ।
आह्लादिनी वाम-पार्श्वं मध्यं सम्मोहिनी चिरम् ।। २५

सा सर्व-स्तम्भिनी पृष्ठं नाभिं वै सर्व-जृम्भिणी ।
वशङ्करी वस्ति-देशं सर्व - रंजिनी मे कटिम् ।। २६

सा तु सर्वोन्मादिनी मे पायाज्जघन - मण्डलम् ।
सर्वार्थ-साधिनी शक्तिः नितम्बं रक्षतान्मम ।। २७

दक्ष-स्फिचं सदा पातु सर्व-सम्पत्ति-पूरिणी ।
सर्व-मन्त्र-मयी शक्तिः पातु वाम-स्फिचं मम ।। २८

पायात् कुकुन्दर - द्वन्द्वं सर्व - द्वन्द्व - क्षयङ्करी ।
सर्व-सिद्धि - प्रदा देवी पातु दक्षिण वंक्षणम् ।। २९

सर्व-सम्पत्-प्रदा देवी पातु मे वाम - वंक्षणम् ।
सर्व-प्रियङ्करी देवी गुह्यं रक्षतु मे सदा ।। ३०

मेढ्रं रक्षतु मे देवी सर्व - मङ्गल-कारिणी ।
सर्व-काम - प्रदा देवी पातु मुष्कं तु दक्षिणम् ।। ३१

पायात् तदन्यमुष्कं तु सर्व-दुःख-विमोचिनी ।
सर्व - मृत्यु - प्रशमनी देवी पातु गुदं मम ।। ३२

पातु देवी गुह्य-मध्यं सर्व - विघ्न - निवारिणी ।
सर्वाङ्ग-सुन्दरी देवी रक्षताद् दक्ष-सक्थिकम् ।। ३३

वाम-सक्थि-तलं पायात् सर्व-सौभाग्य-दायिनी ।
अष्ठीवं मम सर्वज्ञा देवी रक्षतु दक्षिणम् ।। ३४

वामाष्ठीवं सर्व-शक्तिः देवी पातु युगं मम ।
सर्वैश्वर्य - प्रदा देवी दक्ष - जानुं सदाऽवतु ।। ३५
सर्व - ज्ञान - मयी देवी जानुमन्यं ममावतात् ।
अव्याद् देवी दक्ष-जङ्घां सर्व-व्याधि-विनाशिनी ।। ३६
तदन्यां पातु देवी सा सर्वाधार - स्वरूपिणी ।
सर्व-पाप-हरा देवी गुल्फं रक्षतु दक्षिणम् ।। ३७
सर्वानन्द-मयी देवी वाम-गुल्फं सदाऽवतु ।
पार्ष्णि मे दक्षिणं पायात् सर्व-रक्षा-स्वरूपिणी ।। ३८
अव्यात् सदा सदा पार्ष्णि सर्वेप्सित-फल-प्रदा ।
दक्षांघ्रि-पार्श्वं वशिनी पूर्वं वाग्-देवता मम ।। ३९
सर्वं कामेश्वरी चोर्ध्वमधो वाग् - देवता मम ।
मोदिनी प्रपदं पातु विमला दक्षिणेतरे ।। ४०
अंगुलीररुणा पातु दक्ष - पाद - नखोज्ज्वला ।
तदन्या जयिनी पातु सदा सर्वेश्वरी मम ।। ४१
दक्ष-वाम-पाद-तलं कौलिनी देवता मम ।
कुर्वन्तु जृम्भणा बाणाः त्रैलोक्याकर्षणं मम ।। ४२
मोहं संहरतादिक्षु-कोदण्डं भृङ्गमौविकम् ।
करोतु सततं पाशो वशीकरणमद्भुतम् ।। ४३
विदध्यादंकुशं नित्यं स्तम्भनं शत्रु - सङ्कटे ।
पीठं मे काम-रूपाख्यं पातु कामान्तिकं मनः ।। ४४
पूर्णं पूर्ण - गिरेः पीठं कान्ति मे जनयेत् सदा ।
जालन्धरमन्य - जालन्धर - पीठं मे रक्षतु ।। ४५
सायुज्ये नियतां प्रज्ञां श्री - पीठं श्री - करं मम ।
कामेश्वरी त्वात्म-तत्त्वं रक्षेद् वज्रेश्वरी तथा ।। ४६
विद्या-तत्त्वं शैव-तत्त्वं पायाच्छ्रीभग - मालिनी ।
कामं विद्यान्महा - शत्रूनमृतार्णव - मानसम् ।। ४७

क्रोधं क्रोधापहा हन्यान्मन्युं पैताम्बुजासनम् ।
लोभ चिदासनं हन्याद् देव्यात्मामृत-रूप-भाक् ।। ४८

मोहं संहरताच्चक्रं मदं मन्त्रासनं मम ।
मात्सर्यं नाशयेन्नित्यं मम सान्ध्यासनं तथा ।। ४९

आधारं त्रिपुरा रक्षेत् स्वाधिष्ठानं पुरेश्वरी ।
मणि-पूरं मणि-द्योता पायात् त्रिपुर-सुन्दरी ।। ५०

अव्यादनाहतं भव्या नित्यं त्रिपुर-वासिनी ।
विशुद्धिं त्रिपुरा श्रीश्च आज्ञां त्रिपुर-मालिनी ।। ५१

इडां मे त्रिपुर-सिद्धा त्रिपुरा चापि पिङ्गलाम् ।
सुषुम्नां पातु मे नित्या पायात् त्रिपुर-भैरवी ।। ५२

त्रैलोक्य - मोहनं चक्रं रोम-कूपांश्च रक्षतु ।
सर्वाशा - पूरकं चक्रं सप्त - धातूँश्च रक्षतु ।। ५३

सर्व-संक्षोभणं चक्र प्राणाद्यं वायु-पञ्चकम् ।
सौभाग्य-दायकं चक्रं नागाद्यनिल-पञ्चकम् ।। ५४

सर्वार्थ - साधकं चक्रं कारणानां चतुष्टयम् ।
सर्व-रक्षा - करं चक्रं रक्षतान्मे गुण-त्रयम् ।। ५५

सर्व-रोग-हरं चक्रं पायात् पुर्यष्टकं मम ।
सर्व-सिद्धि-प्रदं चक्रमव्यान्मे कोश - पञ्चकम् ।। ५६

सर्वानन्द-मयं चक्रं यशः कीर्तिं च रक्षतु ।
सौन्दर्यं मन्मथः पायाद् धृतिश्चापि रतिं मम ।। ५७

प्रीतिं मे पातु या प्रीतिः रूपं पातु वसन्तकः ।
संकल्पं कल्पकोद्यानं महालक्ष्मी श्रियं मम ।। ५८

कान्तिं कपालिनी रक्षेत् मन्दिरं मणि-मण्डपः ।
पुत्रान् शङ्ख-निधिः पायाद् भार्यां पद्म-निधिस्तथा ।। ५९

मार्गे क्षेमङ्करी रक्षेत् मातङ्गी मुकुटं तथा ।
योगिनी प्रकटाद्यास्ता नव-द्वाराणि पान्तु मे ।। ६०

भोजने मामन्न-पूर्णा मातङ्गी क्रीडनेऽवतात् ।
वने रक्षतु मां दुर्गा जाग्रती दुष्ट-निग्रहे ।। ६१

त्रिधाऽहङ्कार - नैष्ठुर्य-दोष-त्रयं मल - त्रयम् ।
डाकिन्यो योगिनी-मुख्याः संहरन्तु ममानिशम् ।। ६२

इच्छा-शक्तिर्गुरोर्भक्तिं पातु मे ज्ञानमात्मनि ।
ज्ञान-शक्तिः क्रिया-शक्तिर्वैराग्य - विषयेष्वपि ।। ६३

हृत्-पद्म-कर्णिका-मध्ये ह्रीङ्कारी परि - रक्षतु ।
वैखरी श्रवणं पातु मध्यमा मननं पुनः ।। ६४

योगं रक्षतु पश्यन्ती साक्षात् ज्ञान - परा मम ।
ब्राह्मणी जागृतं पातु शयानं वैष्णवी तथा ।। ६५

सुषुप्तौ चण्डिका पातु तुर्या मे मोह-कारिणी ।
सदा मां भैरवी पातु जगद्-भरण - पण्डिता ।। ६६

चरणाम्भोरुहानन्द - परामृत - रसेरिता ।
प्लाविनी कुण्डली पूर्णा अन्तरान्तं सदाऽवतात् ।। ६७

अष्ट-दिक्षु महेन्द्राद्या सायुधाः पान्तु सर्वदा ।
पायादूर्ध्वां दिशं ब्रह्मा विष्णुश्चक्रायुधोप्यधः ।। ६८

अनावृत्तानि स्थानानि कवचेन तु यानि मे ।
तानि सर्वाणि रक्षन्तु शिवाद्या गुरवः सदा ।। ६९

एतत् सौभाग्य-कवचं शाङ्करं यस्तु पाठयेत् । त्रि-सन्ध्यं यः पठेद् भक्त्या शृणुयाद् वा समाहितः ।। १
तस्य शीघ्रेण सिध्यन्ति सिद्धयस्त्वणिमादयः । गुटिका - पादुकाद्यष्ट - सिद्धयः सम्भवन्ति च ।। २
वश्यादीन्यष्ट-कर्माणि योगश्चाष्टाङ्ग-संयुतः । ब्रह्मा-विष्णु - गिरीशेन्द्र - कन्दर्प - रतिभिः सह ।। ३
विचरन्ते तदखिलान् सिद्ध - गन्धर्व-सेविताः । तस्य स्मरण - मात्रेण ग्रह - भूत - पिशाचकाः ।। ४
कीट-वत् प्र-पलायन्ते कूष्माण्डा भैरवादयः । तस्यांघ्रि-तोय-पतनात् प्रशाम्यति महा - रुजाः ।। ५
तत्-पाद-कमलासक्त-रजो-लेशाभि - मर्शनात् । वश्यं भवति शीघ्रेण त्रैलोक्यं स - चराचरम् ।
आबाल-महिला-भूपाः किमु माया-विमोहिताः ।। ६

।। इति वामकेश्वर-तन्त्रे नित्या-षोडशिकार्णवे श्रीसौभाग्य-कवचम् ।।

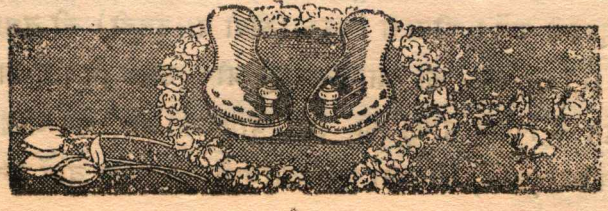

हिन्दी रूपान्तर

श्रीसौभाग्य-कवच-स्तोत्रम्

सुन्दर कैलास पर्वत पर सुखपूर्वक बैठे हुए देवताओं से पूजित श्रीगिरीश (शंकरजी) की वैदिक स्तोत्रों से स्तुति करके श्रीगिरिजा (पार्वती) ने उन्हें परम भक्ति से प्रणाम किया और हाथ जोड़कर कहा—'सब प्रकार की सम्पत्ति और रक्षा देनेवाला रहस्य कहिये।' (१)

श्रीशिवजी ने कहा—देवि, तुमने जो पूछा है, उसे कहता हूँ। सुनो, जिसके सुनने मात्र से सांसारिक भय नहीं होते। यह सौभाग्यकवच रहस्य का भी रहस्य और सौभाग्य का दाता है। (२)

मूल पाठ के अनुसार विनियोग, ऋष्यादि-न्यास तथा षडङ्ग न्यास करके श्लोक १ से ६ तक वर्णित ध्यान करे। फिर कवच का पाठ करे।

मेरी शिखा की रक्षा सदा त्रिपुरसुन्दरी करें। शिर की रक्षा कामेश्वरी नित्या करें। उसके पूर्व भाग (सिर के पूर्व भाग) की रक्षा भग-मालिनी करें ॥१॥ नित्य-क्लिन्ना सिर के दक्षिण भाग की तथा भेरुण्डा सिर के पश्चिम की रक्षा करें। वह्नि - वासिनी सिर के वाम भाग की और विद्येश्वरी मुख की रक्षा करें ॥२॥ शिव-दूती मेरे ललाट की, ललाट के दक्षिण भाग की त्वरिता और ललाट के वाम भाग की रक्षा कुल - सुन्दरी करें ॥३॥ नित्या भ्रूमध्य की और भौंह (दाहिनी) की रक्षा नीलपताका करें। बायीं भौंह की रक्षा विजया करें। नयन (दक्षिण) की रक्षा सर्व-मङ्गला करें ॥४॥ ज्वाला-मालिनी बायी आँख की तथा पलकों की रक्षा चित्रा करें। दाहिने कान की रक्षा महा-नित्या और बायें कान की रक्षा महोद्यमा करें ॥५॥ दाहिने और बायें कपोलों की रक्षा क्रमशः वटुक और क्षेत्र - पालिका करें। दक्ष नासा-पुट की दुर्गा और बांयें नासापुट की रक्षा भारती करें ॥६॥ नासिका के अग्र-भाग की रक्षा सदा महा-लक्ष्मी करें। दाहिनी कमर की रक्षा अणिमा सिद्धि और बायीं कमर की रक्षा महिमा सिद्धि करें ॥७॥ दाहिने गण्ड-स्थल (कनपटी-सहित मुख का समस्त पार्श्व) की रक्षा गरिमा सिद्धि और बायें गण्ड-स्थल की रक्षा लघिमा सिद्धि करें। ऊर्ध्वोष्ठ की रक्षा प्राप्ति सिद्धि और अधरोष्ठ की रक्षा प्राकाम्य सिद्धि करें ॥८॥ ऊपर के दाँतों की रक्षा ईशित्व सिद्धि और नीचे के दाँतों की रक्षा वशित्व सिद्धि करें। रसना (जीभ) की रक्षा रस सिद्धि और तालू की रक्षा मोक्ष सिद्धि करें ॥९॥ दोनों तालु-मूल की रक्षा ब्राह्मी और माहेश्वरी करें। कौमारी चिबुक (ठोडी या ठुड्डी) की तथा उसके नीचे के भाग की रक्षा वैष्णवी करें ॥१०॥ कण्ठ की रक्षा वाराही और उसके निचले भाग की रक्षा इन्द्राणी करें। कृकाटिका (गर्दन के पिछले भाग) की रक्षा चामुण्डा और सब ओर से महालक्ष्मी रक्षा करें ॥११॥ दाहिने स्कन्ध (कन्धें) की रक्षा सर्वसंक्षोभिणी मुद्रा और बाँयें कन्धें की रक्षा द्राविणी

मुद्रा करें। अंस-द्वय (कन्धे की हड्डी) की रक्षा (१२) क्रमशः आकर्षिणी मुद्रा और वश्य मुद्रा करें। दाहिनी भुजा की रक्षा उन्मादिनी मुद्रा, बाँयीं भुजा की रक्षा महांकुशा मुद्रा और दाहिनी कांख की रक्षा खेचरी मुद्रा करें ।।१३।। बाँयीं कांख की रक्षा बीज-मुद्रा करे। दाहिने भाग की रक्षा योनि-मुद्रा और बाँयें भाग की रक्षा त्रिखण्डा मुद्रा करें ।।१४ ।।

दक्ष कूर्पर (कुहनी) की रक्षा श्रीकामाकर्षिणी नित्या और बाँयें कूर्पर की रक्षा बुद्धयाकर्षिणी करें ।।१५।। दाहिने प्रकाण्ड (भुजा के ऊपरी भाग) की रक्षा अहङ्काराकर्षिणी और बाँयें प्रकाण्ड की रक्षा शब्दाकर्षिणी व स्पर्शाकर्षिणी करें ।।१६।। दाहिने प्रकोष्ठ (कुहनी से मणिबन्ध के ऊपर के भाग) की रक्षा करें तथा बाँयें प्रकोष्ठ की रक्षा रूपाकर्षिणी करें। दाहिने मणि-बन्ध की रक्षा रसाकर्षिणी करें ।।१७।। बाँयें मणि-बन्ध की रक्षा गन्धाकर्षिणी करें। दाहिने और बाँयें करभ (पंजे के पिछले भाग, कर-पृष्ठ) की रक्षा क्रमशः चित्ताकर्षिणी और धैर्याकर्षिणी करें ।।१८।। स्मृत्याकर्षिणी और नामाकर्षिणी बाँयें और दाहिने तरफ रक्षा करें। अंगुलियों की रक्षा बीजाकर्षिणी करें ।।१९।। बाँयीं अँगुलियों की रक्षा आत्माकर्षिणी, दाहिने नाखूनों की रक्षा अमृताकर्षिणी तथा बाँयें नाखूनों की रक्षा शरीराकर्षिणी करें ।।२०।।

दाहिने स्तन के ऊपरी भाग की रक्षा अनङ्ग-कुसुमा शक्ति तथा बाँयें स्तन के ऊपरी भाग की रक्षा अनङ्ग-मेखला करें ।।२१।। अनङ्ग-मदना दाहिने स्तन की रक्षा करें, उसके चूचक की रक्षा सदा अनङ्ग-मदनातुरा करें ।।२२।। अनङ्ग-रेखा बाँयें स्तन की रक्षा करें और उसके चूचक की रक्षा अनङ्ग-वेगिनी करें। क्रोड (वक्षः-स्थल, छाती और कन्धों के बीच का भाग) की रक्षा अनङ्गांकुशा करें ।।२३।। वक्षः-स्थल की रक्षा सदा अनङ्ग-मालिनी करें। हृदय की रक्षा सर्व-संक्षोभिणी करें सर्वविद्राविणी कुक्षि (पेट) की रक्षा करें, उसके दाँयीं तरफ सर्वाकर्षिणी, बाँयीं तरफ आह्लादिनी (सर्वाह्लाद-करी) और मध्य में सम्मोहिनी(सर्व-सम्मोहिनी) सदा रक्षा करें ।।२४-२५।।

पीठ की रक्षा सर्व-स्तम्भिनी करें। नाभि की रक्षा सर्व-जृम्भिणी करें। वस्ति-देश (पेट का नाभि से नीचे का भाग, पेडू) की रक्षा वशङ्करी (सर्व-वशङ्करी) और कटि(कमर) की रक्षा सर्व-रञ्जिनी करें ।।२६।। जघन-मण्डल की रक्षा सर्वोन्मादिनी करें। सर्वार्थ - साधिनी शक्ति मेरे नितम्बों की रक्षा करें ।।२७।। दाहिने स्फिच (कूल्हे) की रक्षा सर्व-सम्पत्ति-कारिणी और बाँयें स्फिच की रक्षा सर्व-मन्त्र-मयी शक्ति करें ।।२८।। दोनों ककुन्दरों (नितम्ब-कूप) की रक्षा सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्करी करें। दाहिने वंक्षण की रक्षा सर्व-सिद्धि-प्रदा देवी करें ।।२९।। वाम वंक्षण की रक्षा सर्व-सम्पत्-प्रदा देवी करें। गुह्य-स्थान की रक्षा सर्व-प्रियङ्करी करें ।।३०।। मेढ्र (लिङ्ग) की रक्षा सर्व-मङ्गल-कारिणी करें। दाहिने मुष्क (अण्ड-कोष) की रक्षा सर्व-काम-प्रदा देवी करें ।।३१।। दूसरे (वाम) मुष्क की रक्षा सर्व-दुःख-विमोचनी करें। मेरी गुदा की रक्षा सर्व-मृत्यु-प्रशमनी करें ।।३२।। गुह्य के मध्य-भाग की रक्षा सर्व-विघ्न-निवारिणी करें। दाहिनी सक्थि (जाँघ की हड्डी) की रक्षा सर्वाङ्ग-सुन्दरी करें ।।३३।।

बाँयीं सक्थि की रक्षा सर्व-सौभाग्य-दायिनी करें। दाहिने अष्ठीव की रक्षा सर्वज्ञा देवी करें ।।३४।। बाँयें अष्ठीव की रक्षा सर्व-शक्ति-देवी करें। दक्ष-जानु (जाँघ) की रक्षा सर्वैश्वर्य-प्रदा देवी करें ।।३५।। वाम जानु की रक्षा सर्व-ज्ञान-मयी देवी करें। दक्ष जङ्घा (पिण्डली) की रक्षा

सर्व-व्याधि-विनाशिनी करें ।।३६।। दूसरो (वाम) जंघा को रक्षा सर्वाधार - स्वरूपिणी करें। दाहिने गुल्फ (टखने) की रक्षा सर्व-पाप-हरा करें ।।३७।। वाम गुल्फ की रक्षा सदा सर्वानन्द-मयी देवी करें। दाहिनी पार्ष्णि (एड़ी) की रक्षा सर्व-रक्षा-स्वरूपिणी करें ।।३८।। वाम पार्ष्णि की रक्षा सर्वेप्सित-फल-प्रदा देवी करें। दाहिने पैर के पंजे के पार्श्व को रक्षा वशिनी और बाँएँ की रक्षा वाग्देवता करें ।।३९।। सब तरफ कामेश्वरी तथा ऊपर-नीचे वाग्-देवता रक्षा करें। मोदिनी दाहिने प्रपद (पैर के अगले भाग) की और विमला बाँयें प्रपद की रक्षा करें ।।४०।। अँगुलियों की रक्षा अरुणा करें और दाहिने पर के नाखूनों की रक्षा उज्ज्वला करें। दूसरे (बाँयें पैर के नाखूनों) की रक्षा जयिनी करें। सर्वेश्वरी सदा मेरे दाहिने पाद-तल (तलुआ) की रक्षा करें। कौलिनी वाम पाद-तल की रक्षा करें।

जृम्भण बाण मेरे प्रति त्रैलोक्य का आकर्षण करें ।।४१-४२।। बड़वानल के समान चञ्चल मोह का नाश इक्षु-कोदण्ड (इक्षु-चाप, गन्ने का बना धनुष) करे। पाश सदा अद्भुत वशीकरण करे ।।४३।। शत्र-सङ्कट के समय अंकुश स्तम्भन करे। कामान्तिक मन (इच्छाओं या कामनाओं से भरपूर मन) की रक्षा काम-रूप नामक पीठ करे ।।४४।। पूर्णगिरि-पीठ पूर्ण (शरीरस्थ पूर्ण-गिरि पीठ) की रक्षा करते हुए कान्ति उत्पन्न करे। जालन्धर पीठ मेरे जालन्धर-पीठ की रक्षा करे ।।४५।। प्रज्ञा मुझे सायुज्य दे, श्रीपीठ मुझे श्री (धन) दे। कामेश्वरी आत्म-तत्व की रक्षा करें। वज्रेश्वरी विद्या-तत्व की और श्री भग-मालिनी शिव-तत्व को रक्षा करें। काम आदि महा-शत्रुओं से अमृतार्णव (सुधा-सागर) रक्षा करे ।।४६-४७।। क्रोध का क्रोधापहा, रोष का पैताम्बुजासन, लोभ का चिदासन, जो देवी के दिव्य-रूप के समान है, नाश करें ।।४८।। मोह का नाश चक्र (श्री चक्र) करे। मदन (काम-वासना) का नाश मन्त्रासन करे। मेरे मात्सर्य का नाश सान्ध्यासन करे ।।४९।।

आधार (मूलाधार) की रक्षा त्रिपुरा और स्वाधिष्ठान की रक्षा पुरेश्वरी करें। मणिपूर की रक्षा मणि-द्योता त्रिपुर-सुन्दरी करें ।।५०।। अनाहत चक्र की रक्षा भव्य त्रिपुर-वासिनी करें। विशुद्धि-चक्र की रक्षा त्रिपुरा-श्री और आज्ञा-चक्र की रक्षा त्रिपुरा-मालिनी करें ।।५१।। इडा नाड़ी की रक्षा त्रिपुर-सिद्धा और पिङ्गला नाड़ी की रक्षा त्रिपुरा करें। सुषुम्ना की रक्षा त्रिपुर-भैरवी करें ।।५२।। रोम-कूपों की रक्षा त्रैलोक्य-मोहन चक्र करे। सप्त-धातुओं (रस, रक्त, मांस, वसा, अस्थि, मज्जा, वीर्य) की रक्षा सर्वाशा-पूरक-चक्र करे ।।५३।।

प्राणादि (प्राण, अपान, समान, उदान तथा व्यान) वायु-पञ्चक को रक्षा सर्व-संक्षोभण चक्र करे। नाग आदि पाँच अनिलों (वायुओं—नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनञ्जय) की रक्षा सर्व-सौभाग्य-दायक चक्र करे ।। ५४।। कारण-चतुष्टय की रक्षा सर्वार्थ-साधक-चक्र करे। गुण-त्रय (सत्व, रज, तम) की रक्षा सर्व-रक्षा-कर चक्र करे ।।५५।। पुर्यष्टक की रक्षा सर्व-रोग-हर चक्र करे। कोष-पञ्चक (अन्न-मय कोष, प्राण-मय कोष, मनो-मय कोष, विज्ञान-मय कोष तथा आनन्द-मय कोष) की रक्षा सर्व-सिद्धि-प्रद चक्र करे ।।५६।। यश और कीर्ति को रक्षा सर्वानन्द-मय चक्र करे। सौन्दर्य की रक्षा मन्मथ (काम-देव) करें। धृति (धैर्य) को रक्षा रति करें ।।५७।। प्रीति

(प्रेम, सौहार्द्र, प्रसन्नता, आह्लाद) की रक्षा प्रीति करें। रूप की रक्षा बसन्त करें। सङ्कल्प की रक्षा कल्पकोद्यान और श्री (धन आदि) की रक्षा महा-लक्ष्मी करें ॥५८॥

कान्ति (मनोहरता) की रक्षा कपालिनी करें, मन्दिर (घर) की रक्षा मणि-मण्डप करे। पुत्रों की रक्षा शङ्ख-निधि और भार्या (पत्नी) की रक्षा पद्म-निधि करें ॥५९॥ मार्ग में क्षेमङ्करी रक्षा करें। मुकुट की रक्षा मातङ्गी करें। नव-द्वारों (मुख, नासा-पुट-द्वय, नेत्र-द्वय, कर्ण-द्वय, लिङ्ग, गुदा—ये नव-द्वार हैं) को रक्षा प्रकटा आदि योगिनियाँ करें ॥६०॥ भोजन-काल में अन्न-पूर्णा, खेलने के समय मातङ्गी रक्षा करें। दुष्टों के निग्रह के लिये सदा जागनेवाली दुर्गा वन में रक्षा करें ॥६१॥ तीन प्रकार का अहङ्कार, निष्ठुरता दोष-त्रय (कफ, वात, पित,), मल-त्रय (आणव, मायिक, कायिक) का नाश डाकिनी योगिनो सदैव करें ॥६२॥

इच्छा-शक्ति और गुरु-भक्ति की रक्षा मेरा ज्ञान करे। ज्ञान-शक्ति, क्रिया-शक्ति, वैराग्य तथा विषयों की रक्षा हृदय-कमल की कर्णिका में निवास करनेवाली ह्रीङ्कारी करें। वेखरी श्रवण-शक्ति की रक्षा करें। मनन की रक्षा मध्यमा करें ॥६३-६४॥ योग की रक्षा पश्यन्ती और ज्ञान की रक्षा परा-वाणी करें। ब्रह्माणी सोते समय और वैष्णवी जागते समय रक्षा करें ॥६५॥ सुषुप्ति (प्रगाढ़ निद्रा) में चण्डिका और तुर्यावस्था (चौथी अवस्था, जिसमें आत्मा ब्रह्म तदाकार हो जाती है) मोह-कारिणी रक्षा करें। सदैव जगद्भूरण-पण्डिता भैरवो मेरी रक्षा करें ॥६६॥

परामृत से प्लावित चरण-कमलों वाली पूर्णा कुण्डली अन्तरान्त की सदा रक्षा करे ॥६७॥ आठों दिशाओं (पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर और ईशान) की रक्षा महेन्द्र आदि (इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, कुबेर या सोम और ईशान) अपने-अपने आयुधों (वज्र, शक्ति, दण्ड, खड्ग, पाश, अंकुश, गदा और शूल) के साथ सदैव करें। ऊर्ध्व-दिशा में ब्रह्मा तथा चक्र-धारी विष्णु अधःदिशा की रक्षा करें ॥६८॥ जो स्थान कवच से अनावृत हैं, उनकी रक्षा शिव आदि गुरु-जन करें ॥६९॥

फल-श्रुति

श्री शिवजी द्वारा कथित यह सौभाग्य-कवच जो भक्तिपूर्वक तीनों सन्ध्याओं में पढ़ता, पढ़वाता या सुनता है, उसे शीघ्र ही अणिमा आदि अष्ट-सिद्धियाँ (अणिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, महिमा, ईशित्व, वशित्व और कामावसायिता) तथा गुटिका, पादुका आदि (गुटिका, पादुका, रस-सिद्धि, अन्तर्धान, खड्ग, खेचरी, यक्षिणी और वेताल-सिद्धि) आठ सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं ॥१-२॥ वशीकरण आदि आठ कर्मों (वशीकरण, शान्ति, आकर्षण, मोहन, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन और मारण) तथा अष्टाङ्ग योग (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा और समाधि) से युक्त होकर ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, कामदेव और रति के साथ ॥२-३॥ सर्वत्र विचरता हुआ सिद्धों और गन्धर्वों से सेवित होता है। उसके स्मरण मात्र से ग्रह, भूत, पिशाच, ॥४॥ कूष्माण्ड तथा भैरव आदि कीड़े-मकोड़ों के समान भाग जाते हैं। उसके पैरों से स्पृष्ट जल से महा-रोग भी शान्त हो जाते हैं ॥५॥ उसके चरण-कमलों की धूल के स्पर्श मात्र से चराचर त्रैलोक्य शीघ्र ही वश में हो जाते हैं। बालक, महिलाएँ, राजा भी माया-पूर्वक उसके वशी-भूत हो जाते हैं ॥६॥

[१]

श्रीललिता हृदय-स्तोत्रम्

।। पूर्व-पीठिका ।।

अगस्त्य उवाच—हयग्रीव ! दया-सिन्धो ! ललितायाः शुभं मम ।
हृदयं च महोत्कृष्टं कथयस्व महा - मुने ।। १

हयग्रीव उवाच—शृणु त्वं शिष्य ! वाक्यं मे हृदयं कथयामि ते ।
महा-देव्यास्तथा शक्तेः प्रीति-सम्पाद-कारकम् ।। २
बीजात्मकं महा - मन्त्र - रूपकं परमं निजम् ।
कामेश्वर्याः स्वाङ्ग - भूतं डामर्यादिभिरावृतम् ।। ३
कामाकर्ष्यादि-संयुक्तं पञ्च - काम - दुघान्वितम् ।
नव-वल्लि-समायुक्तं कादि-हादि - मतान्वितम् ।। ४
त्रिकूट - दर्शितं गुप्तं हृदयोत्तममेव च ।
मूल-प्रकृति - व्यक्तादि - कला - शोधन-कारकम् ।। ५
विमर्श - रूपकं चैव विद्या - शक्ति - षडङ्गकम् ।
षडध्व - मार्ग-पीठस्थं सौर-शाक्तादि - संज्ञकम् ।। ६
अभेद-भेद-नाशं च सर्व - वाग्-वृत्ति - दायकम् ।
तत्त्व-चक्र-मयं तत्त्व-विन्दु - नाद-कलान्वितम् ।। ७
प्रभा-यन्त्र-समायुक्तं मूल - चक्र - मयान्वितम् ।
कण्ठ-शक्ति-मयोपेतं भ्रामरी - शक्ति - रूपकम् ।। ८

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीललिता-हृदय-स्तोत्र-माला-मन्त्रस्य श्रीआनन्द-भैरव ऋषिः । अमृत-विराट् छन्दः । श्रीललिता-वाग्देवता-प्रसाद-सिद्धये जपे विनियोगाय नमः ।

ऋष्यादि-न्यासं कृत्वा कर-सम्पुटे कूट-त्रयं द्विरावृत्य षडङ्ग-द्वयम् कुर्यात् ।

ध्यानम्—द्रां द्रीं क्लीं बीज-रूपे, हसित - कह - कहे, ब्रह्म-देहान्तरङ्गे !
ब्लूं सः क्रों वर्ण-माले, सुर-गण-नमिते, तत्त्व-रूपे ! हसखफ्रें ।।
हसां हसीं हसौं बीज-रूपे, परम-सुख-करे, वीर-मातः ! स्वयम्भूः ।
ऐं सहखफ्रें बीज-तत्त्वे, कलित-कुल-कले ! ते नमः शुद्ध-वीरे ।। १

इति ध्यात्वा मनसा पञ्चधोपचर्य नव-मुद्राः प्रदर्श्य मूलं त्रि-वारं जप्त्वा योनि-मुद्रया प्रणमेत् ।

हृदय-स्तोत्रम्

हृदयाम्बुज - मध्यस्था ब्रह्मात्मैक्य - प्रदायिनी ।
त्रिपुराम्बा त्रिकोणस्था पातु मे हृदयं सदा ।। १
अवर्ण - मालिका शक्तिर्वर्णमाला - स्वरूपिणी ।
नित्याऽनित्या तत्त्वगा सा निराकार - मयान्विता ।। २
शब्द - ब्रह्म - मयी शब्द - बोधाकार - स्वरूपिणी ।
सांविदी वादि - संसेव्या सर्व - श्रुतिभिरीडिता ।। ३
महा - वाक्योपदेशानी स्वर - नाडी - गुणान्विता ।
ह्रींकार - चक्र - मध्यस्था ह्रीमुद्यान - विहारिणी ।। ४
ह्रीं मोक्ष-कारिणी ह्रीं ह्रीं, महा - ह्रींकार - धारिणी ।
काल - कण्ठी महा - देवी कुरु - कुल्ला कुलेश्वरी ।। ५
ऐं ऐं प्रकाश - रूपेण, ऐं बीजान्तर - वासिनी ।
ईशस्था ईदृशी चेशी ईं ईं वीज - करी तथा ।। ६
लक्ष्मी - नारायणान्तःस्था लक्ष्यालक्ष्य-करी तथा ।
शिवस्था हेति - वर्णस्था स - शक्तेर्वर्ण - रूपिणी ।। ७
कमलस्था कला-माला हां ह्रीं ह्रीं ह्रीं मुखी तथा ।
लावण्य - सुन्दरी पातु लक्ष्य - कोणाग्रमन्विता ।। ८
लां लां लीं लीं सुरैः स्तुत्या सां सीं सूं सैं सुरार्चिता ।
कां कीं कूं काकिनी सेव्या लां लीं लूं काकिनी-स्तुता ।। ९
बिन्दु - चक्रेश्वरी पातु द्वितीया - वर्ण - देवता ।
वसु - कोणेश्वरी देवी द्वि - दशारेश्वरी च माम् ।। १०
मन्वस्र - चक्र - मध्यस्था नाग - पत्रेश्वरी सदा ।
षोडशारेश्वरी नित्या मण्डल - त्रय - देवता ।। ११
भूपुर - त्रय - मध्यस्था द्वादश - ग्रन्थि - भेदिनी ।
हंसी हसी सु - बीजस्था हरिद्रादिभिरर्चिता ।। १२
अनन्त - कोटि - जन्मस्था जन्माजन्मत्व - वर्जिता ।

अमृताम्भोधि - मध्यस्था अमृतेशादि - सेविता ।। १३
मृतामृत - करी मूल - विराट् - शक्तिः परात्मिका ।
आत्मनं पातु मे नित्यं तथा सर्वाङ्गमेव च ।। १४
अष्ट - दिक्षु करालो सा ऊर्ध्वाधः - प्रान्तके तथा ।
गुरु-शक्ति - महा - विद्या गुरु - मण्डल - गामिनी ।। १५
सर्व - चक्रेश्वरी सर्व - ब्रह्मादिभिः सु - वन्दिता ।
सत्त्व-शक्तिः रजः - शक्तिस्तमः-शक्तिः परात्मिका ।। १६
प्रपञ्चेशी सु - कालस्था महा - वेदान्त - गर्भिता ।
कूटस्था कूट - मध्यस्था कूटाकूट - विवर्जिता ।। १७
योगाङ्गी योग-मध्यस्था अष्ट - योग - प्रदायिनी ।
नव - शक्तिः कृती माता अष्ट - सिद्धि-स्वरूपिणी ।। १८
नव - वीरावली रम्या मुक्ति - कन्या मुकुन्दगा ।
उपदेश - करी विद्या महा - मुख्य - विराजिता ।। १९
मुख्याऽमुख्या महा - मुख्या मूल - बीज - प्रवर्तिका ।
दिक् - पालकाः सदा पान्तु श्रीचक्राधि - देवताः ।। २०
दिग् - योगिन्यष्टकं पातु तथा भैरव चाष्टकम् ।
षडङ्ग - देवताः पान्तु नित्या - षोडशिकास्तथा ।। २१
नाथ - शक्तिः सदा पातु त्रिकोणान्तर - दीपिका ।
त्रि-सारा त्रय - कर्माणि नाशिनी त्रयं दर्शति ।। २२
त्रि - काला शोषणी शोष - कारिणी शोषणेश्वरी ।
भुक्ति-मुक्ति-प्रदा बाला भुवनाम्बा बगलेश्वरी +।।२३ +बुधेश्वरी
अतृप्तिस्तृप्ति - सन्तुष्टा तृप्ता तृप्त - करी सदा ।
आम्नाय - शक्तयः पान्तु आदि-शेष-सु-तल्पिनी ।। २४
राज्यत्वं देहि मे नित्यं आदि-शम्भु-स्वरूपिणी ।
सर्व-रोग - हरा सर्व - कैवल्य - पद - दायिनी ।। २५

फल-श्रुति

इदं तु हृदयं दिव्यं ललिता - प्रीति - दायकम् ।
अनेन च समं नास्ति स्तोत्रं प्रख्यात - वैभवम् ।। २६

शक्ति - रूपं शक्ति - गुप्तं प्रकटाङ्गे प्रभुं शुभम् ।
मूल - विद्यात्मकं मूल - ब्रह्म - सम्भव - कारणम् ।। २७
नादादि - शक्ति - संयुक्तमभूतमद्भुतं महत् ।
रोगहं पापहं विघ्न - नाशनं विघ्न - हारिणम् ।। २८
चिरायुष्य - प्रदं सर्व - मृत्यु - दारिद्र्य - नाशनम् ।
क्रोधहं मुक्तिदं मुक्ति - दायकं परं मे सुखम् ।। २९
रुद्रदं मृडपं विष्णुं दण्डकं ब्रह्म - रूपकम् ।
विचित्रं च सुचित्रं च सुन्दरं च सु-गोचरम् ।। ३०
नाभक्ताय न दुष्टाय नाविश्वस्ताय देशिकः ।
न दापयेत् परं विद्या - हृदयं मन्त्र - गर्भितम् ।। ३१
स्तोत्राणामुत्तमं स्तोत्रं मन्त्राणामुत्तमं मनुम् ।
वीजानामुत्तमं बीजं शाक्तानामुत्तमं शिवम् ।। ३२
पठेद् भक्त्या त्रि - कालेषु अर्ध - रात्रे तथैव च ।
वाक्-सिद्धि-दायकं नित्यं पर-विद्या-विमोहकम् ।। ३३
स्व-विद्या-स्थापकं चान्यद् यन्त्र-तन्त्रादि-भेदनम् ।
कृत्तिका - नक्षत्र-कूर्माख्ये चक्रे स्थित्वा जपेन्मनुम् ।। ३४

इति श्रीमहत्तर-योनि-विद्याया महा-तन्त्रे श्रीललिता-हृदयं सम्पूर्णम् ।

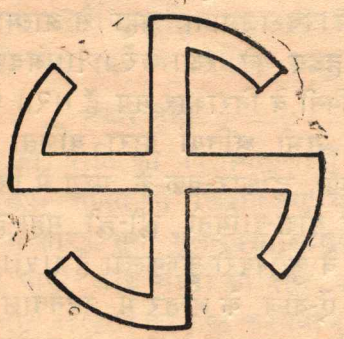

हिन्दी रूपान्तर

श्रीललिता हृदय-स्तोत्रम्

अगस्त्य जी बोले--हे दया-सागर महा-मुनि हयग्रीव जो ! मुझे ललिता का परम श्रेष्ठ 'हृदय' बताइए ।।१

हयग्रीवजी बोले--हे शिष्य ! सुनो, मैं तुम्हें 'हृदय' सुनाता हूँ, जो शक्ति को प्रसन्नता प्राप्त कराता है ।।२ यह बीजात्मक और महा-मन्त्र-रूप स्वयं कामेश्वरी का अपना अङ्गभूत है तथा डामरी आदि से आवृत है ।।३ कालाकर्षी, पञ्च-काम-दुघा, नव-वल्ली, कादि-हादि-मत से युक्त है ।।४ त्रि-कूटों का दर्शक यह गुप्त 'हृदय' श्रेष्ठ ही है और मूल-प्रकृति, व्यक्तादि कलाओं का शोधक है ।। ५ यह विमर्श-रूप, विद्या और शक्ति का षडङ्ग, षडध्व-मार्ग और पीठस्यतथा सौर-शाक्तादि का सूचक है ।।६ अभेद-भेद का नाशक, वाणी को सभी शक्तियों को देनेवाला, तत्व-चक्र-मय और तत्व, बिन्दु, नाद, कला से समन्वित है ।।७ प्रकाश-पूर्ण यन्त्र और मूल-चक्र, कण्ठ-शक्ति से युक्त यह भ्रामरी शक्ति-स्वरूप है ।। ८

विनियोग--इस श्रीललिता हृदय-स्तोत्र-माला-मन्त्र के ऋषि श्रीआनन्द-भैरव, छन्द अमृत-विराट् और विनियोग श्रीललिता वाग्-देवता की प्रसन्नता को प्राप्ति है ।

दोनों हाथों से कूट-त्रय की दुहरी आवृत्ति द्वारा दोनों षडङ्ग (कर एवं अङ्ग) न्यास कर ध्यान करे । यथा—

हे वीर-माता ! आप द्रां-द्रीं-क्लीं बीज-स्वरूपा, हसित-कह-कहा, ब्रह्म-देह को अन्तरङ्गा, ब्लूं-सः-क्रों वर्ण-माला, देव-गणों द्वारा वन्दिता, तत्व-स्वरूपा, ह्स्ख्फ्रें-ह्सां-ह्सीं-ह्सौं-बीज-स्वरूपा, परम-सुख-दायिनी, स्वयम्भू, स्ह्स्ख्फ्रें-बीज-तत्वा कलित-कुल-कला और शुद्ध-वीरा हैं । आपको नमस्कार है ।

इस प्रकार ध्यान कर मानस पञ्चोपचारों से पूजन कर नौ मुद्रायें दिखाकर तीन बार मूल-मन्त्र जप कर योनि-मुद्रा से प्रणाम करे ।

हृदय-स्तोत्र

हृदय-कमल के मध्य में विराजमाना, ब्रह्म से आत्मा का ऐक्य करानेवाली, त्रिकोण-स्थिता माता त्रिपुरा सदा मेरे हृदय को रक्षा करें ।।१।। अवर्ण-माला, शक्ति-वर्ण-माला-स्वरूपा, नित्या और अनित्या, तत्व-व्यापिनी वे निराकार-मय हैं ।।२।। शब्द-ब्रह्म-मयो, शब्द-ज्ञान-स्वरूपा, संबिद्-रूपिणी, विद्वद्-सेविता वे सभी श्रुतियों द्वारा वर्णिता हैं ।।३।। महा-वाक्यों का उपदेश करनेवाली, स्वर-नाड़ी-गुण-स्वरूपा, ह्रींकार-चक्र के मध्य में विराजनेवाली वे ह्रीं-रूपी उद्यान में विहार करती हैं ।।४।। ह्रीं से मोक्ष-दायिनी ह्रीं-ह्रीं महा-ह्रों को धारण करनेवाली, काल को कण्ठ में रखनेवाली महादेवी वे कुलेश्वरी कुरुकुल्ला हैं ।।५।।

ऐं-ऐं प्रकाश-रूपिणी, ऐं-बोज के अन्तर में रहनेवालो, ईशस्था, ईदृशी और ईशी ईं-ईं बीज-कारिणो हैं ।।६।। लक्ष्मी और नारायण के हृदय में रहनेवाली, लक्ष्य और अलक्ष्य का बोध करानेवाली, शिवस्था ह-वर्णस्था और स-शक्ति के वर्णवाली हैं ।।७।। कमल पर विराजमाना,

कला-मालावालो, ह्रां-ह्रीं-ह्रूं-ह्रौं-मुखी हैं। लक्ष्य-कोणाग्र से युक्ता लावण्य-सुन्दरी रक्षा करें ॥८॥ लां लां लीं लीं देवों से वन्दिता, सां सीं सूं सैं देवों से पूजिता, कां कीं कूं काकिनी और लां लीं लूं लाकिनी से वन्दिता हैं ॥९॥ द्वितीया वर्ण-देवता विन्दु-चक्रेश्वरी, वसु-कोणेश्वरी और द्वि-दशारेश्वरी देवी मेरी रक्षा करें ॥१०॥

मन्वस्र-चक्र के मध्य में रहनेवाली, नाग-दलों की ईश्वरी, षोडशार की ईश्वरी नित्या और तीनों मण्डल के देवता सदा रक्षा करें ॥११॥ तीनों भूपुरों के मध्य में रहनेवाली, बारह ग्रन्थियों का भेदन करनेवाली, हंसी हसी सुन्दर बोजों में अवस्थिता, हल्दी आदि द्वारा अर्चिता रक्षा करें ॥१२॥ अनन्त कोटि जन्मों में विराजिता, जन्मत्व और अजन्मत्व से विरहिता, अमृत-सागर के मध्य में रहनेवाली, अमृतेशादि से सेविता रक्षा करें ॥१३॥ मृत और अमृत करनेवाली, मूल विराट् शक्ति, परात्मिका मेरी आत्मा और सभी अङ्गों को सदा रक्षा करें ॥१४॥ आठों दिशाओं में वह कराली ऊर्ध्व तथा अधः प्रदेशों में गुरु-मण्डल में पहुँचनेवाली गुरु-शक्ति महा-विद्या रक्षा करें ॥१५॥

ब्रह्मादि सभी के द्वारा सुचारु रूप से वन्दिता, सत्व-रज-तमः शक्ति-रूपा परात्मिका रक्षा करें ॥१६॥ प्रपञ्च की स्वामिनी, सुन्दर काल में विराजमाना, महा-वेदान्त में छिपी हुई, कूटस्था, कूट-मध्यस्था, कूट और अकूट से विरहिता रक्षा करें ॥१७॥ योगाङ्गी, योग-मध्यस्था, अष्ट-योगों का ज्ञान करानेवाली, नव-शक्ति-स्वरूपा, माता, अष्ट-सिद्धियों की रूपवाली रक्षा करें ॥१८॥ नव वीरों से सुशोभिता, मुक्ति-कन्या, मुकुन्द में लीन रहनेवाली, उपदेश-दायिनी विद्या महान् प्रमुखों में विराजिता रक्षा करें ॥१९॥ मुख्या, अमुख्या और मुहा-मुख्या, मूल-बीज का प्रवर्तन करनेवाली, दिक्-पालिका, श्रीचक्र की अधि-देवता सदा रक्षा करें ॥२०॥

आठ दिग्-योगिनियाँ और आठ भैरव, षडङ्ग-देवता और सोलह नित्यायें रक्षा करें ॥२१॥ त्रिकोणान्तर को दीप्त करनेवाली नाथ-शक्ति सदा रक्षा करे। तीनों की सार-रूपा, तीनों कर्मों का क्षय करनेवाली, तीनों को दिखानेवाली रक्षा करें ॥२२॥ तीनों काल व्याप्त रहनेवाली, शोषण की ईश्वरी, भुक्ति-मुक्ति-दायिनी, बाला, भुवनाम्बा और बगलेश्वरी (बुधेश्वरी) रक्षा करें ॥२३॥ अतृप्ति, तृप्ति, सन्तुष्टा, तृप्ता, तृप्त करनेवाली, आम्नायों की शक्तियाँ, आदि-अन्त-रूपी सुन्दर बिछावनवाली सदा रक्षा करें ॥२४॥ आदि-शम्भु-स्वरूपा मुझे नित्य राज्यैश्वर्य प्रदान करें। सब रोगों को हरनेवाली, सभी मोक्ष-पदों को देनेवाली रक्षा करें ॥२५॥

फल-श्रुति

यह दिव्य 'हृदय' ललिता की प्रीति को दिलानेवाला है। इसके समान वैभव-दायक दूसरा स्तोत्र नहीं है ॥१॥ शक्ति-स्वरूप, शक्ति को छिपाये हुए यह प्रकट में शुभ-दायक प्रभु-सदृश है। मूल ब्रह्म को प्रकट करने में कारण-भूत मूल-विद्या-स्वरूप है ॥२॥ नादादि शक्तियों से युक्त यह बड़ा ही अद्भुत है। रोगों, पापों और विघ्नों का नाश करनेवाला है ॥३॥ दीर्घ आयु का देनेवाला, सभी प्रकार की मृत्यु और दरिद्रता का नष्ट करनेवाला है। क्रोध का नाशक, मुक्ति देनेवाला यह परम सुख-दायक है ॥४॥ रुद्र, विष्णु और ब्रह्मा के स्वरूपवाला यह विचित्र, सुचित्र, सुन्दर और सुदर्शन है ॥५॥

(शेष पृष्ठ २६ के नीचे)

[२]

श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरी हृदय-स्तोत्रम्

ॐ शुद्ध-स्फटिक-सङ्काशं द्वि-नेत्रं करुणा-निधिं, वराभय-करं वन्दे श्रीगुरुं शिव-रूपिणं ।।१।। भक्ताज्ञान-तमो-भानुं मूर्ध्नि पङ्कज-संस्थितं, सदा-शिव-मयं नित्यं श्रीगुरुं प्रणमाम्यहम् ।। २ ।।

श्रीविद्यां जगतां धात्रीं सर्ग - स्थिति - लयेश्वरीम्, नमामि ललितां नित्यं महा-त्रिपुर-सुन्दरीम् ।। ३ ।। बिन्दु - त्रिकोण - संयुक्तं वसु - कोण - समन्वितं, दश-कोण-द्वयोपेतं भुवनार-समन्वितम् ।। ४ ।। दलाष्टक-समोपेतं दल - षोडशकान्वितम्, वृत्त-त्रयान्वितं भूमि-सदन-त्रय-भूषितम् ।। ५ ।। नमामि ललिता-चक्रं भक्तानामेत-दिष्टदम्, अमृताम्भो-निधौ तत्र रत्न-द्वीपं नमाम्यहम् ।। ६ ।। नाना-वृक्ष-महोद्यानं वन्देऽहं कल्प-वाटिकाम्, सन्तान-वाटिकां वन्दे हरि-चन्दन-वाटिकाम् ।। ७ ।। मन्दार-वाटिकां वन्दे पारिजाताख्य-वाटिकां, नमामि तव देवेशि ! कदम्ब-वन-नाटिकां ।। ८ ।। पुष्प-राग-महा-रत्न-प्रकारं प्रणमाम्यहं, पद्मरागाख्य-मणिभिः प्राकारं सर्वदा भजे ।।९।। गोमेद-रत्न-प्राकारं वज्र-प्राकारमाश्रये, वैडूर्य-रत्न-प्राकारं प्रणमामि तवेश्वरि ।।१०।।

इन्द्र-नीलाख्य-रत्नानां प्राकारं प्रणमाम्यहं, मुक्ता-रत्न-मयं चैव प्राकारं सर्वदा भजे ।। ११ ।। मरकताख्य-महा-रत्न-प्राकाराय नमस्तव, विद्रुमाख्य-महा-रत्न-प्राकारं तु तवाश्रये ।। १२ ।। माणिक्य-मण्डपं वन्दे सहस्र-स्तम्भ - मण्डपम्, ललिते ! तव देवेशि ! भजाम्यमृत-वापिकाम् ।। १३ ।। आनन्द-वापिकां वन्दे भजे चैव विमर्शिकां, भजे बाला-तपोद्गारं चन्द्रिकोद्गारमाश्रये ।। १४ ।। सहा-शृङ्गार-परिखां महा-पद्मा-टवीं भजे, चिन्ता-मणि-महा-रत्न-गृह-राजं नमाम्यहम् ।। १५ ।। पूर्वाम्नाय-मयं पूर्व-

---

(पृष्ठ २५ का शेषांश)

अभक्त, दुष्ट और अविश्वसनीय व्यक्ति को इस मन्त्रात्मक श्रेष्ठ विद्या-हृदय को न देना चाहिए ।।६।। स्तोत्रों में श्रेष्ठ स्तोत्र, मन्त्रों में श्रेष्ठ मन्त्र, बीजों में श्रेष्ठ बीज और शाक्तों में श्रेष्ठ शिव-स्वरूप यह है ।।७।। तीनों कालों में और अर्द्ध-रात्रि के समय भक्ति-पूर्वक इसका पाठ करे। यह वाक-सिद्धि को देनेवाला और सदा शत्रु की विद्या को नष्ट करनेवाला है ।।८।। अपनी विद्या को प्रतिष्ठित करानेवाला और शत्रु के यन्त्र-तन्त्र का भेदन करनेवाला है। कृत्तिका नक्षत्र में कूर्म-चक्र पर बैठकर मन्त्र का जप करना चाहिए ।।९।।

द्वारं देवि ! भजामि ते, दक्षिणाम्नाय-रूपं ते दक्षिण-द्वारमाश्रये ।। १६ ।। नमामि ते परं द्वारं पश्चिमाम्नाय-रूपकम्, वन्देऽहमुत्तरं द्वारमुत्तराम्नाय-रूपकम् ।। १७ ।। ऊर्ध्वाम्नायमहं वन्दे ऊर्ध्व-द्वारं कुलेश्वरि, ललिते ! तव देवेशि ! महा-सिंहासनं भजे ।। १८ ।। ब्रह्मात्मक-पञ्च-पादमेकं तव नमाम्यहं, एकं विष्णु-मयं मञ्च-पादं तव नमाम्यहम् ।। १९ ।। एकं रुद्र-मयं मञ्च-पादं तव नमाम्यहं, पञ्च-पादं नमाम्येकं तव देवीश्वरात्मकम् ।। २० ।।

मञ्चैक-फलकं वन्दे सदा-शिव-मयं शुभं, नमामि ते हंस-तूल-तलिमां परमेश्वरि ।। २१ ।। भजामि ते हंस-तूल-महोपाधानमुत्तमम्, कौसुम्भास्तरणं देवि ! तव नित्यं नमाम्यहम् ।। २२ ।। महा-वितानकं वन्दे महा-जवनिकां भजे, एवं पूजा-गृहं ध्यात्वा श्रीचक्रस्य शिव-प्रिये ।। २३ ।। मद्-दक्षिणे स्थापयामि भागे पुष्पाक्षतादिकं, अभितस्ते महा-देवि ! दीपाँस्तान् दर्शयाम्यहम् ।। २४ ।। मूलेन त्रिपुरा-चक्रं तव सम्पूजयाम्यहं, त्रिभिः खण्डैस्तव त्र्यस्रं पूजयामि शिव-प्रिये ।। २५ ।। वाय्वग्नि-जल-संयुक्त-प्रणायामैरहं शिवे ! शोषणं दाहनं देवि ! करोम्याप्लावनं तथा ।। २६ ।। त्रि-वारं मूल - मन्त्रेण प्राणायामं करोम्यहं, अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि-संस्थिताः ।। २७ ।। ये भूता विघ्न-कर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया, करोम्यनेन मन्त्रेण ताल-त्रयमहं शिवे ।। २८ ।। नारायणोऽहं ब्रह्माऽहं भैरवोऽहं शिवोऽस्म्यहं, देवोऽहं परमात्माऽहं महा-त्रिपुर-सुन्दरि ।। २९ ।। ध्यात्वैवं वज्र-कवचं न्यासं तव करोम्यहं, कुमारी-बीज-संयुक्तं महा-त्रिपुर-सुन्दरि ।। ३० ।।

मां रक्ष रक्षेति हृदि करोम्यंजलिमीश्वरि ! नमो देव्यासनायेति ते करोम्यासनं शिवे ।। ३१ ।। चक्रासनं नमस्यामि सर्व-मन्त्रासनं भजे, साध्य-सिद्धासनं वन्दे मन्त्रैरेभिर्महेश्वरि ।। ३२ ।। करोम्यस्मिंश्चक्र-मन्त्र-देवतासनमुत्तमं, करोम्यथ षडङ्गाख्यं मातृकाश्च करोम्यहम् ।। ३३ ।। वशिन्याद्यष्टकं न्यासं षोढा-न्यासं करोम्यहम्, महा-षोढां ततः कुर्वे नव-योन्याख्यमुत्तमम् ।। ३४ ।। चक्र-न्यासं ततः कुर्वे श्रीकण्ठ-न्यास-मुत्तमम्, केशवादि-महा न्यासं काम-न्यासं करोम्यहम् ।। ३५ ।। कला-न्यासं ततः कुर्वे कुर्वे काम-कलाह्वयम्, पीठ-न्यासं ततः कुर्वे तत्त्व-न्यासं करोम्यहम् ।। ३६ ।। ततः करोमि स्थित्यादि-न्यासं तत् त्रिपुरेश्वरि ! ततः शुद्धोदकेनाहं वाम-भागे महेश्वरि ।। ३७ ।। करोमि मण्डलं वृत्तं चतुरस्रं शिव-प्रिये ! पुष्पैरभ्यर्च्य साधारं शङ्खं संस्थापयाम्यहम् ।। ३८ ।। अर्चयामि षडंगेन जलमापूरयाम्यहं । ददामि चादिमं

बिन्दुं कुर्वे मूलाभि-मन्त्रितम् ।। ३९ ।। तज्जलेन जगन्मातस्त्रिकोणं वृत्त-संयुतं । षट्-कोणं चतुरस्रं च मण्डलं प्रकरोम्यहम् ।। ४० ।।

विद्यया पूजनं मध्ये खण्डैस्त्यस्त्राभि-पूजनं । बीजावृत्या कोण-षट्कं पूजयामि शिव-प्रिये ।। ४१ ।। तस्मिन् दश-कला-युक्तमग्नि-मण्डलमाश्रये । धूम्रार्चिषं नमस्यामि ऊष्मां च ज्वलिनीं भजे ।। ४२ ।। ज्वालिनीं च नमस्यामि वन्देऽहं विस्फुल्लिंगिनीं । सुश्रियं च सुरूपां च कपिलां प्रणमाम्यहम् ।। ४३ ।। नौमि हव्य-वहां नित्यं भजे कव्य-वहां कलां । यादिभिः सहिता वह्नेः कला दश तथा भजे ।। ४४ ।। सूर्यस्य मण्डलं तत्र कला-द्वादशकात्मकं, अर्घ्य-पात्रे त्वहं वन्दे तपिनीं तापिनीं भजे ।। ४५ ।। धूम्रां मरीचिं वन्देऽहं ज्वालिनीं च रुचिं भजे, सुषुम्णां भोगदां वन्दे भजे विश्वां च बोधिनीम् ।।४६।। धारिणीं च क्षमां वन्दे सौरा एताः कला भजे, सोमस्य मण्डलं तत्र कलाः षोडशकात्मकाः ।।४७।। अर्घ्यामृतात्मकं वन्देऽमृतां मानदां स्तुवे, पूषां तुष्टिं भजे पुष्टिं रतिं धृतिमहं भजे ।।४८।। शशिनीं चन्द्रिकां वन्दे कान्ति ज्योत्स्नां श्रियं भजे, नौमि प्रीतिं चांगदां च पूर्णां पूर्णामृतां भजे ।।४९।। स्वरैः षोडशभिर्युक्ता भजे सोमस्य वै कलाः, त्रिकोण-लेखनं कुर्वे अकथादि-सु-रेखकम् ।।५०।।

हळक्ष-वर्ण-संयुक्तं स्थितान्तर्हंस-भास्वरम्, वाक्-काम-शक्ति-संयुक्तं हंसेनाराधयाम्य-हम् ।।५१।। वृत्ताद्-बहिः षडस्त्रे च लेखनं प्रकरोम्यहम्, पुरो-भागादि-षट्-कोणं षडं-गेनार्चयाम्यहम् ।।५२।। श्रीविद्यायाः सप्त-वारं करोम्यत्राभि-मन्त्रणम्, समर्पयामि विश्वेशि ! तस्मिन् गन्धाक्षतादिकम् ।।५३।। ध्यायामि पूजा-द्रव्यं ते सर्वं विद्या-मयं शुभम्, चतुर्नवति सन्मन्त्रान् स्पृष्ट्वा तत्-प्रजपाम्यहम् ।।५४।। वह्नेर्दश-कलाः सूर्य-कला-द्वादशकं भजे, आश्रये षोडश-कलास्तत्र सोमस्य कामदाः ।।५५।। सृष्टिमृद्धिं स्मृतिं वन्दे मेधां कान्तिं नमाम्यहम्, लक्ष्मीं धृतिं स्थिरां वन्दे स्थितिं सिद्धिं भजाम्यहम् ।।५६।। एतां ब्रह्म-कलां वन्दे जरां तां पालिनीं भजे, शान्तिं नमामीश्वरीं च रतिं वन्दे च कामिकाम् ।।५७।। वरदां ह्लादिनीं वन्दे प्रीतिं दीर्घां भजाम्यहम्, टादिभिः सहिता विष्णोः कला दश तथा भजे ।।५८।। एता विष्णोः कला वन्दे तीक्ष्णां रौद्रीं भयां तथा, निद्रां तन्द्रां क्षुधां वन्दे नमामि क्रोधिनीं क्रियाम् ।।५९।। उद्गारीं च भजे मृत्युमेता रुद्र - कला भजे, पीतां श्वेतां भजे नित्यमरुणां च तथा भजे ।।६०।।

भजेऽसितां तथाऽनन्तां षादिभिः सहितास्तथा, ईश्वरस्य कला ह्येता वन्दे नित्यमभीष्टदाः ।। ६१ ।। निवृत्तिं च प्रतिष्ठां च विद्यां शान्तिं नमाम्यहम्, इन्धिकां दीपिकां चैव रेचिकां मोचिकां तथा ।।६२।। परां सूक्ष्मां नमस्यामि नौमि सूक्ष्मामृतां कलाम्, वन्दे ज्ञानां कलां चैव तथा ज्ञानामृतां कलाम् ।।६३।। आप्यायिनीं व्यापिनीं च व्योम-रूपां नमाम्यहम्, कलाः सदा-शिवस्यैताः षोडश प्रणमाम्यहम् ।।६४।। हंसाख्यं च महा-मन्त्रं ज्योतिषं हंसमाश्रये, प्रतत्-प्रथम - विश्वान्तं मन्त्रं ज्योतिष-माश्रये ।।६५।। त्र्यम्बकं च नमस्यामि तद्-विष्णोः प्रणमाम्यहं, विष्णुर्योनिं मूल-विद्यां मन्त्रैरेभिरनुत्तमैः ।।६६।। अमृतं मन्त्रितं वन्दे चतुर्नवतिभिस्तव, अखण्डैक-रसानन्द-करेऽपर-सुधात्मनि ।।६७।। स्वच्छन्द-स्फुरणामत्र निधेह्यकुल-रूपिणि, अकुलस्थामृता-कारे शुद्ध-ज्ञान-करे परे ।।६८।। अमृतत्त्वं निधेहयस्मिन् वस्तुनि क्लिन्न-रूपिणि, तद्रूपिण्यै-करस्यत्वं कृत्वा ह्येतत्-स्वरूपिणि ।।६९।। भूत्वा परामृताऽऽकारा मयि चित्-स्फुरणं कुरु, अमृतेशीं नमस्यामि सर्वदामृत-वर्षिणीम् ।।७०।।

वाग्वादिनीं नमस्यामि श्रीविद्यां प्रणमाम्यहं, एभिर्मनूत्तमैर्वन्दे मन्त्रितं परमामृतम् ।।७१।। ज्योतिर्मयमिदं कुर्वे पर मर्घ्यं महेश्वरि, तद्-विन्दुभिर्मे शिरसि त्रिगुरून् पूजया-म्यहं ।।७२।। ब्रह्माऽहमस्मि तद्-विन्दुं कुण्डलिन्या जुहोम्यहं, हृच्चक्रस्था महा-देवीं महा-त्रिपुर-सुन्दरीम् ।।७३।। निरस्त-मोह-तिमिरां साक्षात् संवित्-स्वरूपिणीं, नासा-पुटे पर-कलामथ निर्गमयाम्यहम् ।।७४।। समानयामि तां हस्ते त्रिखण्ड-कुसुमाञ्जलौ, जगन्मा-तर्महा-देवि, महा-त्रिपुर-सुन्दरि ।।७५।। सुधा-चैतन्य-मूर्तिं ते कल्पयामि नमः शिवे, अनेन मनुना देवि ! यन्त्रे त्वां स्थापयाम्यहं ।।७६।। महा-पद्म-वनान्तःस्थे कारणानन्द-विग्रहे, सर्व-भूत-हिते मातरेह्योहि परमेश्वरि ।।७७।। देवेशि ! भक्ति-सुलभे ! सर्वा-वरण-संयुते ! यावत् त्वां पूजयिष्यामि तावत् त्वं सुस्थिरा भव ।।७८।। अनेन मन्त्र-युग्मेन त्वामत्रावाहयाम्यहम् । कल्पयामि नमः पाद्यमर्घ्यं ते कल्पयाम्यहम् ।।७९।। सुगन्ध-तैलाभ्यङ्गं च मज्ज-शाला-प्रवेशनं, कल्पयामि नमस्तस्मिन् मणि-पीठोपवेशनं ।।८०।।

दिव्य-स्नानीयमीशानि ! गृहाणोद्वर्तनं शुभं । गृहाणोष्णोदक-स्नानं कल्पयामि नमस्तव ।।८१।। हेम-कुम्भ-च्युतैस्तीर्थैः कल्पयाम्यभिषेचनम्, कल्पयामि नमस्तुभ्यं धौतेन परि-मार्जनम् ।।८२।। बाल-भानु-प्रतीकाशं दुकूल-परिधानकम्, अरुणेन दुकूले-नोत्तरीयं कल्पयामि ते ।।८३।। प्रवेशनं कल्पयामि तवालेपन-मण्डपं, नमस्ते कल्पया-म्यत्र मणि-पीठोपवेशनम् ।।८४।। अष्ट-गन्धैः कल्पयामि सर्वाङ्गेषु विलेपनं, कालागरु-

महा-धूपस्तव केश-भरस्य हि ॥८५॥ मल्लिका-मालती-जाती-चम्पकादि-मनोरमैः, रचिताः कुसुमैर्मालाः कल्पयामि नमस्तव ॥८६॥ प्रवेशनं कल्पयामि नमो भूषण-मण्डपं, उप-वेशं रत्न-पीठे तत्र ते कल्पयाम्यहम् ॥८७॥ नव-माणिक्य-मुकुटं तच्चन्द्र-शकलं ततः, ततः सीमन्त-सिन्दूरं ततस्तिलकमुत्तमम् ॥८८॥ कालांजनं कल्पयामि पाली-युगलमुत्तमं, मणि-कुण्डल-युग्मं ते नासाभरणमीश्वरि ॥८९॥ ते कल्पयामि त्रिपुरे ! ललिताऽधर-यावकं, अथाऽऽद्य-भूषणं कण्ठे हेम-चिन्ताकमुत्तमम् ॥९०॥

पदकं ते कल्पयामि महा-पदकमुत्तमम्, कल्पयामि नमो मुक्तावलिमेकावलिं च ते ॥९१॥ छन्न-वीरं च केयूर-युगलानां चतुष्टयं, वलयावलिमीशानि ! ऊर्मिका-वलिमीश्वरि ॥९२॥ कांची-दाम-कटी-सूत्रं सौभाग्याभरणं च ते, त्रिपुरे पाद-कटकं कल्पये रत्न-नूपुरम् ॥९३॥ पादांगुलीयकं तुभ्यं पाशमेक-करे तव, अन्यस्मिन्नंकुशं देवि ! पुण्ड्रेक्षु-धनुषं परे ॥९४॥ अपरे पुष्प-बाणाँश्च श्रीमन्माणिक्य-पादुके, नवावरण-देवीभिर्महा-चक्राधिरोहणम् ॥९५॥ कामेश्वराङ्क-पर्यङ्क उपवेशनमुत्तमं, सुधासवाख्यं चषकं ततः आचमनीयकम् ॥९६॥ कर्पूर-वीटिकां तुभ्यं कल्पयामि नमः शिवे, आन-न्दोल्लास-वेलास-हासं ते कल्पयाम्यहम् ॥९७॥ मंगलारार्तिकं देवि ! छत्रं ते कल्पया-म्यहं, ततश्चामर-युग्मं ते दर्पणं कल्पयाम्यहम् ॥९८॥ ताल-वृन्तं कल्पयामि गन्धं पुष्पं महेश्वरि ! धूपं दीपं च नैवेद्यं कल्पयामि नमस्तव ॥९९॥ अथाऽहं वैन्दवे चक्रे सर्वा-नन्द-मयात्मिके ! रत्न-सिंहासने रम्ये समासीनां शिव-प्रियां ॥१००॥

उद्यद्भानु-सहस्राभां जपा-पुष्प-सम-प्रभां, नव-रत्न-प्रभा-दीप्त-मुकुटेन विराजि-ताम् ॥१०१॥ चन्द्र-रेखा-समोपेतां कस्तूरी-तिलकाञ्चितां, काम-कोदण्ड-सौन्दर्य-र्निजित-भ्रू-लता-युगाम् ॥१०२॥ अंजनाञ्चित-नेत्रां तां पद्म-पत्र-निभेक्षणां, मणि-कुण्डल-संयुक्त-कर्ण-द्वय-विराजिताम् ॥१०३॥ मुक्ता-माणिक्य-खचित-नासिकाभरणान्वितां, मद-पाटल-संयुक्त-कपोल-युगलान्विताम् ॥१०४॥ पक्व - बिम्ब - फलाभासाधर - द्वय-विराजितां, शुद्ध - मुक्तावलि-प्रख्य-दन्त-पङ्क्ति-विराजिताम् ॥१०५॥ ताम्बूल-पूरित-मुखीं सुस्मितास्य-विराजितां, आद्य-भूषण-संयुक्तां हेम-चिन्ताक-संयुताम् ॥१०६॥ पद-केन समोपेतां महा-पदक-संयुतां, मुक्तावलि-समोपेतामेकावलि-विराजिताम् ॥१०७॥ केयूराङ्गद-संयुक्त-चतुर्बाहु-विराजितां, अष्ट-गन्ध-समोपेतां श्रीचन्दन-विलेपनां ॥१०८॥ हेम - कुम्भ - सम - प्रख्य - स्तन-द्वय - विराजितां, रक्त-वस्त्र-परीधानां रक्त-कंचुक-

संयुतां ॥१०६॥ सूक्ष्म-रोमावली-युक्त-तनु-मध्य-विराजितां, मुक्ता - माणिक्य-खचित-काञ्ची-युत-नितम्बिनीम् ॥११०॥

सदाशिवाङ्कस्थ-पृथु-महा-जघन-मण्डलां, कदली - स्तम्भ-संकाश-ऊरू-युग्म-विराजितां ॥१११॥ कदली-कान्ति-संकाश-जङ्घा-युगल-शोभितां, गूढ-गुल्फ-द्वयोपेतां रक्त-पाद-युगान्वितां ॥११२॥ ब्रह्मा-विष्णु-महादेव-शिरो-मुकुट-जातया, कान्त्या विराजित-पदां भक्त-त्राण-परायणां ॥११३॥ इक्षु-कार्मुक-पुष्पेषु पाशाङ्कुश-धरां परां, संवित्-स्वरूपिणीं देवीं ध्यायामि परमेश्वरीं ॥११४॥ प्रदर्शयाम्यथ शिवे ! नव-मुद्रा वर-प्रदाः, त्वां तर्पयामि त्रिपुरे ! त्रिधा मूलेन पार्वति ॥११५॥ आग्नेय्यामीश-दिग्-भागे नैऋत्यां मारुते तथा, मध्ये दिक्षु षडङ्गानि क्रमादभ्यर्चयाम्यहम् ॥११६॥ आद्यां कामेश्वरीं वन्दे नमामि भग-मालिनीं, नित्य-क्लिन्नां नमस्यामि भेरुण्डां प्रणमाम्यहम् ॥११७॥ वन्हि-वासां नमस्यामि महा-वज्रेश्वरीं स्तुवे, शिव-दूतीं नमस्यामि त्वरितां कुल-सुन्दरीम् ॥११८॥ नित्यां नील-पताकां च विजयां सर्व-मङ्गलां, ज्वाला-मालां च चित्रां च महा-नित्यां च संस्तुवे ॥११९॥ दिव्यौघेभ्यो नमस्यामि परेश-परमेश्वरीं, मित्रेशमथ षष्ठीशमुड्डीशं प्रणमाम्यहम् ॥१२०॥

चर्या-नाथं नमस्यामि लोपा-मुद्रामहं भजे, अगस्त्यं प्रणमस्यामि सिद्धौघे काल-तापनम् ॥१२१॥ धर्माचार्यं नमस्यामि मुक्त-केशीश्वरं भजे, भजे दीप-कला-नाथं मानवौघे ततः परम् ॥१२२॥ विष्णु-देवं नमस्यामि प्रभा-करमहं भजे, तेजो-देवं नमस्यामि मनोजमथ संस्तुवे ॥१२३॥ कल्याण-देवं कलये रत्न-देवं भजाम्यहं, वासु-देवं नमस्यामि श्रीरामानन्दमाश्रये ॥१२४॥ परमेष्ठि-गुरुं वन्दे परमं गुरुमाश्रये, श्रीगुरुं प्रणमस्यामि मूर्ध्नि ब्रह्म-बिले स्थितम् ॥१२५॥ कं बिलेऽहं नमस्यामि श्रीगुरोः पादुकां ततः, अथ प्राथमिके देवि ! चतुरस्रे तवेश्वरि ॥१२६॥ अणिमां लघिमां वन्दे महिमां प्रणमाम्यहं, ईशित्व-सिद्धिं वन्देऽहं वशित्वं च नमाम्यहम् ॥१२७॥ प्राकाम्य-सिद्धिं वन्देऽहं भुक्तिमिच्छामहं भजे, प्राप्ति-सिद्धिं सर्व - काम - प्रदा - सिद्धिमहं भजे ॥१२८॥ मध्यमे चतुरस्रेऽहं ब्राह्मीं माहेश्वरीं भजे, कौमारीं वैष्णवीं वन्दे वाराहीं प्रणमाम्यहम् ॥१२९॥ माहेन्द्रीमपि चामुण्डां महा-लक्ष्मीमहं भजे, तृतीये चतुरस्रेऽहं सर्व-संक्षोभिणीं भजे ॥१३०॥

सर्व-विद्राविणीं मुद्रां सर्वाकर्षिणिकां भजे, मुद्रां वशङ्करीं वन्दे सर्वोन्मादिनिकां भजे ॥१३१॥ भजे महांकुशां मुद्रां खेचरीं प्रणमाम्यहं, बीज-मुद्रां योनि-मुद्रां भजे

सर्व-त्रिखण्डिनीम् ।।१३२।। त्रैलोक्य-मोहनं चक्रं नमामि ललिते ! तव, नमामि योगिनीं तत्र प्रकटाख्यामभीष्टदाम् ।।१३३।। सुधार्णवासनं वन्दे तत्र ते परमेश्वरि, चक्रेश्वरीं तत्र वन्दे त्रिपुरां परमेश्वरीम् ।।१३४।। सर्वे-संक्षोभिणीं मुद्रां ततोऽहं कलये शिवे, अथाहं षोडश-दले कामाकर्षणिकां भजे ।।१३५।। बुद्ध्याकर्षणिकां वन्देऽहंकाराकर्षणीं भजे, शब्दाकर्षणिकां वन्दे स्पर्शाकर्षणिकां भजे ।।१३६।। रूपाकर्षणिकां वन्दे रसाकर्षणिकां भजे, गन्धाकर्षणिकां वन्दे चित्ताकर्षणिकां भजे ।।१३७।। धैर्याकर्षणिकां वन्दे स्मृत्याकर्षणिकां भजे, नामाकर्षणिकां वन्दे बीजाकर्षणिकां भजे ।।१३८।। आत्माकर्षणिकां वन्दे ह्यमृताकर्षणीं भजे, शरीराकर्षणीं वन्दे नित्यां श्रीपरमेश्वरीम् ।।१३९ सर्वाशा - पूरकं चक्रं कलयेऽहं तवेश्वरि, गुप्ताख्यां योगिनीं वन्दे तत्राहं गुप्त-पूजिताम् ।।१४०।।

पोताम्बुजासनं तत्र नमामि ललिते ! तव, त्रिपुरेशीं महा-देवीं भजामीष्टार्थ-सिद्धिदां ।।१४१ सर्व-विद्राविणीं मुद्रां तत्राहं तां विचिन्तये, शिवे ! तवाष्ट-पत्रेऽहमनङ्ग-कुसुमां भजे ।।१४२ अनङ्ग-मेखलां वन्दे ह्यनङ्ग-मदनां भजे, ततोऽहं प्रणमस्यामि ह्यनङ्ग-मदनातुराम् ।।१४३ अनङ्ग-रेखां कलये भजे तेऽनङ्ग-वेगिनीं, भजेऽनंगांकुशां देवि ! तव चानङ्ग-मालिनीम् ।।१४४ सर्व-संक्षोभणं चक्रं तत्राहं कलये सदा, वन्दे गुप्त-तराख्यां तां योगिनीं सर्व-कामदाम् ।।१४५ तत्राहं प्रणमस्यामि देव्यात्मासनमुत्तमं, नमामि जगदीशानीमहं त्रिपुर-सुन्दरीम् ।।१४६ सर्वाकर्षिणिकां मुद्रां तत्राहं कलयामि ते, भुवनारे तव शिवे ! सर्व - संक्षोभिणीं भजे ।।१४७ सर्व-विद्राविणीं वन्देऽहं सर्वाकर्षिणिकां भजे, सकलाह्लादिनीं वन्दे सर्व-सम्मोहिनीं भजे ।।१४८ सकल-स्तम्भिनीं वन्दे कलये सर्व-जम्भिनीं, वशङ्करीं नमस्यामि सर्व-रंजनिकां भजे ।।१४९ सकलोन्मादिनीं वन्दे भजे सर्वार्थ-साधिनीं, सम्पत्ति-पूरिणीं वन्दे सर्व-मन्त्र-मयीं भजे ।।१५०

भजाम्यहं ततः शक्तिं सर्व - द्वन्द्व - क्षयङ्करीं, तत्राहं कलये चक्रं सर्व - सौभाग्य-दायकं ।।१५१ नमामि जगतां धात्रीं संप्रदायाख्य-योगिनीं, शिवे ! तव नमस्यामि श्रीचक्रासनमुत्तमम् ।।१५२ नमामि जगदीशानीमहं त्रिपुर-वासिनीं, कलयेऽहं तव शिवे ! मुद्रां सर्व-वशङ्करीम् ।।१५३ बहिर्दशारे ते देवि ! सर्व-सिद्धि-प्रदां भजे, सर्व-सम्पत्-प्रदां वन्दे भजे सर्व - प्रियङ्करीम् ।।१५४ नमाम्यहं ततो देवीं सर्व - मङ्गल-कारिणीं, सर्व-काम-प्रदां वन्दे सर्व-दुःख-विमोचिनीम् ।।१५५ सर्व-मृत्यु-प्रशमनीं सर्व-विघ्न-निवारिणीं, सर्वाङ्ग-सुन्दरीं देवीं सर्व-सौभाग्य-दायिनीम् ।।१५६ सर्वार्थ-साधकं

चक्रं तथाऽहं कलये सदा, कलयामि ततो देवीं कुलोत्तीर्णाख्य-योगिनीम् ।।१५७ सर्व-मन्त्रासनं वन्दे त्रिपुरा-श्रियमाश्रये, कलयामि ततो मुद्रां सर्वोन्मादन-कारिणीम् ।।१५८ अन्तर्दशारे ते देवि ! सर्वज्ञां प्रणमाम्यहम्, सर्व - शक्ति नमस्यामि सर्वैश्वर्य - प्रदां भजे ।।१५९ सर्व-ज्ञान-मयीं वन्दे सर्व-व्याधि-विनाशिनीं, सर्वाधार-स्वरूपां च सर्व-पाप-हरां भजे ।।१६०

सर्वानन्द-मयीं वन्दे सर्व-रक्षा-स्वरूपिणीं, प्रणमामि महा - देवीं सर्वेप्सित - प्रदां भजे ।।१६१ सर्व-रक्षा - करं चक्रं तत्राहं कलये सदा, निगर्भ - योगिनीं वन्दे तत्राहं परमेश्वरीम् ।।१६२ साध्य-सिंहासनं वन्दे भजे त्रिपुर-मालिनीं, कलयामि ततो देवि ! मुद्रां सर्व-महांकुशाम् ।।१६३ अष्टारे वशिनीं वन्दे भजे कामेश्वरीं सदा, मोदिनीं विमलां वन्दे ह्यरुणां जयिनीं भजे ।।१६४ सर्वेश्वरीं नमस्यामि कौलिनीं प्रणमाम्यहं, सर्व-रोग-हरं चक्रं तवाहं देवि ! चिन्तये ।।१६५ रहस्य - योगिनीं देवीं सदाऽहं कलयामि ते, नमामि त्रिपुरा-सिद्धां भजे मुद्रां च खेचरीम् ।।१६६ महा-त्रिकोणस्य बाह्ये चतुर्दिक्षु महेश्वरि, नमामि जम्भणान् बाणान् चापं सम्मोहनं भजे ।।१६७ पाशं वशङ्करं वन्दे भजे स्तम्भनमंकुशं, त्रिकोणेऽहं जगद्धात्रीं महा-कामेश्वरीं भजे ।।१६८ महा-वज्रेश्वरीं वन्दे महा-श्री-मालिनीं, महा-श्री-सुन्दरीं वन्दे सर्व-काम-फल-प्रदाम् ।।१६९ सर्व-सिद्धि-प्रदं चक्रं तव देवि ! नमाम्यहम्, नमाम्यति-रहस्याख्यां योगिनीं तत्र काम-दाम् ।।१७०

त्रिपुराम्बां नमस्यामि बीज-मुद्रां नमाम्यहं, मूल-मन्त्रेण ललिते ! त्वां बिन्दौ पूजयाम्यहम् ।।१७१ सर्वानन्द-मयं चक्रं नमामि ललिते ! तव, परापर-रहस्याख्यां योगिनीं कलये सदा ।।१७२ महा-चक्रेश्वरीं वन्दे योनि-मुद्रामहं भजे, धूपादिकं सर्व-मयि ! ते कल्पयाम्यहम् ।।१७३ त्वत्-प्रीतये महा-मुद्रां दर्शयामि ततः शिवे, त्रिधा त्वां मूल-मन्त्रेण तर्पयामि ततः शिवे ।।१७४ शाल्यन्नं मधु-संयुक्तं पायसापूप-संयुतं, घृत-सूप-समायुक्तं सर्व-भक्ष्य-समन्वितम् ।।१७५ स-सितं क्षीर-संयुक्तं बहु-शाक-समन्वितं, निक्षिप्य काञ्चने पात्रे नैवेद्यं कल्पयामि ते ।।१७६ संकल्प्य बिन्दुना वक्त्रं कुचौ बिन्दु-द्वयेन च, योनिं तु स-परार्धेन कृत्वा श्रीत्रिपुरे ! तव ।। १७७ एतत् काम-कला-रूपं भक्तानां सर्व-कामदं, सर्व-सम्पत्-प्रदं वन्दे नमस्ते त्रिपुरेश्वरि ।।१७८ वाम-भागे त्रिकोणं च वृत्तं च चतुरस्रकं, कृत्वा गन्धाक्षताद्यैश्च ह्यर्चयामि महेश्वरि ।।१७९

वाग्भवाद्यं नमस्यामि तत्र व्यापक-मण्डलं, जल-युक्तार्द्रान्न-युक्तं मकार-त्रय-भाजनम् ॥ १८०

तत्र विन्यस्य दास्यामि भूतेभ्यो बलिमुत्तमं, नमस्ते देव-देवेशि ! नमस्त्रैलोक्य-वन्दिते ॥१८१ नमः पर-शिवाङ्कस्थे नमस्त्रिपुर-सुन्दरि, प्रदक्षिणां नमस्कारं मन-साऽहं करोमि ते ॥१८२ ततः सकल-मन्त्राणां सम्राज्ञीं परमेश्वरीं, प्र-जपामि महा-विद्यां त्वत्-प्रीत्यर्थमहं सदा, तव विद्यां प्रजप्त्वाऽथ स्तौमि त्वां परमेश्वरीं ॥१८३ महा-देवि ! महेशानि ! सदा-शिव-महा-प्रिये, महा-नित्ये ! महा-सिद्धे ! त्वामहं शरणं व्रजे ॥१८४ जय त्वं त्रिपुरे, देवि, ललिते ! जगदीश्वरि, सदा-शिव-प्रिय-करि ! पाहि मां करुणा-करि ॥१८५ जगन्मातर्जगद्-रूपे जगदीश्वर-वल्लभे, जगन्मये जग-स्तुल्ये गौरि ! त्वामहमाश्रये ॥१८६ अनाद्ये सर्व-लोकानामाद्ये भक्तेष्ट-दायिनि, गिरि-राजस्य तनये ! नमस्ते त्रिपुरेश्वरि ॥१८७ जयादि-देव-देवेशि ! ब्रह्म-मातर्नमो-ऽस्तु ते, विष्णु-मातरनाद्यन्ते हर-मातः सुरेश्वरि ॥१८८ ब्रह्मादि-सुर-संस्तुत्ये लोक-त्रय-वशङ्करि, सर्व-सम्पत्-प्रदे, नित्ये ! त्वामहं कलये सदा ॥१८९ नित्यानन्दे निरा-धारे, चिद्-रूपिणि, शिव-प्रिये, अणिमादि-गुणाधारे ! त्वां सदा कलयाम्यहम् ॥१९०

ब्राह्म्यादि-मातृ-संस्तुत्ये ! सर्वावरण-संयुते, ज्योतिर्मये, महा-रूपे ! पाहि मां त्रिपुरे ! सदा ॥१९१ लक्ष्मी-वाण्यादि-सम्पूज्ये ! ब्रह्म-विष्णु-शिव-स्तुते, भजामि तव पादाब्जं सर्व-काम-फल-प्रदम् ॥१९२ सर्व-शक्ति-समोपेतं सर्वाभीष्ट-फल-प्रदे, नमामि तव पादाब्जं देवि ! त्रिपुर-सुन्दरि ॥१९३ त्वत्-प्रियार्थं ततः कांश्चिच्छक्ति सम्पूजया-म्यहम्, म-पञ्चकेन तां शक्तिं तर्पयामि महेश्वरि ॥१९४ तयोपेतं हविः-शेषं चिदग्नौ प्रजुहोम्यहम्, त्वत्-प्रियार्थं महा-देवि ! ममाभीष्टार्थ-सिद्धये ॥१९५ बद्ध्वा तां खेचरीं मुद्रां क्षमस्वोद्वासयाम्यहम्, तिष्ठ मे हृदये नित्यं त्रिपुरे ! परमेश्वरि ॥१९६ जगदम्बे, महा-राज्ञि, महा-शक्ति, शिव-प्रिये ! हृच्चक्रे तिष्ठ सततं महा-त्रिपुर-सुन्दरि ॥१९७ सर्व-लोकैक-सम्पूज्ये ! सकलावरणैर्युते ! हृच्चक्रे तिष्ठ मे नित्यं महा-त्रिपुर-सुन्दरि ॥१९८

फल-श्रुति

एतत् त्रिपुर-सुन्दर्या हृदयं सर्व-कामदं, महा-रहस्यं परमं दुर्लभं दैवतैरपि ॥१ साक्षात् सदा-शिवेनोक्तं गुह्याद्-गुह्यमनुत्तमं ॥२ यः पठेन्नित्यमेकाग्रः श्रुणुयाद् वा

समाहितः, नित्य-पूजा-फलं देव्याः स लभेन्नात्र संशयः ।।३ पापैः स मुच्यते सद्यः काय-वाक्-चित्त - सम्भवैः, सर्व-जन्म-समुद्भूतैर्ज्ञान-कृतैरपि ।।४ सर्व-क्रतुषु यत् पुण्यं सर्व-तीर्थेषु यत् फलम्, तत्-पुण्यं लभते नित्यं मानवो नात्र संशयः ।।५ अचलां लभते लक्ष्मीं त्रैलोक्ये चापि दुर्लभां, साक्षाद् विष्णु-समो मर्त्यो शीघ्रमेव भवेत् सदा ।।६ अष्टैश्वर्यमवाप्नोति स शीघ्रं मानवोत्तमः, गुटिका-पादुका-सिद्ध्याद्यष्टकं शीघ्रमश्नुते ।।७ शङ्खाद्या निधयो वाऽपि तं नित्यं पर्युपासते, वश्यादीन्यष्ट-कर्माणि शीघ्रं सिद्ध्यन्ति सर्वदा ।।८ भू-लोकस्थाः सर्व-नार्यः पातालस्थाः सदाङ्गनाः, सर्व-लोक-स्थिताः सर्वा याश्चान्या रूप-गर्विताः ।।९ रमन्ते तेन सततं शीघ्रं वश्या न संशयः, राजाद्याः सकला मर्त्याः हर-हर्यादयः सुराः ।।१० अनन्ताद्या महा-नागाः सिद्ध-योगेश्वरादयः, ऋषयो मुनयो यक्षास्तं नित्यं पर्युपासते ।।११ महतीं कीर्तिमाप्नोति शिव-विष्णु-सम-प्रभां, परमं योगमासाद्य खेचरो जायते सदा ।।१२ अप-मृत्यु-विनिर्मुक्तः काल-मृत्यु-विवर्जितः, परमायुष्यमाप्नोति हर-हर्यादि-दुर्लभम् ।।१३ अश्रुतानि च शास्त्राणि व्याचष्टे विधि-वत् सदा, मूढोऽपि सर्व-विद्या-वान् दक्षिणामूर्ति-वद्भवेत् ।।१४ ग्रह-भूत-पिशाचाद्या यक्ष-गन्धर्व-राक्षसाः, एतस्य स्मरणादेव विनश्यन्ति हि सर्वदा ।।१५ तद्-गात्रं प्राप्य सकलं विषं सद्यो विनश्यति, सहस्र-काम - सङ्काशः कान्त्या यः सर्वदा भवेत् ।।१६ तस्मादेतत् पठेत् स्तोत्रं त्रिपुरा-हृदयं शुभं, जपेद् यः सर्वदा साक्षाद् भवेद् देवी-स्वरूपकः ।।१७ साङ्गं त्रिपुर-सुन्दर्या नित्य-पूजा-फलं लभेत्, विमुक्तो रोग-सङ्घातैरारोग्यं महदश्नुते ।।१८ प्राप्नोति महदैश्वर्यं सर्व-विद्या-निधि-र्भवेत्, तत्कर-स्पर्श-मात्रेण नरो ब्राह्मणतां लभेत् ।।१९ मुच्यते सकलैर्विघ्नैः स नित्यं मानवोत्तमः, स भुंक्ते सकलान् भोगान् दुर्लभांश्च दिने दिने ।।२० लभते पुत्र-पौत्रांश्च महा-लक्ष्मी-समन्वितान्, परमायुष्य-संयुक्तान् साक्षाच्छिव-समान् गुणैः ।।२१ सृष्टि-पालन-संहार-कर्तेवायं सदा भवेत्, यस्ते कृपा-वान् भवति स त्रिमूर्तिर्न संशयः ।।२२ तत्-समीप-स्थितः शीघ्रं सदा जाति-स्मरो-भवेत्, तस्य गेहे सदा काम-धेनुः कल्प-तरुस्तथा ।।२३ चिन्ता-मणिश्च सततं तिष्ठत्येव न संशयः, महा-जयमवाप्नोति सदा सर्वत्र मानवः ।। २४ वज्र-काय-समो भूत्वा चरत्येव जगत्ययम्, महा-सुखी भवेन्नित्यं परमात्मा भवेत् सदा ।।२५ मुच्यते सकलेभ्योऽपि बन्धनैः शृङ्खलादिभिः, तं पूजयन्ति सततं हरि-रुद्रादयोऽपि च ।।२६ शुभमेव भवेन्नित्यं सदापद्भिर्विमुच्यते, देव-गन्धर्व-रक्षाद्यैर्ब्रह्माद्यैरपि दुर्लभान् ।।२७ प्राप्नोति सकलान् कामान् शीघ्रमेव न संशयः,

दिव्य-भोग-युतो दिव्य-कन्याभिः सह संयुतः ॥२८ विमानं स समास्थाय दिव्याभरण-भूषितः, दिव्य-चन्दन-लिप्ताङ्गः सदा विंशति-वार्षिकः ॥२९ स भुङ्क्ते सकलान् भोगान् देव-लोके नरः सदा, तस्मादेतत् पठेत् स्तोत्रं त्रिपुरा-हृदयं शुभम्, जपेद्यः सततं भक्त्या भवेत् साक्षात् सदा-शिवः ॥३०

॥ श्रीरुद्र-यामले ईश्वर-पार्वती-संवादे श्रीत्रिपुर-सुन्दरी-हृदय-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

हिन्दी-रूपान्तर

श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरी हृदय-स्तोत्र

उज्ज्वल स्फटिक के समान आभावाले शिव-स्वरूप श्रीगुरुदेव की मैं वन्दना करता हूँ, जो द्वि-नेत्र हैं और अपने हाथों में वर और अभय मुद्रा धारण किए हैं ॥ १ मूर्धा (शिर) में सहस्रार-पद्म में विराजमान सदा-शिव-मय श्रीगुरुदेव भक्तों के अज्ञानान्धकार को नष्ट करने में सूर्य के समान हैं, उन्हें मैं नित्य प्रणाम करता हूँ ॥२

जगज्जननी श्रीविद्या सृष्टि, स्थिति, संहार की ईश्वरी हैं, उन महा-त्रिपुर-सुन्दरी ललिता को मैं नित्य प्रणाम करता हूँ ॥३ विन्दु-त्रिकोण, अष्ट-कोण, दो दश-कोणों और चतुर्दश-कोण से युक्त ॥४ अष्ट-दल, षोडश-दलों, वृत्त-त्रय और तीन भू-गृहों से शोभित ॥५ ललिता-चक्र को नमन करता हूँ, जो भक्तों को अभीष्ट देता है। अमृत-सागर में स्थित रत्न-द्वीप को नमन करता हूँ ॥६ विविध वृक्षों वाले विशाल वन की मैं वन्दना करता हूँ; कल्प-वाटिका, सन्तान-वाटिका और हरि-चन्दन-वाटिका को वन्दना करता हूँ ॥७ मन्दार-वाटिका, पारिजात-वाटिका की वन्दना करता हूँ। हे देवेशि ! तुम्हारी कदम्ब-वन-वाटिका को नमन करता हूँ ॥ ८ महा-रत्न पुष्प-राग के प्राकार को मैं प्रणाम करता हूँ, पद्मराग-मणियों से बने प्राकार का सदा भजन करता हूँ ॥९ गोमेद-रत्न और वज्र से बने प्राकार का सहारा लेता हूँ। हे ईश्वरि, तुम्हारे वैडूर्य-रत्न के प्राकार को प्रणाम करता हूँ ॥१०

इन्द्र-नील रत्नों के प्राकार को मैं प्रणाम करता हूँ और मुक्ता-रत्नों से परिपूर्ण प्राकार का सदा भजन करता हूँ ॥११ महा-रत्न मरकत से बने तुम्हारे प्राकार को नमन है। महा-रत्न विद्रुम से बने तुम्हारे प्राकार का सहारा लेता हूँ ॥१२ सहस्र खम्भोंवाले माणिक्य-मण्डप की वन्दना करता हूँ। हे देवेशी ललिते ! तुम्हारी अमृत-बावली का भजन करता हूँ ॥१३ विमर्श-ज्ञान देनेवाली आनन्द-बावली की वन्दना करता हूँ। बाल-सूर्य की किरणों का भजन करता हूँ, चन्द्रिका की किरणों का सहारा लेता हूँ ॥१४ विशाल शृङ्गार-परिखा और पद्मों के विशाल वन का भजन करता हूँ। महा-रत्न चिन्ता-मणि से बने गृह-राज को मैं नमन करता हूँ ॥१५ हे देवि ! पूर्वाम्नाय से युक्त तुम्हारे पूर्व - द्वार का भजन करता हूँ, तुम्हारा दक्षिण द्वार दक्षिणाम्नाय-स्वरूप है, उसका सहारा लेता हूँ ॥१६ पश्चिमाम्नाय - रूपी तुम्हारे परम द्वार को नमन

करता हूँ। उत्तराम्नाय-रूपी उत्तर-द्वार की मैं वन्दना करता हूँ ।।१७ हे कुलेश्वरि ! ऊर्ध्व-द्वार में ऊर्ध्वाम्नाय की वन्दना करता हूँ। हे देवेशो ललिते ! तुम्हारे विशाल सिंहासन का भजन करता हूँ ।।१८ तुम्हारे मञ्च के एक ब्रह्मात्मक पाए को मैं नमन करता हूँ, तुम्हारे मञ्च के एक विष्णु-मय पाये को मैं नमन करता हूँ।।१९ तुम्हारे मञ्च के एक रुद्र-मय पाये को मैं नमन करता हूँ, तुम्हारे मञ्च के एक ईश्वरात्मक पाए को नमन करता हूँ ।।२०

मञ्च के सदा - शिव-मय एक शुभ फलक की वन्दना करता हूँ। हे परमेश्वरि ! तुम्हारे हंसात्मक गद्दे को नमन करता हूँ ।। २१ तुम्हारे हंसात्मक विशाल ओढ़न का भजन करता हूँ । हे देवि ! तुम्हारे कौसुम्भ बिछौने को नित्य नमन करता हूँ ।।२२ विशाल चँदोवे और पर्दे का भजन करता हूँ। हे शिव-प्रिये ! इस प्रकार श्रीचक्र के पूजा-गृह का ध्यान कर ।।२३ अपनी दाँई और पुष्पाक्षतादि को रखता हूँ। हे महा-देवि ! तुम्हारे दोनों ओर दीपक हैं, उन्हें मैं दिखाता हूँ ।।२४ मूल - मन्त्र से मैं तुम्हारे त्रिपुरा-चक्र का पूजन करता हूँ, हे शिव-प्रिये ! तीन खण्डों (ऐं, क्लीं, सौः) से तुम्हारे त्रिकोण की पूजा करता हूँ ।।२५ हे शिवे ! वायु, अग्नि, जल-बीजों (यं, रं, वं) से युक्त प्राणायामों द्वारा मैं शोषण, दाहन और आप्लावन करता हूँ ।।२६ मूल-मन्त्र से मैं तीन बार प्राणायाम करता हूँ। **'अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि-संस्थिताः ।।२७ ये भूता विघ्न-कर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया'**—इस मन्त्र से हे शिवे ! मैं तीन बार ताली बजाता हूँ ।।२८ हे महा-त्रिपुर-सुन्दरि ! **'नारायणोऽहं, ब्रह्माऽहं, भैरवोऽहं, शिवोस्म्यहं, देवोऽहं, परमात्माऽहं'** ।।२९ इस प्रकार ध्यान कर मैं कुमारी-बीज से युक्त तुम्हारे वज्र-कवच-न्यास को करता हूँ ।।३०

हे ईश्वरि ! **'मां रक्ष रक्ष'** इस मन्त्र से हृदय पर हाथ जोड़ता हूँ। **'हे शिवे ! 'नमो देव्यासनाय'** इस मन्त्र से तुम्हें आसन देता हूँ ।।३१ हे महेश्वरि ! **'चक्रासनं नमस्यामि, सर्व - मन्त्रासनं भजे, साध्य-सिद्धासनं वन्दे'**—इन मन्त्रों से ।।३२ चक्र, मन्त्र और देवताओं के लिए उत्तम आसन देता हूँ। अब मैं षडङ्ग और मातृका-न्यास करता हूँ ।।३३ वशिन्याद्यष्टक-न्यास, षोढा-न्यास मैं करता हूँ, तब महा-षोढा और नव-योनि-न्यास करता हूँ ।।३४ तब चक्र-न्यास और उत्तम श्रीकण्ठ-न्यास करता हूँ। केशवादि महा-न्यास, काम-न्यास मैं करता हूँ ।।३५ तब कला-न्यास और काम-कला-न्यास करता हूँ, तब पीठ-न्यास और तत्व-न्यास मैं करता हूँ ।।३६ तब हे त्रिपुरेश्वरि ! स्थित्यादि न्यास करता हूँ। हे महेश्वरि ! तब मैं शुद्ध जल से बाँई ओर ।।३७ वृत्त, चतुरस्र का मण्डल बनाता हूँ। हे शिव - प्रिये ! पुष्पों से पूजा कर आधार-सहित मैं शङ्ख स्थापित करता हूँ ।।३८ षडङ्ग से पूजन कर मैं जल भरता हूँ। मूल-मन्त्र से उसे अभिमन्त्रित करता हूँ ।। ३९ हे जगन्मातः ! उस जल से मैं त्रिकोण - वृत्त से युक्त षट्-कोण, चतुरस्र का मण्डल बनाता हूँ ।।४०

हे शिव-प्रिये ! मध्य में विद्या (मूल-मन्त्र) से और त्रिकोणों में खण्डों (ऐं, क्लीं, सौः) से पूजन कर बीजों की आवृत्ति द्वारा छः कोणों की पूजा करता हूँ ।।४१ उसमें दश-कलाओं से युक्त अग्नि-मण्डल का आश्रय लेता हूँ। १ धूम्रार्चि, २ ऊष्मा, ३ ज्वलिनी, ४ ज्वालिनी, ५ विस्फुलिङ्गिनी, ६ सुश्री, ७ सुरूपा, ८ कपिला, ९ हव्य-वहा और १० कव्य-वहा —इन दश कलाओं का यादि-सहित नमन करता हूँ ।।४२-४४ वहीं द्वादश कलाओं से युक्त सूर्य-मण्डल है। अर्घ्य-पात्र में मैं १ तपिनी,

२ तापिनी, ३ धूम्रा, ४ मरीचि, ५ ज्वालिनी, ६ रुचि, ७ सुषुम्णा, ८ भोगदा, ९ विश्वा, १० बोधिनी, ११ धारिणी और १२ क्षमा—सूर्य की इन बारह कलाओं को नमन करता हूँ। वहीं षोडश-कलाओं से युक्त सोम-मण्डल है ॥४५-४७ अर्घ्यामृतात्मक १ अमृता, २ मानदा, ३ पूषा, ४ तुष्टि, ५ पुष्टि, ६ रति, ७ धृति, ८ शशिनी, ९ चन्द्रिका, १० कान्ति, ११ ज्योत्सना, १२ श्री, १३ प्रीति, १४ अङ्गदा, १५ पूर्णा और १६ पूर्णामृता—सोम की इन सोलह कलाओं को नमन करता हूँ ॥४८-४९ सोलह स्वरों से युक्त सोम-कलाओं को भजता हूँ। अकथादि सुन्दर रेखाओं-वाले त्रिकोण को लिखता हूँ ॥५०

'ह-ल-क्ष' वर्णों से युक्त और **'हंसः'** से उज्ज्वल उस त्रिकोण की मैं वाक् (**ऐं**), काम (**क्लीं**) और शक्ति (**ह्रीं**) से युक्त **'हंसः'** द्वारा आराधना करता हूँ ॥५१ वृत्त के बाहर षट्-कोण में मैं लिखता हूँ, षट्-कोण के अग्र-भागों में मैं षडङ्गों से पूजन करता हूँ ॥५२ श्रीविद्या से सात वार अभिमन्त्रित करता हूँ। हे देवि ! उसमें गन्धाक्षतादि समर्पित करता हूँ ॥५३ तुम्हारे सभी पूजा-द्रव्यों को मैं विद्या-मय और शुभ ध्यान करता हूँ, उन्हें स्पर्श कर ९४ मन्त्रों का जप करता हूँ ॥५४ अग्नि की दस, सूर्य की बारह और चन्द्र की १६ काम-प्रद कलाओं का वहाँ सहारा लेता हूँ ॥५५ सृष्टि, ऋद्धि, स्मृति की वन्दना करता हूँ, मेधा, कान्ति को नमन करता हूँ, लक्ष्मी, धृति, स्थिरा की वन्दना करता हूँ, स्थिति, सिद्धि का भजन करता हूँ ॥५६ इन ब्रह्म-कलाओं की वन्दना करता हूँ, जरा, पालिनी का भजन करता हूँ, शान्ति, ईश्वरी, रति और कामिका की वन्दना करता हूँ ॥५७ वरदा, ह्लादिनी की वन्दना करता हूँ, प्रीति, दीर्घा का मैं भजन करता हूँ और हादि के सहित विष्णु की दस कलाओं का भजन करता हूँ ॥५८ विष्णु की इन कलाओं की वन्दना करता हूँ। तीक्ष्णा, रौद्री, भया, निद्रा, तन्द्रा, क्षुधा, क्रोधिनी, क्रिया की वन्दना करता हूँ ॥५९ उद्गारी और मृत्यु—इन रुद्र-कलाओं का भजन करता हूँ, पीली, श्वेत और लाल कलाओं का नित्य भजन करता हूँ ॥६०

असिता और अनन्ता का षादि के सहित भजन करता हूँ, ईश्वर की इन अभीष्ट-दायिनी कलाओं की नित्य वन्दना करता हूँ ॥६१ निवृत्ति, प्रतिष्ठा, विद्या, शान्ति, इन्धिका, दीपिका, रेचिका और मोचिका को नमन करता हूँ ॥६२ परा, सूक्ष्मा, सूक्ष्मामृता, ज्ञाना व ज्ञानामृता कला की वन्दना करता हूँ ॥६३ आप्यायनी, व्यापिनी, व्योम-रूपा को नमन करता हूँ, सदाशिव की इन १६ कलाओं को मैं प्रणाम करता हूँ ॥६४ 'हंसः' नामक महा-मन्त्र का, ज्योति-पूर्ण 'हंस' का मैं सहारा लेता हूँ ॥६५ **'त्र्यम्बकं०'** से नमन करता हूँ, **'तद्-विष्णोः'०** से प्रणाम करता हूँ, **विष्णु-र्योनि०'** और मूल-मन्त्र—इन श्रेष्ठ मन्त्रों से ॥६६ और ९४ मन्त्रों से अभिमन्त्रित तुम्हारे अमृत की वन्दना करता हूँ—**'अखण्डैक-रसानन्द-करे पर-सुधात्मनि ॥६७ स्वच्छन्द-स्फुरणामत्र निधेह्यकुल रूपिणि, अकुलस्थामृताकारे शुद्ध-ज्ञान-करे परे ॥६८ अमृतत्वं नधेह्यस्मिन् वस्तुनि क्लिन्न-रूपिणि, तद्-रूपिण्यैक-रस्यत्वं कृत्वा ह्येतत्-स्वरूपिणि ॥६९ भूत्वा परामृताऽऽकारा मयि चित्-स्फुरणं कुरु, अमृतेशीं नमस्यामि सर्वदामृतवर्षिणीं ॥७०**

'वाग्वादिनीं नमस्यामि श्रीविद्यां प्रणमाम्यहं'—इन उत्तम मन्त्रों से अभिमन्त्रित परामृत की वन्दना करता हूँ ॥७१ हे महेश्वरि ! ज्योतिर्मय अर्घ्य देता हूँ, उसके विन्दुओं से अपने शिर पर

तीन गुरुओं को मैं पूजा करता हूँ ।।७३ **ब्रह्माऽहमस्मि'** कहकर उसके बिन्दु का मैं कुण्डलिनी में हवन करता हूँ । हृदय - चक्र पर विराजमाना महादेवी महा - त्रिपुरा-सुन्दरी को ।।७४ जो मोह-रूपी अन्धकार को नष्ट करती हैं और साक्षात् संवित् - स्वरूपिणी हैं, उनको पर-कला को नासा-पुट के द्वारा अपने हाथ को पुष्पाञ्जलि में लाकर—**'जगन्मातर्महा-देवि, महा-त्रिपुर-सुन्दरि ।।७५ सुधा-चैतन्य-मूर्ति ते कल्पयामि नमः शिवे !'** इस मन्त्र से हे देवि ! यन्त्र पर मैं तुम्हें प्रतिष्ठित करता हूँ ।।७६ (१) **'महा-पद्म-वनान्तःस्थे कारणानन्द-विग्रहे, सर्व-भूत-हिते मातरेह्येहि परमेश्वरि ।।७७ (२) देवेशि, भक्ति-सुलभे, सर्वावरण-संयुते ! यावत् त्वां पूजयिष्यामि तावत् त्वं सु-स्थिरा भव'** ।।७८ इन दो मन्त्रों से तुम्हारा आवाहन करता हूँ । **'कल्पयामि नमः पाद्यं', 'अर्घ्यं ते कल्पयाम्यहं'** ।।७९ **'सुगन्ध-तैलाभ्यङ्ग च मज्ज-शाला-प्रवेशनं कल्पयामि नमः'** से क्रमशः पाद्य, अर्घ्य, सुगन्धित तैल देकर स्नानागार में तुम्हारे प्रवेश की कल्पना कर **'नमः मणि-पीठोपवेशनं'** से मणि-जटित पीठ पर तुम्हारे विराजने की भावना करता हूँ ।।८०

'हे ईशानि ! दिव्य स्नानीय और शुभ उपटन ग्रहण करो । गरम जल ग्रहण करो'—तुम्हारे स्नान की भावना करता हूँ ।।८१ स्वर्ण-घट से गिरनेवाले तीर्थ-जल से अभिषेक की भावना करता हूँ । तौलिए से पोंछने की कल्पना करता हूँ, तुम्हें नमस्कार है ।।८२ बाल-सूर्य के समान लाल रेशमी वस्त्र पहनने के लिए और अरुण वस्त्र से तुम्हारे दुपट्टे की भावना करता हूँ ।।८३ आलेपन-मण्डप में तुम्हारे प्रवेश को कल्पना करता हूँ, मणि-पीठ पर बैठने को भावना करता हूँ ।।८४ सारे शरीर में अष्ट-गन्धों से लेपन की कल्पना करता हूँ, काले अगरु की महान् धूप तुम्हारे केश-जाल के लिए है ।।८५ मल्लिका, मालती, जाति, चम्पक आदि मनोहर पुष्पों से सुन्दर मालाओं की भावना करता हूँ, तुम्हें नमस्कार है ।।८६ भूषण-मण्डप में प्रवेश को कल्पना करता हूँ, वहाँ रत्न-पीठ पर तुम्हारे बैठने की मैं भावना करता हूँ ।।८७ नवीन माणिक्य का मुकुट, तब चन्द्र - कला, माँग के सिन्दूर, तब उत्तम तिलक ।।८८ दोनों नेत्रों की कोरों में कालाञ्जन, मणियों के दो कुण्डल और हे ईश्वरि ! नाक के आभूषण ।।८९ अधरोष्ठ की लालिमा और हे त्रिपुरे ! तुम्हारे कण्ठ हेतु स्वर्ण व चिन्तामणि-जटित आभूषण की कल्पना करता हूँ ।।९०

तुम्हारे पदक के लिए महा-पदक की कल्पना करता हूँ, मुक्तावलि और एकावलि की भावना करता हूँ, तुम्हें नमन है ।।९१ छन्न-वीर, दो केयूरों और चार वलयों, ऊर्मिकावलि की भावना, हे ईश्वरि ! करता हूँ ।।९२ हे त्रिपुरे ! तुम्हारी स्वर्ण-करधनी, मङ्गल-सूत्र, पाद - कटक और रत्न- नूपुर की कल्पना करता हूँ ।।९३ पैरों की अंगुलियों के लिए आभूषण, तुम्हारे एक हाथ में पाश, दूसरे में अंकुश और हे देवि ! अन्य हाथ में इक्षु-धनुष ।।९४ दूसरे में पुष्प-वाणों, तथा पैरों में माणिक्य-पादुका की भावना करता हूँ । नौ आवरणों को देवियों के साथ महा-चक्र में तुम्हारे आरोहण ।।९५ कामेश्वराङ्क में पर्यङ्क पर उपवेशन, सुधासव-चषक से आचमन ।।९६ और कर्पूर-ताम्बूल को कल्पना करता हूँ, हे शिवे ! तुम्हें नमन है । तुम्हारे आनन्दोल्लास, विलास, हास्य की मैं कल्पना करता हूँ ।।९७ हे देवि ! मङ्गल-मयी आरती कर मैं तुम्हारे छत्र, दो चँवरों और दर्पण की भावना करता हूँ ।।९८ हे महेश्वरि ! ताल-वृन्त की कल्पना करता हूँ । तुम्हें गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य देने की भावना करता हूँ, तुम्हें नमन है ।।९९ अब मैं वैन्दव चक्र में हे सर्वानन्द-मयात्मिके ! रत्न-सिंहासन पर विराज-माना तुम शिव-प्रिया का ध्यान करता हूँ ।।१००

सहस्रों उदयकालीन सूर्यों की आभावाली, जप-पुष्प के सामान प्रभावाली, नए रत्नों की चमक से उज्ज्वल मुकुट से सुशोभिता ।।१०१ चन्द्र-कला से विभूषिता, कस्तूरी के तिलक से शोभिता, कामदेव के धनुष की सुन्दरता को हरानेवाली दो भौहोंवाली ।।१०२ अंजन लगी आँखों वाली, कमल की पंखुड़ियों के समान नेत्रोंवाली, मणियों के कुण्डलों से युक्त दो कानोंवाली ।।१०३ मुक्ता-माणिक्य-जटित आभूषण से युक्त नाकवाली, केसर की शोभा से युक्त दो कपोलोंवाली ।।१०४ पके हुये बिम्बा-फल की आभा के समान दो अधरों से सुशोभिता, उज्ज्वल मोतियों की माला जैसी दाँतों की पंक्तियों से विभूषिता ।।१०५ ताम्बूल-पूर्ण मुखवाली, सुन्दर मुस्कान-युक्त मुख से सुशोभिता, स्वर्ण-चिन्ताक से युक्त आद्य-भूषण - सहिता ।।१०६ पदक और महा-पदक से युक्ता, मुक्तावलि सहित एकावलि से सुशोभिता ।।१०७ केयूर, अङ्गद से युक्त चार भुजाओं वाली, अष्ट-गन्ध से युक्त श्रीचन्दन से लिप्त शरीरवाली ।।१०८ स्वर्ण-कलश के समान दो स्तनों से सुशोभिता, रक्त-वस्त्र-धारिणी, रक्त-कंचुकी-सहिता ।।१०९ महीन रोमों से युक्त कटि से सुशोभिता, मुक्ता-माणिक्य से जटित करधनी से युक्त नितम्ब-वाली ।।११०

सदा-शिव की गोद में विराजमाना, अतिः स्थूल जघन (कूल्हे) वाली, केले के खम्भों समान दो ऊरुओं से सुशोभिता ।।१११ केले को जैसी कान्तिवाली दो जाँघों से विभूषिता, दो गूढ़ गुल्फों (टखनों) और लाल-लाल दो चरणों से युक्ता ।।११२ ब्रह्मा, विष्णु, महा-देव के शिरस्थ मुकुटों से निकलनेवाली ज्योति से सुशोभित चरणोंवाली, भक्तों की रक्षा में तत्परा ।।११३ ईख के धनुष, पुष्पों के वाण, पाश और अंकुश धारण करनेवाली परमा, संवित्-स्वरूपा देवी परमेश्वरी का ध्यान करता हूँ ।।११४ अब हे शिवे ! वर-दायिनी नौ मुद्राएँ दिखाता हूँ। हे त्रिपुरे ! मूल-मन्त्र से तीन बार तुम्हें तर्पण कराता हूँ ।।११५ आग्नेय, ईशान, नैऋत, वायव्य, मध्य और चारों दिशाओं में क्रमशः षडङ्गों की मैं पूजा करता हूँ ।।११६ आद्या कामेश्वरी की वन्दना करता हूँ, भग-मालिनी व नित्य-क्लिन्ना और भेरुण्डा को नमन करता हूँ ।।११७ वह्नि-वासा, महा-वज्रेश्वरी की स्तुति करता हूँ, शिव-दूती, त्वरिता, कुल-सुन्दरी को नमन करता हूँ ।।११८ नित्या, नील-पताका, विजया, सर्व-मङ्गला, ज्वाला-माला, चित्रा और महा-नित्या की स्तुति करता हूँ ।।११९ दिव्यौघों को नमन करता हूँ, परेश, परमेश्वरी, मित्रेश, षष्ठीश और उड्डीश को प्रणाम करता हूँ ।।१२०

चर्या-नाथ को नमन करता हूँ, लोपामुद्रा को मैं भजता हूँ, अगस्त्य को प्रणाम करता हूँ। सिद्धौघ में काल-तापन को ।।१२१ धर्माचार्य को नमन करता हूँ, मुक्त-केशीश्वर, दीप-कला-नाथ को भजता हूँ, तब मानवौघ में ।।१२२ विष्णु-देव को नमन करता हूँ, प्रभा-कर को मैं भजता हूँ, तेजो-देव और मनोज की स्तुति करता हूँ ।।१२३ कल्याण-देव, रत्न-देव को मैं भजता हूँ, वासुदेव को नमन करता हूँ, श्री रामानन्द का सहारा लेता हूँ ।।१२४ परमेष्ठि-गुरु की वन्दना करता हूँ, परम-गुरु का सहारा लेता हूँ, मूर्धा में ब्रह्म-रन्ध्र में स्थित श्रीगुरु को प्रणाम करता हूँ ।।१२५ कं (ब्रह्म) बिल (रन्ध्र) में श्रीगुरु-पादुका को मैं नमन करता हूँ। तब हे देवि ! तुम्हारे प्रथम चतु-रस्र में ।। ११६ अणिमा, लघिमा, महिमा, ईशित्व, वशित्व-सिद्धियों को नमन करता हूँ ।।१२७ प्राकाम्य, मुक्ति और प्राप्ति इन सर्व-काम-प्रदा सिद्धियों को भजता हूँ ।।१२८ मध्यम चतुरस्र में

मैं ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही को मैं प्रणाम करता हूँ ।।१२९ माहेन्द्री, चामुण्डा, महा-लक्ष्मी को भजता हूँ । तृतीय चतुरस्र में मैं सर्व-संक्षोभिणी को भजता हूँ ।।१३०

सर्व-विद्राविणी, सर्वाकर्षिणिका, वशङ्करी और सर्वोन्मादिनिका मुद्राओं को भजता हूँ ।।१३१ महांकुशा, खेचरी, बीज, योनि, सर्व-विखण्डिनी मुद्राओं को भजता हूँ ।।१३२ हे ललिते ! तुम्हारे त्रैलोक्य-मोहन चक्र को नमन करता हूँ। उसमें अभीष्ट-दायिनी प्रकट-योगिनी को नमन करता हूँ ।।१३३ तब हे परमेश्वरि ! वहाँ तुम्हारे सुधार्णवासन की वन्दना करता हूँ । वहाँ चक्रेश्वरी त्रिपुरा परमेश्वरी की वन्दना करता हूँ ।।१३४ तब हे शिवे ! सर्व - संक्षोभिणी मुद्रा बनाता हूँ । अब मैं षोडश-दल में कामाकर्षणिका को भजता हूँ ।।१३५ बुद्ध्याकर्षिणिका, अहङ्कारा-कर्षणी, शब्दाकर्षणिका और स्पर्शाकर्षिणिका की वन्दना करता हूँ ।।१३६ रूपा-कर्षणिका, रसाकर्षिणिका, गन्धाकर्षणिका, चित्ताकर्षणिका को भजता हूँ ।।१३७ धैर्याकर्षणिका, स्मृत्या-कर्षणिका, नामाकर्षणिका और बीजाकर्षणिका की वन्दना करता हूँ ।।१३८ आत्माकर्षणिका, अमृता-कर्षणी, शरीराकर्षणी और परमेश्वरी नित्या की वन्दना करता हूँ ।।१३९ हे ईश्वरि ! तुम्हारे सर्वाशा-पूरक चक्र को कल्पना करता हूँ । वहाँ मैं गुप्त रूप से पूजिता गुप्त-योगिनी की वन्दना करता हूँ ।।१४०

वहाँ हे ललिते ! तुम्हारे पोताम्बुजासन को नमन करता हूँ और अभीष्ट-सिद्धिदा महा-देवी त्रिपुरेशी को भजता हूँ ।।१४१ वहाँ मैं सर्व-विद्राविणी मुद्रा का चिन्तन करता हूँ । हे शिवे ! तुम्हारे अष्ट-दलों में मैं अनङ्ग-कुसुमा, ।।१४२ अनङ्ग-मेखला, अनङ्ग-मदना, अनङ्ग-मदनातुरा, अनङ्ग-रेखा, अनङ्ग-वेगिनी, अनङ्गांकुशा और अनङ्ग - मालिनो को प्रणाम करता हूँ ।।१४३-४४ वहाँ मैं सदा सर्व-संक्षोभण-चक्र की कल्पना करता हूँ और सर्व-कामदा गुप्त-तरा योगिनो की वन्दना करता हूँ ।।१४५ वहाँ मैं देवी के उत्तम आत्मासन को प्रणाम करता हूँ और जगत् की ईशानी त्रिपुर-सुन्दरी को नमन करता हूँ ।।१४६ वहाँ मैं तुम्हारी सर्वाकर्षिणिका मुद्रा को कल्पना करता हूँ । हे शिवे ! तुम्हारे चतुर्दशार में सर्व-संक्षोभिणी की वन्दना करता हूँ ।। १४७ सर्व-विद्राविणी, सर्वाकर्षिणिका, सकलाह्लादिनी और सर्व-सम्मोहिनी को भजता हूँ ।।१४८ सकल-स्तम्भिनी, सर्व-जम्भिनी, वशङ्करी और सर्व-रञ्जनिका को भजता हूँ ।।१४९ सकलोन्मादिनी, सर्वार्थ-साधिनी, सम्पत्ति-पूरणी और सर्व-मन्त्र-मयी को भजता हूँ ।।१५०

तब मैं सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्करी शक्ति को भजता हूँ । वहाँ मैं सर्व-सौभाग्य-दायक चक्र की कल्पना करता हूँ ।।१५१ हे शिवे ! जगद्धात्री सम्प्रदाय-योगिनी को नमन करता हूँ । तुम्हारे उत्तम श्रीचक्रासन को नमन करता हूँ ।।१५२ मैं जगत् की ईशानी त्रिपुर-वासिनी को नमन करता हूँ । हे शिवे ! मैं तुम्हारी सर्व-वशङ्करी मुद्रा की कल्पना करता हूँ ।।१५३ हे देवि ! तुम्हारे बहिर्दशार में सर्व-सिद्धि-प्रदा को भजता हूँ, सर्व-सम्पत्-प्रदा और सर्व-प्रियङ्करी की वन्दना करता हूँ ।।१५४ तब मैं सर्व-मङ्गल-कारिणी, सर्व-काम-प्रदा, सर्व-दुःख-विमोचिनी देवी की वन्दना करता हूँ ।।१५५ सर्व-मृत्यु-प्रशमनी, सर्व-विघ्न-निवारिणी, सर्वाङ्ग-सुन्दरी, सर्व-सौभाग्य-दायिनी देवी

को नमन करता हूँ ।।१५६ मैं सर्वार्थ - साधक चक्र को सदा कल्पना करता हूँ। तब कुलोत्तीर्ण-योगिनी देवी की कल्पना करता हूँ ।।१५७ सर्व-मन्त्रासन की वन्दना करता हूँ, त्रिपुरा-श्री का सहारा लेता हूँ। तब सर्वोन्मादन-कारिणी मुद्रा को कल्पना करता हूँ ।।१५८ हे देवि ! तुम्हारे अन्तर्दशार में मैं सर्वज्ञा को प्रणाम करता हूँ। सर्व-शक्ति को नमन करता हूं, सर्वैश्वर्य - प्रदा को भजता हूँ ।।१५९ सर्व-ज्ञान-मयी, सर्व - व्याधि - विनाशिनी, सर्वाधार-स्वरूपा और सर्व - पाप - हरा को भजता हूँ ।।१६०

सर्वानन्द-मयी, सर्व-रक्षा-स्वरूपिणी की वन्दना करता हूँ। सर्वाधार-स्वरूपा और सर्व-पाप-हरा को भजता हूँ ।।१६१ वहाँ मैं सदा सर्व-रक्षा-कर चक्र को कल्पना करता हूँ। उसमें मैं परमेश्वरी त्रिगर्भ-योगिनी की वन्दना करता हूँ ।।१६२ साध्य-सिंहासन की वन्दना करता हूँ, त्रिपुरा मालिनी को भजता हूँ। तब हे देवि ! सर्व-महांकुशा मुद्रा को कल्पना करता हूँ ।।१६३ अष्टार में वशिनी की वन्दना करता हूँ, कामेश्वरी को सदा भजता हूँ। मोदिनी, विमला, अरुणा, जयिनी को भजता हूँ ।।१६४ सर्वेश्वरी कौलिनी को प्रणाम करता हूँ। हे देवि ! मैं तुम्हारे सर्व-रोग-हर चक्र का चिन्तन करता हूँ ।।१६५ मैं सदा तुम्हारी रहस्य-योगिनी देवी को कल्पना करता हूँ, त्रिपुरा-सिद्धा को नमन करता हूँ और खेचरी-मुद्रा को भजता हूँ ।।१६६ हे महेश्वरि ! महा-त्रिकोण के बाहर चारों दिशाओं में जम्भण बाणों और सम्मोहन धनुष को नमन करता हूँ ।।१६७ वशङ्कर पाश की वन्दना करता हूँ, स्तम्भक अंकुश को भजता हूँ। त्रिकोण में मैं जगद्धात्री महा-कामेश्वरी को भजता हूँ ।।१६८ महा-वज्रेश्वरी, महा-श्रीभग-मालिनी, सर्व-काम-फल-प्रदा महा-श्रीसुन्दरी की वन्दना करता हूँ ।।१६९ हे देवि ! मैं तुम्हारे सर्व-सिद्धि-प्रद चक्र को नमन करता हूं। उसमें काम-दायिनी अति-रहस्य-योगिनी को नमन करता हूँ ।।१७०

त्रिपुराम्बा को नमन करता हूँ, बीज-मुद्रा को नमन करता हूँ। हे ललिते ! मूल-मन्त्र से विन्दु में तुम्हारी पूजा करता हूँ ।।१७१ हे ललिते ! तुम्हारे सर्वानन्द-मय चक्र को नमन करता हूँ। सदा परापर-रहस्य-योगिनी की कल्पना करता हूँ ।।१७२ महा-चक्रेश्वरी की वन्दना करता हूँ, मैं योनि-मुद्रा को भजता हूँ। मैं धूप-दीपादि सभी की तुम्हारे लिए कल्पना करता हूँ ।।१७३ हे शिवे ! तुम्हारी प्रसन्नता के लिए महा-मुद्रा दिखाता हूं। हे शिवे ! मूल-मन्त्र से तीन बार तुम्हारा तर्पण करता हूँ ।।१७४ मधु-युक्त पायस (खीर), पुआ, शाल्यन्न, घृत, सूपादि सभी खाद्य पदार्थों सहित ।।१७५ चीनी, दूध-युक्त, अनेक प्रकार के शाक स्वर्ण-पात्र में रखकर तुम्हारे नैवेद्य की कल्पना करता हूँ ।।१७६ हे त्रिपुरे ! विन्दु से तुम्हारे मुख को, विसर्ग से दोनों कुचों की और सपरार्द्ध से योनि की कल्पना करता हूँ ।।१७७ काम-कला का यह रूप भक्तों के लिए सर्व-काम-प्रद और सर्व-सम्पत्-दायक है। हे त्रिपुरेश्वरि ! तुम्हें नमन है ।।१७८ अपने बाँयें भाग में हे महेश्वरि ! त्रिकोण, वृत्त और चतुरस्र बनाकर गन्धाक्षत आदि द्वारा पूजन करता हूँ ।।१७९ वहाँ व्यापक मण्डल पर जल-युक्त आर्द्र अन्न सहित मकार-त्रय का पात्र ।।१८०

रखकर भूतों को उत्तम बलि देता हूँ। हे त्रैलोक्य-वन्दिते देव-देवेशि ! तुम्हें नमन करता हूँ ।।१८१ पर-शिव के अङ्क में विराजमाना हे त्रिपुर-सुन्दरि ! तुम्हें नमस्कार है। मैं मन

से तुम्हारी प्रदक्षिणा करता हूँ ।।१८२ तब समस्त मन्त्रों की साम्राज्ञी परमेश्वरी की महा-विद्या का जप तुम्हारी प्रसन्नता के लिए मैं सदा करता हूँ। तुम्हारी विद्या का जप कर अब मैं तुम परमेश्वरी की स्तुति करता हूँ ।।१८३ हे महा-देवि, हे महेशानि, हे सदा-शिव की अति प्रिये, हे सदा-शिव की प्रिय करनेवाली, हे महा-नित्ये, हे महा-सिद्धे ! मैं तुम्हारी शरण लेता हूँ ।।१८४ हे देवि, त्रिपुरे ! हे जगदीश्वरि ललिते ! तुम्हारी जय हो। हे सदा-शिव का प्रिय करनेवाली, हे दया-मयि ! मेरी रक्षा करो ।।१८५ हे जगदम्ब, हे जगत्-स्वरूपे, हे जगदीश्वर-प्रिये, हे जगद्-व्यापिनि, हे विश्वात्मिके पार्वति! मैं तुम्हारा आश्रय लेता हूँ ।।१८६ हे आदि-रहिते ! हे लोकों की आद्ये ! हे भक्तों को अभीष्ट देनेवाली हिमालय की पुत्री, हे त्रिपुरेश्वरि ।।१८७ हे आदि-महा-देवेशि, हे ब्रह्म-मातः, हे विष्णु-मातः, आदि-अन्त-रहिते, हे शिव-मातः, हे देवेश्वरि ! तुम्हें नमस्कार है ।।१८८ हे ब्रह्मादि-देवों द्वारा वन्दिते, हे तीनों लोकों की स्वामिनि, हे सर्वैश्वर्य-दायिनि नित्ये ! मैं सदैव तुम्हारा ध्यान करता हूँ ।।१८९ हे नित्य आनन्द-मयि, हे आधार-रहिते, हे चिद्-रूपे, हे शिव-प्रिये, हे अणिमादि सिद्धियों को आधार-भूते ! मैं सदैव तुम्हारी भावना करता हूँ ।।१९०

हे ब्राह्मी आदि माताओं द्वारा वन्दिते, हे समस्त आवरण - देवताओं से सु - शोभिते, हे ज्योति-स्वरूपे, हे अति-सुन्दरि त्रिपुरे ! मेरी सदा रक्षा करो ।।१९१ हे लक्ष्मी, सरस्वती आदि द्वारा पूजनीये, हे ब्रह्मा, शिव द्वारा वन्दिते ! मैं समस्त कामनाओं के फल-दायक तुम्हारे चरण-कमलों को नमन करता हूँ ।।१९२ हे सभी वांछित फलों को देनेवाली, हे देवि, त्रिपुर-सुन्दरि ! सभी शक्तियों से युक्त तुम्हारे चरण-कमलों को नमन करता हूँ ।।१९३ तब तुम्हारी प्रसन्नता के लिए किसी शक्ति की मैं पूजा करता हूँ। हे महेश्वरि ! पाँच मकारों से उस शक्ति को तृप्त करता हूँ ।।१९४ तुम्हारी प्रसन्नता और अपने अभीष्ट की सिद्धि के लिए हे महा-देवि ! उसके सहित मैं चिदात्मक अग्नि में शेष हवि का हवन करता हूँ ।।१९५ खेचरी मुद्रा बाँधकर मैं **'क्षमस्व'** कहकर विसर्जन करता हूँ। हे परमेश्वरि त्रिपुरे ! मेरे हृदय में सदा निवास करो ।।१९६ हे जगदम्बे, हे साम्राज्ञि, हे महा-शक्ति, हे शिव प्रिये, हे महा-त्रिपुर-सुन्दरि ! निरन्तर हृदय-चक्र में विराजमान रहो ।।१९७ हे समस्त आवरण-देवताओं से सु-शोभिते, महा-त्रिपुर-सुन्दरि ! मेरे हृदय-चक्र में सदा निवास करो ।।१९८

फल-श्रुति

त्रिपुर-सुन्दरी का यह 'हृदय' सभी कामनाओं को देनेवाला देवताओं के लिए भी अति दुर्लभ बड़ा रहस्य-मय है ।।१ साक्षात् सदा-शिव द्वारा कथित यह गुप्त से भी गुप्त और श्रेष्ठ है ।।२ जो इसे नित्य एकाग्र होकर ध्यान से सुनता है, उसे देवी की नित्य-पूजा का फल मिलता है, इसमें सन्देह नहीं ।।३ शरीर, वाणी, चित्त से होनेवाले और सभी जन्मों के जानकर भी किए गए पापों से वह छूट जाता है ।।४ सभी यज्ञों और तीर्थों में जो पुण्य मिलता है, वह मनुष्य नित्य प्राप्त करता है, इसमें सन्देह नहीं ।।५ तीनों लोकों में दुर्लभ लक्ष्मी को भी पाकर मनुष्य शीघ्र ही विष्णु के समान हो जाता है ।।६ आठों ऐश्वर्यों और गुटिका, पादुका आदि आठ सिद्धियों को वह श्रेष्ठ मनुष्य शीघ्र प्राप्त करता है ।।७ शङ्ख आदि निधियाँ भी उसकी नित्य सेवा करती हैं और वश्य

आदि अष्ट-कर्म उसे शीघ्र सिद्ध हो जाते हैं ।।८ पृथ्वी-लोक, पाताल और अन्य सभी लोकों में स्थित सभी रूपवती स्त्रियाँ ।।९ और राजा आदि सभी मनुष्य तथा शिव, विष्णु आदि देवता शीघ्र ही उसके वशीभूत होकर उसकी सेवा करते हैं ।।१०

अनन्त आदि विशाल सर्प, सिद्ध योगेश्वर आदि, ऋषि, मुनि और यक्ष उसकी नित्य सेवा करते हैं।।११ शिव और विष्णु के समान महान् यश को प्राप्त करता है और श्रेष्ठ योग को पाकर सदा आकाश में गमन करता है ।।१२ अकाल मृत्यु और सामयिक मृत्यु से छूटकर शिव और विष्णु आदि को दुर्लभ परम आयु को प्राप्त करता है ।। १३ न सुने गए शास्त्रों को भी विधि-सहित जानकर मूर्ख भी सभी विद्याओं से युक्त होकर दक्षिणामूर्ति शिव के समान हो जाता है ।।१४ इसके स्मरण मात्र से भूत, पिशाच आदि यक्ष, गन्धर्व और राक्षस सदा विनष्ट होते हैं ।।१५ उसके शरीर में पहुँचकर भी सारे विष तुरन्त नष्ट हो जाते हैं और अपनी कान्ति से वह सदैव सहस्र काम-देवों के समान सुन्दर बना रहता है ।।१६ अतः इस कल्याणकारी 'त्रिपुरा-हृदय स्तोत्र' को जो सदा पढ़ता है, वह साक्षात् देवी जैसा हो जाता है ।।१७ अङ्गों-सहित त्रिपुर-सुन्दरी की नित्य-पूजा का फल उसे मिलता है, सभी रोगों से छूट कर वह सुन्दर स्वास्थ्य को प्राप्त करता है ।।१८ अत्यन्त वैभव को वह पाता है और सभी विद्याओं से युक्त होता है। उसके हाथ के छूने भर से मनुष्य में ब्राह्मणत्व आ जाता है ।।१९ सभी विघ्नों से छूटकर वह श्रेष्ठ मनुष्य प्रति-दिन समस्त दुर्लभ भोगों का सुख भोगता है।।२०

महा-लक्ष्मी से युक्त, परम आयुवाले और साक्षात् शिव के समान-गुण-वान् पुत्र-पौत्रों को वह प्राप्त करता है ।।२१ जो तुम्हारी कृपा पाता है, वह सृष्टि-पालन-संहार-कर्ता त्रि-मूर्ति के समान होता है, इसमें सन्देह नहीं ।।२२ उसके पास रहनेवाला सदा काम-देव के समान सुन्दर होता है, उसके घर में काम-धेनु और कल्पतरु सदा रहते हैं ।।२३ चिन्ता-मणि उसके पास रहती है, इसमें सन्देह नहीं और वह मनुष्य सदा सभी स्थानों में विजयी होता है ।।२४ वज्र के समान शक्ति-शाली शरीरवाला होकर इस संसार में वह घूमता-फिरता है, नित्य अत्यन्त सुखी रहता है और परमात्मा-स्वरूप होता है ।।२५ वह सभी बन्धनों से मुक्त हो जाता है और विष्णु, शिव आदि भी उसकी पूजा करते हैं ।।२६ नित्य उसका शुभ होता है, विपत्तियों से वह सदा मुक्त रहता है और देव, गन्धर्व, राक्षस, ब्रह्मा आदि के लिए भी दुर्लभ ।।२७ सभी कामनाओं को वह तुरन्त ही प्राप्त करता है, इसमें सन्देह नहीं। दिव्य भोगों और दिव्य कन्याओं से युक्त होकर ।।२८ और विमान पर बैठकर दिव्य आभूषणों से विभूषित एवं दिव्य चन्दन से लिप्त शरीर-वाला होकर सदा बीस वर्ष के युवा समान ।।२९ वह मनुष्य सभी भोगों का भोग देव-लोक में करता है। अतः इस शुभ 'त्रिपुरा-हृदय-स्तोत्र' का पाठ करना चाहिए। जो इसका निरन्तर जप करता है, वह साक्षात् सदा - शिव होता है ।।३०

[३]

श्रीत्रिपुर-सुन्दरी हृदय-स्तोत्रम्

विनियोगः—अस्य श्रीत्रिपुर-सुन्दरी - हृदय-स्तोत्रस्य श्रीआनन्द - भैरव ऋषिः। अनुष्टुवादि छन्दांसि। श्रीत्रिपुर-सुन्दरी देवता। ऐं क-५ वीजं। सौः स-४ शक्तिः। क्लीं ह-६ कीलकं। श्रीत्रिपुर-सुन्दरी-देवता-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासान् विधाय पञ्च-दश्या कूट-त्रयेण द्विरावृत्या कर-षडङ्ग - न्यासान् कृत्वा ध्यायेद्। यथा—

बाल-व्यक्त-दिवाकराऽमित-निभां भद्र-प्रदां भारतीम्।
ईषत्-फुल्ल-मुखाम्बुज-स्मित-करैराशान्धकारापहाम् ॥
पाशं चाभयमंकुशं च वरदं सम्बिभ्रतीं भूतिदां।
भ्राजन्तीं चतुरम्बुजाकृति-करैर्भक्त्या भजे सुन्दरीम् ॥

इति ध्यात्वा मानसैरुपचर्य प्रणमेत्। हृदय-स्तोत्रम्—

सुन्दरी सकल-कल्मषापहा कोटि - कंज - प्रिय-काम्य-कान्तिका।
कोटि-कल्प-कृत - पुण्य - कर्मणा पूजनीय-पद-मदाच्च भक्तितः ॥ १
शर्वरीश - सम - सुन्दरानना श्रीश - शक्ति - सुकृताश्रयाश्रिता।
सज्जनानुसरणीय-सत् - पदा सङ्कटे सुर - गणैः सु - वन्दिता ॥ २
याऽसुरोग्र-सङ्गरे जवान्विता सा जघान जगदम्बिका स्वयं।
तां भजामि भव-शान्ति-कृज्जयां युद्ध-लग्न-दितिजान् सु-दुर्जयान् ॥ ३
योगिनां हृदय - सङ्गतां शिवां योग-युक्त-मनसां यतात्मनाम्।
जाग्रतीं जगति यत्नतो द्विजा यां जपन्ति हृदि तां स्मराम्यहम् ॥ ४
कौलिकास्तु कलयन्ति कालिकां यत्-कला कलि - जनोप-कारिणीं।
कौल-वृन्द-कलितांघ्रि-पङ्कजां तां भजामि कलि - कल्मषापहाम् ॥ ५
बालार्कानन्तशोऽर्चिर्निज-तनु - किरणैर्दीपयन्तीं दिगन्तान्,
दीप्तैर्देदीप्य - मानां दनुज - दल-वनानल्प - दावानलाभाम्।
देवीं दर्पाभि-तप्तां दलित - दिति - सुतां दर्शनीयां दुरन्तां,
दीप्तां भक्तार्द्र-चित्तां हृदि मुदित-मनाः भारतीं भावयामि ॥ ६

ध्वस्त-ध्वान्तां धरित्री-धर-विधृत-शिरो-न्यस्त-पादाब्ज-पासूं,
धूत्रां धीराधरामां तडिदिव चपलां चारु-चन्द्र-प्रभाभाम् ।
धृत्वा पूजोपहारान् धरणि-सुर-कुलोद्धारिणीं ध्यान-गम्यां,
धी - मद् - ध्येयाऽद्वितीयां धनद - नमितां सुन्दरीं चिन्तयामि ।। ७

जयतु जयतु खर्वा भारती वेद - हस्ता, जयतु जयतु धात्री धर्मिणी धातृ-शक्तिः ।
जयतु जयतु वाणी ब्राह्मणैर्ब्रह्म-वन्द्या, जयतु जयतु दुर्गा दारिणी देव-शत्रून् ।। ८
जयतु जयतु माता योगिनी योग - युक्ता, जयतु जयतु पद्मा पद्मिनी केशवस्य ।
जयतु जयतु सौम्या सुन्दरी सुन्दरास्या, जयतु जयतु काली कालिनी काल-कान्ता ।।९

देवि ! त्वं सृष्टि-काले सकल-भव-भृता राजसी रक्त-वर्णा,
रक्षा-काले त्वमम्बा हरि-हृदय-धृता सात्विकी श्वेत-रूपा ।
भूरि - क्रोधा भवान्ते भव - भवन-गता तामसी नील-वर्णा,
इत्येताश्चान्यास्त्वमेव क्षिति-मनुज-मता सुन्दरी केवलाद्या ।। १०

फल-श्रुति

स्तवनमिदममोघं देशिकैर्नित्य - जाप्यम्, श्रवण-मनन - वेद्यं स्तोत्रमेतदघघ्नम्,
सुर-तरु-वर-तुल्यं मोदकं पाठकानां, प्रभवति हृदयाख्यं स्तोत्रमत्यन्त - गुह्यम् ।।१
इदं त्रिपुर-सुन्दर्या हृदय परमाद्भुतम्, यः पठेत्तु नरो भक्त्या स सदा सुखमेधते ।।२
न शूद्राय प्रदातव्यं न शठाय दुरात्मने, देयं दान्ताय भक्ताय गुणज्ञाय विशेषतः ।।३

इति श्रीत्रिपुर-सुन्दरी हृदय-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

हिन्दी-रूपान्तर

विनियोग और ऋष्यादि न्यास मूल पाठ के अनुसार कर ध्यान करे–

बाल सूर्य के समान आभावाली, कल्याण-दायिनी, ज्ञान-दात्री, हल्की मुस्कान से खिले हुए मुख-कमल के प्रकाश से दिशाओं के अँधेरे को दूर करने वाली, चार कमलों के समान हाथों में पाश-अंकुश-अभय और मुद्रा धारण करनेवाली, ऐश्वर्य-दायिनी भगवती सुन्दरी का मैं भजन करता हूँ ।

मानसोपचारों से पूजाकर प्रणाम करे । तब 'हृदय-स्तोत्र' का पाठ करे–

भगवती सुन्दरी सभी पापों को नष्ट करनेवाली हैं । करोड़ों कमलों के समान सुन्दर कान्ति-वाली हैं । करोड़ों युगों के पुण्य कर्मों से उनके चरणों की भक्ति-पूर्वक पूजा करने का अवसर मिलता है ।।१ चन्द्रमा के समान सुन्दर मुख है, लक्ष्मो-पति विष्णु की शक्ति से सम्पन्न हैं, सज्जन लोग उनकी शरण लेते हैं और सङ्कट में देवता उनको हो वन्दना करते हैं ।।२ उग्र राक्षसों के युद्ध में लड़ते हुए असुरों को विश्व-शान्ति के लिए जो जगदम्बा स्वयं मारती हैं, उनको मैं भजता हूँ ।।३

योग में निमग्न मनवाले योगियों के हृदय में जो रहती हैं और संसार में द्विज-गण जिन जाग्रत शिवा का हृदय में जप करते हैं, उन्हीं को मैं स्मरण करता हूँ ।।४ कलि-काल के लोगों की कल्याण-कारिणी कालिका की जिस कला का ध्यान कौल साधक किया करते हैं और कलि के पापों को नष्ट करनेवाले उनके चरण-कमलों की सेवा करते रहते हैं, उन्हीं को मैं भजता हूँ ।।५

बाल-सूर्य की असंख्य किरणों जैसी अपनी शरीर की आभा से दिशाओं को प्रकाशित करनेवाली, असुरों के समूह-रूप वन के लिए दावानल जैसी उग्र दीप्ति रखनेवाली, राक्षसों के गर्व को अपनी तेजस्विता से दग्ध करनेवाली और भक्तों के लिए दया-पूर्ण चित्त रखनेवाली ज्ञान-दायिनी का मैं सानन्द ध्यान करता हूँ ।।६ अज्ञान-नाशिनी, शेषनाग के शिर पर चरण-कमल रखने-वाली, विद्युत् और सुन्दर चन्द्रमा जैसी आभावाली, पूजोपचारों को स्वीकार कर पृथ्वी के देव-कुलों का उद्धार करनेवाली, ध्यान-गम्या, बुद्धिमानों द्वारा उपास्या, कुबेर द्वारा वन्दिता, त्रिपुर-सुन्दरी की मैं भावना करता हूँ ।।७ वेद-हस्ता सरस्वती की जय हो, जो विधाता की शक्ति और ब्राह्मणों की वन्दनीया हैं । देव-शत्रुओं का संहार करनेवाली दुर्गा की जय हो ।।८ योगिनी माता की जय हो । विष्णु की लक्ष्मी की जय हो । सुन्दर मुखवाली त्रिपुर-सुन्दरी की जय हो । महा-काल की सुन्दर शक्ति काली की जय हो, जो काल का भी लय करती हैं ।।९ हे देवि ! सृष्टि के समय तुम रक्त-वर्णा राजसी हो, रक्षा करते समय तुम श्वेत-वर्णा सात्विकी माता हो, संहार के समय तुम नील-वर्णा तामसी हो । ये सब तथा अन्य रूप जो पृथ्वी-लोक में पूजनीय हैं, तुम्हारे ही हैं । तुम्हीं एक-मात्र आद्या त्रिपुर-सुन्दरी हो ।।१०

फल-श्रुति—यह अमोघ स्तवन साधकों द्वारा प्रति-दिन जपनीय है । श्रवण और मनन द्वारा ही यह समझ में आता है । यह स्तोत्र पाप-नाशक है । कल्प-वृक्ष के समान यह फल-दायक है और पाठकर्त्ता को आनन्दित कर देता है । 'हृदय' नामक यह स्तोत्र बड़ा गुप्त है ।।१ त्रिपुर-सुन्दरी का यह हृदय-स्तोत्र अति विलक्षण है । जो मनुष्य भक्ति-पूर्वक इसे पढ़ता है, वह सदा सुख पाता है ।।२ शूद्र, दुष्ट और पापी को इसे न दे । गुण-ग्राही, शान्त भक्त को ही इसे देना चाहिये ।।३

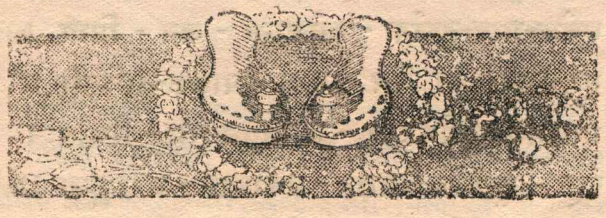

[१]

श्री ललिता-सौभाग्य-प्रदाष्टोत्तर-शतनाम स्तोत्रम्

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीसौभाग्याष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रस्य श्रीभार्गव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, क-५ बीजं, स-४ शक्तिः, ह-६ उत्कीलनं, श्रीललिताम्बा-देवता-प्रसाद-सिद्धये पाठे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीभार्गव-ऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप् - छन्दसे नमः मुखे । श्रीललिताम्बा-देवतायै नमः हृदि । क-५ बीजाय नमः लिङ्गे । स-४ शक्तये नमः नाभौ । ह-६ उत्कीलनाय नमः सर्वाङ्गे । श्रीललिताम्बा - प्रसाद - सिद्धये पाठे विनियोगाय नमः अंजलौ ।

मूल मन्त्र से षडङ्ग-न्यासादि कर ध्यान करे । यथा—

बालार्क-मण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रि-लोचनाम् ।
पाशांकुश - धनुर्बाणान् धारयन्तीं शिवां भजे ।।

ध्यान कर मानस पूजा करे । योनि-मुद्रा से प्रणाम कर स्तोत्र पढ़े । यथा—

एं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वरी काम-शक्तिः काम-सौभाग्य-दायिनी ।
काम - रूपा काम-कला कामिनी कमलासना ।। १
कमला कलना - हीना कमनीया कला - वती ।
पद्मपा भारती सेव्या कल्पिताऽशेष-संस्थितिः ।। २
अनुत्तराऽनघाऽनन्ताऽद्भुत - रूपाऽनलोद्भवा ।
अति-लोक-चरित्राऽति - सुन्दर्यति-शुभ - प्रदा ।। ३
विश्वाद्या चाति-विस्ताराऽर्चन-तुष्टाऽमित-प्रभा ।
एक - रूपैक - वीरैक-नाथैकान्तार्चन - प्रिया ।। ४
एकैक-भाव-तुष्टैक - रसैकान्त - जन - प्रिया ।
एध-मान-प्रभा वैध - भक्त - पातक-नाशिनी ।। ५
एलामोद-मुखैर्नोऽद्रि - शक्तायुध-सम - स्थितिः ।
ईहा - शून्येप्सितेशादि - सेव्येशान - वराङ्गना ।। ६
ईश्वराज्ञापिकेकार - भाव्येप्सित - फल - प्रदा ।
ईशानेति हरेशैषा चारुणाक्षीश्वरेश्वरी ।। ७

ललिता ललना-रूपा लय - हीना लसत्-तनुः ।
लय-सर्वा लय-क्षोणिर्लय - कर्त्री लयात्मिका ।। ८
लघिमा लघु-मध्याढ्या लल-माना लघु-द्रुता ।
हयारूढा हताऽमित्रा हर-कान्ता हरि - स्तुता ।। ९
हय-ग्रीवेष्टदा हाला - प्रिया हर्ष - समुद्भवा ।
हर्षणा हल्लकाभाङ्गी हस्त्यन्तैश्वर्य-दायिनी ।। १०
हल - हस्तार्चित-पदा हविर्दान - प्रसादिनी ।
रामा रामार्चिता राज्ञी रम्या रव-मयी रतिः ।। ११
रक्षिणी रमणी राकाऽऽदित्यादि-मण्डल-प्रिया ।
रक्षिताऽखिल-लोकेशी रक्षो-गण - निषूदिनी ।। १२
अन्तान्त - कारिण्यम्भोज-क्रियान्तक-भयङ्करी ।
अम्बु-रूपाम्बुज-कराऽम्बुज - जात-वर - प्रदा ।। १३
अन्तः-पूजा-क्रियान्तःस्था अन्तर्ध्यान-वचो-मयी ।
अन्तकाऽराति-वामाङ्क-स्थिताऽन्तः-सुख-रूपिणी ।। १४
सर्वज्ञा सर्वगा सारा समा सम-सुखा सती ।
सन्ततिः सन्तता सोमा सर्वा सांख्या सनातनी ।। १५

फल-श्रुतिः—एतत् ते कथितं देवि ! नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।
अति-गोप्यमिदं स्तोत्रं सर्वतो सारमुद्धृतम् ।। १

हे देवि ! यह एक सौ आठ नाम तुम्हारे सामने कहे गए । यह स्तोत्र बड़ा गोपनीय और सबका सार-भूत है ।।१

एतच्छदृशं स्तोत्रं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ।
अप्रकाश्यमभक्तानां पुरतो देवता - द्विषम् ।। २

इसके समान स्तोत्र तीनों लोकों में दुर्लभ है । अभक्तों और देव-द्वेषी लोगों के सामने इसे प्रकट न करे ।। २

एतत् सदा - शिवो नित्यं पठन्त्यन्ये हरादयः ।
एतत्-प्रभावात् कन्दर्पः त्रैलोक्यं जयति क्षणात् ।। ३

इसे सदा-शिव और शङ्कर आदि अन्य देवता नित्य पढ़ते हैं । इसके प्रभाव से काम-देव क्षण भर में तीनों लोकों को जीत लेते हैं ।। ३

सौभाग्याष्टोत्तर-शत - नाम-स्तोत्र - मनोहरम् ।
यस्त्रि-सन्ध्यं पठेन्नित्यं न तस्य भुवि दुर्लभम् ।। ४

इस मनोहर 'सौभाग्याष्टोत्तर-शत-नाम स्तोत्र' को जो तीनों सन्ध्याओं में नित्य पढ़ता है, उसके लिए पृथ्वी पर कुछ भी दुर्लभ नहीं रह जाता ।।४

श्रीविद्योपासन - वतौ एतदावश्यकं मतम् ।
सकृदेतत् प्रपठतां नान्य - कर्म विलुप्यते ।। ५

श्रीविद्या के उपासकों के लिये यह स्तोत्र आवश्यक है । इसका एक बार पाठ करनेवाले के अन्य कर्म भी सार्थक हो जाते हैं ।।५

अपठित्वा स्तोत्रमिदं नित्यं नैमित्तिकं कृतम् ।
व्यर्थी भवति तन्नर - कृतं कर्म यथा - तथा ।। ६

इस स्तोत्र का पाठ न कर जो भी 'नित्य' या 'नैमित्तिक'—कर्म किया जाता है, वह व्यर्थ हो जाता है—उसका फल नहीं मिलता ।।६

सहस्र-नाम - पाठादौ पठेत् स्तोत्रं शुभ-प्रदम् ।
सहस्र - नाम-पाठस्य फलं शत - गुणं भवेत् ।। ७

सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करने के पूर्व इस शुभ-दायक स्तोत्र का पाठ करे, तो सहस्र-नाम के पाठ का सौ गुना अधिक फल मिलता है ।। ७

सहस्र-पठनाद् ध्याता वीक्षणान्नाशयेद् रिपून् ।
करवीरैः रक्त - पुष्पैर्हुत्वा लोकान् वशं नयेत् ।। ८

इस स्तोत्र का एक सहस्र पाठ करनेवाला केवल दृष्टि-पात द्वारा शत्रुओं का नाश करता है । करवीर के रक्त-पुष्पों द्वारा हवन करने से वशीकरण होता है ।। ८

स्तम्भयेत् पीत - कुसुमैर्नीलैरुच्चाटयेद् रिपून् ।
मरीचिर्विद्वेषणाय लवङ्गैर्व्याधिं नश्यते ।। ९

पीले पुष्पों के हवन से स्तम्भन, नीले पुष्पों से उच्चाटन, काली मिर्च से विद्वेषण और लौंग के हवन से रोग नाश होता है ।। ९

पत्र-पुष्पैः फलैर्वापि पूजयेत् प्रति-नामभिः ।
चक्र-राजेऽथवाऽन्यत्र स वसेच्छ्री - पुरं चिरम् ।। १०

पत्तों, पुष्पों या फलों द्वारा भी प्रत्येक नाम से यन्त्र-राज में अथवा अन्यत्र पूजन करने से साधक चिर काल तक मणिपुर में निवास करता है ।। १०

यः सदाऽऽवर्तयन् आस्ते नामाष्ट-शतमुत्तमम् ।
तस्य श्रीललिता माता प्रसन्ना वांछित - प्रदा ।। ११

जो १०८ नामों का सदा जप करता है, उससे माता श्री ललिता प्रसन्न होकर उसके अभीष्ट को प्रदान करती हैं ।। ११

।। श्रीललिता सौभाग्य-प्रदाष्टोत्तर-शत-नाम स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

[२]

श्रीललिताम्बिका दिव्याष्टोत्तर-शत-नाम स्तोत्रम्

श्रीषण्मुख उवाच–

वन्दे विघ्नेश्वरं शक्तिं वन्दे वाणीं विधिं हरिं, वन्दे लक्ष्मीं हरं गौरीं वन्दे माया महेश्वरं ।
वन्दे मनोन्मयीं देवीं वन्दे देवं सदा-शिवं, वन्दे पर-शिवंवन्दे श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम् ।।
पञ्च-ब्रह्मासनासीनां सर्वाभीष्टार्थ-सिद्धये, सर्वज्ञ ! सर्व-जनक ! सर्वेश्वर ! शिव ! प्रभो !
नाम्नामष्टोत्तर-शतं श्रीदेव्याः सत्यमुत्तमं, श्रोतुमिच्छाम्यहं तात ! नाम-सारात्मकं स्तवं ।

श्रीशिव उवाच—तद्-वदामि तव स्नेहाच्छृणु षण्मुख ! तत्त्वतः ।।
महा-मनोन्मनी शक्तिश्शिव - शक्तिश्शिव-शङ्करी ।
इच्छा-शक्तिः क्रिया-शक्तिर्ज्ञान-शक्ति-स्वरूपिणी ।। १
शान्त्यातीता कला नन्दा शिव-माया शिव - प्रिया ।
सर्वज्ञा सुन्दरी सौम्या सच्चिदानन्द -विग्रहा ।। २
परात्परा - मयी बाला त्रिपुरा कुण्डली शिवा ।
रुद्राणी विजया सर्वा सर्वाणी भुवनेश्वरी ।। ३
कल्याणी शूलिनी कान्ता महा - त्रिपुर - सुन्दरी ।
मालिनी मानिनी शर्वा मग्नोल्लासा च मोहिनी ।। ४
माहेश्वरी च मातङ्गी शिव-कामा शिवात्मिका ।
कामाक्षी कमलाक्षी च मीनाक्षी सर्व - साक्षिणी ।। ५
उमा-देवी महा-काली श्यामा सर्व - जन - प्रिया ।
चित्-परा चिद्-घनानन्दा चिन्मया चित्-स्वरूपिणी ।। ६
महा-सरस्वती दुर्गा ज्वाला दुर्गाऽति - मोहिनी ।
नकुली शुद्ध - विद्या च सच्चिदानन्द - विग्रहा ।। ७
सु-प्रभा स्व-प्रभा ज्वाला इन्द्राक्षी विश्व-मोहिनी ।
महेन्द्र-जाल - मध्यस्था माया - मय - विनोदिनी ।। ८
शिवेश्वरी वृषारूढा विद्या - जाल - विनोदिनी ।
मन्त्रेश्वरी महा - लक्ष्मीर्महा - काली फल - प्रदा ।। ९

चतुर्वेद - विशेषज्ञा सावित्री सर्व - देवता ।
महेन्द्राणी गणाध्यक्षा महा - भैरव - मोहिनी ।। १०
महा - मयी महा - घोरा महा - देवी मदापहा ।
महिषासुर - संहन्त्री चण्ड - मुण्ड - कुलान्तका ।। ११
चक्रेश्वरी चतुर्वेदा सर्वादिः सुर - नायिका ।
षड्-शास्त्र-निपुणा नित्या षड् - दर्शन-विचक्षणा ।। १२
काल - रात्रिः कलातीता कवि-राज - मनोहरा ।
शारदा तिलका तारा धीरा शूर - जन - प्रिया ।। १३
उग्र - तारा महा - मारी क्षिप्र-मारी रण-प्रिया ।
अन्न-पूर्णेश्वरी माता स्वर्ण - कान्ति - तटि-प्रभा ।। १४
स्वर - व्यंजन - वर्णाढ्या गद्य-पद्यादि - कारणा ।
पद - वाक्यार्थ - निलया विन्दु - नादादि-कारणा ।। १५
मोक्षेशी महिषी नित्या भुक्ति-मुक्ति - फल - प्रदा ।
विज्ञान-दायिनी प्राज्ञा प्रज्ञान - फल - दायिनी ।। १६
अहङ्कारा कलातीता परा - शक्तिः परात्परा ।
नाम्नामष्टोत्तर - शतं श्रीदेव्याः परमाद्भुतम् ।। १७

फल-श्रुति

सर्व - पाप - क्षय - करं महा - पातक - नाशनं ।
सर्व-व्याधि-हरं सौख्यं सर्व - ज्वर - विनाशनम् ।। १
ग्रह - पीडा - प्रशमनं सर्व - शत्रु - विनाशनं ।
आयुरारोग्य - धनदं सर्व - मोक्ष - शुभ - प्रदम् ।। २
देवत्वममरेशत्वं ब्रह्मत्वं सकल - प्रदं ।
अग्नि-स्तम्भं जल-स्तम्भं सेना-स्तम्भादि-दायकम् ।। ३
शाकिनी - डाकिनी - पीड़ा हाकिन्यादि-निवारणं ।
देह - रक्षा - करं नित्यं पर - तन्त्र - निवारणम् ।। ४
मन्त्रं यन्त्रं महा - तन्त्रं सर्व - सिद्धि - प्रदं नृणां ।
सर्व - सिद्धि - करं पुंसां अदृश्यत्वाकरं वरं ।। ५

सर्वाकर्ष-करं नित्यं सर्व - स्त्री - वश्य - मोहनं ।
मणि - मन्त्रौषधीनां च सिद्धिदं शीघ्रमेव च ।। ६
भयश्चौरादि - शमनं दुष्ट - जन्तु - निवारणं ।
पृथिव्यादि-जनानां च वाक्-स्थानादि-परो वशम् ।। ७
नष्ट - द्रव्यागमं सत्यं निधि - दर्शन - कारणम् ।
सर्वथा ब्रह्मचारीणां शीघ्र - कन्या - प्रदायकं ।।८
सुपुत्र - फलदं शीघ्रं अश्व - मेध - फल-प्रदम् ।
योगाभ्यासादि-फलदं श्री-करं तत्त्व - साधनम् ।। ९
मोक्ष - साम्राज्य - फलदं देहान्ते परमं पदं ।
देव्याः स्तोत्रमिदं पुण्यं परमार्थं परमं पदम् ।। १०
विधिना विष्णुना दिव्यं सेवितं मया च पुरा ।
सप्त - कोटि-महा - मन्त्र-पारायण-फल - प्रदम् ।। ११
चतुर्वर्ग - प्रदं नृणां सत्यमेव मयोदितम् ।
नाम्नामष्टोत्तर - शतं यच्छाम्यहं सुख - प्रदम् ।। १२

कल्याणीं परमेश्वरीं पर-शिवां श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्,
मीनाक्षीं ललिताम्बिकामनुदिनं वन्दे जगन्मोहिनीम् ।
चामुण्डां पर-देवतां सकल - सौभाग्य - प्रदां सुन्दरीम्,
देवीं सर्व-परां शिवां शशि-निभां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।। १३

।। मन्त्र-राज-कल्पे मोक्ष-पादे स्कन्देश्वर-सम्वादे श्रीत्रिपुरा-अष्टोत्तर-शतनाम-स्तोत्रम् ।।

इस स्तोत्र के प्रारम्भ में गणेश, सरस्वती, ब्रह्मा, विष्णु, लक्ष्मी, शिव, पार्वती, त्रिपुर-सुन्दरी आदि की वन्दना कर कार्तिकेय जी श्रीदेवी के १०८ नामों की जिज्ञासा करते हैं और शिव जी उन नामों को सुनाते हैं, जो १ से १७ तक श्लोकों में स्पष्ट हो हैं ।

फल-श्रुति के अनुसार सभी रोगों, सभी ज्वरों, ग्रह-पीडादि को शान्त करनेवाला और सभी शत्रुओं का नाशक यह स्तोत्र है । इसके पाठ करने से दीर्घायु, आरोग्य, धन और मोक्ष की प्राप्ति होती है ।

अन्त में श्रीराज-राजेश्वरी श्री त्रिपुरसुन्दरी की वन्दना की गई है ।

परमपूज्य गुप्तावतार बाबाश्री के संग्रह के अनुसार श्री षोडशी के उपासक उक्त स्तोत्र की अन्तिम पंक्ति निम्न प्रकार पढ़ें—

सर्वानन्द-प्रदां सदा-शिव-मयीं वन्दे परां षोडशीम् ।।

[३]

श्री ललिता लकारादि-शतनाम-स्तोत्रम्

कैलास-शिखरासीनं देव-देवं जगद्-गुरुम्, पप्रच्छेशं परानन्दं भैरवी परमेश्वरम् ।।१

श्रीभैरव्युवाच–

कौलेश ! श्रोतुमिच्छामि सर्व-मन्त्रोत्तमोत्तमं, ललिताया शत-नाम सर्व-काम-फल-प्रदं ।।२

श्रीभैरवोवाच–

शृणु देवि, महा-भागे ! स्तोत्रमेतदनुत्तमं, पठनाद् धारणादस्य सर्व-सिद्धीश्वरो भवेत् ।।३

षट्-कर्माणि सिद्धचन्ति स्तवस्यास्य प्रसादतः, गोपनीयं पशोरग्रे स्व-योनिमपरे यथा ।।४

विनियोग—

ललिताया लकारादि नामशतकस्य देवि, राजराजेश्वरो ऋषिः प्रोक्तो छंदोऽनुष्टुप् तथा ।
देवता ललिता-देवी षट्-कर्म-सिद्धचर्थे तथा, धर्मार्थ-काम-मोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ।
बाक्काम-शक्ति-वीजेन कर-षडङ्गमाचरेत्, प्रयोगे बाला-त्र्यक्षरी योजयित्वा जपं चरेत् ।

स्तोत्रम्—

ललिता लक्ष्मी लोलाक्षी लक्ष्मणा लक्ष्मणार्चिता ।
लक्ष्मण-प्राण - रक्षिणी लाकिनी लक्ष्मण - प्रिया ।। १
लोला लकारा लोमशा लोल-जिह्वा लज्जा-वती ।
लक्ष्या लाक्ष्या लक्ष - रता लकाराक्षर - भूषिता ।। २
लोल-लयात्मिका लीला लीला-वती च लाङ्गली ।
लावण्यामृत - सारा च लावण्यामृत - दीर्घिका ।। ३
लज्जा लज्जा-मती लज्जा ललना ललन - प्रिया ।
लवणा लवली लसा लाक्षकी लुब्धा लालसा ।। ४
लोक-माता लोक-पूज्या लोक - जननी लोलुपा ।
लोहिता लोहिताक्षी च लिङ्गाख्या चैव लिङ्गेशी ।। ५
लिङ्ग-गीतिः लिङ्ग-भवा लिङ्ग-माला लिङ्ग-प्रिया ।
लिङ्गाभिधायिनी लिङ्ग लिङ्ग - नाम-सदानन्दा ।। ६
लिङ्गामृत-प्रीता लिङ्गार्चन-प्रीता लिङ्ग-पूज्या ।
लिङ्ग-रूपा लिङ्गस्था च लिङ्गालिङ्गन-तत्परा ।। ७

लता-पूजन - रता च लता - साधक - तुष्टिदा ।
लता-पूजक-रक्षिणी लता - साधन - सिद्धिदा ।। ८
लता-गृह - निवासिनी लता - पूज्या लताराध्या ।
लता-पुष्पा लता-रता लताधारा लता - मयी ।। ९
लता-स्पर्शन - सन्तुष्टा लताऽऽलिङ्गन - हर्षिता ।
लता-विद्या लता-सारा लताऽऽचारा लता-निधिः ।। १०
लवङ्ग-पुष्प-सन्तुष्टा लवङ्ग - लता - मध्यस्था ।
लवङ्ग-लतिका - रूपा लवङ्ग - होम - सन्तुष्टा ।। ११
लकाराक्षर - पूजिता च लकार - वर्णोद्भवा ।
लकार-वर्ण - भूषिता लकार - वर्ण - रुचिरा ।। १२
लकार - बीजोद्भवा तथा लकाराक्षर-स्थिता ।
लकार-बीज - निलया लकार - बीज - सर्वस्वा ।। १३
लकार - वर्ण - सर्वाङ्गी लक्ष्य - छेदन-तत्परा ।
लक्ष्य-धरा लक्ष्य-घूर्णा लक्ष - जापेन सिद्धिदा ।। १४
लक्ष-कोटि-रूप-धरा लक्ष-लीला-कला - लक्ष्या ।
लोक-पालेनार्चिता च लाक्षा - राग - विलेपना ।। १५
लोकातीता लोपा-मुद्रा लज्जा-बीज - स्वरूपिणी ।
लज्जा-हीना लज्जा-मयी लोक-यात्रा-विधायिनी ।। १६
लास्य-प्रिया लय - करी लोक - लया लम्बोदरी ।
लघिमादि-सिद्धि-दात्री लावण्य - निधि - दायिनी ।। १७
लकार-वर्ण-ग्रथिता लं - बीजा ललिताम्बिका ।
इति ते कथितं देवि ! गुह्याद् गुह्य-तरं परम् ।। १८

फलश्रुति—प्रातः-काले च मध्याह्ने सायाह्ने च सदा निशि ।
यः पठेत् साधक-श्रेष्ठो त्रैलोक्य - विजयी भवेत् ।। १
सर्व-पापि-विनिर्मुक्तः स याति ललिता - पदम् ।
शून्यागारे शिवारण्ये शिव - देवालये तथा ।। २
शून्य - देशे तड़ागे च नदी - तीरे चतुष्पथे ।
एक-लिङ्गे ऋतु - स्नाता - गेहे वेश्या-गृहे तथा ।। ३

पठेदष्टोत्तर - शत-नामानि सर्व - सिद्धये ।
साधको वांछां यत्-कुर्यात् तत्तथैव भविष्यति ।। ४
ब्रह्माण्ड-गोलके याश्च याः काश्चिज्जगती-तले ।
समस्ताः सिद्धयो देवि ! करामलक-वत् सदा ।। ५
साधक-स्मृति-मात्रेण यावन्त्यः सन्ति सिद्धयः ।
स्वयमायान्ति पुरतो जपादीनां तु का कथा ।। ६
अयुतावर्त्तनाद् देवि ! पुरश्चर्याऽस्य गीयते ।
पुरश्चर्या-युतः स्तोत्रः सर्व - कर्म - फल - प्रदः ।। ७
सहस्रं च पठेद्यस्तु मासार्धं साधकोत्तमः ।
दासी-भूतं जगत्-सर्वं मासार्धाद् भवति ध्रुवम् ।। ८
नित्यं प्रति - नाम्ना हुत्वा पलाश - कुसुमैर्नरः ।
भू-लोकस्थाः सर्व-कन्याः सर्व - लोक-स्थितास्तथा ।। ९
पातालस्थाः सर्व-कन्याः नाग-कन्याः यक्ष-कन्याः ।
वशीकुर्यान्मण्डलार्धात् संशयो नात्र विद्यते ।। १०
अश्वत्थ - मूले पठेत् शत-वारं ध्यान-पूर्वकम् ।
तत्-क्षणाद् व्याधि-नाशश्च भवेद् देवि ! न संशयः ।। ११
शून्यागारे पठेत् स्तोत्रं सहस्रं ध्यान - पूर्वकं ।
लक्ष्मी प्रसीदति ध्रुवं स त्रैलोक्यं वशिष्यति ।। १२
प्रेत-वस्त्रं भौमे ग्राह्यं रिपु - नाम च वेष्टितम् ।
प्राण-प्रतिष्ठां कृत्वा तु पूजां चैव हि कारयेत् ।। १३
श्मशाने निखनेद् रात्रौ द्वि - सहस्रं पठेत् ततः ।
जिह्वा - स्तम्भनमाप्नोति सद्यो मूकत्वमाप्नुयात् ।। १४
श्मशाने पठेत् स्तोत्रं अयुतार्धं सु - बुद्धिमान् ।
शत्रु-क्षयो भवेत् सद्यो नान्यथा मम भाषितम् ।। १५
प्रेत-वस्त्रं शनौ ग्राह्यं प्रति-नाम्ना सम्पुटितम् ।
शत्रु-नाम लिखित्वा च प्राण - प्रतिष्ठां कारयेत् ।। १६
ततः ललितां सम्पूज्य कृष्ण - धत्तूर - पुष्पकैः ।
श्मशाने निखनेद् रात्रौ शत-वारं पठेत् स्तोत्रम् ।। १७

ततो मृत्युमवाप्नोति देव-राज - समोऽपि सः ।
श्मशानाङ्गारमादाय मङ्गले शनिवारे वा ।। १८
प्रेत-वस्त्रेण सम्वेष्टच बध्नीयात् प्रेत - रज्जुना ।
दशाभिमन्त्रितं कृत्वा खनेद् वैरि - वेश्मनि ।। १९
सप्त-रात्रान्तरे तस्योच्चाटनं भ्रामणं भवेत् ।
कुमारीं पूजयित्वा तु यः पठेद् भक्ति - तत्परः ।। २०
न किञ्चिद् दुर्लभं तस्य दिवि वा भुवि मोदते ।
दुर्भिक्षे राज - पीडायां संग्रामे वैरि - मध्यके ।। २१
यत्र यत्र भयं प्राप्तः सर्वत्र प्रपठेन्नरः ।
तत्र तत्राभयं तस्य भवत्येव न संशयः ।। २२
वाम - पार्श्वे समानीय शोधितां वर - कामिनीम् ।
जपं कृत्वा पठेद् यस्तु तस्य सिद्धिः करे स्थिता ।। २३
दरिद्रस्तु चतुर्दश्यां कामिनी - सङ्गमैः सह ।
अष्ट - वारं पठेद् यस्तु कुबेर - सदृशो भवेत् ।। २४
श्रीललितां महा - देवीं नित्यं सम्पूज्य मानवः ।
प्रति - नाम्ना जुहुयात् स धन - राशिमवाप्नुयात् ।। २५
नवनीतं चाभिमन्त्र्य स्त्रीभ्यो दद्यान्महेश्वरि !
वन्ध्यां पुत्र - प्रदं देवि ! नात्र कार्या विचारणा ।। २६
कण्ठे वा वाम - बाहौ वा योनौ वा धारणाच्छिवे !
बहु - पुत्र - वती नारी सुभगा जायते ध्रुवम् ।। २७
उग्रं उग्रं महदुग्रं स्तवमिदं ललितायाः ।
सु - विनीताय शान्ताय दान्तायाति - गुणाय च ।। २८
भक्ताय ज्येष्ठ - पुत्राय गुरु - भक्ति - पराय च ।
भक्त - भक्ताय योग्याय भक्ति - शक्ति - पराय च ।। २९
वेश्या - पूजन - युक्ताय कुमारी - पूजकाय च ।
दुर्गा - भक्ताय शैवाय कामेश्वर - प्रजापिने ।। ३०
अद्वैत - भाव - युक्ताय शक्ति - भक्ति - पराय च ।
प्रदेयं शत - नामाख्यं स्वयं ललिताज्ञया ।। ३१

खलाय पर - तन्त्राय पर - निन्दा - पराय च ।
भ्रष्टाय दुष्ट - सत्त्वाय परी - वाद - पराय च ।। ३२
शिवाभक्ताय दुष्टाय पर - दार - रताय च ।
वेश्या-स्त्री - निन्दकाय च पञ्च - मकार - निन्दके ।। ३३
न स्तोत्रं दर्शयेद् देवि ! मम हत्या - करो भवेत् ।
तस्मान्न दापयेद् देवि ! मनसा कर्मणा गिरा ।। ३४
अन्यथा कुरुते यस्तु स क्षीणायुर्भवेद् ध्रुवम् ।
पुत्र-हारी च स्त्री-हारी राज्य-हारी भवेद् ध्रुवम् ।। ३५
मन्त्र - क्षोभश्च जायते तस्य मृत्युर्भविष्यति ।
क्रम - दीक्षा - युतानां च सिद्धिर्भवति नान्यथा ।। ३६
क्रम-दीक्षा-युतो देवि ! क्रमाद् राज्यमवाप्नुयात् ।
क्रम-दीक्षा-समायुक्तः कल्पोक्त-सिद्धि-भाग् भवेत् ।। ३७
विधेर्लिपिं तु सम्मार्ज्य किङ्करत्वं विसृज्य च ।
सर्व - सिद्धिमवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ।। ३८
क्रम - दीक्षा - युतो देवि ! मम समो न संशयः ।
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं सदाऽनघे ।। ३९
स दीक्षितः सुखी साधुः सत्य - वादी जितेन्द्रियः ।
स वेद - वक्ता स्वाध्यायी सर्वानन्द - परायणः ।। ४०
स्वस्मिन् ललितां सम्भाव्य पूजयेज्जगदम्बिकाम् ।
त्रैलोक्य - विजयी भूयान्नात्र कार्या विचारणा ।। ४१
गुरु - रूपं शिवं ध्यात्वा शिव - रूपं गुरुं स्मरेत् ।
सदा - शिवः स एव स्यान्नात्र कार्या विचारणा ।। ४२

।। श्रीकौलिकार्णवे श्रीभैरवी-सम्वादे षट्-कर्म-सिद्धि-दायकं श्रीमल्ललिताया शत-नाम-स्तोत्रम् ।।

हिन्दी रूपान्तर

श्रीललिता लकारादि-शत-नाम स्तोत्रम्

[कौलिकार्णव-तन्त्रोक्त 'श्री ललिता शतनाम स्तोत्र' सम्भवतः सर्व-प्रथम 'कौल-कल्पतरु चण्डी' में ही प्रकाशित किया जा रहा है । यह स्तोत्र जगदलपुर के करिया पाथर श्मशान में प्रवास कर रहे अवधूत श्री चिदानन्द-नाथ जो से मिला था । अवधूत श्री चिदानन्द जी ने अपना कोई

परिचय नहीं दिया किन्तु उनका सैद्धान्तिक और प्रायोगिक ज्ञान-भण्डार असीमित था। उन्हीं के कथनानुसार यह स्तोत्र कभी भी प्रकाशित नहीं किया गया। इसकी साधना श्रीगुरुदेव के द्वारा अत्यन्त ही योग्य शिष्य को बतलाई जाती है। पश्वाचारी साधक यदि इसका प्रयोग करे, तो उसका कुछ भी अनिष्ट हो सकता है। यहाँ तक कि उसकी मृत्यु भी हो सकती है। अतः वीराचारी साधक को ही इसकी साधना करनी चाहिये।

प्रयोगों में जहाँ प्रत्येक नाम का अलग-अलग प्रयोग करना है, वहाँ प्रत्येक नाम 'चतुर्थ्यन्त' प्रयुक्त होगा, अन्यत्र केवल स्तोत्र का पाठ करना चाहिये। अधिक पाठ करते समय प्रथम आवृत्ति में पूरा स्तोत्र (अन्तिम श्लोक तक) तथा मध्य की सभी आवृत्तियों में केवल नामों का पाठ और अन्तिम आवृत्ति में नामों के पाठ के बाद पूरी फल-श्रुति का पाठ करना चाहिये। शेष विधि जैसी फल-श्रुति में वर्णित है, वैसी ही है।—श्रीभैरवानन्दनाथ सागर (म० प्र०)]

कैलास शिखर पर बैठे हुए देवों के देव जगद् गुरु परमेश्वर से भैरवी ने कहा—हे कौलेश, सभी मन्त्रों में उत्तम से भी उत्तम समस्त कामनाओं के फल को देनेवाला 'श्रीललिता शतनाम स्तोत्र' सुनने की इच्छा है ॥१-२ श्री भैरव ने कहा—हे महा-भागे इस उत्तम स्तोत्र को सुनो। इसे पढ़ने और धारण करनेवाला समस्त सिद्धियों का स्वामी होता है। इस स्तव की कृपा से षट्-कर्मों की सिद्धि होती है। पशुओं के आगे इसे स्व-योनि के समान गुप्त रखना चाहिये ॥ ३-४

विनियोग—श्रीललिता के इस नाम-शतक के राज-राजेश्वर ऋषि, अनुष्टुप् छन्द, श्रीललिता देवी देवता तथा षट्-कर्मों की सिद्धि-सहित धर्म-अर्थ-काम व मोक्ष की प्राप्ति के लिये विनियोग है।

वाक् (ऐं), काम (क्लीं), शक्ति (सौः) बीजों से कर-षडङ्ग न्यास करें और प्रयोगों में बाला त्र्यक्षरी (ऐं क्लीं सौः) की योजना करें।

श्लोक १ से श्लोक १८ तक प्रथम नाम 'ललिता' से लेकर 'ललिताम्बिका' तक १०८ नाम स्पष्ट वर्णित हैं।

फल-श्रुति—जो श्रेष्ठ साधक सदा प्रातः-काल, मध्याह्न (दोपहर), सन्ध्या और रात्रि-काल में इसका पाठ करते हैं, वे सभी पापों से मुक्त होकर त्रैलोक्य-विजयी होते हैं और अन्त में ललिता के पद (स्वरूप या मुक्ति) को प्राप्त होते हैं ॥ १-२ निर्जन भवन, श्मशान, शिवालय, निर्जन स्थान, तालाब और नदी के किनारे, चतुष्पथ पर, एक-लिङ्ग (जिस शिव - लिङ्ग के चारों तरफ पाँच कोस तक दूसरा शिव-लिंग न हो), ऋतु-स्नाता स्त्री या वेश्या के घर में समस्त सिद्धियों की प्राप्ति के लिए अष्टोत्तर-शत-नामों का पाठ करना चाहिये। इन स्थानों पर पाठ करनेवाला जो भी कामना करता है, वह पूरी होती है। इस पृथ्वी पर और ब्रह्माण्ड में जितनी भी सिद्धियाँ हैं, सभी कर-तल-गत हो जाती हैं और स्मरण करने मात्र से साधक को बिना जप आदि के ही वे प्रत्यक्ष हो जाती हैं ॥३-६ अयुत (दस हजार) आवृत्तियों से इसका पुरश्चरण होता है। पुरश्चरण से सिद्ध स्तोत्र सभी कर्मों के फल को देने में समर्थ होता है ॥७ पुरश्चरण के बाद एक सहस्र बार इसका पाठ करने से १५ दिन में सारे जगत् का वशीकरण होता है ॥८ नित्य प्रत्येक नाम द्वारा पलाश के पुष्पों से हवन करने से छः मास में सभी लोकों की कन्याओं का वशीकरण होता है ॥१०

अश्वत्थ वृक्ष के मूल भाग में बैठकर ध्यान-पूर्वक १०८ बार पाठ करने से रोग नष्ट होता है ॥११ शून्य गृह में ध्यान-पूर्वक १००० बार पाठ करने से लक्ष्मी प्रसन्न होती है और तीनों

लोक वशीभूत होते हैं ।।१२ मङ्गल के दिन प्रेत-वस्त्र लाए, शत्रु-नाम उसमें लपेटे, प्राण-प्रतिष्ठा कर उसकी पूजा करे, रात्रि में उस वस्त्र को श्मशान में गाड़कर, २००० पाठ करे, तो शत्रु की जिह्वा स्तम्भित होती है—वह गूँगा हो जाता है ।।१३-१४ श्मशान में इस स्तोत्र का ५००० पाठ करे, तो शत्रु-नाश होता है ।।१५ शनि के दिन प्रेत-वस्त्र लाए, प्रत्येक नाम से सम्पुटित शत्रु-नाम लिखे, प्राण-प्रतिष्ठा कर ललिता की पूजा काले धतूर-पुष्पों से करे, रात्रि में श्मशान में गाड़ कर १०० बार स्तोत्र का पाठ करे, तो शत्रु की मृत्यु होती है ।। १६-१७ मङ्गल या शनि के दिन श्मशान से अङ्गार लेकर प्रेत-वस्त्र में लपेट कर प्रेत-रस्सी से बाँधे, उसे १० बार अभिमन्त्रित कर शत्रु-गृह में गाड़ दे । सात रात्रि के भीतर शत्रु का उच्चाटन होता है ।।१८-१९ कुमारी-पूजा कर भक्ति-पूर्वक पाठ करे, तो पृथ्वी पर कुछ भी दुर्लभ नहीं रहता ।।२०

दुर्भिक्ष, राज-भय, युद्ध और शत्रुओं के मध्य जहाँ कहीं भय हो, इसका पाठ करे, तो सङ्कट दूर होता है ।।२१-२२ शोधिता श्रेष्ठ कामिनी को अपने बाँईं ओर बैठा कर जप-पूर्वक स्तोत्र का पाठ करे, तो सिद्धि शीघ्र मिलती है ।।२३ चतुर्दशी के दिन कामिनी के साथ जो दरिद्र व्यक्ति ८ बार स्तोत्र-पाठ करता है, वह कुबेर के समान धनाढ्य होता है ।।२४ नित्य श्री महा-देवी ललिता की पूजा कर प्रत्येक नाम से हवन करे, तो विपुल धन प्राप्त होता है ।।२५ मक्खन को अभिमन्त्रित कर बाँझ स्त्री को खिलाये, तो वह पुत्र-वती होती है ।।२६ कण्ठ, बाईं भुजा या योनि में धारण करने से स्त्री पुत्र लाभ करती है ।।२७ श्रीललिता का यह स्तोत्र महा-उग्र है । विनम्र, शान्त, भक्त, ज्येष्ठ पुत्र, गुरु-भक्ति-परायण, भक्तों के भक्त, वेश्या और कुमारी-पूजन-कर्ता, दुर्गा-भक्त, शिव के भक्त, कामेश्वर-मन्त्र के जप-कर्ता, अद्वैत-भावापन्न और शक्ति में भक्ति रखनेवाले साधक को यह शत-नाम देना चाहिये, ऐसी स्वयं ललिता की आज्ञा है ।।२८-३१

खल (दुष्ट प्रकृतिवाला), पर-तन्त्र (जो किसी दूसरे के अधीन हो), दूसरों की निन्दा करनेवाला, भ्रष्ट (पतित या अधर्मी), परीवादी (दूसरों की निन्दा करनेवाला), शिव में अभक्ति रखनेवाला, दूसरे की स्त्री में आसक्त, वेश्या और स्त्रियों की निन्दा करनेवाला तथा पञ्च-मकारों की निन्दा करनेवाला—इनको यह स्तोत्र दिखाने से मेरी हत्या लगती है । अतः मन, वचन और कर्म से भी स्तोत्र नहीं देना चाहिये । जो इसके विपरीत करता है, वह पुत्र, स्त्री और राज्य से वञ्चित होता है । उसकी आयु निश्चित-रूप से कम हो जाती है । उसका मन्त्र क्षुभित होकर उसी का नाश कर देता है ।।३२-३५ क्रम-दीक्षा से युक्त साधक को सिद्धि मिलती है । वह कल्पोक्त सिद्धियों को प्राप्त कर क्रमशः राज्य-वैभव को प्राप्त करता है । वह ब्रह्मा के लेख (प्रारब्ध) को भी मिटाकर संसार-बन्धन से छूटकर सभी सिद्धियाँ प्राप्त करता है । क्रम-दीक्षा से युक्त साधक मेरे समान ही है । वही दीक्षित है, सुखी, साधु, सत्य-वादी, जितेन्द्रिय, वेद-वक्ता, स्वाध्यायी और समस्त आनन्दों में मग्न रहनेवाला है ।।३६-४०

जो स्वयं को ललिता-रूप जानकर जगदम्बा का पूजन करता है, वह त्रैलोक्य-विजयी होता है । जो शिव को गुरु और गुरु को शिव-रूप में जानता है, वही सदा-शिव है, इसमें सन्देह नहीं । हे देवि, प्रयत्न-पूर्वक इसे गोपनीय रखना चाहिये ।।४१-४२

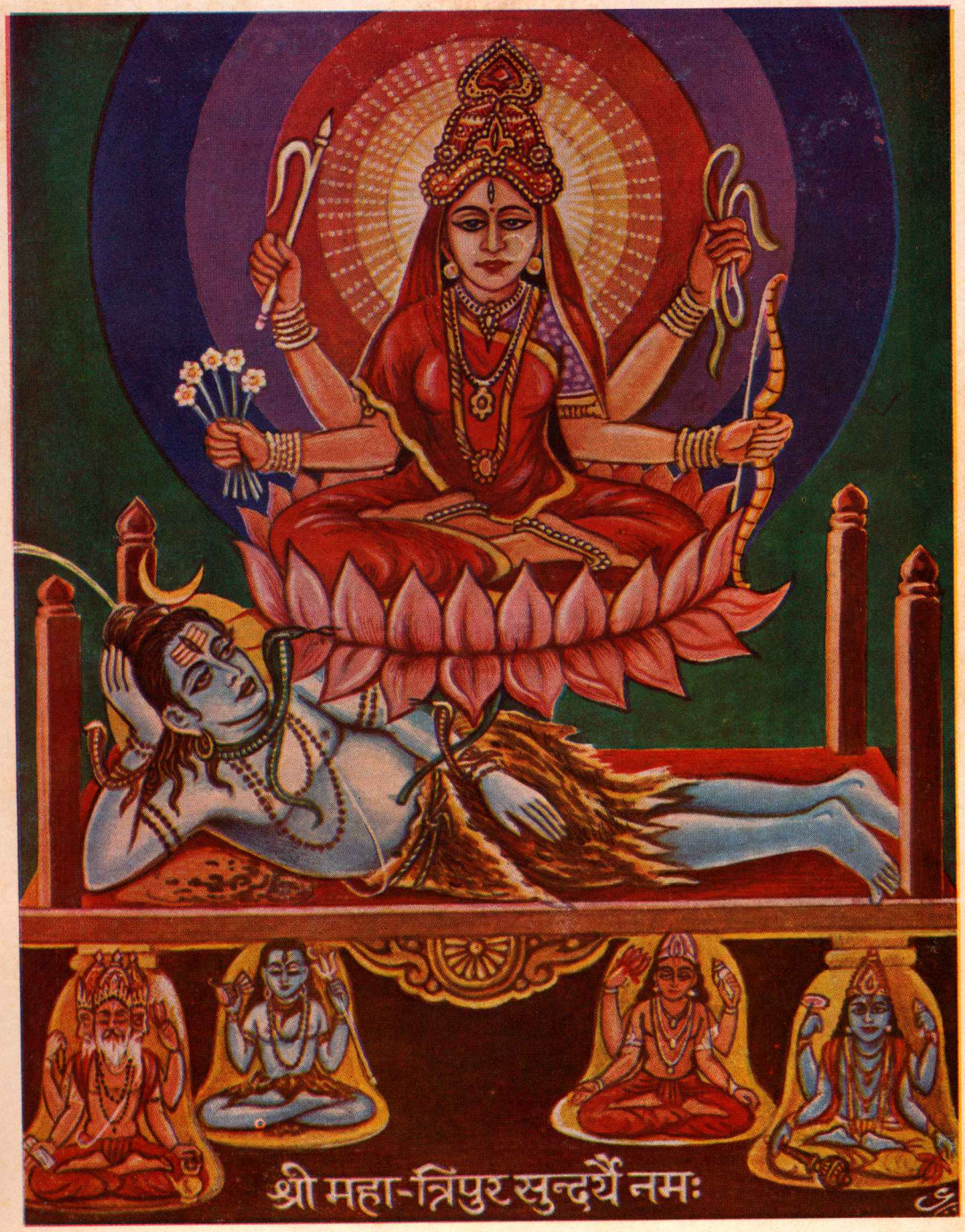
श्री महा-त्रिपुर सुन्दर्यै नमः

श्रीत्रिपुर-सुन्दरी वेद-सार-स्तवः

'क'स्तूरी - पङ्क - भास्वद् - गल-चलदमल-स्थूल-मुक्तावलीका,
ज्योत्स्ना शुद्धावदाता शशि-शिशु-मकुटालंकृता ब्रह्म - पत्नी ।
साहित्याम्भोज-भृङ्गी कवि-कुल-विनुता सात्विकीं वाग्-विभूतिं,
देयान्मे शुभ्र-वस्त्रा कर - चल - वलया वल्लकीं वादयन्ती ।। १

'ए'कान्ते योगि-वृन्दैः प्रशमित-करणैः क्षुत् - पिपासा-विमुक्तैः,
सानन्दं ध्यान-योगाद् विस-गुण - सदृशी दृश्यते चित्त-मध्ये ।
या देवी हंस - रूपा भव - भय - हरणं साधकानां विधत्ते,
सा नित्यं नाद - रूपा त्रिभुवन - जननी मोदमाविष्करोतु ।। २

'ई'क्षित्री सृष्टि - काले त्रिभुवनमथ या तत्क्षणेऽनु - प्रविश्य,
स्थेमानं प्रापयन्ती निज-गुण-विभवैः सर्वथा व्याप्य विश्वम् ।
संहर्त्री सर्व - भासां विलयन - समये स्वात्मनि स्व - प्रकाशा,
सा देवी कर्म-बन्धं मम भव - करणं नाशयत्यादि - शक्तिः ।। ३

'ल'क्ष्या या चक्र-राजे नव - पुर - लसिते योगिनी-वृन्द-गुप्ते,
सौवर्णे शैल-शृङ्गे सुर-गण - रचिते तत्त्व - सोपान - युक्ते ।
मन्त्रिण्या मेचकाङ्ग्या कुच-भर-नतया कोल-मुख्या च सार्धं,
साम्राज्ञी सा मदीया मद - गज - गमना दीर्घमायुस्तनोतु ।। ४

'ह्रीं'काराम्भोज-भृङ्गी हय-मुख-विनुता हानि-वृद्ध्यादि-हीना,
हंसोऽहं मन्त्र - राज्ञी हरि-हय-वरदा हादि - मन्त्रार्थ-रूपा ।
हस्ते चिन्मुद्रिकाढ्या हत-बहु-दनुजा हस्ति-कृत्ति - प्रिया मे,
हार्दं शोकातिरेकं शमयतु ललिताधीश्वरी पाश-हस्ता ।। ५

'ह'स्ते पङ्केरुहाभे सरस - सरसिजं विभ्रती लोक-माता,
क्षीरोदन्वत्-सु-कन्या करि - वर-विनुता नित्य-पुष्टाब्ज-गेहा ।
पद्माक्षी हेम - वर्णा मुर - रिपु - दयिता शेवधिः सम्पदां या,
सा मे दारिद्र्य - दोषं दमयतु करुणा-दृष्टि - पातैरजस्रम् ।। ६

'स'च्चिद् - ब्रह्म - स्वरूपां सकल - गुण - युतां निर्गुणां निर्विकारां,
राग-द्वेषादि - हन्त्रीं रवि - शशि - नयनां राज्य-दान - प्रवीणाम् ।
चत्वारिंशत् - त्रिकोणे चतुरधिक - समे चक्र - राजे लसन्तीं,
कामाक्षीं कामितानां वितरण - चतुरां चेतसा भावयामि ।। ७

'क'न्दर्पे शान्त - दर्पे त्रिनयन - नयन - ज्योतिषा देव-वृन्दैः,
साशङ्कं साश्रु-पातं स - विनय-करुणं याचिता काम - पत्न्या ।
या देवी दृष्टि - पातैः पुनरपि मदनं जीवयामास सद्यः,
सा नित्यं रोग - शान्त्यै प्रभवतु ललिताधीश्वरी चित् - प्रकाशा ।। ८

'ह'व्यैः कव्यैश्च सर्वैः श्रुति - चय - विहितैः कर्मभिः कर्म - शीला,
ध्यानाद्यैरष्टभिश्च प्रशमित - कलुषा योगिनः पर्ण - भक्षाः ।
यामेवानेक - रूपां प्रति - दिनमवनौ संश्रयन्ते विधिज्ञाः,
सा मे मोहान्धकारं बहु - भव - जनितं नाशयत्वादि - माता ।। ९

'ल'क्ष्या मूल - त्रिकोणे गुरु - वर - करुणा - लेशतः काम - पीठे,
यस्या विश्वं समस्तं बहु - तर - विततं जायते कुण्डलिन्याः ।
यस्याश्शक्ति - प्ररोहादविरलममृतं विन्दते योगि - वृन्दं,
तां वन्दे नाद - रूपां प्रणव - पद - मयीं प्राणिनां प्राण - दात्रीं ।। १०

'ह्रीं'काराम्भोधि - लक्ष्मीं हिम - गिरि - तनयामीश्वरीमीश्वराणां,
ह्रीं-मन्त्राराध्य-देवीं श्रुति - शत - शिखरैः मृग्यमानां मृगाक्षीम् ।
ह्रीं - मन्त्रान्तैस्त्रि - कूटैः स्थिर - तर - मतिभिर्धार्यमाणां ज्वलन्तीं,
ह्रीं ह्रीं ह्रीमित्यजस्रं हृदय - सरसिजे भावयेऽहं भवानीम् ।। ११

'स'र्वेषां ध्यान - मात्रात् सवितुरुदरगा चोदयन्ती मनीषां,
सावित्री तत् - पदार्था शशि - युत - मुकुटा पञ्च - शीर्षा त्रि-नेत्रा ।
हस्ताग्रैः शङ्ख - चक्राद्यखिल - जन - परित्राण - दक्षायुधानां,
विभ्राणा वृन्दमम्बा विशदयतु मतिं मामकीनां महेशी ।। १२

'क'त्रीं लोकस्य लीला - विलसित - विधिना कारयित्री क्रियाणां,
भत्रीं स्वानु - प्रवेशाद् वियदनिल - मुखैः पञ्च - भूतैः स्व - सृष्टैः ।
हत्रीं स्वेनैव धाम्ना पुनरपि विलये काल - रूपं दधाना,
हन्यादामूलमस्मत् - कलुष - भरमुमा भुक्ति - मुक्ति - प्रदात्री ।। १३

'ल'क्ष्या या पुण्य - जालैर्गुरु - वर - चरणांभोज - सेवा - विशेषात्,
दृश्या स्वान्ते सुधीभिर्दर - दलित - महा - पद्म-कोशेन तुल्ये ।
लक्षं जप्त्वाऽपि यस्या मनु - वरमणिमा - सिद्धिमन्तो महान्तः सा,
नित्यं मामकीने हृदय - सरसिजे वासमङ्गी - करोतु ॥ १४

'ह्रीं' श्रीमैं-मन्त्र - रूपा हरि - हर - विनुताऽगस्त्य - पत्नी-प्रदिष्टा,
हादिः काद्यर्ण - तत्त्वा सुर - पति - वरदा काल - राज-प्रदुष्टा ।
दुष्टानां दानवानां मद - भर - हरणा दुखः - हन्त्री बुधानां,
साम्राज्ञी चक्र - राज्ञी प्र - दिशतु कुशलं मह्यमोङ्कार - रूपा ॥ १५

श्री - मन्त्रार्थ - स्वरूपाश्रित - जन-दुरित-ध्वान्त - हन्त्री शरण्या,
श्रौत - स्मार्त - क्रियाणामविकलं फलदा काल-नेत्रस्य दाराः ।
श्रीचक्रान्तर्निषण्णा गुह - वर - जननी दुष्ट - हन्त्री वरेण्या,
श्रीमत् - सिंहासनेशीं प्र-दिशतु विपुलां कीर्तिमानन्द - रूपा ॥ १६

इति श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरी वेद-सार-स्तवः

हिन्दी-रूपान्तर

श्रीत्रिपुर-सुन्दरी वेद-सार-स्तव

कस्तूरी के लेप से उज्ज्वल जिनके गले में निर्मल बड़े-बड़े मोतियों का हार कम्पायमान है; चाँदनी के शुभ्र प्रकाश जैसी भासमाना जो बाल-चन्द्र से युक्त मुकुट से विभूषिता हैं; साहित्य-रूपी कमल की भ्रमरी, कवि-जनों द्वारा वन्दिता, श्वेत वस्त्र-धारिणी, कर-कमलों से वीणा बजाती हुई वे ब्रह्म-पत्नी सरस्वती देवी मुझे सतो-गुण से परिपूर्ण वागैश्वर्य प्रदान करें ।।१

जितेन्द्रिय और भूख-प्यास से रहित योगियों द्वारा एकान्त में आनन्द-पूर्वक ध्यान किए जाने से जो उनके चित्त के अन्दर ज्योति-रेखा-सो दिखाई देती हैं; संसार के दुःख दूर करने के लिए जिन हंस-स्वरूपा देवी का ध्यान साधकों द्वारा किया जाता है, वे नाद-स्वरूपा त्रिलोक-माता सदैव मुझे आनन्द प्रदान करें ।।२

तीनों लोकों की सृष्टि के समय उन पर कृपा-दृष्टि रखनेवाली जो आदि-शक्ति तत्काल ही उनमें प्रवेश कर सारे जगत् को अपने गुणों के ऐश्वर्य से व्याप्त कर उनका पालन करती हैं और संहार के समय आत्म-प्रकाश से उद्-भासिता जो आदि-शक्ति समस्त दृश्यमान जगत् को अपने में लीन कर लेती हैं, वे देवी संसार में डालनेवाले मेरे कर्म-बन्धनों का नाश कर दें ।।३

देवताओं द्वारा स्वर्ण-गिरि के शिखर पर तत्त्वात्मक सीढ़ियों सहित निर्मित और गुप्त योगिनियों से युक्त नौ पुरियों से विशोभित चक्रराज में जिन्हें देखा जा सकता है, मस्त हाथियों की जैसी चालवाली वे राज-राजेश्वरी कुच-भार से झुकी हुई अपनी सुन्दरी मन्त्रिणियों के सहित मुझे दीर्घायु प्रदान करें ।।४

'ह्रीं'-रूपी कमल की भ्रमरी, हय-ग्रीव द्वारा वन्दिता, आदि अन्त से रहिता, 'हंसोऽहं'-मन्त्र की अधिष्ठात्री, विष्णु को वर देनेवाली, हादि-मन्त्रार्थ-स्वरूपा, बहुत से असुरों का नाश करनेवाली, शङ्कर की प्रिया, हाथों में चिन्मुद्रा और पाश धारण करनेवाली भगवती ललिता मेरे महान् दुःखों को शान्त करें ।।५

कमल के समान शोभावाले हाथ में सुन्दर कमल से सुशोभिता, समुद्र-तनया, सुन्दर हाथियों से वन्दिता, सदैव प्रफुल्लित कमल में निवासिनी, कमल-नयना, स्वर्ण जैसी कान्तिवाली, विष्णु-पत्नी, जगन्माता लक्ष्मी जो सम्पत्तियों की विभूति हैं, वे मुझ पर निरन्तर अपनी दया-दृष्टि डाल कर मेरे दारिद्र्य-दुःख को शान्त करें ।।६

सच्चिद्-ब्रह्म-स्वरूपा, समस्त गुणों से सम्पन्ना, निर्गुणा, निर्विकारा, राग-द्वेष को नष्ट करनेवाली, सूर्य-चन्द्र-रूपी नेत्रोंवाली, राज्यैश्वर्य देने में निपुणा, चवालिस त्रिकोणों से युक्त चक्र-राज में सुशोभिता, अभीष्ट कामनाओं की पूर्ति करने में कुशला भगवती कामाक्षी का मैं अपने चित्त में ध्यान करता हूँ ।।७

भगवान् शङ्कर की नेत्र-ज्योति से कामदेव के गर्व के चूर्ण होने पर देवों और कामदेव की पत्नी रति द्वारा सशङ्कित और अश्रु-पूर्ण हो करुणा-सहित प्रार्थना करने पर जिन देवी ने अपनी दृष्टि डालकर कामदेव को तुरन्त ही पुनः जीवित कर दिया, वे चित्-प्रकाशा भगवती ललिता सदैव मेरे रोगों को शान्त करें ।।८

कर्म-काण्डी लोग श्रुतियों द्वारा निर्दिष्ट देवोपयोगी हवनीय पदार्थों और पितरोपयोगी तर्पणीय द्रव्यों से; पत्ते मात्र खाकर रहनेवाले निष्पाप योगि-जन ध्यानादि अष्ट-योगों से और विधियों के जाननेवाले विविध-रूपा जिनका आश्रय प्रति-दिन पृथ्वी पर लेते रहते हैं, वे आदि-माता अनेक जन्मों से उत्पन्न मेरे मोह-रूपी अँधेरे का नाश करें ।।९

गुरुदेव की दया मात्र से मूल त्रिकोणात्मक काम-पीठ पर जो दिखाई देती हैं; जिनकी कुण्डलिनी द्वारा सारा संसार विविध प्रकार से विस्तृत होता है और जिनकी शक्ति के स्फुरण से योगि-जन निरन्तर अमृत-पान करते हैं; प्राणियों को जीवन देनेवाली, प्रणव-पद-मयी, उन नाद-स्वरूपा भगवती की मैं वन्दना करता हूँ ।।१०

ह्रींङ्कार-रूपी सागर की लक्ष्मी-स्वरूपा, हिमालय-पुत्री, ईश्वरों की स्वामिनी, ह्रीं-मन्त्र द्वारा आराध्या देवी, सैकड़ों श्रेष्ठ श्रुतियों द्वारा अन्वेषिता, मृग-नयनी, स्थिर-बुद्धि साधकों द्वारा अन्त में 'ह्रीं'-मन्त्रवाले तीन कूटों से ध्यान की जानेवाली, तेजस्विनी भवानी का चिन्तन मैं अपने हृदय-कमल में निरन्तर 'ह्रीं ह्रीं ह्रीं' का जप करते हुए करता हूँ ।।११

ध्यान करने मात्र से सूर्य-मध्यस्था, चन्द्र-युक्त मुकुटवाली, पञ्च-मुखी, त्रिनेत्रा भगवती सावित्री सभी मनीषियों को उद्बोधित करनेवाली हैं। अपने कर-कमलों में समस्त जनों की रक्षा करने में सक्षम शङ्ख, चक्रादि अस्त्रों को धारण करनेवाली माता महेशी मेरी मति को विकसित करें ।।१२

ब्रह्मा द्वारा क्रियाओं को कराती हुई संसार-लीला करनेवाली, अपने द्वारा उत्पन्न आकाश, वायु आदि पञ्च-महा-भूतों द्वारा प्रवेश कर सारे विश्व का पालन करनेवाली और संहार

(शेष पृष्ठ ६५ के नीचे)

कल्याण-वृष्टि-स्तवः

'क'ल्याण-वृष्टिभिरिवामृत-पूरिताभिर्लक्ष्मीः स्वयं-वरण - मङ्गल-दीपिकाभिः ।
सेवाभिरम्ब ! तव पाद-सरोज-मूले, नाकारि किं मनसि भाग्य-वतां जनानाम् ।। १

'ए'तावदेव जननि ! स्पृहणीयमास्ते, त्वद् - वन्दनेषु सलिल - स्थगिते च नेत्रे ।
सान्निध्यमुद्यदरुणायुत - सोदरस्य, त्वद् - विग्रहस्य परया सुधयाऽऽप्लुतस्य ।। २

'ई'शत्व-नाम-कलुषाः कति नाम सन्ति, ब्रह्मादयः प्रति - भवं प्रलयाभि-भूताः ।
एकः स एव जगति स्थिर-सिद्धिरास्ते, यः पादयोस्तव सकृत् प्रणतिं करोति ।। ३

'ल'ब्ध्वा सकृत् त्रिपुर-सुन्दरि ! तावकीनं, कारुण्य-कन्दलित-कान्ति-भरं कटाक्षम् ।
कन्दर्प - कोटि-सुभगास्त्वयि भक्ति-भाजः, सम्मोहयन्ति तरुणीर्भुवन - त्रयेऽपि ।। ४

'ह्रीं'कारमेव तव नाम गृणन्ति वेदा, मातस्त्रिकोण - निलये, त्रिपुरे, त्रिनेत्रे !
त्वत्-संस्मृतौ यम-भटादि - भयं विहाय, दीव्यन्ति नन्दन-वने सह लोक-पालैः ।। ५

'ह'न्तुः पुरामधि - गलं परि-पीयमानः, क्रूरः कथं न भविता गरलस्य वेगः ।
नाश्वासनाय यदि मातरिदं तवार्धं, देहस्य शश्वदमृतालुप्त-शीतलस्य ।। ६

'स'र्वज्ञतां सदसि वाक्-पटुतां प्रसूते, देवि ! त्वदंघ्रि-सरसीरुहयोः प्रणामः ।
किं च स्फुरन्मुकुटमुज्ज्वलमात-पत्रं, द्वे चामरे च महतीं वसुधां ददाति ।। ७

(पृष्ठ ६४ का शेषांश)

के समय काल-रूप धारण कर पुनः अपने तेज से उस सबका हरण करनेवाली, भोग-मोक्ष-दायिनी उमा मेरे पाप-समूह का समूल नाश करें ।।१३

गुरुदेव के चरण-कमलों की विशेष सेवा करने से प्राप्त पुण्यों द्वारा जो दिखाई देती हैं; अपने पापों का शमन कर लेने पर सुधी साधक जिन्हें अपने अन्तःकरण में देख पाते हैं; जिनके श्रेष्ठ मन्त्र का जप कर महान् साधक अणिमा-सिद्धि प्राप्त करते हैं; वे भगवती मेरे हृदय-कमल में नित्य निवास करना स्वीकार करें ।।१४

'ह्रीं श्रीं ऐं'-मन्त्र-स्वरूपा, विष्णु और शिव द्वारा वन्दिता, अगस्त्य की पत्नी लोपामुद्रा द्वारा उपदिष्टा, हादि और कादि तत्व-स्वरूपा, इन्द्र को वर देनेवाली, कामराज द्वारा उपदिष्टा, दुष्ट दानवों का गर्व चूर करनेवाली, सज्जनों का दुःख दूर करनेवाली, ॐकार-स्वरूपा, चक्र-राज्ञी साम्राज्ञी मेरा कल्याण करें ।।१५

'श्रीं'-मन्त्र के अर्थ-स्वरूपवाली, शरणागत भक्तों के पाप-समूह को नष्ट करनेवाली, शरण-दायिनी, श्रुति और स्मृति द्वारा निर्दिष्ट कर्मों का यथोक्त फल देनेवाली, श्रीशिव की पत्नी, श्रीचक्र के मध्य में विराजमाना, कार्तिकेय की माता, दुष्टों का नाश करनेवाली, श्रेष्ठा, आनन्द-स्वरूपा, श्रीमत्-सिंहासन की ईश्वरी मुझे पुष्कल यश प्रदान करें ।।१६

'क'ल्प - द्रुमैरभिमत - प्रतिपादनेषु, कारुण्य - वारिधिभिरम्ब ! भवत् - कटाक्षैः ।
आलोकय त्रिपुर-सुन्दरि ! मामनाथं, त्वय्येव भक्ति-भरित त्वयि बद्ध-तृष्णम् ।। ८
'ह'न्तेतरेष्वपि मनांसि विधाय चान्ये, भक्तिं वहन्ति किल पामर-दैवतेषु ।
त्वामेव देवि ! मनसा समनु-स्मरामि, त्वामेव नौमि शरणं जननि ! त्वमेव ।। ९
'ल'क्ष्येषु सत्स्वपि कटाक्ष - निरीक्षणानामालोकय त्रिपुर-सुन्दरि ! मां कदाचित् ।
नूनं मया तु सदृशः करुणैक - पात्रं, जातो जनिष्यति जनो न च जायते वा ।।१०
'ह्रीं' ह्रीमिति प्रति-दिनं जपतां तवाख्यां, किं नाम दुर्लभमिह त्रिपुराधि-वासे !
माला-किरीट-मद-वारण-माननीयां, तां सेवते वसु-मती स्वयमेव लक्ष्मीः ।। ११
'स'म्पत्कराणि सकलेन्द्रिय-नन्दनानि, साम्राज्य-दान-निरतानि सरोरुहाक्षि !
त्वद्-वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि, मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यम् ।। १२
'क'ल्पोप - संहृतिषु कल्पित - ताण्डवस्य, देवस्य खण्ड - परशोः पर - भैरवस्य ।
पाशांकुशेक्षव - शरासन - पुष्प - बाणा, सा साक्षिणी विजयते तव मूर्तिरेका ।। १३
'ल'ग्नं सदा भवतु मातरिदं तवार्धं, तेजः परं बहुल - कुंकुम - पङ्क - शोणम् ।
भास्वत् - किरीटममृतांशु - कलावतंसं, मध्ये त्रिकोण - निलयं परमामृतार्द्रम् ।। १४
'ह्रीं'कारमेव तव नाम तदेव रूपं, त्वन्नाम दुर्लभमिह त्रिपुरे ! गृणन्ति ।
तत्-तेजसा परिणतं वियदादिभूतं, सौख्यं तनोति सरसीरुह-सम्भवादेः ।। १५
फल-श्रुतिः—ह्रीङ्कार-त्रय-सम्पुटेन महता मन्त्रेण सन्दीपितं ।
स्तोत्रं यः प्रति-वासरं तव पुरो मातर्जपेन्मन्त्र-वित् ।।
तस्य क्षोणि-भुजो भवन्ति वशगा लक्ष्मीश्चिर-स्थायिनी ।
वाणी निर्मल-सूक्ति-भार-भरिता जागर्ति दीर्घं वयः ।।
।। इति श्रीमच्छङ्कर-भगवदाचार्य-कृतिषु कल्याण-वृष्टि-स्तवः सम्पूर्णः ।।

हिन्दी रूपान्तर

कल्याण-वृष्टि-स्तव

हे माँ ! आपके चरण-कमलों में भक्ति-युक्त लोग जो सेवायें करते हैं, उन सेवाओं द्वारा उनके मन में सभी कामनाओं को पूर्ति हो जाती है क्योंकि धूप-दीप-नैवद्यादि पूजा स्वयं लक्ष्मी की कृपा से सम्पन्न होती है और उससे कल्याण की वर्षा सी होती है और अमृतत्व से युक्त मङ्गल की प्राप्ति होती है ।।१ हे जननि ! केवल इतना ही वाञ्छनीय है कि आपकी वन्दना द्वारा नेत्र आँसुओं से बन्द हो जायँ । तभी उदयकालीन सूर्य जैसे बड़े-बड़े नेत्रवाले अमृत-मय आपके स्वरूप

का सामीप्य लाभ होता है ।।२ प्रभुत्व की भावना से दूषित कोई नहीं बचता। ब्रह्मा आदि सभी हर युग में लय को प्राप्त हो जाते हैं। हे जननि ! केवल एक वही स्थिर-सिद्धिवाला रहता है, जो एक बार भी आपके चरणों में नमन करता है ।।३ हे त्रिपुर-सुन्दरि ! आपकी दया-पूर्ण प्रभा-मयी दृष्टि को एक बार भी पानेवाले भक्त कामदेव-जैसे सुन्दर बनकर तीनों लोकों की युवतियों को आकृष्ट कर लेते हैं ।।४ हे त्रिकोण-वासिनि मातः ! वेद आपके नाम 'ह्रीं' का ही उच्चारण करते हैं। उसे भले प्रकार ग्रहण करनेवाले यम-दूतों को दूर हटाकर देवों के नन्दन-वन में लोक-पालों के साथ शोभायमान होते हैं ।।५

हे मातः ! यदि भगवान शङ्कर के अर्ध-भाग में आपका अमृत-मय शीतल स्वरूप आश्वासन देता हुआ स्थित न होता, तो पुराकाल में उनके गले तक उतरा विष क्यों न घातक होता ? अर्थात् आपके ही प्रभाव से नील-कण्ठ होकर ही शिव रह गए, विष का मारक प्रभाव नहीं हो पाया ।।६ हे देवि ! आपके दोनों चरण-कमलों में प्रणाम करने से सर्वज्ञता और सभा में बोलने को सक्षमता प्राप्त होती है। यही नहीं, दो चँवरों द्वारा आपके मुकुट की उज्ज्वलता को फैलाने से विशाल भू-सम्पत्ति मिलती है ।।७ हे त्रिपुर-सुन्दरि ! मैं अनाथ आपकी ही भक्ति से पूर्ण हूँ, आप ही पर दृष्टि लगाए हूँ। आप अपनी कृपा-दृष्टि द्वारा दयापूर्वक देखकर कल्पवृक्ष के समान सभी कामनाओं की पूर्ति करते हुए मुझे कृतार्थ करें ।।८ अन्य लोग अन्य देवताओं को मन में रखकर भक्ति का निर्वाह करते हैं किन्तु हे देवि ! मैं मन से तुम्हीं को स्मरण करता हूँ, तुम्हीं को नमन करता हूँ और हे जननि ! तुम्हीं मेरो आश्रय हो ।।९ हे त्रिपुर-सुन्दरि ! तुम्हारी दया-दृष्टि की ओर देखनेवाले लाखों हैं किन्तु मेरा जैसा दयनीय व्यक्ति न हुआ है, न होगा, अतः किसी प्रकार मुझे कृतार्थ करें।।१०

हे त्रिपुर-वासिनि ! जो तुम्हारे नाम 'ह्रीं ह्रीं' को प्रति क्षण जपता रहता है, उसे इस संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं रहता। वह बड़े से बड़े लोगों के गर्व को मिटा देता है और स्वयं वैभव-शालिनी लक्ष्मी उसको सेवा करती हैं ।।११ हे कमल-नयने ! आपके नेत्र सम्पत्ति देनेवाले, सभी इन्द्रियों को आनन्दित करनेवाले, राज्यैश्वर्य देने में समर्थ और पाप-समूह के विनाशक हैं। हे मातः !वे मुझे सदा कृतार्थ करें।।१२ सृष्टि के संहार के लिए उद्यत परम भैरव द्वारा किए जाने-वाले ताण्डव नृत्य को प्रत्यक्ष देखनेवाला आपका स्वरूप पाश, अंकुश, इक्षु-धनुष और पुष्प-वाणों से युक्त अद्वितीय है। उसकी जय हो ।।१३ हे मातः ! परमामृत से आर्द्र और चन्द्र-कला से युक्त चमकीले मुकुटवाला आपका यह परम तेजस्वी स्वरूप त्रिकोणावास के मध्य में लाल कुंकुम से शोभायमान हो ।।१४ हे त्रिपुरे ! 'ह्रीं' ही आपका नाम है, वही आपका स्वरूप है। इस संसार में आपका नाम दुर्लभ कहा गया है। आपके ही तेज से आकाशादि महा-भूत लक्ष्मी आदि का सुख प्रदान करते हैं ।।१५

फल-श्रुति—महा-मन्त्र तीन 'ह्रीं' से सम्पुटित इस स्तोत्र का पाठ जो प्रति-दिन आपके समीप करता है; शासक उसके वश में रहते हैं, लक्ष्मी उसके पास सदा रहती हैं, उसकी वाणी विशुद्ध सुन्दर उक्तियों से विभूषिता होती है और वह दीर्घायु प्राप्त करता है।

श्रीत्रिपुरोपनिषत्

ॐ वाङ् मे मनसि प्रतिष्ठिता, मनो मे वाचि प्रतिष्ठितमाविरावीर्म एधि वेदस्य म आणीस्थः, श्रुतं मे म प्रहासीरनेनाहोऽधीतेनाहोरात्रान्त्संदधामि । ऋतं वदिष्यामि । सत्यं वदिष्यामि । तन्मामवतु । तद्-वक्तारमवतु । अवतु माम् । अवतु वक्तारम् ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

ॐ तिस्रः पुरस्त्रि-पथा विश्व-चर्षणी । अत्राकथा अक्षराः सन्निविष्टाः ।
अधिष्ठायैनामजरा पुराणी । महत्तरा महिमा देवतानाम् ॥ १
नव - योनीर्नव - चक्राणि दीधिरे । नवैव योगा नव-योगिन्यश्च ।
नवानां चक्रे अधि - नाथाः स्योना । नव - मुद्रा नव - भद्रा महीनाम् ॥ २
एका सा आसीत् प्रथमा सा । नवासीदासोन - विंशदासोन - त्रिंशत् ।
चत्वारिंशदथ तिस्रः समिधा । उशतीरिव मातरो माऽऽविशन्तु ॥ ३
ऊर्ध्व-ज्वलज्ज्वलन-ज्योतिरग्रे । तमो वै तिरश्चीनमजरं तद्-रजोऽभूत् ।
आनन्दनं मोदनं ज्योतिरिन्दोरेता उ वै मण्डला मण्डयन्ति ॥ ४
तिस्रश्च रेखाः सदनानि भूमेस्त्रि - विष्टपास्त्रि-गुणास्त्रि-प्रकाशाः ।
एतत् पुरं पूरकं पूरकाणामत्र प्रथेते मदनो मदन्या ॥ ५
मदन्तिका मानिनी मङ्गला च । सुभगा च सा सुन्दरी शुद्ध - मत्ता ।
लज्जा मतिस्तुष्टिरिष्टा च पुष्टा लक्ष्मीरुमा ललिता लालपन्ती ॥ ६
इमां विज्ञाय सुधया मदन्ति । परिस्रुता तर्पयन्तः स्व-पीठम् ।
नाकस्य पृष्ठे महतो वसन्ति । परं धाम त्रैपुरं चाविशन्ति ॥ ७
कामो योनिः कमला वज्र-पाणिर्गुहा हसा मातरिश्वाऽभ्रमिन्द्रः ।
पुनर्गुहा सकला मायया च । पुरूच्येषा विश्व - माताऽऽदि - विद्या ॥ ८
षष्ठं सप्तममथ वह्नि - सारथिमस्या । मूल - त्रिकमावेशयन्तः ।
कथ्यं कविं कल्पकं काममीशं । तुष्टुवांसो अमृतत्वं भजन्ते ॥ ९
त्रि-विष्टपं त्रि-मुखं विश्व - मातुर्नव - रेखाः स्वर - मध्यं तदीले ।
वृहत्-तिथीर्दश - पञ्चादि - नित्या । सा षोडशी पुर - मध्यं विभर्त्ति ॥ १०

द्वा मण्डला द्वा स्तना बिम्बमेकं । मुखं चाधस्त्रीणि गुहा सदनानि ।
कामीं कलां काम्य-रूपां विदित्वा । नरो जायते काम-रूपश्च काम्यः ।। ११
परिस्रुतं झषमाद्यं पलं च । भक्तानि योनीः सु-परिष्कृतानि ।
निवेदयन् देवतायै महत्यै । स्वात्मीकृत्य सुकृती सिद्धिमेति ।।१२
सृण्येव सितया विश्व -चर्षणिः । पाशेन प्रति-बध्नात्यभीकान् ।
इषुभिः पञ्चभिर्धनुषा च विध्यत्यादि-शक्तिररुणा विश्व-जन्या ।।१३
भगः शक्तिर्भगवान् काम ईश उभा दातारावह सौभगानाम् ।
सम-प्रधानौ सम-सत्त्वौ समोजौ तयोः शक्तिरजरा विश्व-योनिः ।। १४
परिस्रुता हविषा भावितेन प्र - संकोचे गलिते वै मनस्कः ।
शर्वः सर्वस्य जगतो विधाता धर्ता हर्ता विश्व-रूपत्वमेति ।। १५
एषर्ग् - यजुः परमेतच्च सामेवायमथर्वेयमन्या च विद्या ॐ ।
इयं महोपनिषत् त्रिपुरायाः यामक्षयं परमे गोभिरीट्टे ।। १६
।। ॐ ह्रीं ॐ ह्रीमिति त्रिपुरोपनिषत् ।।

हिन्दी रूपान्तर

त्रिपुरोपनिषत्

[वाणी मेरे मन में प्रतिष्ठित है । मेरा मन वाणी में प्रतिष्ठित है । वेद का तत्व इन दोनों में स्थित है । मैंने श्रुति का जो अध्ययन किया है, उसे मैं अहर्निश मनन करता हूँ । मैं ऋत बोलूंगा, सत्य बोलूंगा । वह मेरी रक्षा करे, वह वक्ता की रक्षा करे ।]

तीन पुरों की जो अधीश्वरी है, जिसके तीन पन्थ हैं (मुक्ति ५ प्रकार की मानी गई है—१ सालोक्य, २ सामीप्य, ३ सारूप्य, ४ सायुज्य और ५ कैवल्य । इनमें से सालोक्य का एक मार्ग है और कैवल्य का एक । शेष तीन—सामीप्य, सारूप्य और सायुज्य का एक मार्ग है । इस प्रकार कुल मिलाकर ३ मार्ग हुए । सालोक्य का मार्ग है अपने आश्रमोक्त कर्मों का ऊर्ध्व-रेता रहते हुए अनुष्ठान; मध्यम तीनों का मार्ग है प्रतीकोपासना, स्व-स्वाभिमान से उपासना तथा अहं-ग्रहोपासना; कैवल्य का मार्ग है ब्रह्म-ज्ञान अथवा निर्गुणोपासना), विश्व जिसकी प्रजा है, जो अकारादि १६, ककारादि १६ तथा थकारादि १६ अक्षर-रूपों में सन्निविष्ट है (यहाँ 'अ' से आरम्भ करके 'अः' तक १६ रूप हुए, फिर 'क' से आरम्भ करके 'त' तक १६ रूप हुए, फिर 'थ' से आरम्भ करके 'स' तक १६ रूप हुए । 'अकथा' शब्द का यही अभिप्राय है । 'ह्' कार को इस गणना में इसलिये छोड़ दिया जाता है क्योंकि वह विमर्श-स्वरूप है । शेष वर्ण संयुक्ताकार होने से उनकी स्वतन्त्र सत्ता नहीं है) । जो जरा-रहित है, जो जन्म-रहित है, इसी (त्रि-विन्दु-रूप त्रिपुरा) का देवताओं की महत्तरा महिमा अधिष्ठान करती है, अर्थात् ब्रह्मादि देवताओं की महिमा का अधिष्ठान यही त्रिपुरा है ।।१

वह नौ योनियों को, नौ चक्रों को, नौ योगों को, नौ योगिनियों को प्रकाशित करती है। वह (सुख-हेतु) नौ चक्र-भूमियों, नौ मुद्राओं और नौ भद्राओं की अधीश्वरी है ।।२

वह सब संसार की कारण-भूता एक ही थी। फिर विन्दु-चक्र-रूप नवा-योन्यात्मक थी। फिर १६ प्रकार की (नव-योनियों और बहिर्दशार के मेल से) हुई। फिर इन सबको मिलाकर उन्तीस प्रकार की हुई। फिर वही देवी ४३ प्रकार की हुई। वह कामना करती हुई माता की भाँति मेरे शरीर में प्रवेश करे ।।३

पहले स्थिति-चक्रोत्तर चक्रों में तमो-गुणात्मक अग्नि नामक ज्योतिर्मण्डल हुआ। ('ऊर्ध्व ज्वलत्' विशेषण उसके अग्नि के ज्वाला-रूप को स्पष्ट करने के लिए दिया गया है।) उसके पश्चात् तिर्य्यक् रूप से फैलनेवाला ज्योतिर्मण्डल सूर्य (रक्त-वर्ण होने के कारण) रजो-गुण-प्रधान हुआ। वह अजर था। उसके पश्चात् वैषयिक सुखोत्पादक चन्द्र ज्योतिर्मण्डल हुआ। ये तीनों मण्डल (अग्नि-मण्डल, सूर्य-मण्डल और चन्द्रमण्डल) माता को विभूषित करते हैं, अर्थात् उसकी शोभा बढ़ाते हैं ।।४

(इस ऋचा में नवें भू-गृहात्मक चक्र का उपदेश किया गया है।) भूमि के सदन की तीन रेखाएँ हैं। वे ही त्रिभुवन-रूपा हैं। वे त्रिगुण-रूपा हैं। अग्नि, सूर्य, चन्द्र—इन तीन वृत्तों के प्रकाश से प्रकाशित हैं। यह स-परिवार पर-देवता का निवास-स्थान चक्र भक्तों के मनोरथों का पूरक है। यह शिव, विष्णु आदि के मनोरथों का भी पूरक है। इस श्रीचक्र में कामेश्वर शिव और शिव-काम-सुन्दरी अपनी किरण-रूपी अणिमादि - द्वारा अनादि-रूप का विस्तार करती हुई विलास कर रही हैं ।।५

वह देवी पृथक्-पृथक् क्षेत्रों में मदन्तिका, मानिनी, मङ्गला, सुभगा, सुन्दरी, शुद्ध-मत्ता, लज्जा, मति, तुष्टि, इष्टा, पुष्टा, लक्ष्मी, उमा, ललिता और लालपन्ती नामों से अभिहित हैं। (पद्म-पुराण में देवी-तीर्थों की गणना करते हुए क्षेत्र-विशेष के आधार पर, देवी के कुछ नाम गिनाये हैं। यथा—प्रयाग में ललिता देवी, लङ्का में मङ्गला, त्रिकूट में भद्र-सुन्दरी, करवीर-देश में महा-लक्ष्मी, विनायक देश में देवी, देव-दास वन में पुष्टि, काश्मीर में मेधा, वत्सेश्वर में तुष्टि इत्यादि) ।।६

पूर्वोक्त पर-देवता की विधि विशेष-पूर्वक जानकर, दीक्षादि-पूर्वक उपासना स्वीकार करके, अपने शरीर से अभिन्न श्रीचक्र में पीयूषी-कृत परिस्रुत द्रव से तृप्त करते हुए जो भक्त इन्द्रियों के विषयों को निर्विकल्प रूप से भोगते हैं, वे महदाकाश पृष्ठ पर स्थित त्रिपुरा के धाम में निवास करते हैं ।।७

काम (क), योनि (ए), काम-कला (ई), वज्र-पाणि (ल), गुहा (ह्रीं), हस (ह, स), मातरिश्वा (क), अभ्र (ह), इन्द्र (ल), पुनर्गुहा (ह्रीं), सकला (स, क, ल), मायया (ह्रीं)—यह विश्व-माता पुरूची आदि-विद्या है ।।८

इस विद्या के प्रथम तीन अक्षर निकाल कर उनके स्थान पर छठा (ह), सातवाँ (स) और 'वह्नि-सारथि' (क) रखकर जप करनेवाले मोक्ष के भागी होते हैं। वह पर-शिव कामना करने-वाला काम, विश्व-कल्पना का अधिष्ठान (कल्पक), वेद-प्रणेता (कवि) और वेदों-द्वारा ज्ञातव्य (कथ्य) है ।।९

नव रेखाओं वाले संहार-चक्र में 'अः' स्वर का स्थान मध्य में है। इस त्रि-मुख चक्र को त्रिपुर-सुन्दरी का निवास स्थान समझ कर मैं उसकी स्तुति करता हूँ। वह त्रिपुर-सुन्दरी पन्द्रह तिथियों के पति (सूर्य) की भाँति श्री-चक्र के मध्य में निसर्ग-स्वर के स्थान पर आसीन है ॥१०

दो मण्डल, दो स्तन, एक बिम्ब-मुख, तीन भू-गृह (गुहा-सदन अर्थात् भूपुर), कामेश्वरात्मक मन्मथ-कला-युक्त कमनीय-स्वरूपा का ध्यान करता हुआ मनुष्य काम-देव के समान सुन्दर हो जाता है ॥११

मद्य, मांस, मत्स्य और ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि विविध जातियों की दृष्टादृष्ट संस्कारों द्वारा परिष्कृत योनियाँ महा-देवी की सेवा में निवेदित करके और उसके बाद स्वयं भी सेवन करके भक्त सिद्धि को प्राप्त कर लेता है ॥१२

जो 'अभीक' हैं अर्थात् इस मार्ग में लोभ-बुद्धि से अथवा भोग-बुद्धि से प्रवेश करते हैं, उनको प्राणि-मात्र का शुभाशुभ जाननेवाली वह विश्व-जननी आदि-शक्ति तीक्ष्ण श्वेत पाश से बाँधकर धनुष और पाँच बाणों से बेधती है ॥१३

ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और विज्ञान—इन छहों गुणों के आधार कामेश्वर तथा देवी शक्ति दोनों इस लोक में धर्मार्थ-काम-रूपी विविध फलों के देने वाले हैं; अर्थात् उस देवी की उपासना चाहे स्त्री-रूप में की जाय या पुरुष-रूप में की जाय, दोनों का फल एक जैसा होता है। दोनों—कामेश्वर और कामेश्वरी—समान-रूप से प्रधान हैं, क्योंकि कामेश्वरी का ध्यान करने में वह शिव के अङ्क में आश्रित होने के कारण उसका आधार शिव प्रधान हुए और शक्ति-हीन स्वयं कुछ करने में असमर्थ होने से शक्ति प्रधान हुई। दोनों समान सामर्थ्यवाले हैं। फिर भी इन दोनों समानों में शक्ति जरा-रहित है और संसार को उत्पन्न करनेवाली है, अतः वह प्रधान हुई ॥१४

मन्त्र-संस्कार द्वारा संस्कृत, हवि और मद्य के सेवन द्वारा मन से संकोच के दूर हो जाने पर वह उपासक विश्व-रूपत्व को प्राप्त हो जाता है। वही विधाता (ब्रह्मा), धर्त्ता (विष्णु) और हर्त्ता (शिव)—सब कुछ हो जाता है ॥१५

यह महोपनिषत् उस त्रिपुरा का है, जिसकी स्तुति अखण्ड ब्रह्म भी अकार, उकार, मकार द्वारा किया करता है। यह उपनिषद् ऋग्वेद, यजुर्वेद, साम-वेद, अथर्व-वेद तथा अष्टादश विद्याओं का सार-भूत है ॥१६

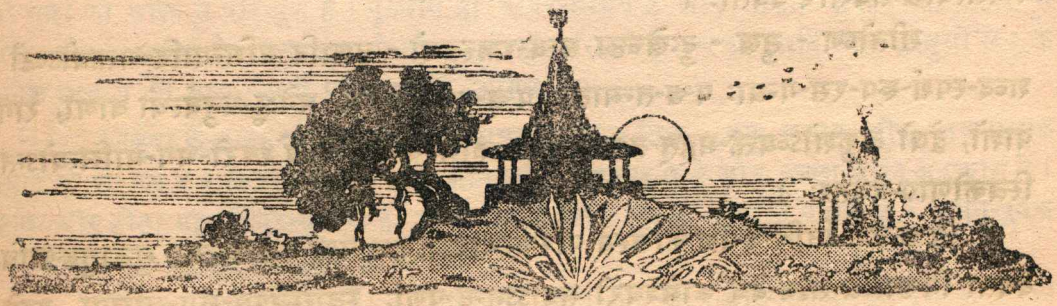

श्रीललितोपनिषत्

ॐ परम-कारण-भूता शक्तिः केन नव-चक्र-रूपो देहः । नव - चक्र-शक्ति-मयं श्री-चक्रं । वाराही पितृ-रूपा, कुरु-कुल्ला चील-देवता माता । पुरुषार्थाः सागराः । देहो नव-रत्ने द्वीपः । आधार-नवक-मुद्राः शक्तयः । त्वगादि - सप्त - धातुभिरनेकैः संयुक्ताः सङ्कल्पाः कल्प - तरवः । तेजः कल्पकोद्यानं ।

रसनया भासमाना मधुराम्ल-तिक्त - कटु-कषाय-लवण-रसाः षड्सः । क्रिया-शक्ति पीठं, कुण्डलिनी ज्ञान-शक्तिः, अहम् इच्छा-शक्तिः । महा-त्रिपुर-सुन्दरी ज्ञाता, होता, ज्ञानमर्घ्यं, ज्ञेयं हविः, ज्ञातृ-ज्ञान-ज्ञेया । नमो भेद-भावनं श्री-चक्र-पूजनं ।

नियति-सहित - शृङ्गारादयो नव-रसाः । अणिमादयः काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-मात्सर्य-पुण्य-पाप-मया ब्राह्म्यादयोऽष्ट-शक्तयः । आधार - नवक-मुद्रा शक्तयः । पृथ्व्यप् - तेजो-वाय्वाकाश-श्रोत्र-त्वक्-चक्षुर्जिह्वा - घ्राण - वाक्-पाणि - पाद-पायूपस्थ मनश्च विकाराः षोडश-शक्तयः । वचनादान-गमन - विसर्गानन्दादानोपादानोपेक्षा-बुद्धयोऽनङ्ग-कुसुमादि-शक्तयोऽष्टौ । अलम्बुषा-कुहू-विश्वोदरी - वरुणा-हस्ति - जिह्वा-यशस्विनी-गान्धारी-पूषा-सरस्वती-इडा-पिङ्गला-सुषुम्ना चेति चतुर्दश - नाड्यः सर्व-संक्षोभिण्यादि चतुर्दशार-देवताः ।

प्राणापान-व्यानोदान-समान-नाग-कूर्म-कृकल - देवदत्त-धनञ्जया दश-वायवः सर्व-सिद्धि-प्रदादि बहिर्दशार-देवताः । एतद्-वायु-दशक-संसर्गोपाधि-भेदेन रेचक-पूरक-पोषक-दाहकाल्पावकामृतमिति प्राण-सख्यत्वेन पञ्च - विधोऽस्ति । जठराग्निर्मनुष्याणां मोहको भक्ष्य-भोज्य-लेह्य-चोष्यात्मकं चतुर्विधमन्नं पाचयति । तदा काश-वान् सकलाः सर्वज्ञत्वाद्यन्तर्दशार-देवताः ।

शीतोष्ण - सुख - दुःखेच्छा सत्व-रजस्तमो - गुणादि वशिन्यादि-शक्तयोऽष्टौ । शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गन्धाः पञ्च-तन्मात्राः पञ्च-पुष्प-बाणाः, मनेक्षु-धनुर्वल्यो वाणो, रागः पाशो, द्वेषो अंकुशोऽव्यक्त-महत्-तत्वाहङ्कार कामेश्वरी - वज्रेश्वरी-भग-मालिन्योऽन्त-स्त्रिकोणाग्र-देवताः ।

पञ्च-दश-तिथि-रूपेण कालस्य परिणामावलोकन पञ्च-दश-नित्या शुद्धानुरूपाधि-देवता निरुपाधि-सार्व-देव कामेश्वरी सदाऽऽनन्द-पूर्णाः स्वात्मैक्य-रूप-ललिता कामेश्वरी सदाऽऽनन्द-घन-पूर्णा स्वात्मैक्य-रूपा देवता ललितामिति ।

साहित्य - करणं सत्वं कर्त्तव्यमकर्त्तव्यमिति भावना - मुक्ता उपचारा । अहं त्वमस्ति नास्ति कर्त्तव्याकर्त्तव्यमुपासितव्यानु - पासितव्यमिति विकल्पना । मनो-विलापनं होमः ।

बाह्याभ्यन्तर-करणानां रूप-ग्रहण-योग्यतास्तीत्यावाहनं । तस्य बाह्याभ्यन्तर-करणानामेक-रूप-विषय-ग्रहणमासनं । रक्त-शुक्ल-पदैकी-करणं पाद्यं । उज्ज्वलदामो-दाऽऽनन्दा सानन्दनमर्घ्यं । स्वच्छास्वतः शक्तिरित्याचमनं । चिच्चन्द्र-मयी स्मरणं स्नानं । चिदग्नि-स्वरूप परमानन्द-शक्ति-स्मरणं वस्त्रं । प्रत्येकं सप्त-विंशतिधा भिन्नत्वेन इच्छा-क्रियात्मक-ब्रह्म-ग्रन्थि-मयी स-तन्तु ब्रह्म-नाडी ब्रह्म-सूत्रं सव्यातिरिक्त-वस्त्रं । सङ्ग-रहितं स्मरणं विभूषणम् । स्वच्छन्द-परिपूर्ण-स्मरणं गन्धः । समस्त - विषयाणां मनः-स्थैर्येणानु-सन्धानं कुसुमं । तेषामेव सर्वदा स्वीकरणं धूपः । पवनाच्छिन्नोर्ध्व-ज्वाला-सच्चिदाह्लादाकाश-देहो दीपः । समस्त-यातायात-वर्जनं नैवेद्यं । अवस्था-त्रयैकीकरणं ताम्बूलं । मूलाधारादाब्रह्म-रन्ध्र-पर्यन्तं ब्रह्मरन्ध्रादामूलाधार-पर्यन्तं गतागत-रूपेण प्राद-क्षिण्यं । तुरीयावस्थानं संस्कार-देह-शून्यं प्रमादितावति-मज्जनं बलि-हरणं । सत्वमस्ति कर्त्तव्यमकर्त्तव्यमौदासीन्यमात्म-विलापनं होमः । भावना - विषयाणामभेद - भावना तर्पणं । स्वयं तत्-पादुका-निमज्जनं परिपूर्ण-ध्यानं ।

एवं मूर्ति-त्रयं भावनया युक्तो मुक्तो भवति । तस्य देवतात्मैक्य-सिद्धिः चिति-कार्याण्यप्रयत्नेन सिध्यन्ति स एव शिव-योगीति कथ्यते ।

।। इति श्रीललितोपनिषत् ।।

हिन्दी रूपान्तर

श्री ललितोपनिषत्

परम-कारण-भूता शक्ति द्वारा मानव शरीर नौ चक्र-रूपात्मक बना है । 'श्री-चक्र' इन्हीं नौ चक्रों की शक्ति से परि-पूर्ण है । पुरुषार्थ ही सागर-स्वरूप है और उसमें शरीर नौ रत्नों में स्थित द्वीप के समान है । मूलाधार की नौ मुद्रायें ही शक्तियाँ हैं । त्वचा आदि सात धातुओं से युक्त अनेक सङ्कल्प ही कल्प-वृक्ष हैं । तेज सुन्दर उपवन है ।

जिह्वा के द्वारा अनुभूत होनेवाले मधुर, अम्ल, तिक्त, कटु, कषाय और लवणात्मक स्वाद ही छः रस हैं । क्रिया-शक्ति पीठ है, ज्ञान-शक्ति कुण्डलिनी है और इच्छा-शक्ति अहङ्कार है । ज्ञाता और होता महा-त्रिपुर-सुन्दरी हैं; ज्ञान अर्घ्य है और ज्ञेय ही हवनीय पदार्थ है । नमन-पूर्वक भेद-भावना ही श्रीचक्र का पूजन है ।

शृङ्गार आदि नौ रस हैं; अणिमा आदि, काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-मात्सर्य-पुण्य और पाप तथा ब्राह्मी आदि आठ शक्तियाँ हैं; मूलाधार की नौ मुद्रायें शक्तियाँ हैं । पृथ्वी, जल, तेज, वायु

और आकाश; श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा और घ्राण, वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ और मन के विकार सोलह शक्तियाँ हैं। वचन, आदान, गमन, विसर्ग, आनन्द, आदान-उपादान, उपेक्षा और बुद्धि ही अनङ्ग-कुसुमादि आठ शक्तियाँ हैं। अलम्बुषा, कुहू, विश्वोदरी, वरुणा, हस्ति - जिह्वा, यशस्विनी, गान्धारी, पूषा, सरस्वती, इड़ा, पिङ्गला और सुषुम्ना ये १४ नाड़ियाँ सर्व-संक्षोभिणी आदि चतुर्दशार की देवता हैं।

प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनञ्जय—ये १० वायु सर्व-सिद्धि-प्रदा आदि बहिर्दशार की देवता हैं। इन्हीं १० वायुओं के सम्पर्क से उपाधि-भेद द्वारा रेचक, पूरक, पोषक, दाहक और अल्पावकामृत नाम से प्राण पाँच प्रकार का होता है। मनुष्यों की जठराग्नि भक्ष्य, भोज्य, लेह्य और चोष्य—इन चार प्रकार के अन्नों का पाचन करती है। तभी सर्वज्ञत्व आदि अन्तर्दशार के सभी देवता प्रकाशमान होते हैं।

शीत, उष्ण, सुख, दुःख, इच्छा, सत्व, रज, तमोगुण ही वशिनी आदि ८ शक्तियाँ हैं। शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध—ये ५ तन्मात्रायें ५ पुष्प-बाण हैं, मन ईख का धनुष है, वृत्तियाँ बाण हैं, राग (आसक्ति) पाश है और द्वेष अंकुश है। अव्यक्त, महत्-तत्त्व और अहङ्कार मध्यस्थ त्रिकोण की कामेश्वरी, वज्रेश्वरी और भग-मालिनी देवता हैं।

१५ तिथियों के द्वारा काल के परिणाम को देखनेवाली १५ नित्यायें शुद्ध-स्वरूपा अधि-देवता हैं। उपाधि-रहिता सर्व-देव-मयी कामेश्वरी सदा आनन्द-पूर्णा हैं। साधक की अपनी आत्मा में मिली हुई स्थितिवाली परिपूर्ण आनन्द-स्वरूपा ललिता कामेश्वरी इष्ट-देवता हैं।

सहित करना—सामञ्जस्य करना ही सत्व है। कर्तव्य या अकर्तव्य इस भावना से मुक्त होना ही उपचार हैं। 'मैं' 'तुम' है, कर्तव्य या अकर्तव्य नहीं है, उपासित और न उपासित—यह विकल्पना है। मन को विलय करना ही होम है।

बाहरी और भीतरी इन्द्रियों की रूप—ग्रहण करने की योग्यता ही आवाहन है। साधक की बाहरी और भीतरी इन्द्रियों द्वारा एक रूप—एक विषय का ग्रहण करना ही आसन है। रक्त और शुक्ल—इन दोनों पदों को एक करना पाद्य है। उज्ज्वल आनन्द से आनन्दित करना अर्घ्य है। शक्ति को स्वच्छता आचमन है। चिच्चन्द्र-मयी का स्मरण स्नान है। चिदग्नि-स्वरूपा परमा-नन्द-शक्ति का स्मरण वस्त्र है। इच्छा-क्रियात्मक ब्रह्म-ग्रन्थि-मयी ब्रह्म-नाड़ी ब्रह्म - सूत्र है। वही २७ प्रकार से भिन्न होकर अतिरिक्त वस्त्र है। सङ्ग-रहित स्मरण ही आभूषण है। स्वच्छन्द परि-पूर्ण स्मरण गन्ध है। मन की स्थिरता द्वारा सभी विषयों का अनुसन्धान करना पुष्प है। उन विषयों का सदा स्वीकार करना धूप है। पवन द्वारा उठी हुई सच्चिदानन्द की ज्योति ही दीपक है। सारे आवागमन का त्याग नैवेद्य है। तीनों अवस्थाओं को एक करना ताम्बूल है। मूलाधार से ब्रह्म-रन्ध्र तक और ब्रह्म-रन्ध्र से मूलाधार तक आना-जाना ही प्रदक्षिणा है। तुरीय स्थिति को प्राप्त संस्कार-देह से रहित होकर परमानन्द में डूबना ही बलि देना है। कर्तव्य-अकर्तव्य की उदा-सीनता से आत्म-लय कर मात्र सत्व ही है, यह भावना करना होम है। भावना के विषयों में अभेद का विचार रखना ही तर्पण है। अपने को श्रीपादुका में मग्न करना ही पूर्ण ध्यान है।

इस प्रकार तीनों स्वरूपों की भावना से युक्त होनेवाला मुक्त हो जाता है। उसे देवता और आत्मा के ऐक्य की सिद्धि बिना प्रयास के ही प्राप्त हो जाती है और वह शिव - योगी कहलाता है।

श्रीविद्यायाः शुद्ध-शक्ति-खड्ग-माला-स्तोत्रम्

श्रीपार्वत्युवाच--

पूर्व-पीठिका

भगवन् ! देव-देवेश ! सर्वज्ञ ! करुणा-निधे ! शुद्ध-शक्ति-महा-मन्त्रं ब्रूहि मे सकलेष्टदम् ।। १

श्रीईश्वर उवाच--

शृणु देवि ! प्रवक्ष्यामि यन्मां त्वं परिपृच्छसि । यस्य स्मरण-मात्रेण चक्र-पूजा-फलं लभेत् ।। २
शुद्ध नमोऽन्ताः स्वाहान्तास्तर्पणान्ता जयान्तकाः । प्रवृत्तयः पञ्चधा स्युर्मालासु निखिलास्वपि ।। ३
शुद्धायाः शक्ति-मालाया जपस्तेन विधीयते । पञ्चधा जायते नित्यं पुरश्चर्या-फलं लभेत् ।। ४
एषा विद्या महा-विद्या समयाचार-वर्त्तिनी । अति - वीर्य - तरा विद्या सूर्य-कोटि-सम-प्रभा ।। ५
कुलाङ्गना कुलं सर्वं मदीयं परमेश्वरि ! देवी रक्षतु सर्वाङ्गं दिव्याङ्गं भोग - दायिनी ।। ६
निरालम्बे महा-तल्पे लीयमाना सुरेश्वरी । हुङ्कारं च ततः कृत्वा पूजयेद् भुवि मण्डले ।। ७
पूजान्ते वाम-हस्तेन ह्रींकारं त्रि-विधं जपेत् । पश्चात् त्रिपुर-मन्त्रेण मूल-मन्त्रेण शङ्करि ।। ८
नवावरण-देवीनां ललितायाः महौजसः । एकत्र गणना - रूपो मन्त्रो मन्त्रार्थ-गोचरः ।।
माला-मन्त्र-विधानेन क्रमणोच्चारणं भवेत् ।। ९

सङ्कल्प—अद्येत्यादि मम श्रीराज-राजेश्वरी महा-त्रिपुर-सुन्दरी-देवता-प्रसाद-सिद्धि-द्वारा सर्वाभीष्ट-प्राप्त्यर्थं शुद्ध-शक्ति-खड्ग-माला-मन्त्र-पाठाख्यं कर्म करिष्ये ।

विनियोगः—ॐ नमोऽस्य श्रीशुद्ध-शक्ति-खड्ग-माला-मन्त्रस्य उपस्थेन्द्रियाधिष्ठायी श्रीवरुणादित्य ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः, सात्विक-ककार - भट्टारक-पीठ-स्थित-शिव-श्रीकामेश्वराङ्क-निलया श्रीकामेश्वरी ललिता महा - भट्टारिका देवता, ऐं क-५ बीजं, सौः स-४ शक्तिः, क्लीं ह-६ कीलकं, श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यासः—उपस्थेन्द्रियाधिष्ठायिने श्रीतरुणादित्य-ऋषये नमः शिरसि । देवी-गायत्री-छन्दसे नमः मुखे । सात्विक-ककार-भट्टारक-पीठ-स्थित-शिव-श्रीकामेश्वराङ्क-निलयायै श्रीकामेश्वरी - ललिता-महा-भट्टारिकायै देवतायै नमः हृदये । ऐं क-५ बीजाय नमः गुह्ये । सौः स-४ शक्तये नमः नाभौ । क्लीं ह-६ कीलकाय नमः पादयोः । श्रीललिता महा-त्रिपुर-सुन्दरी-प्रसाद-सिद्धचर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

मूलेन व्यापकं कुर्यात् । ध्यानम्—

अरुणां करुणा - तरङ्गिताक्षीं, धृत - पाशांकुश - बाण-चाप-हस्ताम् ।
अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीम् ।।

अति - मधुर - चाप - हस्तामपरिमित - मोद - मान - सौभाग्याम् ।
अरुणामतिशय - करुणामभि - नव कुल - सुन्दरीं वन्दे ।।

मानसोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् । यथा—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हस्फ्रें हस्फ्रीं हस्फ्रौं श्रीं ह्रीं ऐं समयिनि, मदिरानन्द-सुन्दरि, समस्त-सुरासुर-वन्दिते, भुजङ्ग - भूपाल-मौलि - मालार्चित-चरण-कमले, विकट-दन्त-खटाटोप - निवारिणि ! मदीयं शरीरं वज्र-मयं कुरु कुरु, दुर्जनं हन हन, दुष्ट-महीपालान् क्षोभय क्षोभय, पर-चक्रं भंजय भंजय । जयं-करि, गगन - गायिनि, त्रैलोक्य-स्वामिनि ! समल-वरयूं रमल-वरयूँ यमल-वरयूं समल-वरयूं श्रीभैरवि ! प्रसीद प्रसीद स्वाहा ।

तादृशं खड्गमाप्नोति येन हस्त - स्थितेन वै ।
अष्टादश - महा - द्वीप - सम्राट् भोक्ता भविष्यति ।।

'ह्रा, ह्रीं' इत्यादिना षडङ्ग-न्यासं कृत्वा माला-मन्त्रं जपेत् । यथा—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमस्त्रिपुर-सुन्दरि हृदय-देवि शिरो-देवि शिखा-देवि कवच-देवि नेत्र - देव्यस्त्र - देवि कामेश्वरि भग-मालिनि नित्य-क्लिन्ने भेरुण्डे वह्नि-वासिनि महा-वज्रेश्वरि शिव-दूति त्वरिते कुल-सुन्दरि नित्ये नील-पताके विजये सर्व-मङ्गले ज्वाला-मालिनि चित्रे महा - नित्ये परमेश्वर - परमेश्वरि मित्रीश-मयि षष्ठीश-मय्युड्डीश-मयि चर्यानाथ-मयि लोपा-मुद्रामय्यगस्त्य-मयि काल-तापन-मयि धर्माचार्य-मयि मुक्तकेशीश्वर-मयि दीप-कला-नाथ-मयि विष्णु-देव-मयि प्रभा-कर-देव-मयि तेजो-देव-मयि मनोज-देव-मयि कल्याण-देव-मयि रत्न-देव-मयि वासुदेव-मयि श्रीरामानन्द-मय्यणिमा-सिद्धे लघिमा-सिद्धे महिमा-सिद्धे ईशित्व - सिद्धे वशित्व-सिद्धे प्राकाम्य - सिद्धे भुक्ति-सिद्धे इच्छा-सिद्धे प्राप्ति-सिद्धे सर्व-काम-सिद्धे ब्राह्मि माहेश्वरि कौमारि वैष्णवि वाराहि माहेन्द्रि चामुण्डे महा-लक्ष्मि सर्व-संक्षोभिणि सर्व-विद्राविणि सर्वाकर्षिणि सर्व-वशङ्करि सर्वोन्मादिनि सर्व-महांकुशे सर्व-खेचरि सर्व - बीजे सर्व-योने सर्व-त्रिखण्डे त्रैलोक्य - मोहन - चक्र - स्वामिनि प्रकट-योगिनि कामाकर्षिणि बुद्ध्याकर्षिण्यहङ्काराकर्षिणि गन्धाकर्षिणि चित्ताकर्षिणि धैर्याकर्षिणि स्मृत्याकर्षिणि नामाकर्षिणि बीजाकर्षिण्यात्माकर्षिण्यमृताकर्षिणि शरीराकर्षिणि सर्वाशा-परिपूरक-चक्र-स्वामिनि गुप्त-योगिन्यनङ्ग-कुसुमेऽनङ्ग-मेखलेऽनङ्ग-मदनेऽनङ्ग-मदनातुरेऽनङ्ग-रेखेऽनङ्ग - वेगिन्यनङ्ग-कुशेऽनङ्ग-मालिनि सर्व-संक्षोभण-चक्र-स्वामिनि गुप्त-तर-योगिनि सर्व-संक्षोभिणि सर्व-

विद्राविणि सर्वाकर्षिणि सर्वाह्लादिनि सर्व-सम्मोहिनि सर्व-स्तम्भिनि सर्व - जृम्भिणि सर्व-वशङ्करि सर्व-रंजिनि सर्वोन्मादिनि सर्वार्थ-साधिनि सर्व-सम्पत्ति-पूरिणि सर्व-मन्त्र-मयि सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्करि सर्व-सौभाग्य-दायक-चक्र-स्वामिनि सम्प्रदाय - योगिनि सर्व-सिद्धि-प्रदे सर्व-सम्पत्-प्रदे सर्व-प्रियङ्करि सर्व-मङ्गल-कारिणि सर्व-काम-प्रदे सर्व-दुःख-विमोचिनि सर्व-मृत्यु-प्रशमनि सर्व-विघ्न - निवारिणि सर्वाङ्ग - सुन्दरि सर्व-सौभाग्य-दायिनि सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिनि कुलोत्तीर्ण-योगिनि सर्वज्ञे सर्व-शक्ते सर्वैश्वर्य-प्रदे सर्व-ज्ञान-मयि सर्व-व्याधि-विनाशिनि सर्वाधार-स्वरूपे सर्व-पाप-हरे सर्वानन्द - मयि सर्व-रक्षा-स्वरूपिणि सर्वेप्सित-प्रदे सर्व-रक्षा-कर - चक्र - स्वामिनि निगर्भ - योगिनि वशिनि कामेश्वरि मोदिनि विमलेऽरुणे जयिनि सर्वेश्वरि कौलिनि सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिनि रहस्य-योगिनि वाणिनि चापिनि पाशिन्यंकुशिनि महा-कामेश्वरि महा-वज्रेश्वरि महा-भग-मालिनि महा-श्रीसुन्दरि सर्व-सिद्धि-प्रद-चक्र-स्वामिन्यति-रहस्य-योगिनि श्रीश्रीमहा-भट्टारिके सर्वानन्द-मय-चक्र - स्वामिनि परापर-रहस्य-योगिनि त्रिपुरे त्रिपुरेशि त्रिपुर-सुन्दरि त्रिपुर-वासिनि त्रिपुराश्रीस्त्रिपुर-मालिनि त्रिपुरासिद्धे त्रिपुराम्ब महा-त्रिपुर-सुन्दरि महा-माहेश्वरि महा-महा-राज्ञि महा-महा-शक्ते महा-महा-गुप्ते महा-महाज्ञप्ते महा-महानन्दे महा-महा-स्पन्दे महा-महाशये महा-महा-श्रीचक्र-साम्राज्ञि नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं समस्त-प्रकट-गुप्त-गुप्त-तर-सम्प्रदाय-कुल-कौल-निगर्भ-रह-स्याति-रहस्य-परापर-रहस्य-योगिनि श्रीविद्या राज-राजेश्वरि श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

पुष्पाञ्जलिं निवेद्य मूलेन न्यासं विधाय मानसोपचारैः पूजयेत् ।

फल-श्रुति

माला-मन्त्रो महा-देव्याः सर्व-सिद्धि-प्रदायकः । एक-त्रिंशत्-सहस्राणैस्त्रिलोको-मोहन - क्षमः ॥ १
एषा विद्या महा-सिद्धि-दायिनी स्मृति-मात्रतः । अग्नि-वात-महा-क्षोभे राज-राष्ट्रस्य विप्लवे ॥ २
लुण्ठने तस्कर - भये संग्रामे सलिल - प्लवे । समुद्र - यान - विक्षोभे भूत - प्रेतादिजे भये ॥ ३
अपस्मार - ज्वर - व्याधि - मृत्यून्मादादिजे भये । डाकिनी पूतना यक्ष-रक्षः-कूष्माण्डजे भये ॥ ४
मित्र-भेदे ग्रह-भये व्यसने चाभिचारके । अन्येष्वपि च दोषेषु माला-मन्त्रं स्मरेद् बुधः ॥ ५
सर्वोपद्रव-निर्मुक्तः सर्व - व्याधि - विवर्जितः । सर्वदा पूर्ण-हृदयः साक्षाच्छिव-मयो भवेत् ॥ ६
आपत्-काले नित्य-पूजां विस्तरात् कर्तुमक्षमः । एकावर्तन-मात्रेण चक्र-पूजा - फलं लभेत् ॥ ७
नवावरण - देवीनां ललिताया महौजसः । एकत्र - गणना - रूपो यन्त्र - मन्त्रार्थ - गोचरः ॥ ८

[शेष पृष्ठ ७८ के नीचे]

श्री श्रीविद्या वृहत कर्पूर-स्तोत्रम्

सपूज्य शुक्लारुण-चक्र-चारिणीं, मूलादि-विन्द्वान्तर्गतां विभावयन् ।
स्थिति-स्वरूपां हृदयारविन्दगामीडेश-पाशांकुश-वाण - चापिनीम् ।। १

कर्पूरं पूर-रेफैर्विरहितममलं योनि-युक्तं महेशीकारोपेतं ललज्जा-युतमपि वरदे, देवि ! वाक्-कूटमाहुः । एतन्नित्यं जपन्ति स्मर-हर-महिले ! तर्क-काव्याऽऽगमज्ञास्तान् मुञ्चत्यब्ज-हस्ता कथ-मपि न च ते साधकाः सम्भवन्ति ।। २

ईशानः सोम-मारौ गिरिश-शत-मखौ भौवने शाख्य-बीजमित्थं ते काम-कूटं प्रजपति सु-जनो वारमेकं कदा-चित् । पार्श्वे नृत्यन्ति कामाकुलित-मृग-दृशाः प्राणदाः साधकस्य, नित्यं निर्वाण-विद्या विलसति हृदयाम्भोज-मध्ये च तस्य ।। ३

सोमः कामेन्द्र-लज्जा-युतमिदमनिशं शक्ति-कूटं तृतीयं, प्रातर्यश्चन्द्र-चूडां विकसित-वदना-म्भोज-संशोभितां त्वाम् । ध्यायन् राजाधि-राजेश्वरि ! जपति जनः शान्त-चित्तः प्रकामं, स स्यात् त्रैलोक्य-नाथः सुर-मुनि-दनुजैः सेव्य-मानो महात्मा ।। ४

सवँ वागादि-कूट-त्रयमपि ललिते! दिश्य कौलावतंसं, कौल-ज्ञानैक-गम्यां धृत-कुसुम-धनुर्वाण-पाशांकुशां त्वाम् । त्रैलोक्याकर्षकः स्याद् यदि जपति सदा भावयन् रक्त-वर्णां, प्रातः स्वान्तोपचारै-रतुल्ति-विभवेऽभ्यर्च्य मूलाम्बुजस्थाम् ।। ५

जपित्वा लक्ष-त्रयं ते मनुमनल-मुखे तद्-दशांशं विधाय कुर्याद् यश्चक्र-पूजां सुर-गण-नमिते! श्री-युतः स्यात् स एव । पृथ्वी - पालोत्तमाङ्गासृत-मणि-मुकुट-ज्वालिनी राजितांघ्रिर्वाचालः काव्य-कर्त्ताऽमर-पुर-गणिका-चित्त-चौरश्चिरायुः ।। ६

वाक्-कूटं तदनु तव शिवे ! शक्ति-कूटं नियोज्य, श्री-युक्तं मन्त्रमेतज्जपति पर-शिवां षोडशीं षोडशार्णाम् । ध्यायेत् पाशांकुशां त्वाममय-वर-करां सोम-सूर्याग्नि-नेत्रां, रक्तां चन्द्रावतंसां स भवति सकलैश्वर्य-युक्तः कुलज्ञः ।। ७

(पृष्ठ ७७ का शेषांश)

सर्वागम - रहस्यार्थः स्मरणात् पाप - नाशिनी । नरेन्द्राणां नारीणां सर्वदैव वशङ्करी ।। ९
ललिताया महेशान्या माला-विद्या महीयसी । अणिमादि-गणैश्वर्यैः रञ्जनी पाप-भञ्जनी ।।१०
तत्-तथावरण-स्थायि देवता-वृन्द-मन्त्रजम् । माला-मन्त्रो महा-देव्याः सर्व-कार्यार्थ-सिद्धिदः ।।११
इदं स्तोत्रं महा-देव्याः सर्व-लोक-विमोहनम् । सर्व-सौख्य-प्रदं नृणां सर्व-सौभाग्य-दायकम् ।।१२

अनेन शुद्ध-शक्ति-माला-मन्त्र-जपाख्येन कर्मणा भगवती राज - राजेश्वरी - श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी प्रीयताम् ।

।। ॐ तत्सत् श्रीललिता-परिशिष्टे उमा-महेश्वर-सम्वादे शुद्ध-शक्ति-माला-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

तारं मायां स-पद्मां तदनु निगदितं देवि ! कूट-त्रयं च, श्री-माया-काम-वाणी स्मर - हर-दयिते ! शक्ति-युक्तैस्तदेतैः । इत्युक्तैः पञ्च-बीजैः कृत-पुटित-महा-बीज-षट्कं विधाय, श्रीविद्ये ! बीज-रूपं भवति तव मनुं श्री-युतं मोक्षदं च ।। ८

मातः श्रीमन्त्र-राज स्मरति यदि जनो वारमेकं जितात्मा, कामेशाङ्क-स्थितां त्वामरुणित-वसनां सु-स्मितामम्बुजस्थाम् । खं व्योमाकाश चन्द्र-प्रमित-दल-युताम्भोज-मध्ये विभाव्य, सर्वैः पापैः विमुक्तस्तदवधि-चरितैः पुण्य-रूपः स एव ।। ९

तारान्ते वाक्-त्रयान्ते स्मरमपि कमलान्तेऽपि तच्छक्ति-कूटं, पूर्वोक्तैः पञ्च-बीजैः कृत-पुटित महा-मन्त्र-राजं तवेदम् । ध्यायन् विद्याक्ष-पाशांकुश-कर-कमलां गौर-वर्णां त्रि-नेत्रां, सर्वज्ञः स्याज्जपेद् यः कुल-पथ-विधिना श्रीमहा-षोडशीं त्वाम् ।। १०

शक्त्याख्यं चैव कामं प्रथम-निगदितं कूटमब्जासनाढ्यां, माया-वेदादि-युक्तं पुटितमपि सदा पञ्च-बीजैः पुरोक्तैः । ध्यायन् नीलाम्बरां त्वां शशि-सकल-धरां पान-पात्रां त्रिनेत्रां, त्रैलोक्यं क्षोभयेद् यः प्र-जपति विधिना दीक्षितः कौलिकेन्द्रः ।। ११

मातः ! श्री-मन्त्रमेतत् त्रितयमपि सदा दिव्य-भावानुरक्तो, दीक्षां सम्प्राप्य यत्नाज्जपति निज-गुरु-प्रोक्त-मार्गेण कश्चित् । जीवन्मुक्तः स एव त्रिभुवन-विजयी सर्व-वेदागमज्ञः, साक्षान्नारायणस्य प्रति-निधिरचिरात् त्वत्-पदं प्राप्नुयाद् यः ।। १२

प्रातः श्री-चक्र-संस्थामविरतं महिलाभिर्युतः साधकेन्द्रः, शुक्लैर्वोक्तोपचारैः क्रम-पथ-निहितैर्मन्त्र-वर्यैः समर्च्य । साङ्गां साम्नाय-विद्यामकुल-कुल-गतां षोडशाधार-मूलां, ध्यायन् प्रो वर्ण-लक्षं जपति शिव-समः स्यान्महा-षोडशीं त्वाम् ।। १३

त्रि-वृत्तं भू-गेहे रस-विधु-दलान्तर्वसु-दलं, ततो मन्वस्रान्तः सु-ललित-दशार-द्वयमपि ।
तदन्तः सर्पारं जननि ! कुल-बालार्क-सदृशं, त्रिकोणं तन्मध्ये विमल-तर-विन्दुर्भगवति ।। १४

तवेदं श्रीचक्रं जगदखिलमात्मा त्वमिति च, शरीरं तच्छैवं चिदपि परमे शाक्तममलम् ।
गुरोर्ज्ञात्वा सर्वं वि-लिखति सदा भावन-परस्त्रि-लक्षं सिन्दूरैः स भवति नरेन्द्रः क्षिति-तले ।। १५

सुधाक्तैः सिन्दूरैरपि कुल-रजोभिः सुरुचिरं, विलिख्य श्रीचक्रं प्रणमति च सन्तर्पयति यः ।
निशायां प्रालेयाचल-कुल-महोत्तंस-कलिके, भवेच्छक्त्या युक्तः सकल-जगतामेव वश-कृत् ।। १६

गुरु-प्रोक्तैर्मार्गैः पर-शिव-मुखाम्भोज-मुदिते, स्व-देहे श्री-चक्रं सततमपि सञ्चिन्तयति यः ।
स योगीशो वाग्मी वर-निकर-चूडा-मणिरपि, प्रवाल-प्राले य प्र-भजति सु-गुप्तं प्रभवति ।। १७

तदस्मिञ्छ्री-पीठाश्रित-रुचिर-सिंहासन-गतां, महा-पञ्च-प्रेतैः सुर-निकर-कोलैश्च सहिताम् ।
स-मुक्ता-माणिक्यैरसुर-विबुधालभ्य-मणिभिः कृताङ्गालङ्कारां जित-मदन-रूपां त्रि-नयनाम् ।। १८

नवीनादित्याभां धृत - शशि - कलां मुक्त - चिकुरां, शरांश्चापं पाशं शृणिमपि धृतां हस्त-कमलैः ।
महा-कामेशाङ्के कृत-निवसतीं रक्त-वदनां, स्मितं कामं दृष्ट्वा स्मित-मुख-सरोजां पर-शिवाम् ।। १९

जनो यो ध्यायेत् त्वामकुल-कुल-मार्ग-क्रम-युतः, समर्चायां नित्यं भुवन - भय-भङ्ग-व्यसनिनि !
मयूखाभिस्ताभिः प्रकट-वदनाभिश्च सहितां, चतुः - पीठासीनां त्रि-दश-गण-वन्द्यः स भवति ।। २०

शिवे! त्वं संक्षोभिण्यसि जननि ! विद्रावण-करी, परे ! सर्वाकर्षिण्यसि सु-ललिते ! सर्व-वशिनी ।
अजे ! सर्वोन्मादिन्यसि भगवति ! त्वं त्रि-नयने, त्वमेका कल्याणीश्वरि ! कुल-महेश्यंकुश-धरी ।। २१

भवाधारे ! खेचर्यसि जननि ! बीजा त्वमसि च, महा-योनिस्त्वं वै निखिल-भुवनानामपि सदा ।
त्रिखण्डा-रूपा त्वं जगदघ-हरे ! कौल-मुखदे, करे मुद्रा-रूपा ब्रजसि यदि कस्यापि स शिवः ।। २२

समाराध्यां देवीं सकल-कुल-मुद्रा-क्रम-युतां, विभाव्य त्वां नित्यं परम-शिव - पर्यङ्क - निलये !
गुरूक्तैस्तद्-बीजैः सह-रचित-मुद्रास्तव मुदे, पुरस्त जायन्ते मदन-हर-तुल्याः सुर - नुताः ।। २३

उमा त्वं काली त्वं त्वमसि भुवना दुर्गति-हरे, परा-गुह्या तारा स्मर - हर-सती चन्द्र - वदने !
महा-कुब्जा बाला त्रिपुर-ललिता त्वं च विमले, रमा वाणी सर्वावरण-जननी त्वं भगवति ।। २४

कलाभिर्नित्याभिस्तिथि-परिमिताभिः परि-वृतां, समभ्यर्चच्छ्री-मद्-गुरु-कुलमपि प्रोक्त-विधिना ।
स्मरेद् यस्त्वामङ्गाश्रित-युवति-षड्भिः स्मित-मुखि, स सर्वार्थावाप्तः प्रमुदित-मना स्यादिह सदा ।। २५

धरित्रि चक्रस्थां स्फटिक-दृशदच्छच्छवि-मयीं, त्रिनेत्रामम्भोज - द्वय - धृत-करां पुस्तक-धराम् ।
तथाक्ष-स्रग्धस्तां प्रकट-जननीभिः परि-वृतां, स चार्वाकां रम्यां निखिल-भव-सम्मोहन-कराम् ।। २६

त्रि-वृत्तस्थां रक्तां कठिन-कुच-भारां त्रि-नयनां, विचित्रालङ्कारामभय - युत - विद्याक्ष-वरदाम् ।
महाक्षैः संयुक्तां स विजित-मनस्कांश्च युवतीं, सदा त्रै-वर्गाणां फलमपि सकृत्-साधन - कराम् ।। २७

कला-पत्राब्जस्थां हिम-गिरि-निभां शुभ्र-वसनां, महा-गुप्ताख्याभिः कर-कलित-पाशामभि-युताम् ।
त्रिनेत्रां पाणिभ्यामभय-वरदामंकुश - करां, स बौद्धां सर्वेषामभिलषित - दानाश्वासनिनीम् ।। २८

जपा-पुष्पारक्तामभय-वर-विद्याक्ष-विलसत्, कराम्भोजामष्टच्छद - कमल - संस्थां त्रि-नयनाम् ।
सदैनां देवीं गुप्त-तर-सकलाभिः परि-वृतां, सुधासक्तां शान्तां पशु-जन-महा - क्षोभण - कराम् ।। २९

सदा शक्रारस्थामरुण-वसनां सम्पद-युत - प्रदायाख्याभिस्ताभिरखिल - सु - सौभाग्य-जननीम् ।
त्रिनेत्रां विद्याक्षाभय-वर-कराब्जैरपि युतां, स-सांख्यां स्वच्छंदां स्मित-मुख-सरोजां च सुभगाम् ।। ३०

सहस्रार्काभासामखिल-कुल-कौलादि-सहितां, त्रि-नेत्रां विद्याक्षाभय-वर-करां रक्त - वसनाम् ।
बहिः खैकारस्थां निखिल-निगमैः संयुत-पदां, सतां सर्वार्थानामपि सु - तरसा साधन - करीम् ।। ३१

दशारस्थामन्तः सकल - सुर-रक्षण - करीं, प्रवालारक्ताभां त्रि-नयन-युक्तां साभय-वराम् ।
स पाशां शृण्याढ्यां सु-रुधिर-कपालं जप-वटीं, धृतां सौरोपेतामभि - नुत-निगर्भादि-सहिताम् ।। ३२

शशाङ्काभां शुभ्राभरण-वसनां स-स्मित मुखीं, त्रि-नेत्रां तां पाशांकुश-युत - कपालाभय-कराम् ।
रहस्याभिर्युक्तां निखिल-भव-रोग-क्षय - करीं, सदाष्टारे संस्थां सु-मद-मुदितां वैष्णव - युताम् ।। ३३

महा-चक्रे कोणाश्रित-भुवन-कूटादि-सहिते, स्थितां माणिक्याभामभय-वरदां पुस्तक - धराम् ।
तथा सालङ्कारां स्फटिक-गुटिका-मण्डित-करां, त्रि-नेत्रां मुण्डाढ्यामपि कुसुम-मालां च दधतीम् ।। ३४

स्मितास्यामारक्तामरुण-वसनां मन्द-हसितां, निशा-नाथोत्तंसामभय - वर-विद्याक्ष - सहिताम् ।
त्रि-नेत्रां पञ्चाशत्-परिमित महा-मुण्ड-रचितां, दधानां तां मालां गलित-चिकुरां रत्न-खचिताम् ।। ३५

क्रमात् त्वां नित्यं यः स्मरति दश-चक्रेषु परमे, पुनस्तत्तन्मन्त्रैः सह-कुल-गुरु-प्रोक्त-विधिना ।
स वित्ते वित्तेशः सुर-गुरु-समः शास्त्र-कुशलो, भवेत् त्रैलोक्याधीश्वरि ! तव दयापाङ्ग-विषयः ।। ३६

प्रतोहारान् मातस्तव चरण-विद्यां च ललिते, प्रपञ्चाख्यां विद्यां तदनु दश-दिक्-पाल-निवहाम् ।
ततस्तेषां शस्त्राण्यपि कुल-पथाभ्यर्च्य मुदितः, कहानन्ताराध्ये ! व्रजति परम - धाम मनुजः ।। ३७

रसैकास्यामम्बां धृत-शशि-कलां मुक्त-चिकुरां, त्रि-नेत्रामापीनोन्नत-कुच - युगां रक्त - वसनाम् ।
हरि - ब्रह्मेशानाजिनमभिधानां कर - शतैरथाष्टोपेतैर्वा सुर - निकर-युक्तैरपि युताम् ।। ३८

महा-पञ्च-प्रेतोपरि रुचिर-सिंहासनमथो, परीशस्तन्नाभ्युद्भवममल - रक्ताभ - कमलम् ।
श्मशानं तन्मध्ये वृषभ-विगतानन्द-पुरुषोरसिस्थां यो ध्यायेज्जननि ! स हि मोक्षं च लभते ।। ३९

स्मरेन्निर्वाणाख्यं तव चरण-सम्पूजन - विधौ, षडाम्नायोपेतां व्रज - गतममुं पञ्च - वदनम् ।
कराम्भोजैः पद्मानि च दश दधानां च दशभिर्महा-विद्या-युक्तं किमपि कुल-कल्पं विदधतम् ।। ४०

जपेद् यस्तवन्मन्त्रं जननि ! सकलाम्नाय-जनकं, सदा सर्वाचारैरपि यजन - शीलः प्रमुदितः ।
स वाग्-मार-श्री-सम्पुटित-दश-कूटात्मकमथ, श्रुति-श्री-शाकिन्यादिकमिति सु - गुह्य-द्वयमपि ।। ४१

स जीवन-मुक्तः स्यादिह जननि ! निर्वाण-सुखदे, पयोधिः सिद्धिर्नाममर - दितिजवन्दित-पदः ।
बहूक्तैः किं पञ्चानन-दश-शतास्याद्यविदिते, महिम्ना संयुक्तो मदन - महिला - मोहन-करः ।। ४२

जनो यो हालाभिर्जननि ! तव सम्पूज्य चरणौ, करे पात्रं धृत्वा भगवति ! कुल-ज्ञान-निरतः ।
सहस्रारे ध्यात्वा पर-शिव-गुरुं शक्ति-सहितं, पिबेद् वामोच्छिष्टं स हि भवति शम्भोः प्रति-निधिः ।।४३

कुलागारं पश्यन्नति - दृढ-मना यस्तव मनुं, जपेल्लक्षं रात्रौ रहसि च मदामोद-मुदितः ।
तथा श्री-दूतीं तां गज-दशन-पर्यङ्क-निलयां, यजेद् यस्त्वद् - रूपां स भवति हरिर्मन्मथ-कले ।। ४४

स्मरागारे कुर्वन निज-कर-सरोजं त्रि-नयने, त्रि-लक्षं त्वन्मन्त्रं भगवति ! सदा घोर - विधिना ।
महा-पीठे मातस्तव दश-शतार्णं शुभ-मनुं, जपेद् यः कौलेन्द्रः स हि भुवन - सौख्यं च लभते ।। ४५

शिवे ! लक्षं मन्त्रं जपति विपरीतो यदि नरः, स एव श्री-मातः ! सकल-भुवनानामधि-पतिः ।
शवारूढः कौलः पितृ-वन-गतः श्री-क्रम-युतस्त्रिकूटाख्यां विद्यामपि जपति स स्यात् कुल-पतिः ।। ४६

नरं मेषं छागं महिषमपि मार्जारमथवा, शुभं मत्स्यं हंसं हरि - हर - नुते कुक्कुटमपि ।
बलिं ते पूजायां वितरति यदा कौलिक-जनस्तदा क्रोधादीनामपि रिपु-गणानां प्रहरणम् ।। ४७

महा-मूलाधारोपरि रस-दलं यद् रवि-निभं, ततो दिग्-पत्राख्यं ललित-मणि-पूरं तदुपरि ।
हृदम्भोजं मातस्तदुपरि विशुद्धाख्यमपरं, ततस्त्वां वै ध्यायन् द्वि-दल-युत-पद्मोपरि-गताम् ।। ४८

हठाभ्यां संयोगाद् विलसति सुषुम्णाख्य-रमणि, तथा सार्द्धं पीत्वाऽमर-मुनि-मनोभ्यर्थित-सुधाम् ।
परां दीपाकारां निखिल-भुवनाधार-जननीं, स्मरन्तस्त्वां मातर्भुवन - नमिताः कौल-मुनयः ।। ४९

त्वदीयं श्री-स्तोत्रं भगवति ! महा-मन्त्र-सदनं तथा ते ध्यानाङ्गावरण-नव-मुद्रादि - सहितम् ।
महा-चक्रोद्धारैर्यतमिदमहो साधक-वरः, पठेद् यः पूजाऽन्ते भुवि भवति स श्री - प्रिय - तरः ।। ५०

।। श्री श्रीविद्या बृहत्-कर्पूर-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

श्रीत्रिपुर-सुन्दरी सान्निध्य-स्तवः

[विजय छन्दः]

'क' कल्प-भानु-समान-भास्वर-धाम-लोचन-गोचरम्,
किं किमित्यति-विस्मिते मयि पश्यतीह समागताम् ।
काल-कुन्तल-भार-निर्जित-नील-मेघ-कुलां पुरः,
चक्र-राज-निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ।। १

'ए' एक - दन्त - षडाननादिभिरावृतां जगदीश्वरीम्,
एनसां परि-पन्थिनीमहमेक-भक्ति-मर्चिताम् ।
एक-हीन-शतेषु जन्मसु सञ्चितात् सुकृतादिमाम्,
चक्र-राज-निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ।। २

'ई' ईदृशीति च वेद-कुन्तल-वाग्भिरप्यनिरूपिताम्,
ईश-पङ्कज-नाभ-सृष्टि-कृदादि-वन्द्य-पदाम्बुजाम् ।
ईक्षणान्त-निरीक्षणेन मदिष्टदां पुरतोऽधुना,
चक्र-राज-निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ।। ३

'ल' लक्षणोज्ज्वल-हार-शोभि-पयोधर - द्वय - कैतवात्,
लीलयैव दया-रस-स्रवदुज्ज्वलत्-कलशान्विताम् ।
लाक्षयाङ्कित - पादपाति-मिलिन्द-सन्ततिमग्रतः,
चक्र-राज-निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ।। ४

'ह्रीं' ह्रीमिति प्रति-वासरं जप-सुस्थिरोऽहमुदारया,
योगि-मार्ग-निरूढयैक्य-सुभावनां गतया धिया ।
वत्स ! हर्षमवाप्त-वत्यहमित्युदार-गिरं पुरः,
चक्र-राज-निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ।। ५

'ह' हंस-वृन्दमलक्तकारुण - पाद - पङ्कज - नूपुर-
क्वाण-मोहितमादरादनु-धावितं मृदु शृण्वतीम् ।
हंस-मन्त्र-महार्थ-तत्त्व-मयीं पुरो मम भाग्यतः,
चक्र-राज-निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ।। ६

'स' सङ्गतं जलमभ्र-वृन्द-समुद्भवं धरणी - धराद्,
धारया वहदञ्जसा भ्रममाप्य सैकत-निर्गतम् ।
एवमादि-महेन्द्र-जाल-सुकोविदां पुरतोऽधुना,
चक्र-राज-निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ।। ७

'क' कम्बु-सुन्दर-कन्धरां कच-वृन्द-निर्जित-वारिदाम्,
कण्ठ-देश-लसत्-सुमङ्गल-हेम-सूत्र-विराजिताम् ।
कादि-मन्त्रमुपासतां सकलेष्टदां मम सन्निधौ,
चक्र-राज-निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ।। ८

'ह' हस्त-पद्म-लसत् - त्रिखण्ड - सुमुद्रिकामहमद्रिजाम्,
हस्ति-कृत्ति-परीत-कार्मुक-वल्लरी-सम-चिल्लिकाम् ।
हर्यज-स्तुत-वैभवां भव-कामिनीं मम भाग्यतः,
चक्र-राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ।। ९

'ल' लक्षणोल्लसदङ्ग-कान्ति-झरी-निराकृत - विद्युतम्,
लास्य-लोल-सुवर्ण-कुण्डल-मण्डितां जगदम्बिकाम् ।
लीलयाऽखिल-सृष्टि-पालन-कर्षणादि-वितन्वतीम्,
चक्र-राज-निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ।। १०

'ह्रीं' ह्रीमिति त्रिपुरा-मनु-स्थिर-चेतसा बहुधार्चिताम्,
हादि-मन्त्र-महाम्बु-जात-विराजमान-सुहंसिकाम् ।
हेम-कुम्भ-घन-स्तनां चल-लोल-मौक्तिक-भूषणाम्,
चक्र-राज-निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ।। ११

'स' सर्व - लोक - नमस्कृतां जित-शर्वरी-रमणाननाम्,
शर्व-देव-मनः-प्रियां नव - यौवनोन्मद - गर्विताम् ।
सर्व-मङ्गल-विग्रहां मम पूर्व-जन्म-तपो-बलात्,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ।। १२

'क' कन्द-मूल-फलाशिभिर्बहु - योगिभिश्च गवेषिताम्,
कुन्द-सुन्दर-दन्त-पंक्ति-विराजितामपराजिताम् ।
कन्दमागम-वीरुधां सुर - सुन्दरीभिरिहागताम्,
चक्र-राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ।।१३

(शेष पृष्ठ ८४ के नीचे)

श्रीत्रिपुर-सुन्दरी विजय-स्तवः

'क' कल्पान्तोदित - चण्ड-भानु-विलसद्-प्रभा-देह-मण्डिता,
कालाम्भोद-समान-कुन्तल-भरा कारुण्य-वरां निधिः ।
काद्यर्णाङ्कित-मन्त्र-राज - विलसत्-कूट-त्रयोपासिता,
श्रीचक्राधि - निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। १

'ए' एतत् - प्राभव - शालिनीति निगमैरद्याप्यनालोचिता,
हेमाम्भोज-मुखी चलत् - कुवलय - प्रस्पर्धमानेक्षणा ।
एणाङ्कांश - समान-फाल-फलक-प्रोल्लासि-कस्तूरिका,
श्रीचक्राधि - निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। २

'ई' ईषत्-फुल्ल-कदम्ब-कुण्डला महा - लावण्य - गर्वापहा,
स्निग्ध-स्वच्छ-सुदन्त-कान्ति-विलसन्मन्द-स्मिताऽलंकृता ।
ईशित्वाद्यखिलेष्ट-सिद्धि-फलदा भक्त्या नतानां सदा,
श्री चक्राधि-निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। ३

(पृष्ठ ८३ का शेषाश)

'ल' ल-त्रयाङ्कित-मन्त्र-राट्-समलंकृतां जगदम्बिकाम्,
लोल-नील-सुकुन्तलावलि-निर्जितालि-कदम्बकाम्,
लोभ-मोह-विदारिणीं करुणा-मयीमरुणां शिवाम्,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ।।१४

'ह्रीं' ह्रीं-पराख्य-महा - मनोरधि - देवतां भुवनेश्वरीम्,
हृत्-सरोज-निवासिनीं हर - वल्लभां बहु-रूपिणीम् ।
हार - कुण्डल - नूपुरादिभिरन्वितां पुरतोऽधुना,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ।। १५

'श्रीं' श्रीं सु - पञ्च-दशाक्षरीमपि षोडशाक्षर - रूपिणीम्,
श्री-सुधार्णव-मध्य-शोभि - सरोज-कानन - चन्द्रिकाम् ।
श्रीगुह - स्तुत - वैभवां पर - देवतां मम सन्निधौ,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ।। १६

'ल' लक्ष्यालक्ष्यावलग्न-देश-विलसद् - रोमावली - वल्लरी,
वृत्त-स्निग्ध-फल-द्वय - भ्रम-करोत्तुङ्ग-स्तनी सुन्दरी ।
रक्ताशोक - शुभ - प्रपाटल - दुकूलाच्छादिताङ्गी मुदा,
श्रीचक्राधि-निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। ४

'ह्रीं' ह्रीङ्कारी सुर-वाहिनी जल-गभीरावर्तनाभिर्घन—
श्रोणी-मण्डल-भार-मन्द गमना-काञ्ची-कलापोज्ज्वला ।
शुण्डादण्ड - सुवर्ण-वर्ण - कदली - काण्डोपमोरु- द्वयी,
श्रीचक्राधि - निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। ५

'ह' हस्त-प्रोज्ज्वलदिक्षु-कार्मुक-लसत्-पुष्पेषु-पाशांकुशा,
ह्याद्यर्णाङ्कित-मन्त्र-राज-निलया हारादिभिर्भूषिता ।
हस्त-प्रान्त-रणत्-सुवर्ण - वलया हर्यक्ष - सम्पूजिता,
श्रीचक्राधि-निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। ६

'स' संरक्ताम्बुज-पाद-युग्म - विलसन्मंजु - क्वणन्नूपुरा,
संसारार्णव - तारणैक - तरणिर्लावण्य-वारां निधिः ।
लीला-लोल - तमं शुकं मधुरया संलालयन्ती गिरा,
श्रीचक्राधि-निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। ७

'क' कल्याणी करुणा-सार्द्र-हृदया कल्याण - सन्दायिनी,
काद्यर्णाङ्कित-मन्त्र-लक्षित-तनुस्तन्वी तमो - नाशिनी ।
कामेशाङ्क-विलासिनी कल-गिरामावास-भूमिः शिवा,
श्रीचक्राधि-निवासिनी विजयते श्रीराज - राजेश्वरी ।। ८

'ह' हन्तुं दानव-पुङ्गवं रण-भुवि प्रोच्चण्ड-भण्डाभिधम्,
हर्यक्षाद्यमरार्थिता भगवती दिव्यां तनूमाश्रिता ।
श्रीमाता ललितेत्यचिन्त्य-विभवैर्नाम्नां सहस्रैः स्तुता,
श्रीचक्राधि-निवासिनी विजयते श्रीराज - राजेश्वरी ।। ९

'ल' लक्ष्मीर्वाग-गजादिभिर्बहु-विधैः रूपैः स्तुताऽपि स्वयम्,
नी-रूपा गुण-वर्जिता त्रि-जगतां माता च चिद्-रूपिणी ।
भक्तानुग्रह - कारणेन ललितं रूपं समासादिता,
श्रीचक्राधि-निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। १०

'ह्रीं' ह्रीङ्कारैक - परायणार्त - जनता संरक्षणे दीक्षिता,
हार्दसं तमसं व्यपोहित-मलं भूष्णुर्हर - प्रेयसी ।
हत्यादि - प्रकटाघ - सङ्घ - दलने दक्षा च दाक्षायणी,
श्रीचक्राधि-निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। ११

'स' सर्वानन्द - मयी समस्त - जगतामानन्द - सन्दायिनी,
सर्वोत्तुङ्ग-सुवर्ण - शैल-निलया सा सार-साक्षी सती ।
सर्वैर्योगि - चयैः सदैव विचिता साम्राज्य - दान-क्षमा,
श्रीचक्राधि-निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। १२

'क' कन्या - रूप - धरा गलाब्ज-विलसन्मुक्ता - लताऽलंकृता,
कादि-क्षान्तमनु-प्रविष्ट - हृदया कल्याण-शीलान्विता ।
कल्पान्तोद्भूट-ताण्डव-प्रमुदिता श्रीकाम-जित्-साक्षिणी,
श्रीचक्राधि-निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। १३

'ल' लक्ष्या भक्ति - रसार्द्र-हृत्-सरसिजे सद्भिः सदाऽऽराधिता,
सान्द्रानन्द-मयी सुधाकर-कला-खण्डोज्ज्वलन्मौलिका ।
शर्वाणी शरणागताऽऽर्ति - शमिनी सच्चिन्मयी सर्वदा,
श्रीचक्राधि-निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। १४

'ह्रीं' ह्रीङ्कार - त्रय - सम्पुटाऽऽति-महता मन्त्रेण सम्पूजिता,
होत्री चन्द्र-समीरणाऽग्नि-जल-भू-भास्वन्नभो-रूपिणी ।
हंसः सोहमिति प्रकृष्ट - धिषणैराराधिता योगिभिः,
श्रीचक्राधि-निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। १५

'श्रीं' श्रीङ्काराम्बुज - हंसिकाऽऽश्रित-जन-क्षेमङ्करी शङ्करी,
शृङ्गारैक - रसाकरस्य मदनस्योज्जीविका - वल्लरी ।
श्रीकामेशरहः-सखी च लालिता श्रीमद्-गुहाऽऽराधिता,
श्रीचक्राधि-निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। १६

श्रीत्रिपुर-सुन्दरी चक्र-राज-स्तोत्रम्

'क' कर्तुं देवि ! जगद्-विलास-विधिना सृष्टेन ते मायया,
सर्वानन्द - मयेन मध्य - विलसच्छ्री-विन्दुनाऽलंकृतम् ।
श्रीमत्-सद्-गुरु-पूज्य-पाद-करुणा-सम्वेद्य - तत्त्वात्मकम्,
श्री - चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट - सिद्धि-प्रदम् ।। १

'ए' एकस्मिन्नणिमादिभिर्विलसितं भूमी - गृहे सिद्धिभिः,
वाह्याद्याभिरुपाश्रितं च दशभिर्मुद्राभिरुद्भासितम् ।
चक्रेश्या प्रकटेड्यया त्रिपुरया त्रैलोक्य - सम्मोहनम्,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट - सिद्धि-प्रदम् ।। २

'ई' ईड्याभिर्नव - विद्रुम - च्छवि-समाभिख्याभिरङ्गी-कृतम्,
कामाकर्षिणी कादिभिः स्वर-दले गुप्ताभिधाभिः सदा ।
सर्वाशा-परि - पूरके परि-लसद्-देव्या पुरेश्या युतम्,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट - सिद्धि - प्रदम् ।। ३

'ल' लब्ध - प्रोज्ज्वल - यौवनाभिरभितोऽनङ्ग -प्रसूनादिभिः,
सेव्यं गुप्त - तराभिरष्ट - कमले संक्षोभकाख्ये सदा ।
चक्रेश्या पुर - सुन्दरीति जगति प्रख्यातयासङ्गतम्,
श्री - चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट-सिद्धि-प्रदम् ।। ४

'ह्रीं' ह्रीङ्काराङ्कित - मन्त्र - राज - निलयं श्रीसर्व - संक्षोभिणी,
मुख्याभिश्चल - कुन्तलाभिरुषितं मन्वस्र - चक्रे शुभे ।
यत्र श्री-पुर - वासिनी विजयते श्री - सर्व-सौभाग्यदे,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट - सिद्धि-प्रदम् ।। ५

'ह' हस्ते पाश - गदादि - शस्त्र - निचयं दीप्तं वहन्तीभिः,
उत्तीर्णाख्याभिरुपास्य पाति शुभदे सर्वार्थ - सिद्धि-प्रदे ।
चक्रे बाह्य-दशारके विलसितं देव्या पुर-श्राख्यया,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट - सिद्धि-प्रदम् ।। ६

'स' सर्वज्ञादिभिरिन्दु - कान्ति - धवला कालाभिरारक्षिते,
चक्रेऽन्तर्दश-कोणकेऽति-विमले नाम्ना च रक्षा-करे ।
यत्र श्रीत्रिपुर-मालिनी विजयते नित्यं निगर्भा स्तुता,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट - सिद्धि-प्रदम् ।। ७

'क' कर्तुं मूकमनर्गल - स्रवदति - द्राक्षादि - वाग् - वैभवम्,
दक्षाभिर्वशिनी-मुखाभिरभितो वाग् - देवताभिर्युताम् ।
अष्टारे पुर - सिद्धया विलसितं रोग - प्रणाशे शुभे,
श्री - चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट सिद्धि-प्रदम् ।। ८

'ह' हन्तुं दानव - सङ्घमाहव भुवि स्वेच्छा समाकल्पितैः,
शस्त्रैरस्त्र-चयैश्च चाप - निवहैरत्युग्र - तेजो - भरैः ।
आर्त-त्राण - परायणैररि - कुल - प्रध्वंसिभिः सम्वृतम्,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट - सिद्धि - प्रदम् ।। ९

'ल' लक्ष्मी-वाग- गजादिभिः कर-लसत्-पाशासि-घण्टादिभिः,
कामेश्यादिभिरावृतं शुभ-करं श्री-सर्व - सिद्धि - प्रदम् ।
चक्रेशी च पुराम्बिका विजयते यत्र त्रिकोणे मुदा,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट-सिद्धि-प्रदम् ।। १०

'ह्रीं' ह्रींकारं परमं जपद्भिरनिशं मित्रेश - नाथादिभिः,
दिव्यौघैर्मनुजौघ - सिद्ध-निवहैः सारूप्य-मुक्ति गतैः ।
नाना-मन्त्र - रहस्य - विद्भिरखिलैरन्वासितं योगिभिः,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट-सिद्धि-प्रदम् ।। ११

'स' सर्वोत्कृष्ट - वपुर्धराभिरभितो देवी समाभिर्जगत्,
संरक्षार्थमुप - गताऽभिरसकृन्नित्याभिधाभिर्मुदा ।
कामेश्यादिभिराज्ञयैव ललिता - देव्याः समुद्भासितम्,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट-सिद्धि-प्रदम् ।। १२

'क' कर्तुं श्रीललिताङ्ग - रक्षण - विधिं लावण्य-पूर्णां तनूम्,
आस्थायास्त्र-वरोल्लसत्-कर-पयोजाताभिरध्यासितम् ।
देवीभिर्हृदयादिभिश्च परितो विन्दुं सदाऽऽनन्ददम्,
श्री - चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट-सिद्धि-प्रदम् ।। १३

'ल' लक्ष्मीशादि - पदैर्युतेन महता मञ्चेन संशोभितम्,
षट्-त्रिंशद्भिरनर्घ - रत्न - खचितैः सोपानकैर्भूषितम् ।
चिन्ता - रत्न - विनिर्मितेन महता सिंहासनेनोज्ज्वलम्,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट - सिद्धि-प्रदम् ।। १४

'ह्रीं' ह्रीङ्कारैक-महा - मनुं प्रजपता कामेश्वरेणोषितम्,
तस्याङ्के च निषण्णया त्रि-जगतां मात्रा चिदाकारया ।
कामेश्या करुणा-रसैक-निधिना कल्याण-दात्र्या युतम्,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट-सिद्धि-प्रदम् ।। १५

'श्रीं' श्रीमत् - पञ्च - दशाक्षरैक - निलयं श्रीषोडशी-मन्दिरम्,
श्रीनाथादिभिरर्चितं च बहुधा देवैः समाराधितम् ।
श्रीकामेश - रहस्सखी - निलयनं श्रीमद्-गुहाराधितम्,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट - सिद्धिदम् ।। १६

श्रीत्रिपुर-सुन्दरी-स्तोत्रम्

कदम्ब-वन-चारिणीं मुनि-कदम्ब-कादम्बिनीं, नितम्ब-जित-भूधरां सुर-नितम्बिनी-सेविताम् ।
नवाम्बु-रुह-लोचनामभिनवाम्बुद-श्यामलां, त्रिलोचन-कुटुम्बिनीं त्रिपुर-सुन्दरीमाश्रये ।। १
कदम्ब-वन-वासिनीं कनक-वल्लकी-धारिणीं, महार्ह-मणि-हारिणीं मुख-समुल्लसद्-वारुणीम् ।
दया-विभव-कारिणीं विशद-लोचनीं चारिणीं, त्रिलोचन-कुटुम्बिनीं त्रिपुर-सुन्दरीमाश्रये ।।२

कदम्ब-वन-शालया कुच-भरोल्लसन्मालया, कुचोपमित-शैलया गुरु-कृपा-लसद्-वेलया ।
मदारुण-कपोलया मधुर-गीत-वाचालया, कयापि घन-नीलया कवचिता वयं लीलया ।। ३
कदम्ब-वन-मध्यगां कनक-मण्डलोपस्थितां, षडम्बु-रुह-वासिनीं सतत-सिद्ध-सौदामिनीम् ।
विडम्बित-जप-रुचिं विकच-चन्द्र-चूडा-मणिं, त्रिलोचन कुटुम्बिनीं त्रिपुर-सुन्दरीमाश्रये ।।४

कुचाञ्चित-विपञ्चिकां कुटिल-कुन्तलालंकृतां, कुशेशय-निवासिनीं कुटिल-चित्त-विद्वेषिणीम् ।
मदारुण-विलोचनां मनसिजारि-सम्मोहिनीं, मतङ्ग-मुनि-कन्यकां मधुर-भाषिणीमाश्रये ।।५
स्मरेत् प्रथम-पुष्पिणीं रुधिर-विन्दु-नीलाम्बरां, गृहीत-मधु-पात्रिकां मधु-विघूर्ण-नेत्राञ्चलां ।
घन-स्तन-भरोन्नतां गलित-चूलिकां श्यामलां, त्रिलोचन-कुटुम्बिनीं त्रिपुर-सुन्दरीमाश्रये ।।६

स-कुंकुम-विलेपनामलक-चुम्बि-कस्तूरिकां, स-मन्द-हसितेक्षणां स-शर-चाप-पाशांकुशाम् ।
अशेष-जन-मोहिनीमरुण-माल्य-भूषाम्बरां, जपा-कुसुम-भासुरां जप-विधौ स्मराम्यम्बिकां ।।७
पुरन्दर-पुरन्ध्रिकां चिकुर-बन्ध-सैरन्ध्रिकां, पितामह-पति-व्रतां पटु-पटीर-चर्चा-रताम् ।
मुकुन्द-रमणीं मणी-लसदलंक्रियां-कारिणीं, भजामि भुवनाम्बिकां सुर-वधूटिका-चेटिकां ।।८

सिद्धि-यामलोक्त श्रीत्रिपुर-सुन्दरी स्तोत्रम्

श्वेत-पद्मासनारूढ़ां शुद्ध-स्फटिक-सन्निभां । वन्दे वाग्-देवतां ध्यात्वा देवीं त्रिपुर-सुन्दरीम् ।। १
शैलाधि-राज-तनयां शङ्कर-प्रिय-वल्लभां । तरुणेन्दु-निभां वन्दे देवीं त्रिपुर-सुन्दरीम् ।। २
सर्व-भूत-मनोरम्यां सर्व-भूतेषु संस्थितां । सर्व-सम्पत्करीं वन्दे देवीं त्रिपुर-सुन्दरीम् ।। ३
पद्मालयां पद्म-हस्तां पद्म-सम्भव-सेवितां । पद्म-राग-निभां वन्दे देवीं त्रिपुर-सुन्दरीम् ।। ४
पञ्च-वाण-धनुर्बाण-पाशांकुश-धरां शुभां । पञ्च-ब्रह्म-मयीं वन्दे देवीं त्रिपुर-सुन्दरीम् ।। ५

श्रीत्रिपुर-सुन्दरी देवी का ध्यान करके श्वेत पद्म (कमल) के आसन पर विराजमान शुद्ध स्फटिक-मणि के समान प्रभावाली वाग्-देवता की वन्दना करता हूँ ।१ शैलाधिराज (पर्वत-राज हिमालय) की पुत्री और श्रीशङ्कर जी की प्रिय वल्लभा, जो तरुण चन्द्रमा के समान प्रभावान् हैं, उन देवी त्रिपुर-सुन्दरी की वन्दना करता हूँ ।२ जो सभी भूतों (मानव, दिव्य, अचेतन आदि समस्त जीव-धारी) के लिए अत्यन्त मनोरम (मन को हरनेवाली, सुन्दर, सुघड़) हैं, जो समस्त भूतों में निवास करती हैं; जो सभी प्रकार की सम्पत्ति (भौतिक और आध्यात्मिक) करनेवाली (देनेवाली) हैं, उन देवी त्रिपुर-सुन्दरी की वन्दना करता हूँ ।३ जिनका आलय (घर) पद्म है, जो हाथों में कमल धारण करती हैं, जो पद्म-सम्भव (ब्रह्माजी) से सेवित हैं (पूजी जाती हैं), उन पद्म-राग मणि (लाल माणिक्य) के समान वर्णवाली देवी त्रिपुर-सुन्दरी की वन्दना करता हूँ ।४ पञ्च-वाण (द्रावण, क्षोभण, वशीकरण, आकर्षण, सम्मोहन), धनुष, वाण, पाश और अंकुश धारण करनेवाली, कान्ति-मयी, पञ्च-ब्रह्म-मयी (ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर और सदा-शिव-मयी) देवी त्रिपुर-सुन्दरी की वन्दना करता हूँ ।५

षट्-पुण्डरीक-निलयां षडानन-सुपूजितां । षट्-कोणान्तः-स्थितां वन्दे देवीं त्रिपुर-सुन्दरीम् ।। ६
हरार्ध-भाग-निलयामम्बामद्रि-सुतां मृडां । हरि-प्रियाऽनुजां वन्दे देवीं त्रिपुर-सुन्दरीम् ।। ७
अष्टैश्वर्य-प्रदामम्बामष्ट-दिक्-पाल-सेवितां । अष्ट-मूर्ति-मयीं वन्दे देवीं त्रिपुर-सुन्दरीम् ।। ८
नव-मणिक्य-मुकुटां नव-नाथ-सुपूजितां । नव-यौवन-शोभाढ्यां वन्दे त्रिपुर-सुन्दरीम् ।। ९
काञ्ची-वास-मनोरम्यां काञ्ची-दाम-विभूषितां । कांची-पुरीश्वरीं वन्दे देवीं त्रिपुर-सुन्दरीम् ।।१०

षट्-पुण्डरीक (छः दलों का कमल अर्थात् स्वाधिष्ठान अथवा षट्-कमल अर्थात् षट्-चक्र यथा—मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध और आज्ञा-चक्र) में निवास करनेवाली, षडानन (कुमार कार्तिकेय) से पूजित और षट्-कोण के अन्तस् (भीतर) में स्थित देवी त्रिपुर-सुन्दरी की वन्दना करता हूं ।६ हर (शिव)के आधे भाग में निवास करनेवाली मृडानी (पार्वती), जो अद्रि-सुता (पर्वत-राज की पुत्री) हैं, हरि-प्रिया (लक्ष्मी) की अनुजा हैं, उन जगदम्बा देवी त्रिपुर-सुन्दरी

की वन्दना करता हूँ ।७ आठ प्रकार के ऐश्वर्य प्रदान करनेवाली अम्बिका, जिनकी सेवा आठों दिक्-पाल (इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, कुबेर तथा ईशान) करते हैं जो अष्ट-मूर्ति-मयी (शैली, दारु-मयी, लौही, लेप्या, लेख्या, सैकती अर्थात् रेत से निर्मित, मनो-मयी और मणि-मयी) हैं, उन देवी त्रिपुर-सुन्दरी की वन्दना करता हूँ ।८ नवीन (उज्ज्वल) माणिक्य-रत्नों से बना मुकुट धारण करनेवाली, नव नाथों (प्रकाशानन्द-नाथ, विमर्शानन्द-नाथ, आनन्दानन्द-नाथ, ज्ञानानन्द-नाथ, सत्यानन्द-नाथ, पूर्णानन्द-नाथ, स्वभावानन्द-नाथ, प्रतिभानन्द-नाथ और सुभगानन्द-नाथ) के द्वारा भली प्रकार से पूजी गई, नव-यौवन से शोभिता श्री-त्रिपुर-सुन्दरी की वन्दना करता हूँ ।९ जिन्हें काञ्ची-पुरी में रहना अत्यन्त प्रिय है, जो सुन्दर पुष्पों से निर्मित करधनी से विभूषिता हैं अर्थात् धारण किये हैं और जो काञ्ची-पुरी की ईश्वरी (स्वामिनी) हैं, उन देवी त्रिपुर-सुन्दरी को वन्दना करता हूँ ।१०

फल-श्रुति

इति ते कथितं देवि ! सुन्दरी-प्रीति-दायकं । महा-निशा-काले पाठ-मात्रेण सिद्धिर्भवति ।।१
एकादश-सहस्राणि संख्या चास्य पुरस्क्रिया । ततः काम्यार्थे प्रयोगान् साधयेत् साधकोत्तमः ।।२
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकं । पाठ-मात्रेण सिद्धयन्ति सत्यं सत्यं न संशयः ।।३
निष्कामो यः पठेन्नित्यं पञ्च-तत्व-समन्वितम् । धर्मार्थ-काम-मोक्षं च लभते नात्र संशयः ।।
इह-लोके सुखं भुक्त्वा चान्ते देवी-लोके वसेत् ।। १४
।। सिद्धि-यामले श्रीत्रिपुर-सुन्दरी-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

हे देवि, यह त्रिपुर-सुन्दरी की प्रीति (कृपा) देनेवाला स्तोत्र तुमसे कहा है । महा-निशा-काल में इसके पाठ-मात्र से सिद्धि मिलती है ।१ ग्यारह हजार इसके पुरश्चरण की संख्या है अर्थात् ग्यारह हजार पाठ से इसका पुरश्चरण होता है, तब उत्तम साधक काम्य प्रयोग करे ।२ मारण, मोहन, वशीकरण, स्तम्भन, उच्चाटन आदि केवल इसके पाठ-मात्र से सिद्ध हो जाते हैं । यह सत्य है, सत्य है, इसमें संशय नहीं ।३ जो निष्काम (केवल देवता की प्रीति चाहनेवाला) होकर पञ्च-तत्वों (मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन) सहित नित्य पाठ करता है, वह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को पाता है, इसमें संशय नहीं । इस लोक में सुखों को भोगकर वह अन्त में देवी-लोक में निवास करता है ।१४

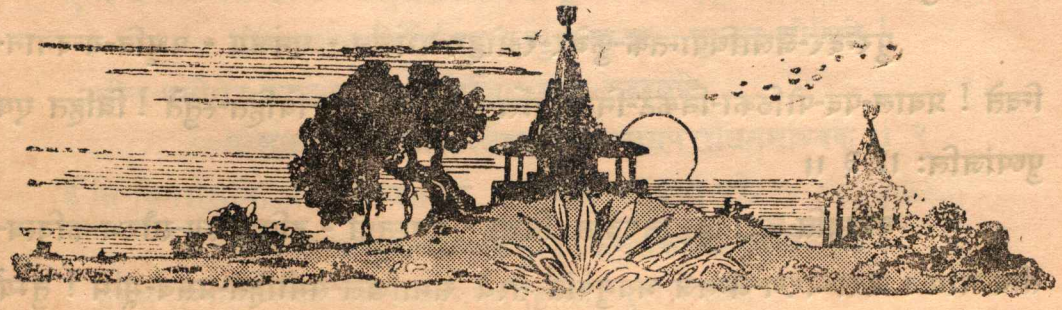

श्रीललिताम्बा-नीराजनम्

जय देवि, जय देवि, जय सुन्दरि तनये, जय सुन्दरि ललिते !
शश्वद्-वसंतं कुरु भोरीश्वरि ! मम हृदये ।। जय देवि, जगदम्ब ।

विन्दु-त्रिकोण-सहितं षट्-कोणं वृत्तम् । तदुपरि वसु-दल-पत्रं वर्तुलमपि धत्तम् ।।
द्वि-गुणी-कृत-वसु-पत्रं मोहित-हर-चित्तं । द्वार-चतुष्टय-निर्मित-यन्त्रोपरि तन्त्रं ।। जय० १
वामे कलशे पूजित - पूरितमाधारम् । तस्मिन्नर्पित -पूजित-पूरितमाधारम् ।।
एवं पञ्चावरणित-कर्णित-गुण-सारम् । मां देहि त्वं भुवने ! दुर्घट-संसारं ।। जय० २
कलशामृत-जल-पूजित-नव-पात्र-समेतं । गणपति-योगिनी-बटुक-क्षेत्राधिप-युक्तं ।।
अर्चन-विधिना सहितं श्रीगुरु-विधि-युक्तं, तारक-पण्डित-विद्या-भक्त्याऽखिल-दत्तं ।।जय० ३

श्रीललिता-पुष्पाञ्जलि-स्तोत्रम्

ॐ समस्त-मुनि-यक्ष - किंपुरुष - सिद्ध-विद्याधर-ग्रहा-सुर-सुराप्सरो - गण-मुखैर्गणैः सेविते ! निवृत्ति-तिलकाम्बरा-प्रकृति - शान्ति-विद्या-कला-कलाप - मधुराकृते कलित एष पुष्पांजलिः ।। १ ।।

त्रिवेद-कृत-विग्रहे, त्रिविध-कृत्य-सन्धायिनि,त्रिरूप-समवायिनि, त्रिपुर-मार्ग-सञ्चारिणि ! त्रिलोचन-कुटुम्बिनि, त्रिगुण-संविदुद्यत्-पदे, त्रयि, त्रिपुर-सुन्दरि, त्रि-जगदीशि ! पुष्पांजलिः ।। २ ।।

पुरन्दर-जलाधिपान्तक-कुबेर-रक्षोहर-प्रभंजन - धनंजय - प्रभृति-वन्दनानन्दिते ! प्रवाल-पद-पीठिका-निकट-नित्य-वर्त्ति-स्वभू-विरिञ्चि-विहित-स्तुते ! विहित एष पुष्पांजलिः ।। ३ ।।

यदानति-बलादहंकृतिरुदेति विद्या - वयस्तपो - द्रविण-रूप-सौरभ-कवित्व-संविन्मयि । जरा-मरण-जन्मजं भयमुपैति तस्यै समाखिल-समीहित-प्रसव-भूमि ! तुभ्यं नमः ।। ४ ।।

निरावरण-संविदुद्भ्रम-परास्त-भेदोल्लसत्-परात्पर - चिदेकता-वर-शरीरिणि, स्वैरिणि ! रसायन-तरङ्गिणी-रुचि-तरङ्ग - सञ्चारिणि, प्रकाम - परिपूरिणि ! प्रकृत एष पुष्पांजलिः ।। ५ ।।

तरङ्गयति सम्पदं तदनु-संहरत्यापदं सुखं वितरति श्रियं परि-चिनोति हन्ति द्विषः । क्षिणोति दुरितानि यत् प्रणतिरम्ब ! तस्यै सदा शिवङ्करि, शिवे पदे, शिव-पुरन्ध्रि तुभ्यं नमः ।। ६ ।।

शिवे, शिव-सुशितलामृत-तरङ्ग - गन्धोल्लसन्नवावरण-देवते, नव-नवामृत-स्पन्दिनि ! गुरु-क्रम-पुरस्कृते, गुण-शरीर-नित्योज्ज्वले, षडङ्ग-परिवारिते ! कलित एष पुष्पांजलिः ।। ७ ।।

त्वमेव जननी पिता त्वमथ बन्धवस्त्वं सखा त्वमायुरपरा त्वमाभरणमात्म-नस्त्वं कलाः । त्वमेव वपुषः स्थितिस्त्वमखिला यतिस्त्वं गुरुः प्रसीद परमेश्वरि ! प्रणत-पात्रि, तुभ्यं नमः ।। ८ ।।

कंजासनादि-सुर-वृन्द-लसत्-किरीट-कोटि - प्रघर्षण - समुज्ज्वलदंघ्रि-पीठे ! त्वामेव यामि शरणं विगतान्यभावं दीनं विलोकय यदार्द्र-विलोकनेन ।। ९ ।।

श्रीत्रिपुर-सुन्दर्यपराध-क्षमापण-स्तवः

'क'ञ्ज-मनोहर-पाद - चलन्मणि - नूपुर-हंस-विराजिते,
कञ्ज-भवादि-सुरौघ-परिष्टुत - लोक-विसृत्वर-वैभवे !
मंजुल-वाङ्मय-निर्जित-कीर-कुले, चल-राज-सुकन्यके,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि ! मामपराधिनमम्बिके ।। १

'ए'ण-धरोज्ज्वल-फाल-तलोल्लसदैण-मदाङ्क-समन्विते,
शोण-पराग-विचित्रित-कन्दुक-सुन्दर - सुस्तन-शोभिते !
नील-पयोधर-काल-सुकुन्तल-निर्जित-भृङ्ग-कदम्बके,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि ! मामपराधिनमम्बिके ।। २

'ई'ति-विनाशिनि, भीति-निवारिण, दानव-हन्त्रि, दया-परे,
शीत-कराङ्कित-रत्न-विभूषित-हेम-किरीट - समन्विते !
दीप्त-तरायुध-भण्ड-महाऽसुर-गर्व-निहन्त्रि, पुराऽम्बिके,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि ! मामपराधिनमम्बिके ।। ३

'ल'ब्ध-वरेण जगत् - त्रय-मोहन-दक्ष-लतान्त-महेषुणा,
लब्ध-मनोहर-साल-निषण्ण - सुदेह भुवा परि-पूजिते,
लङ्घित-शासन दानव-नाशन दक्ष-महायुध-राजिते,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि ! मामपराधिनमम्बिके ।। ४
'ह्रीं'पद-भूषित पञ्च-दशाक्षर षोडश - वर्ण - सुदेवते,
ह्रीमति हादि-महा-मनु-मन्दिर-रत्न-विनिर्मित-दीपिके !
हस्ति-वरानन-दर्शित-युद्ध-समादर-साहस - तोषिते,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि ! मामपराधिनमम्बिके ।। ५
'ह'स्त-लसन्नव-पुष्प-शरेक्षु - शरासन - पाश-महांकुशे,
हर्यज शम्भु-महेश्वर-पाद-चतुष्टय - मञ्च-निवासिनि !
हंस-पदार्थ - महेश्वरि ! योगि-समूह-समादृत-वैभवे,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि ! मामपराधिनमम्बिके ।। ६
'स'र्व-जगत्-करणावन-नाशन-कर्त्रि, कपालि-मनोहरे,
स्वच्छ-मृणाल-मराल-तुषार-समान-सुहार-विभूषिते !
सज्जन-चित्त-विहारिणि, शङ्करि, दुर्जन-नाशन-तत्परे,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि ! मामपराधिनमम्बिके ।। ७
'क'ञ्ज-दलाक्षि, निरञ्जनि, कुंजर-गामिनि, मंजुल-भाषिते,
कुंकुम-पङ्क-विलेपनि, शोभित - देह-लते, त्रिपुरेश्वरि !
दिव्य-मतङ्ग-सुता-धृत-राज्य-भरे करुणा-रस-वारिधे !
पालय हे ललिता-परमेश्वरि ! मामपराधिनमम्बिके ।। ८
'ह'ल्लक-चम्पक - पङ्कज - केतक-पुष्प-सुगन्धित-कुन्तले,
हाटक-भूधर-शृङ्ग-विनिर्मित - सुन्दर-मन्दिर-वासिनि !
हस्ति-मुखाम्ब-वराड्-मुखी-धृत-सैन्य-वरे, गिरि-कन्यके,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि ! मामपराधिनमम्बिके ।। ९
'ल'क्ष्मण-सोदर-सादर-पूजित - पाद-युगे, वरदे, शिवे,
लोह-मयादि-बहून्नत-साल-निषण्ण - बुधेश्वर-सम्वृते !
लोल-मदालस-लोचन-निर्जित-नील-सरोज-सुमालिके,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि ! मामपराधिनमम्बिके ।। १०

'ह्री'मिति मन्त्र-महा-जप-सुस्थिर-साधक-मानस-हंसिके,
ह्रेषित-शीत-करानन-शोभिनि, हेम-लतेव सु-भास्वरे !
हार्द-तमो-गुण-नाशिनि पाश-विमोचनि, मोक्ष-सुख-प्रदे,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि ! मामपराधिनमम्बिके ।। ११

'स'च्चिदभेद-सुखामृत-वर्षिणि, तत्त्वमसीति सदाऽऽदृते,
सद्-गुण-शालिनि, साधु-सर्मार्चित-पाद-युगे, पर-शाम्भवि !
सर्व-जगत्-परिपालन-दीक्षित-बाहु-लता - युग-शोभिते,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि ! मामपराधिनमम्बिके ।। १२

'क'म्बु-गले वर-कुन्द - रदे रस-रञ्जित पाद-सरोरुहे,
काम-महेश्वर-कामिनि, कोकिल-कोमल-भाषिणि भैरवि !
चिन्तित - सर्व-मनोरथ-पूरण-कल्प-लते करुणार्णवे,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि ! मामपराधिनमम्बिके ।। १३

'ल'स्तक-शोभि-करोज्ज्वल-कङ्कण-कान्ति-सुदीपित-दिङ्-मुखे,
शस्त-तर-त्रिदशालय-कार्य-समादृत-दिव्य-तनूज्ज्वले !
कश्चतुरो भुवि देवि ! पुरेशि ! भवानि ! तव स्तवने भवेत्,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि ! मामपराधिनमम्बिके ।। १४

'ह्रीं'पद-लांछित मन्त्र-पयोनिधि-मन्थन-जात-परामृते,
हव्य-वहानिल-भू-यजमान - खेन्दु - दिवाकर-रूपिणि !
हर्यज-रुद्र-महेश्वर-संस्तुत वैभव-शालिनि सिद्धिदे,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि ! मामपराधिनमम्बिके ।। १५

श्रीपुर-वासिनि हस्त-लसद्-वर-चामर-वाक्-कमला-नुते,
श्रीगुह-पूर्व-भवार्जित-पुण्य-फले भव-भक्त-विलासिनि !
श्रीवशिनी विमलादि सदा नत-पाद-चलन्मणि-नूपुरे,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि ! मामपराधिनमम्बिके ।। १६

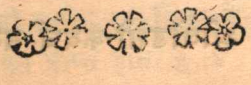

[१]

श्रीषोडशी-कवच-स्तोत्रम्

पूर्व-पीठिका

श्रीदेव्युवाच–

देव-देव ! महा-देव ! भक्तानां प्रीति-वर्द्धनं, सूचितं यन् महा-देव्याः कवचं कथयस्व मे ।।

श्रीमहा-देव उवाच–

शृणु देवि ! प्रवक्ष्यामि कवचं देव-दुर्लभं, न प्रकाश्यं परं गुह्यं साधकाभीष्ट-सिद्धिदं ।।

कवचस्य ऋषिर्देवि ! दक्षिणा-मूर्तिरव्ययः, छन्दः पंक्तिः समुद्दिष्टं देवी त्रिपुर-सुन्दरी ।।

धर्मार्थ-काम-मोक्षाणां विनियोगस्तु साधने, वाग्भवः कामराजश्च शक्ति-बीजं सुरेश्वरि ।।

कवच-स्तोत्रम्

वाग्भवः पातु शीर्षे मां कामराजस्तथा हृदि, शक्ति-बीजं सदा पातु नाभौ गुह्ये च पादयोः ।।

ऐं क्लीं सौः वदने पातु बाला मां सर्व-सिद्धये, हसौः सकलह्रीं पातु भैरवी कण्ठ-देशतः ।।

सुंदरी नाभिदेशे च शीर्षे काम - कला सदा, भ्रू-नासयोरन्तराले महा-त्रिपुर-सुन्दरी ।।

ललाटे सुभगा पातु भगा मां कण्ठ-देशतः, भगोदया च हृदये उदरे भग-सर्पिणी ।।

भग-माला नाभि-देशे लिङ्गे पातु मनोभवा, गुह्ये पातु महा-देवी राज-राजेश्वरी शिवा ।।

चैतन्य-रूपिणी पातु पादयोर्जगदम्बिका, नारायणी सर्व-गात्रे सर्व-कार्ये शुभङ्करी ।।

ब्रह्माणी पातु मां पूर्वे दक्षिणे वैष्णवी तथा, पश्चिमे पातु वाराही उत्तरे तु महेश्वरी ।।

आग्नेय्यां पातु कौमारी महालक्ष्मीस्तु नैर्ऋते, वायव्यां पातु चामुण्डा इंद्राणी पातु ईशके ।।

जले पातु महा-माया पृथिव्यां सर्व-मङ्गला, आकाशे पातु वरदा सर्वत्र भुवनेश्वरी ।।

फल-श्रुति

इदं तु कवचं देव्या देवानामपि दुर्लभम्, पठेत् प्रातः समुत्थाय शुचिर्प्रयत-मानसः ।।

नाधयो व्याधयस्तस्य न भयं च कश्चिद् भवेत्, न च मारी-भयं तस्य पातकानां भयं तथा ।।

न दारिद्र्य-वशं गच्छेत् तिष्ठेन्मृत्यु-वशे न च, गच्छेच्छिव-पुरं देवि !सत्यं सत्यं वदाम्यहं ।।

इदं कवचमज्ञात्वा श्रीविद्यां यो जपेत् सदा, स नाप्नोति फलं तस्य प्राप्नुयाच्छस्त्र-घातनं ।।

।। सिद्ध-यामले श्रीषोडशी-कवचं समाप्तम् ।

हिन्दी-रूपान्तर

श्रीषोडशी-कवच-स्तोत्रम्

पूर्व-पीठिका : श्री देवी ने कहा—हे देव-देव महा-देव ! तुम भक्त-वृन्द को प्रीति बढ़ाते रहते हो, इसलिए तुमने पहिले जो महा-देवी के कवच का उल्लेख किया था, उसे अब कहो ।१

श्रीमहादेव ने कहा—हे देवि ! उस मन्त्र-मूर्ति कवच को मैं कहूँगा, सुनो । इस कवच से सब प्रकार की इष्ट-सिद्धियाँ मिलती हैं । यह कवच गोपनीय वस्तु है, इसे प्रकट नहीं करना चाहिए ।२

इस कवच के ऋषि अव्यय दक्षिणामूर्ति हैं, छन्द पंक्ति है, इसकी देवी त्रिपुर-सुन्दरी हैं, वाग्भव (ऐं) बीज है, 'सौः' शक्ति है, काम-राज (क्लीं) कीलक और धर्म, अर्थ काम तथा मोक्ष—इस चतुर्वर्ग के साधन में इसका विनियोग है ।३-४

कवच-स्तोत्र : वाग्भव (ऐं) मेरे मस्तक की रक्षा करे । काम-राज बीज (क्लीं) हृदय की रक्षा करे । शक्ति-बीज (सौः) नियत रूप में मेरी नाभि, गुह्य और दोनों पैरों की रक्षा करे ।१

'ऐं क्लीं सौः'— ये त्रि-बीज-रूपिणी बाला सब सिद्धियाँ प्रदान कर मेरी रक्षा करें । 'हसैं', 'हसकलरीं', 'हसौः'—ये त्रि-बीज-रूपिणी भैरवी मेरे कण्ठ-देश की रक्षा करें ।२

'सुन्दरी' मेरी नाभि की और 'काम-कला' मेरे शीर्ष-देश की रक्षा करें । 'महा-त्रिपुर-सुन्दरी' भौहों और नासिका के मध्य-स्थल की, 'सुभगा' ललाट की, 'भगा' कण्ठ की, 'भगोदया' हृदय की, 'भग-सर्पिणी' उदर की रक्षा करें ।३-४

'भग-माला' नाभि-देश की और 'मनोभवा' मेरे लिङ्ग की रक्षा करें । महा-देवी राज-राजेश्वरी शिवा मेरे गुह्य-देश की और चैतन्य-रूपिणी जगदम्बिका मेरे पाद-युगल की रक्षा करें । नारायणी मेरे सर्वाङ्ग की और सब कामों में शुभङ्करी रक्षा करें । ५-६

ब्रह्माणी पूर्व दिशा में और वैष्णवी दक्षिण दिशा में मेरी रक्षा करें । वाराही पश्चिम दिशा में, माहेश्वरी उत्तर दिशा में, कौमारी अग्नि-कोण में और महा-लक्ष्मी नैर्ऋत-कोण में मेरी रक्षा करें । चामुण्डा वायु-कोण में और इन्द्राणी ईशान -कोण में मेरी रक्षा करें । महा-माया जल के बीच में और सर्व-मङ्गला स्थल पर मेरी रक्षा करें । जल में महा-माया, पृथ्वी पर सर्व-मङ्गला, वरदा आकाश में और भुवनेश्वरी सब स्थानों में मेरी रक्षा करें ।७-९

फल-श्रुति : देवी का यह कवच देव-वृन्द को भी दुष्प्राय है । प्रभात-काल में जगकर पवित्र-भाव से एकाग्र-मन होकर इसका पाठ करना चाहिये ।१

इस कवच के पाठ के फल से आधि-व्याधि नहीं रहतीं और कहीं भी भय नहीं होता । पाठ-कर्ता के मारी-भय और सब प्रकार के पातकों के भय नहीं रहते ।२

इस कवच का पाठ-कर्ता दारिद्र्य के वश में नहीं आयेगा, वह मृत्यु-मुख में कभी नहीं पड़ेगा । हे देवि ! वह व्यक्ति शिव-धाम को जायेगा, यह मैं तुमसे सर्वथा सत्य कह रहा हूँ ।३

इस कवच को न जानकर जो व्यक्ति श्री-विद्या के मन्त्र का जप करता है, वह जप का फल नहीं पाता, ऊपर से अस्त्र-घात को प्राप्त होता है ।४

[२]

श्रीतुरीया-षोडशी त्रैलोक्य-विजयं कवच-स्तोत्रम्

कैलास-शिखरे रम्ये देव-देवं जगद्-गुरुम् । शङ्करं परि-पप्रच्छ कुमारः शिखि-वाहनः ।।

श्रीस्कन्द उवाच–

जनक, श्रीगुरो, देव, पुत्र - वात्सल्य - वर्धन ! कवचं षोडशाक्षर्या वद मे परमेश्वर ।।

श्रीईश्वर उवाच–

शृणु पुत्र, महाभाग ! कवचं मन्त्र-विग्रहं, गोप्याद् गोप्यतरं गोप्यं गुह्याद् गुह्य-तरं महत् ।।
तव स्नेहात्प्रवक्ष्यामि नाख्यातं यस्य कस्यचित्, ब्रह्मेश-विष्णु-शक्रेभ्यो मया न कथितं पुरा ।
देवाग्रे नैव दैत्याग्रे न शौनक-गुणाग्रके । तव भक्त्या तु कवचं गोप्यं कर्तुं न शक्यते ।।
एकादश-महा-विद्या स-वर्णा सद्-गुणान्विता । सर्व-शक्ति-प्रधाना हि कवचं मन्मुखोदितं ।।
गणेशश्च रविर्विष्णुः शिव-शक्तिश्च भैरवः । पञ्च-तत्वादि-सर्वेषां वर्मावर्तेन तुष्यताम् ।।
ऊर्ध्वाम्नायं महा-मन्त्रं कवचं निर्मितं मया । त्रैलोक्य-विजयं दिव्यं तुरीयं कवचं शुभं ।।

श्रीस्कन्द उवाच—

कवचं परमं देव्याः श्रोतुमिच्छाम्यहं प्रभो ! यत्-सूचितं त्वया पूर्वं धर्म-कामार्थ-मोक्षदं ।।
तद्-विनाऽऽराधनं नास्ति जपं ध्यानादि-कर्मणि ।
तस्याश्च कवचं यस्मात् तस्मात् तद् वद मे प्रभो ।।

श्रीईश्वर उवाच–

शृणु पुत्र, महा-प्राज्ञ ! रहस्याति-रहस्यकम् । तुरीयं कवचं दिव्यं सर्व-मन्त्र-मयं शुभं ।।

विनियोग—

पूजान्ते तु जपात्-पूर्वं कवचं समुदीरयेत् । अस्य श्रीकवचस्यास्य ऋषिरानन्द-भैरवः ।।
श्रीविद्या देवताश्छन्दो गायत्री-रुचि-वृत्तिकं । रामा-बीजं परा-शक्तिर्वाग्भवं कीलकं स्मृतं।।

कर-न्यास–

मम सर्वार्थ-सिद्धयर्थे जपे तु विनियोगतः । अंगुष्ठाग्रे वाग्भवं च हृल्लेखां तर्जनी न्यसेत् ।।
लक्ष्मी-बीजं मध्यमायामङ्गिराऽनामिका तथा ।
परा- बीजं कनिष्ठायां लक्ष्मीं कर-तले न्यसेत् ।।

षडङ्ग-न्यास—

हृदये वाग्भवं न्यस्यात् परां शिरसि च न्यसेत् ।
लक्ष्मी-बीजं शिखायां च कवचे वाग्भवं न्यसेत् ।।

दिग्-बन्धन—

ह्रल्लेखां नेत्रयोर्न्यं स्यादस्त्रं तु कमलां न्यसेत्, भूर्भुवः स्वरिति मनुना दिग्-बन्धनमाचरेत् ।
ध्यानं तस्य प्रवक्ष्यामि धर्म-कामार्थ-मोक्षदं, न्यास-ध्यानादिकं सर्वं कृत्त्वा तु कवचं पठेत् ।

ध्यान—

क्षीर-सागर-मध्यस्थे रत्न-द्वीपे मनोहरे, रत्न - सिंहासने दिव्ये तत्र देवीं विचिन्तयेत् ।
कोटि-सूर्य-प्रतीकाशां चन्द्र-कोटि-निभाननां, दाडिमी-पुष्प-सङ्काशां कुकुंमोदर-सन्निभां ।
जपा-कुसुम-सङ्काशां त्रिनेत्रां च चतुर्भुजां, पाशांकुश-धरां रम्यामिक्षु-चाप-शरान्वितां ।
या मूर-शकलोन्मिश्र - ताम्बूल-पूरिताननाम्, सर्व-शृङ्गार वेषाढ्यां सर्वावयव-शोभिनीं ।
सर्वायुध - समायुक्तां प्रसन्न-वदने क्षणाम्, सपरिवार - सावरणां सर्वोपचारार्चिताम् ।
एवं ध्यायेत् ततो वीर ! कवचं सर्व-कामदं । आवर्तयेत् स्व-देहे तु सर्व-रक्षा-करं शुभम् ।।

कवचं—

शिखायां मे हसौः पातु स्हौ मे ब्रह्मरन्ध्रके, सर्वदा ह्लौं च मां पातु वाम-दक्षिण-भागयोः ।
ऐंह्रींश्रीं सर्वदा पातु षोडशो सुन्दरी परा, श्रींह्रींक्लीं सर्वदा पातु ऐंसौंॐ पातु मे सदा ।
ह्रींश्रींऐं पातु सर्वत्र क्नौं रं लं ह्रीं सदा मम, क्लीं हसकहलह्रीं मे पातु सदा सौः क्लीं मम ।
सौःऐंक्लींह्रीं श्रिया पातु स-बीजा षोडशाक्षरी, आपाद-मस्तकं पातु महा-त्रिपुर-सुन्दरी ।
श्रोजयन्ती मस्तके मां पातु नित्यं विभूतये, ह्रीं मङ्गला सदा नेत्रे पातु सर्वार्थ-सिद्धये ।
क्लीं कालिका कर्ण-युग्मं पातु सर्व-शुभावहा, ऐं भारती घ्राण-युग्मं पातु सर्व-जयाप्तये ।
सौः करालो मुखं पातु सर्व-लोक-वशाप्तये, ऐं शारदा सदा वाचं पातु साहित्य-सिद्धये ।
ॐ कपालिनी मे कर्णौ पातु सद्-गान-सिद्धये, ह्रीं दुर्गा-सहिता पातु स्कन्ध-देशौ सदा मम ।
श्रीं क्षम-सहिता पातु हृदयं मम सर्वदा, ककार-सहिता धात्री पार्श्व-युग्मं सदाऽवतु ।
एकार-सहिता स्वाहा पातु मे जठरं सदा, ईकार-सहिता नाभिं स्वधा मां सर्वदाऽवतु ।
लकार-सहिता ब्राह्मी पृष्ठ-देशं सदाऽवतु, ह्रींकार-सह-माहेशी कटिं पातु सदा मम ।
हकार-सहिता गुह्यं कौमारी पातु सर्वदा, सकार - सहिता पातु वैष्णवी गुद-देशकम् ।
ककार-युक्ता वाराही ह्यूरु-युग्मं सदाऽवतु, हकार-सहिता जानु-युग्मं माहेन्द्री मेऽवतु ।
लकार-युक्ता चामुण्डा जङ्घा-युग्मं सदाऽवतु,ह्रींङ्कार-सहिता गुल्फ-युग्मं लक्ष्मीः सदाऽवतु।
सकार-युक्ता मे पाद-युग्मेऽव्यात् शिव-दूतिका, ककार-सहिता प्राच्यां चण्डा रक्षतु सर्वदा ।
लकार-सहिताऽऽग्नेयां प्रचण्डा सर्वदाऽवतु, ह्रींङ्कार-सहिता पातु दक्षिणे चण्ड-नायिका ।
सौःकार-सहिता चण्ड-वेगिनी नैर्ऋतेऽवतु, ऐङ्कार-संयुता चण्ड-प्रकाशा पातु पश्चिमे ।

क्लीङ्कार-सहिता पातु चण्डिका वायु-गोचरे, ह्रीङ्कार-सहिता पातु चामुण्डा चोत्तरे मम ।
श्रीङ्कार-सहिता रौद्री पायादैशान्यके मम, ऊर्ध्वं ब्रह्माणी मे रक्षेत् षोडशी-सह सर्वदा ।
अधस्ताद् वैष्णवी रक्षेत् पुनः षोडशी-संयुता, सर्वाङ्गं सर्वदा पातु सहिता भुवनेश्वरी ।
जले दावानलेऽरण्ये महोत्पाते च सागरे, दिवा-रात्रौ च मे रक्षेद् देवी तार-त्रयी मम ।

फल-श्रुति

इदं तुरीया-सहितं षोडशाक्षरिकात्मकं । अभेद्यं कवचं त्वेदं मन्त्र-बीज - समन्वितम् ।
योगिनी-चक्र-सहितं तव प्रीत्या प्रकाशितम् । धारयस्व मया दत्तं गोपनीयं सु-पुत्रक ।।
न पुत्राय न शिष्याय बन्धुभ्यो न प्रकाशयेत् । इदं त्रिपुर-सुन्दर्यास्तुरीयं कवचं शुभम् ।।
गोपनीयं प्रयत्नेन मन्त्र-वर्ण-क्रमोदितम् । प्रातरारभ्य सायान्तं कर्म-वेदान्तमोक्तिकम् ।।
तत्फलं समवाप्नोति तुरीय-कवच-व्रतम् । दशधा मातृका-न्यासं लघु-षोढ़ा ततः परम् ।।
शक्ति-न्यासं महा-षोढां कृत्वा बाह्यान्तरं न्यसेत् ।
श्रीविद्यायां महा-न्यासं क्रमात् सावर्णतां व्रजेत् ।।
पूजान्ते यत्फलं प्राप्तं तत्फलं कवच-व्रते । सवत्सां दुग्धसहितां साधकः कामधेनु-वत् ।।
त्रैलोक्य-विजयायेदं कवचं परमाद्भुतम् । यथा चिन्ता-मणौ पुत्र ! मनसा परि-कल्पिते ।।
तत्सर्वं लभते शीघ्रं मम वाक्यान्न संशयः । सायुरारोग्यमैश्वर्यं सदा सम्पत्प्रवर्धनम् ।।
कवचस्य प्रभावेण त्रैलोक्य-विजयी भवेत् । अदीक्षिताय न देयं श्रद्धा-विरहितात्मने ।।
नाख्येयं यस्य कस्यापि कृतघ्नायाततायिने । शान्ताय गुरु-भक्ताय देयं शुद्धाय साधने ।।
अज्ञात्वा कवचं चेदं यो जपेत् पर-देवताम् । सिद्धिर्न जायते वत्स!कल्प-कोटि-शतैरपि ।।
स एव च गुरु साक्षात् कवचं यस्तु पुत्रक ! त्रि-सन्ध्यं च पठेन्नित्यमिदं कवचमुत्तमम् ।।
निशार्धे जप-काले वा प्रत्यहं यन्त्रमग्रतः । जगद्वश्यं भवेच्छीघ्रं नात्र कार्या विचारणा ।।
सप्त-कोटि-महा-मन्त्राः सवर्णाः सगुणान्विताः,सर्वे प्रसन्नतां यान्ति सत्यं सत्यं न संशयः ।
इति ते कथितं दिव्यं सगुणे भजन-क्रमम् । निर्गुणं परमं वक्ष्ये तुरीयं कवचं शृणु ।।
कवचस्यास्य माहात्म्यं वर्णितुं नैव शक्यते । मूलादि-ब्रह्म-रन्ध्रान्तं श्रीचक्रं समुदीरयेत् ।।
देह-मध्ये च सर्वस्वं श्रीचक्रं चिन्तयेत् सुत ! पञ्च-विंशति-तत्वं च अतलं वितलं तथा ।।
सुतलं च तलातलं महा-तलं च पञ्चमम् । रसातलं षष्ठं वक्ष्ये सप्तमं पाताल-लोकम् ।।
भूर्भुवः स्वर्लोकमतो महल्लोक-जनस्तथा । तपश्च सत्य-लोकश्च भुवनानि चतुर्दश ।।
सर्वं श्रीभुवनं चैव निराकारं विचिन्तयेत् । मानसे पूजयेत् ध्यायेज्ज्योति-रूपं सुचिन्मयं ।।
कवचं प्रजपेद् वत्स ! राज-राजेश्वरो भवेत् ।।

इति परम-रहस्यं सर्व-मन्त्रार्थ-सारं, भजति परम-भक्त्या निश्चलं निर्मलत्वम् ।
विलसित भुवि मध्ये पुत्र-पौत्राभि-वृद्धि, धन-सकल-समृद्धि भोग-मोक्ष-प्रदं च ।।
।। श्रीचूड़ामणौ श्रीशिव-स्कन्द-संवादे त्रैलोक्य-विजयं नाम श्रीतुरीया-षोडशी
श्रीराज-राजेश्वरी महा-त्रिपुर-सुन्दरी - कवचं सम्पूर्णम् ।।

हिन्दी रूपान्तर

सुरम्य कैलास पर्वत पर देवाधि-देव जगद्-गुरु शङ्कर से मयूर-वाहन कुमार (कार्त्तिकेय या स्कन्द) ने पूछा ।१

श्रीस्कन्द ने कहा—हे पिताजी, श्रीगुरुदेव ! आप पुत्र-प्रेम बढ़ानेवाले हैं । हे परमेश्वर ! षोडशाक्षरी (विद्या का) कवच कहिये ।२

श्रीशिवजी ने कहा—हे पुत्र ! मन्त्र-विग्रहात्मक यह कवच गुप्त से गुप्त है ।३ तुम्हारे प्रति स्नेह से कहता हूँ । जिस-तिस से नहीं कहा गया है । ब्रह्मा, ईश, विष्णु और इन्द्र से भी नहीं कहा गया है ।४ न तो दैत्यों, न देवताओं और न हो शौनकादि से कहा है, किन्तु तुम्हारी भक्ति-वश इस कवच को गुप्त रखने में समर्थ नहीं हूँ ।५ सवर्णा और सद्-गुणों से युक्त एकादश महा-विद्याओं में प्रधान यह कवच मेरे द्वारा कहा गया है ।६ गणेश, सूर्य, विष्णु, शिव-शक्ति, भैरव और सभी पाँचो तत्व कवच के आवर्तन (सतत-पाठ) से सन्तुष्ट होते हैं ।७ त्रैलोक्य-विजय-दायक यह तुरीय कवच (यहाँ 'तुरीय' शब्द संख्या - वाचक न होकर विशेषण के रूप में है) ऊर्ध्वाम्नाय के महा-मन्त्रों से मेरे द्वारा निर्मित है ।८

श्रीस्कन्द ने कहा—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष देनेवाला देवी का श्रेष्ठ कवच जो आपने पहले सूचित किया है, मैं सुनना चाहता हूँ ।९ जिसके बिना आराधना, जप और ध्यानादि कर्म नहीं होते, वह कवच, हे प्रभो ! जैसे भी हो, मुझसे कहिए ।१०

श्रीईश्वर ने कहा—हे महा-प्रज्ञावान् पुत्र ! यह दिव्य तुरीय कवच अत्यन्त शुभ और सभी मन्त्रों से युक्त, रहस्य का भी रहस्य (अत्यन्त रहस्य-मय) है ।११ पूजन के अन्त में जप के पूर्व कवच पढ़ना चाहिये । इस कवच के ऋषि आनन्द - भैरव हैं ।१२ गायत्री छन्द है और श्रीविद्या इसकी देवता हैं । 'रामा' (श्री) इसका बीज है, 'परा' (ह्रीं) बीज इसकी शक्ति और 'वाग्भव' (ऐं) वीज कीलक है ।१३ सर्वार्थ-सिद्धि के लिए इसका विनियोग है । अंगुष्ठ में 'वाग्भव' (ऐं) तथा तर्जनी में 'हृल्लेखा' (ह्रौं) का न्यास करे ।१४ 'लक्ष्मो-बीज' (श्रीं) का मध्यमा में, अङ्गिरा (ऐं) बीज का अनामिका में, 'परा-बीज' (ह्रीं) का कनिष्ठा में और 'लक्ष्मी' (श्रीं) का करतल में न्यास करे ।

हृदय में 'वाग्भव' (ऐं), शिर में 'परा' (ह्रीं), शिखा में 'लक्ष्मो' (श्रीं), कवच में 'वाग्भव' (ऐं), नेत्रों में 'हृल्लेखा' (ह्रीं) और अस्त्र में 'कमला' (श्रीं) का न्यास करे ।

'भूर्भुवः स्वः' से दिग्बन्धन करे । न्यास, ध्यान आदि करके ही कवच का पाठ करना चाहिए । धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष-दायक ध्यान कहता हूँ ।१६-१८

क्षीर-सागर के मध्य में मनोहर रत्न-द्वीप में स्थित रत्न-सिंहासन पर देवी का चिन्तन (ध्यान) करे ।१९ वे करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाशमान हैं। करोड़ों चन्द्रमाओं के समान उनका मुख-मण्डल है, वे दाडिम (अनार) पुष्प और कुंकुम के समान रङ्ग की आभा से युक्त हैं ।२० जपा-कुसुम (जासौन) के समान उनके तीन नेत्र हैं। पाश, अंकुश, इक्षु-चाप (गन्ने से बना धनुष) और बाणों से युक्त चार भुजाएँ हैं ।२१ कपूर आदि से सुवासित ताम्बूल से उनका मुख भरा है। सब प्रकार के शृङ्गार से युक्त उनके सभी अवयव (अङ्ग) अत्यन्त सुन्दर हैं ।२२ वे सभी आयुधों से युक्त हैं, पूरे परिवार और आवरण-देवताओं से युक्त हैं। प्रसन्नता उनके शरीर और आँखों से झलकती है ।२३

हे वीर ! इस प्रकार ध्यान करके समस्त कामनाओं के दाता और सब प्रकार से रक्षा करनेवाले शुभ कवच से अपनी देह को ढाँके (रक्षा करे) ।२४

मेरी शिखा की रक्षा 'ह्सौः' और ब्रह्म-रन्ध्र की रक्षा 'स्हौः' करें। मेरे बाएँ और दाहिने भाग की रक्षा सदा 'ह्लौं' करे ।२५ 'ऐं सौः ॐ' सदा मेरी रक्षा करें ।२६ 'श्रीं ह्रीं ऐं' सब जगह और 'क्लौं रं लं ह्रीं' सदा मेरी रक्षा करें। 'क्लीं हसकहलह्रीं' और 'सौः क्लीं' सदा मेरी रक्षा करें ।२७ 'सौः ऐं क्लीं ह्रीं' बीज-युक्त षोडशाक्षरी लक्ष्मी मेरी रक्षा करें। आपाद-मस्तक (सिर से पैरों तक) महा-त्रिपुर-सुन्दरी रक्षा करें ।२८ सदा विभूति के लिए श्रीजयन्ती मेरे मस्तक की रक्षा करें। सर्वार्थ-सिद्धि के लिए 'ह्रीं' मङ्गला सदा मेरे नेत्रों की रक्षा करें ।२९ सर्व-शुभावहा 'क्लीं' कालिका दोनों कानों की रक्षा करें। सर्व-विध जय-प्राप्ति के लिए 'ऐं' भारती घ्राण-युग्म (नासा-पुट-द्वय) की रक्षा करें ।३०

सर्व-लोक-वशीकरण के लिए 'सौः' कराली मुख की रक्षा करें। साहित्य-सिद्धि के लिए 'ऐं' शारदा सदा वाचा (वाणी) की रक्षा करें ।३१ सद्-गायन की सिद्धि के लिए 'ॐ' कपालिनी मेरे कानों की रक्षा करें। दुर्गा के साथ 'ह्रीं' मेरे स्कन्ध 'कन्धे' की सदा रक्षा करें ।३२ क्षमा-सहित 'श्रीं' सर्वदा मेरे हृदय की रक्षा करें। ककार-सहित धात्री मेरे दोनों पार्श्वों की रक्षा करें ।३३ एकार-सहित 'स्वाहा' मेरे जठर (पेट) की रक्षा करें। ईकार-सहित 'स्वधा' सर्वदा मेरी नाभि की रक्षा करें ।३४ लकार-सहित ब्राह्मी सदा पृष्ठ-देश की रक्षा करें। 'ह्रीं'कार-सहित माहेशी सदा मेरी कमर की रक्षा करें ।३५

हकार-सहित कौमारी सर्वदा गुह्य-स्थान की रक्षा करें। सकार-सहित वैष्णवी गुद-देश की रक्षा करें। ३६ ककार-सहित वाराही सदा उरू-द्वय की रक्षा करें। हकार-सहित माहेन्द्री जानु-द्वय की रक्षा करें ।३७ लकार-सहित चामुण्डा दोनों जंघाओं की सदा रक्षा करें। ह्रींकार-सहित लक्ष्मी (महा-लक्ष्मी) गुल्फ-द्वय की रक्षा करें। ३८ सकार-सहित शिव-दूती दोनों पैरों की रक्षा करें। ककार-सहित चण्डा सदा पूर्व दिशा में रक्षा करें ।३९ लकार-सहित प्रचण्डा सर्वदा आग्नेय दिशा में रक्षा करें। 'ह्रीं'कार-सहित चण्ड-नायिका दक्षिण-दिशा में रक्षा करें ।४०

'सौः' कार-सहित चण्ड-वेगिनी नैर्ऋत्य दिशा में रक्षा करें। ऐंकार-सहित चण्ड-प्रकाशा पश्चिम दिशा में रक्षा करें ।४१ क्लींकार-सहित चण्डिका वायव्य दिशा में रक्षा करें। ह्रींकार-सहित चामुण्डा उत्तर-दिशा में मेरी रक्षा करें ।४२ श्रींकार-सहित रौद्री ईशान-दिशा में मेरी रक्षा करें। षोडशी के साथ ब्रह्माणी ऊर्ध्व-दिशा में रक्षा करें ।४३ षोडशी के साथ वैष्णवी अधो-दिशा में

रक्षा करें। सर्वाङ्ग की सर्वदा रक्षा षोडशी-सहित भुवनेश्वरी करें।४४ जल में, दावानल में, जङ्गल में, महोत्पात में, समुद्र में दिन-रात तार-त्रयी ('ऐं ह्रीं श्रीं'–स्वरूपा) देवी मेरी रक्षा करें।४५

फल-श्रुति

यह तुरीया-कवच षोडशाक्षर-मन्त्र के बीजों से निर्मित और अभेद्य है।१ योगिनी-चक्र सहित इसे तुम्हारी प्रीति-वश प्रकाशित किया है। हे सुपुत्र ! मेरे द्वारा दिए गए इस गोपनीय कवच को धारण करो।२ श्रीत्रिपुर-सुन्दरी का यह तुरीय-कवच पुत्र, शिष्य और बन्धु आदि को भी नहीं बताना चाहिए।३ मन्त्र-वर्णों के क्रम में कहा गया यह कवच प्रयत्न-पूर्वक गुप्त रखे। प्रातः-काल से सन्ध्या-काल तक के कर्म वैदिक कहे गए हैं।४

इनके समान फल तुरीय-कवच के व्रत से मिलता है। दस प्रकार के मातृका-न्यास, लघु-षोढा-न्यास।५ शक्ति-न्यास तथा महा-षोढा-न्यास बाह्य और अन्तर में करे। श्रीविद्या के महा-न्यास से क्रमानुसार सावर्णता मिलती है।६ इन न्यासों-सहित पूजन से जो फल मिलता है, वह कवच के व्रत (पाठ) से ही मिल जाता है। साधक बछड़े और दुग्ध-दायी काम-धेनु के समान हो जाता है।७

यह त्रैलोक्य-विजय कवच परम अद्भुत है। जिस प्रकार हे पुत्र ! मन-चाही वस्तु सोचते ही चिन्ता-मणि उसे प्रदान करती है, ८ उसी प्रकार इससे भी शीघ्र ही कामना-पूर्ति होती है, यह मेरा कथन संशय-हीन है। आयु, ऐश्वर्य और सदा सम्पत्ति की वृद्धि के साथ, ९ कवच के प्रभाव से साधक त्रैलोक्य - विजयी होता है। अदीक्षित और श्रद्धा से हीन मनवाले व्यक्ति को यह कवच नहीं देना चाहिये।१० न ही कृतघ्न और आत-तायी (अत्याचारी) आदि जिस-तिस से इसे कहना चाहिये। शान्त, गुरु-भक्त, शुद्ध और साधु को ही देना चाहिये।११

इस कवच को बिना जाने जो पर-देवता का मन्त्र जपता है, उसे हे वत्स ! सैकड़ों करोड़ कल्पों में भी सिद्धि नहीं मिलती।१२ हे पुत्र ! जो तीनों सन्ध्याओं में इस उत्तम कवच का नित्य पाठ करता है, वह साक्षात् गुरु है।१३ अर्ध-रात्रि में, जप-काल में प्रति-दिन यन्त्र-राज के आगे जो इसका पाठ करता है, वह सारे संसार को शीघ्र ही वश में कर लेता है, इसमें संशय नहीं।१४ उत्तम वर्ण और गुणों से युक्त सात करोड़ महा-मन्त्र [इसके पाठ से] प्रसन्न हो जाते हैं। यह सत्य है, इसमें संशय नहीं।१५ कवच का यह सगुण भजन-क्रम है। अब इसका निर्गुण-क्रम सुनो–१६

इस कवच का माहात्म्य वर्णित करने में मैं समर्थ नहीं हूँ। मूलाधार से ब्रह्म-रन्ध्र तक श्रीचक्र कहा गया है अर्थात् मूलाधार से ब्रह्म-रन्ध्र-पर्यन्त श्रीचक्र का ध्यान करे।१७ शरीर के मध्य में समस्त श्रीचक्र का चिन्तन करे। पच्चीस तत्वों तथा अतल, वितल।१८ सुतल, तलातल, महा-तल, रसातल और सातवाँ पाताल-लोक।१९ भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः तपः और सत्य-लोक—ये चौदह भुवन।२० इन सभी के साथ श्रीभुवन को भी निराकार ध्यान करके चिन्मय-ज्योति-स्वरूपिणी देवता का मानसिक पूजन करके कवच का पाठ-कर्ता हे वत्स! राज-राजेश्वर होता है।२१

यह सभी मन्त्रों का सार परम रहस्य-मय है। जो परम भक्ति से निश्चल (दृढ़) और निर्मल मन से इस (कवच) का भजन करता है, वह इस लोक में पुत्र-पौत्रादि की वृद्धि, सभी प्रकार की धन-सम्पत्ति-युक्त पाकर क्रीड़ा (जीवन-यापन) करता है और भोग-मोक्ष को पाता है।२३

[२]

श्रीषोडशी-कवचम्

पूर्व-पीठिका

श्रीदेव्युवाच–

भगवन्, देव-देवेश ! लोकानुग्रह-कारक, त्वत्प्रसादान्महा-देव ! श्रुता मन्त्रास्त्वनेकधा ।
साधनं विविधं देव ! कीलकोद्धरणं तथा, शापादि-दूषणोद्धारः श्रुतस्त्वत्तो मया प्रभो !
राज-राजेश्वरी-देव्याः कवचं सञ्चितं मया, श्रोतुमिच्छामि त्वत्तस्तत्कथयस्व दया-निधे !

श्रीईश्वर उवाच–

लक्षवारसहस्राणि वारिताऽसि पुनः पुनः, स्त्रो-स्वभावात् पुनर्देवि ! पृच्छसि त्वं मम प्रिये !
अत्यन्त-गुह्यं कवचं सर्व-काम-फल-प्रदं, प्रीतये तव देवेशि ! कथयामि शृणुष्व तत् ।

कवच-स्तोत्रम्

विनियोगः—अस्य षोडशी-कवचस्य श्रीमहादेव ऋषिः, प्रस्तार-पंक्तिश्छन्दः, श्री राज-राजेश्वरी महा-त्रिपुर-सुन्दरी देवता, धर्मार्थ-काम-मोक्ष-साधने पाठे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यासः–श्रीमहादेव-ऋषये नमः शिरसि । प्रस्तार-पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे । श्रीराज-राजेश्वरी-महा-त्रिपुर - सुन्दरी - देवतायै नमः हृदि । सर्वार्थ - काम-मोक्ष-साधने पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

पूर्वे मां भैरवी पातु बाला मां पातु दक्षिणे, मालिनी पश्चिमे पातु त्रासिनी तूत्तरेऽवतु ।
ऊर्ध्वं पातु महा-देवी महा-त्रिपुर-सुन्दरी, अधस्तात् पातु देवेशी पातालातल-वासिनी ।
आधारे वाग्भवः पातु काम-राजस्तथा हृदि, डामरः पातु मां नित्यं मस्तके सर्व-कामदः ।
ब्रह्म-रन्ध्रे सर्व-गात्रे छिद्र-स्थाने च सर्वदा, महा-विद्या भगवती पातु मां परमेश्वरी ।
ऐंह्रीं ललाटे मां पातु क्लींक्लुं सश्च नेत्रयोः, नासायां मे कर्णयोश्च द्रींद्रैंद्रांद्रीं चिबुके तथा ।
सौः पातु गले हृदये सह्रौं नाभि-देशके, कलह्रीं क्लींस्त्रीं गुह्य-देशे सह्रीं पादयोस्तथा ।
सह्रीं मां सर्वतः पातु सकली पातु सन्धिषु, जले स्थले तथाकाशे दिक्षु राज-गृहे तथा ।
हूं क्षेमा त्वरिता पातु सह्रौं सक्लीं मनोभवा, हंसः पायान्महादेवि परं निष्कल-देवता ।
विजया मंगला दूती कल्याणी भगमालिनी,ज्वाला च मालिनी नित्या सर्वदा पातु मां शिवा ।
इत्येवं कवचं देवि ! देवानामपि दुर्लभं, तव प्रीत्या मयाख्यातं गोपनीयं प्रयत्नतः ।

इद रहस्यं परमं गुह्याद् गुह्यतरं प्रिये, धन्यं यशस्यमायुष्यं भोग-मोक्ष-प्रदं शिवे !
दुःस्वप्न-नाशनं पुण्यं नर-नारी-वशङ्करम्, आकर्षण-करं देवि ! स्तम्भोच्चाटकं शिवे !
इदं कवचमज्ञात्वा राज-राजेश्वरीं पराम्, योऽर्चयेद् योगिनी-वृन्दैः स भक्ष्यो नात्र संशयः ।
न तस्य मंत्रसिद्धिः स्यात् कदाचिदपि शांकरि, इह लोके च दारिद्र्यं रोगदुःखाशुभानि च ।
परत्र नरकं गत्वा पशु-योनिमवाप्नुयात्, तस्मादेतत् सदाभ्यासादधिकारी भवेत् किल ।
मद्-वक्त्र - निर्गतमिदं कवचं सु - पुण्यं, पूजा - विधेश्च पुरतो विधिना पठेद्यः ।
सौभाग्य-भाग-ललितानि शुभानि भुक्त्वा, देव्याः पदं भजति तत् पुनरन्त-काले ।

।। कुलानन्द-संहितायां षोडशी-कवचं सम्पूर्णम् ।।

हिन्दी रूपान्तर

पूर्व-पीठिका : श्रीदेवी ने कहा—हे देव-देवेश्वर भगवन् ! आप लोकों पर दया करनेवाले हैं । आपकी कृपा से मैंने अनेक प्रकार के मन्त्र सुने हैं । अनेक प्रकार के साधन, कीलक, उद्धार, शापादि-दोषों के दूर करने के उपाय आपसे मैंने सुने हैं । राज-राजेश्वरी देवी का कवच मैं सुनना चाहती हूँ । हे दया-निधे ! उसे कहिये ।

श्री ईश्वर ने कहा—लाखों बार मना करने पर भी हे देवि ! स्त्री-स्वभाव से तुम पुनः उस अति गोपनीय कवच को पूछ रही हो, जो सभी कामनाओं का फल देनेवाला है । हे देवेशि ! तुम्हारी प्रसन्नता के लिये उसे कहता हूँ, सुनो ।

विनियोग—इस षोडशी-कवच के ऋषि श्रीमहा-देव, छन्द प्रस्तार-पंक्ति, देवता श्रीराज-राजेश्वरी महा-त्रिपुर-सुन्दरी हैं और इसके पाठ का विनियोग धर्मार्थ-काम-मोक्ष की सिद्धि के लिये किया जाता है ।

ऋष्यादि-न्यास : शिर में श्री महा-देव ऋषि को, मुख में प्रस्तार-पंक्ति छन्द को, हृदय में श्रीराज-राजेश्वरी महा-त्रिपुर-सुन्दरी देवता को नमस्कार है और सारे शरीर में धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष की सिद्धि हेतु इसके पाठ के विनियोग को नमस्कार है ।

पूर्व में भैरवी मेरी रक्षा करें, बाला दक्षिण में मेरी रक्षा करें । मालिनी पश्चिम में, उत्तर में वासिनी रक्षा करें । ऊपर महा-देवी महा-त्रिपुर-सुन्दरी रक्षा करें, नीचे पातालातल-वासिनी देवेशी रक्षा करें । मूलाधार में वाग्भव 'ऐं' रक्षा करे और हृदय में काम-राज 'क्लीं' । सभी कामनाओं को पूरी करनेवाला डामर 'सौः' सदा मेरे मस्तक की रक्षा करे । ब्रह्म-रन्ध्र में और शरीर के सभी छिद्र-स्थानों में महा-विद्या भगवती परमेश्वरी सदा मेरी रक्षा करें । ललाट में 'ऐं ह्रीं' मेरी रक्षा करे और नेत्रों में 'क्लीं क्लुं सः' । नाकों और कानों में तथा चिबुक (ठोड़ी-ठुड्डी) में 'द्रीं द्रैं द्रां द्रीं' । गले और हृदय में 'सौः' रक्षा करे, नाभि में 'सह्रौं' । गुह्य में 'कलह्रीं क्लीं स्त्रीं' और पैरों में 'सह्रीं' । सभी ओर 'सह्रीं' मेरी रक्षा करे । सन्धियों में, जल-स्थल-आकाश और दिशाओं में तथा राज-महल में 'सकलीं' रक्षा करे । 'ह्रूँ क्षेमा त्वरिता', 'सक्लीं मनोभवा' रक्षा करें । हे महा-देवि ! परम निष्कल देवता 'हंसः' रक्षा करें । विजया, मङ्गला, दूती, कल्याणी, भग-मालिनी, ज्वाला-मालिनी, नित्या, शिवा' सदैव मेरी रक्षा करें ।

(शेष पृष्ठ १०६ के नीचे)

[८]

श्रीपरा-महा-योनि-कवचम

पूर्व-पीठिका—ॐ नमः शिवाय गुरवे नाद - विन्दु-कलात्मने । श्रीगणेशाय नमः । श्रीमन्महा-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः ।

श्रीभैरव उवाच—क्रम-दीक्षा-विधानानि मयोक्तानि महेश्वरि ! त्वयात्मनः कुलागारे कवचं यत् सु-गोपितं ।। १ ।। अधुना कृपया त्वं च तत्-सर्वं वक्तुमर्हसि ।

श्रीभैरव्युवाच—शृणु ! प्रवक्ष्यामि तन्त्र-सारमिदं महत् ।।२।। एतच्छ्री-कवचस्यास्य पर-ब्रह्म-ऋषिः शिवः । महती जगतीच्छन्दश्चिच्छक्तिर्देवतोच्यते ।।३।। ऐं वीजं ह्रीं तथा शक्तिः सकलह्रीं कीलकं तथा । पर-ब्रह्म-प्राप्ति-हेतौ विनियोगः प्रकीर्तितः ।।४।।

ऋष्यादि-न्यासं कृत्वा कवचं पठेत् । यथा—

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट् उग्र-तारा मूलाधारं ममावतु । ह्रीं भुवनेश्वरी पातु स्वाधिष्ठानं च मे सदा ।।५।। क्रीं हूं ह्रीं दक्षिणा पातु मणिपुरं तथा मम । नमो भगवत्यै हस्ख्फ्रें कुब्जिकायै स्हां स्हीं स्हूं ङञणनमे अघोरा-मुखि छांछीं किणि किणि विच्चे ।।६।। अनाहतं सदा पातु कुब्जिका परमेश्वरी । फ्रं ख्फ्रें गुह्य-काली सा विशुद्धं मे च रक्षतु ।।७।। कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं श्रीं । आज्ञा-चक्रं महा-देवी षोडशी पातु मे सदा ।।८।। हस्क्ष्म्लवरयूं स्हक्ष्म्लवरयीं नाद-चक्रं च मे पातु श्रीमदानन्द-भैरवः ।।९।। ह्सौः स्हौः अर्ध-नारीश्वरी बिन्दुश्च मेऽवतु । हंसः सोऽहं सदा पातु सहस्रारं सदा मम ।।१०।।

(पृष्ठ १०५ का शेष)

फल-श्रुति : हे देवि ! यह कवच देवों के लिये भी दुर्लभ है । तुम्हारे प्रेम-वश कहा है, इसे यत्नपूर्वक गुप्त रखना चाहिये । हे प्रिये ! यह गुप्त से भी गुप्त अति गुप्त है । यह धन-धान्य, आयु, भोग और मोक्ष देनेवाला है । बुरे स्वप्नों के प्रभाव को यह नष्ट करनेवाला और स्त्री-पुरुष सभी को वशीभूत करनेवाला है । हे शिवे ! इससे आकर्षण, स्तम्भन और उच्चाटन होते हैं । इस कवच को जाने बिना जो परा देवी राज-राजेश्वरी की पूजा करता है, उसे योगिनियाँ खा जाती हैं, इसमें सन्देह नहीं । हे शाङ्करि ! उसे कभी मन्त्र की सिद्धि नहीं मिलती । इस संसार में दरिद्रता, रोग, दुःख और अकल्याण-ग्रस्त होकर अन्त में नरक में जाकर वह पशु-योनि में जन्म लेता है । इसलिये विधिवत् अभ्यास कर इस कवच का अधिकारी बनना चाहिये । मेरे मुख से निकला हुआ यह कवच बहुत ही पुण्य-दायक है । कवच को पूजा-विधि को गुरु से जानकर जो विधि-पूर्वक इसका पाठ करता है, वह सुन्दर सौभाग्य को भोग कर अन्त में देवी के परम पद को प्राप्त करता है ।

कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं श्रीं शिरो मे पातु सा देवी महा-त्रिपुर-सुन्दरी ।।११।। कएईलह्रीं कामेशी भ्रूमध्यं मे सदाऽवतु । हसकहलह्रीं वज्रेशी दक्ष-नेत्रं सदाऽवतु ।।१२।। सकलह्रीं वाम-नेत्रं रक्षतु भग-मालिनी । ह्स्त्रें हसकलह्रीं ह्सौः त्रिनेत्रं पातु भैरवी ।।१३।। ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुरा-सिद्धा कर्णौ मे परि-रक्षतु । ह्रीं क्लीं क्षुं मां सदा पातु मुखं त्रिपुर-मालिनी ।।१४।। हसैं हस्क्लीं हसौं कण्ठं पातु श्रीत्रिपुरा-श्रीमें हैं । हक्लीं हसौं पातु वक्षस्त्रिपुर-वासिनी ।।१५।। दौवारिजौ सदा पातु ह्यणिमाद्यष्ट-सिद्धयः । ह्रीं क्लीं सौः पातु मे नाभिं परा त्रिपुर-सुन्दरी ।।१६।। दश-मुद्रा-युता देवी ममोरू पातु सर्वदा । ऐं क्लीं सौः पातु मे जानू श्रीमहा-त्रिपुरेश्वरी ।।१७।। षड्-दर्शनं सदा पातु जङ्घा-युग्मं च सर्वदा । अं आं सौः त्रिपुरा पातु पादौ च सततं नमः ।।१८।। ॐ ह्रीं श्रीं पातु मां पूर्वे श्रीमहा-भुवनेश्वरी । कएईलह्रीं दक्षिणे मां पराऽऽद्या परि-रक्षतु ।।१९।। सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं श्रीकुजा पश्चिमे मां सदाऽवतु । श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः चोत्तरे मां पातु योगेश्वरी परा ।।२०।।

हसकहलह्रीं पातु मामधो वज्र-योगिनी । सकलह्रीं सा ललिता ह्यूर्ध्वं मां परि-रक्षतु ।।२१।। श्रीं ५ ॐ ३ क ५ ह ६ स ४ सौः ५ सदाऽवतु । सर्वाङ्गं मे च चिद्रूपा महा-त्रिपुर-सुन्दरी ।।२२।।

फल-श्रुति

इति ते कथितं देव ! ब्रह्मानन्द - मयं परं । श्रीमहा - योनिराख्यातं कवचं देव-दुर्लभम् ।।२३।। मम तेजसा रचितं श्रीविद्या - क्रम - संयुतम् । तव स्नेहान्महा-देव ! तवाग्रे तु मयोदितम् ।।२४।। राज्यं देयं शिरो देयं न देयं कवचं परम् । देयं पूर्णाभिषिक्ताय स्व-शिष्याय महेश्वर ।।२५।। अन्यथा नारकी भूयात् कल्प-कोटि-शतैरपि । दिक्-सहस्त्रेण पाठेन ह्यसाध्यं साध्यते क्षणात् ।।२६।। लक्षं जप्त्वा महा-देव ! तद्दशांशं हुनेद् यदि । ब्रह्म - ज्ञानमवाप्नोति पर-ब्रह्मणि लीयते ।।२७।। भूर्जे विलिख्य गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद् यदि । कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ साक्षात् कामेश्वरो भवेत् । नारी वाम - भुजे धृत्वा भवेत् त्रिपुर - सुन्दरी ।।२८।। ॐ तत्सत् श्रीमहा - निर्वाण-तन्त्रे श्रीमहा - योनि - नाम श्रीमन्महा - त्रिपुर-सुन्दरी-कवचम् ।।

षोडशी हृदय-स्तोत्रम्

कैलासे करुणाक्रान्ता परोपकृति-मानसा, पप्रच्छ करुणा-सिन्धुं सु-प्रसन्नं महेश्वरं ।

श्रीपार्वत्युवाच–

आगामिनि कलौ ब्रह्मन्!धर्म-कर्म-विवर्जिताः, भविष्यन्ति जनास्तेषां कथं श्रेयो भविष्यति?

श्रीशिव उवाच–

शृणु देवि ! प्रवक्ष्यामि तव स्नेहान्महेश्वरि, दुर्लभं यत् त्रि-लोकेषु सुन्दरी-हृदय-स्तवं ।
ये नरा दुःख-सन्तप्ता दारिद्र्य-हत-मानसाः, अस्यैव पाठ-मात्रेण तेषां श्रेयो भविष्यति ।।

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-हृदय-स्तोत्र - मन्त्रस्य श्रीआनन्द-भैरवः ऋषिः । दैवी गायत्री छन्दः । श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी देवता । ऐं बीजं । सौः शक्तिः । क्लीं कीलकं । धर्मार्थ-काम-मोक्षार्थे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यासः–श्रीआनन्द-भैरवाय ऋषये नमः शिरसि । दैवी-गायत्री-छन्दसे नमः मुखे । श्रीमहा-त्रिपुर - सुन्दरी-देवतायै नमः हृदये । ऐं बीजाय नमः लिङ्गे । सौः शक्तये नमः नाभौ । क्लीं कीलकाय नमः मूलाधारे । धर्मार्थ-काम-मोक्षार्थे विनियोगाय नमः पादयोः ।

षडङ्ग-न्यास :—	कर	अङ्ग
ऐं ह्रीं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्लीं श्रीं सौः ऐं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सौः ॐ ह्रीं श्रीं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ऐं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
क्लीं सकलह्रीं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सौः सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—बाल-व्यक्त-विभाकरामित - निभां भव्य-प्रदां भारतीम्,
ईषत्-फुल्ल-मुखाम्बुज - स्मित - करैराशा - भवान्धापहाम् ।
पाशं साभयमंकुशं च वरदं सम्बिभ्रतीं भूतिदाम्,
भ्राजन्तीं चतुरम्बुजाकृति-करैर्भक्त्या भजे सुन्दरीम् ।।

स्तोत्रं—सुन्दरी सकल - कल्मषापहा कोटि - कञ्ज - प्रिय - काम्य - कान्तिका ।
कोटि-कल्प-कृत - पुण्य - कर्मणा पूजनीय - पद - पुण्य - पुष्करा ।। १

शर्वरीश - सम - सुन्दरानना श्रीश - शक्ति - सुकृताश्रय - श्रिता ।
सज्जनानु - शरणीय-सत् - पदा सङ्कटे सुर - गणैः सु - वन्दिता ।। २
या सुरासुर - रणे जयान्विता आजघान जगदम्बिकाऽजिता ।
तां भजामि जगतां जनिं जयां युद्ध - युक्त - दितिजान् सु-दुर्जयान् ।। ३
योगिनां हृदय - सङ्गतां शिवां योग - युक्त - मनसां यतात्मनाम् ।
जाग्रतीं जगति यत्नतो द्विजा यां जपन्ति हृदि तां भजाम्यहम् ।। ४
कल्पकास्तु कलयन्ति कालिकां यत् - कला कलि - जनोपकारिकाम् ।
कौल-कालि-कलितांघ्रि-कञ्जकां तां भजामि कलि - कल्मषापहाम् ।। ५
बालार्कानन्त - शोचिर्निज-तनु - किरणैर्दीपयन्तीं दिगन्तान्,
दीप्तैर्देदीप्यमानां दनुज - दल - वनानल्प - दावानलाभाम् ।
दान्तो दन्तोग्र-चित्तान् दलित-दिति-सुतान् दर्शनीयान् दुरन्तान्,
देवीं दीनार्द्र-चित्तां हृदि मुदित-मनाः सुन्दरीं संस्मरामि ।। ६
धीरान् धन्यान् धरित्रीं धव-विधृत-शिरो-धूत-धूल्यब्ज-पादान्,
धृष्टान् धाराधराधो-विनिधृत-चपला-चारु-चन्द्रत्-प्रभाभाम् ।
धर्मान् धूतोपहारान् धरणि सुर - धवोद्धारिणीं ध्येय-रूपाम्,
धीमद्-धन्याऽति-धन्यां धनद-धन-वृतां सुन्दरीं चिन्तयामि ।। ७
जयतु जयतु जल्पा योगिनी योग-युक्ता, जयतु जयतु सौम्या सुन्दरी सुन्दरास्या ।
जयतु जयतु पद्मा पद्मिनी केशवस्य, जयतु जयतु काली कालिनी काल-कान्ता ।। ८
जयतु जयतु खर्वा षोडशी वेद-हस्ता, जयतु जयतु धात्री धर्मिणी धातृ-शक्तिः ।
जयतु जयतु वाणी ब्राह्मणा ब्रह्म-वन्द्या, जयतु जयतु दुर्गा दारिणी देव-शत्रोः ।। ९
देवी त्वं सृष्टि-काले कमल - भव - भृता राजसी रक्त-रूपा,
रक्षा-काले त्वमम्बा हरि-हृदय - धृता सात्विकी श्वेत-रूपा ।
भूरि - क्रोधा भवान्ते भव - भवन - गता तामसी कृष्ण-रूपा,
एताश्चान्यास्त्वमेव क्षिति - मनुज - मता सुन्दरी केवलाद्या ।। १०
सुमल - सुमनमेतद् देवि ! गोप्यं गुणज्ञे, ग्रहण-मनन-योग्यं षोडशीयं खलघ्नम् ।
सुर-तरु-सम-शीलं सम्प्रदं पाठकानां, प्रभवति हृदयाख्यं स्तोत्रमत्यन्त-मान्यम् ।। ११
इदं त्रिपुर-सुन्दर्याः षोडश्याः परमाद्भुतं, यः शृणोति नरः स्तोत्रं स सदा सुखमश्नुते ।।१२

।। श्रीत्रिपुर-सुन्दरी-तन्त्रे हृदयाख्यं स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

श्रीराज-राजेश्वरी तर्पण-स्तोत्रम्

छन्दः - पाद - युगां निरुक्ति - सुमुखां शिक्षां च जंघा-युगाम्,
ऋग्वेदोरु - युगां यजुस्तु जघनां या साम - वेदोदराम् ।
कॅ-न्याय - कुचां श्रुति - स्मृति - करां काव्यादि-वेदाननाम्,
वेदान्तामृत - लोचनां भगवती - श्रीराज - राजेश्वरीम् ।। १

कल्याणायुत - पूर्ण - बिम्ब - वदनां पूर्णेश्वरानन्दिनीम्,
पूर्णां पूर्ण - परां परेश - महिषीं पूर्णामृतास्वादिनीम् ।
सम्पूर्णां परमोत्तमामृत - कलां विद्यावतीं भारतीं,
श्रीचक्र - प्रिय - बिन्दु - तर्पण-परां श्रीराज - राजेश्वरीम् ।। २

एकानेकमनेक - कार्य - विविधां कार्यैकंचिद् - रूपिणीम्,
चैतन्यात्मक - एक - चक्र - रचितां चक्राङ्क - एकाकिनीम् ।
भावाभाव - विवर्द्धिनीं भय - हरां सद्-भक्ति-चिन्ता-मणिम्,
श्रीचक्र-प्रिय - बिन्दु - तर्पण - परां श्रीराज - राजेश्वरीम् ।। ३

ईशाधीश्वर - योगि - वृन्द - विदितां सानन्द - भूतां पराम्,
पश्यन्तीं तनु - मध्यमां विलसतीं श्रीभैरवी - रूपिणीम् ।
आत्मानात्म - विचारिणीं विवरगां विद्यां त्रि - बीज - त्रयीम्,
श्रीचक्र - प्रिय - विन्दु - तर्पण - परां श्रीराज - राजेश्वरीम् ।। ४

लक्ष्यालक्ष्य - निरीक्षणां निरुपमां रुद्राक्ष - माला - धराम्,
साक्षात् कारण-दक्ष-वंश - कलितां दीर्घाक्षि - दीर्घेश्वरीम् ।
भद्रां भद्र - वर - प्रदां भगवतीं भद्रेश्वरीं भद्रिणीम्,
श्रीचक्र - प्रिय-बिन्दु - तर्पण - परां श्रीराज - राजेश्वरीम् ।। ५

ह्रीं-बीजान्वित-नाद-विन्दु - भरितां ॐकार - नादात्मिकाम्,
ब्रह्मानन्द - घनोदरीं गुण - वतीं ज्ञानेश्वरीं ज्ञानदाम् ।
इच्छा - ज्ञान - क्रिया - वतीं जित - वतीं गन्धर्व-संसेविताम्,
श्रीचक्र - प्रिय - बिन्दु - तर्पण-परां श्रीराज - राजेश्वरीम् ।। ६

हर्षोन्मत्त - सुवर्ण - पात्र - भरितां पानोन्नताघूर्णिताम्,
हुङ्कार-प्रिय - शब्द - ब्रह्म - निरतां सारस्वतोल्लासिनीम् ।
सारासार - विचार - चारु - चतुरां वर्णाश्रमाकारिणीम्,
श्रीचक्र-प्रिय - विन्दु - तर्पण - परां श्रीराज - राजेश्वरीम् ।। ७
सर्व - ज्ञान - कलावतीं स-करुणां सन्नादिनीं नन्दिनीम्,
सर्वान्तर्गत - शालिनीं शिव - तनुं सन्दीपिनीं दीपिनीम् ।
संयोग - प्रिय - रूपिणीं प्रिय - वतीं प्रीति - प्रतापोन्नताम्,
श्रीचक्र - प्रिय - बिन्दु - तर्पण - परां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।। ८
कर्माकर्म - विवर्जितां कुल - वतीं कर्म - प्रदां कौलिनीम्,
कारुण्यां तनु-बुद्धि-कर्म - निरतां सिन्धु - प्रियां शालिनीम् ।
पञ्च - ब्रह्म - सनातनां शव - हृदां ज्ञेयाङ्क - योगान्विताम्,
श्रीचक्र - प्रिय - बिन्दु - तर्पण-परां श्रीराज - राजेश्वरीम् ।। ९
हस्ते कुम्भ - निभां पयोधर - धरां पीनोन्नतां नौमि ताम्,
हाराद्याभरणां सुरेन्द्र - विनुतां शृङ्गार - पीठालयाम् ।
योन्याकारिणि योनि - मुद्रित - करां नित्यां च वर्णात्मिकां,
श्रीचक्र - प्रिय - बिन्दु - तर्पण-परां श्रीराज - राजेश्वरीम् ।। १०
लक्ष्मी-लक्षण-पूर्ण-भक्ति - वरदां लीला - विनोद - स्थिताम्,
लाक्षा-रञ्जित - पाद - पद्म - युगलां ब्रह्माण्ड - संसेविताम् ।
लोकालोकित-लोक-काम - जननीं लोक - श्रियाङ्क-स्थिताम्,
श्रीचक्र - प्रिय - बिन्दु - तर्पण - परां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।। ११
ह्रींकारायुत - शङ्कर - प्रिय - तनुं श्रीयोग - पीठेश्वरीम्,
माङ्गल्यायुत - पङ्कजाभ - नयनां माङ्गल्य - सिद्धि-प्रदाम् ।
तारुण्यां तपसार्चितां तरुणिकां तत्रोद्भवां तत्त्विनीम्,
श्रीचक्र-प्रिय - विन्दु - तर्पण - परां श्रीराज - राजेश्वरीम् ।। १२
सर्वेशाङ्क - विहारिणीं स - करुणां सर्वेश्वरीं सर्वगाम्,
सत्यां सर्व - मयीं सहस्र - दलजां सप्तार्णवोप - स्थिताम् ।
संगासंग - विवर्जितां शुभ - करीं बालार्क - कोटि - प्रभाम्,
श्रीचक्र - प्रिय-विन्दु - तर्पण - परां श्रीराज - राजेश्वरीम् ।। १३

(शेष पृष्ठ ११२ के नीचे)

श्रीत्रिपुर-सुन्दर्युपस्थान-सहस्राक्षरी

ऐं नमो भगवति, त्रिपुर-सुन्दरि, दुर्गति-तारिणि ! क्षमरीं प्रीं कर कर, विसर विसर, नृत्य नृत्य, वद वद, वाग्वादिनि ! स्वाहा । ह्रीं नमः, क्लीं नमः, श्रींप्लींक्लीं नमः । सुरासुर - वन्दिते, सकल-जन-क्षोभिणि, श्रींश्रीं श्री-कारिणि, द्रांद्रां द्राविणि, मोंमों मोहिनि स्तंस्तं स्तम्भिनि, आंआं आकर्षिणि, परम-सुभगे ! नमः ।

कमल-वासिनि ! रस रस वर-वर्तिनि, हांहां हां-कारि, हींहीं हीं-कारि, हांहां हां-कारिके, कांकां काकिनि, रांरां राकिणि, डांडां डाकिनि, हांहां हाकिनि, ऐं शाङ्करि ! गन गन, किश किश, भ्रम भ्रम, वद वद, सत्य सत्य, उत उत ।

मालिनि, महा-माये, तत्त्व-विग्रहे, अरूपे, अमले, विमलेऽजितेऽपराजिते ! मर्द मर्द, हर हर, संहर संहर । ॐह्रींऐं कुरु कुरु, लेप लेप, किटि किटि, ॐजूंसः सौःक्लीं ऐंश्रीं नद नद, नाद-बीजे ! त्रांत्रींत्रूंत्रैंत्रौंत्रः, म्रांम्रींम्रूंम्रैंम्रौंम्रः, य्रांय्रींय्रूंय्रैंय्रौंय्रः,

---

(पृष्ठ १११ का शेषांश)

कादि - क्षान्त - सुवर्ण - विन्दु - सुतनुं स्वर्णादि-र्सिहासिनोम्,
नाना-वर्ण - विचित्र-चित्र - चरितां चातुर्य - चिन्तामणिम् ।
चित्तानन्द - विधायिनीं सु - विपुलां रूढ - त्रयां शेषिकां,
श्रीचक्र - प्रिय - बिन्दु - तर्पण-परां श्रीराज - राजेश्वरीम् ।। १४

लक्ष्मीशादि - विधीन्द्र - चन्द्र - मुकुटामष्टाङ्ग - पीठार्चिताम्,
सूर्येन्द्राग्नि - मयैक - पीठ - निलयां त्रिस्थां त्रिकोणेश्वरीम् ।
गोप्त्रीं गुर्विणि - गर्वितां गगनगां गङ्गा - गणेश - प्रियाम्,
श्रीचक्र-प्रिय - बिन्दु - तर्पण - परां श्रीराज - राजेश्वरीम् ।। १५

ह्रीं - कूट - त्रय - रूपिणीं समयिनीं संसारिणीं हंसिनोम् ।
वामाचार - परायणां सु - कुलजां बीजावतीं मुद्रिणोम् ।
कामाक्षीं करुणार्द्र - चित्त - चरितां श्रीमन्त्र - मूर्त्यात्मिकाम्
श्रीचक्र - प्रिय - बिन्दु-तर्पण - परां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।। १६

।। श्रीशङ्कराचार्य-विरचितं श्रीराज - राजेश्वरी-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

रांरीं-रूंरैंरौं रंः, लांलींलूंलैंलौंलः, वांवींवूंवैंवौंवः, श्रांश्रींश्रूंश्रैंश्रौंश्रः, षांषींषूंषैंषौंषः, सांसींसूंसैंसौंसः, हांहींहूंहैंहौंहः, क्षांक्षींक्षूंक्षैंक्षौंक्षः ।

गौरि, रुद्र-दयिते, वज्रिणि, वज्र-नायिके, कपाल-माला-धरे, प्रेतासन-निवासिनि, सर्व-तत्त्वावतारे, अवतर अवतर, गर्ज गर्ज, शोषय शोषय, सर्व-मन्त्रान् ग्रस ग्रस, सर्व-दुष्टान् मर्द मर्द, सर्व-यन्त्रान् भञ्ज भञ्ज, सर्व-दुःखं तप तप, तापय तापय । तारे, तारिणि ! पर-विद्यां छिन्धि छिन्धि, पर-कायं प्रविश प्रविश, वज्रिणि !

गोंगों गोचरि, खेंखें खेचरि, भूंभूं भूचरि, हंस-वाहे ! हस हस, तिष्ठ तिष्ठ, बन्धय बन्धय, धारय धारय, ऊर्णा-मणिं मोचय मोचय, विमोचय विमोचय, विमोचनि ! पश्य पश्य । हुं रावे, मेरु-मन्दर-सङ्काशे, महा-विद्येश्वरि, वाचं निर्यच्छ । आच्छादिनि, सरस्वति, महा-श्वेते, किणि-विद्ये, अर्क-कोटि-सहस्र-मालिनि ! पुर पुर, द्रुम द्रुम । अनन्त-क्षोभ-कारिणि ! रणे वज्रादि-कर्तरि, विद्या-विनोदिनि ! त्वर त्वर त्वरिते ! वह वह, क्रन्दय क्रन्दय, संक्रामय संक्रामय, मदिरानन्द-घूर्णिते !

कामेश्वरि ! गांगींगूंगैंगौंगः । कन्दर्प-मद-विह्वले ! स्फुरद्-योनि-चक्रे भगवति, भग-मालिनि, ईश्वर-चक्र-कपाल - डमरुक-धारिणि, महा-भैरवि, वसु-धारे, वसु-मति, धरिणि, धरे ! वशय वशय ।

कर्म-धारिणि, कामेशि ! जिह्वया वद वद, मनसा रम रम, क्रन्द क्रन्द, वस वस । बिन्दु-प्रिये ! हूं हूं हूं हूं रद रद । शारद-शशाङ्क-निकाशे, शारदे, विद्या-दान-विशारदे ! क्लीं गण-नायिके, आनन्द-मय-विग्रहे, गृहीत-पूर्ण - कपाले, ज्वलज्जिह्वे, ह्लादिनि, नित्य-क्लिन्ने, मद-द्रवे ! स्वाहा ।

सौंसौंक्षूं सरस्वत्यै नमः । मदिरे, मधु - मति, मदाभोग - सुभगे, भग-माले ! मुरु मुरु, चुरु-चुरु, धुन धुन, स्फुर स्फुर, स्फोटय स्फोटय, घण्टा-रवेण निरन्तर-पर-बल-भेदिनि ! फ्रें कुब्जिकायै ह्रांह्रीं नजणङमे अघोर-मुखि ! किणि किणि, विच्चे, ऐंह्रीं श्रीं फ्रेंह्रींहुंफट् । सर्वज्ञे ! जम्भ जम्भ, जन्म-जरा-मरण-दारिद्र्य-घातिनि, सर्व-सिद्धि-निधाने, महा-भय-धारिणि ! ॐ हंसः हुंफट् । विद्येश्वरि ! ज्रांज्रींज्रूंज्रैंज्रौंज्रः, लींप्रींसौः, स्त्रौंक्षौं । क्षुद्र-विद्राविणि, विद्रुत-विद्रुम-प्रभे ! क्षम्रीं ह्रौंः । चण्डि, चण्डेश्वरि, ब्रह्माण्ड - माला - धारिणि, वन्धूक - शोणाधरे, त्रैलोक्य-सत्ये ! नमः, प्रसीद प्रसीद, ऐंश्रींफ्रेंसौः ऐंह्रींश्रीं श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरि स्वाहा ।

।। इति श्रीत्रिपुर-सुन्दर्युपस्थान-सहस्राक्षरी सम्पूर्णा ।।

श्रीषोडशी अष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम

चतुर्वक्त्र, जगन्नाथ ! स्तोत्रं वद मम प्रभो, यस्यानुष्ठान-मात्रेण नरो भक्तिमवाप्नुयात् ।
सहस्र-नाम्नामाकृष्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम्, गुह्याद्-गुह्यतरं गुह्यं सुन्दर्याः परि-कीर्तितं ।

ॐ अस्य श्रीषोडश्यष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रस्य शम्भुः ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः ।
श्रीषोडशी देवता । धर्मार्थ-काम-मोक्ष-सिद्धये पाठे विनियोगः । (ऋष्यादि-न्यासं कृत्वा–)

ॐ त्रिपुरा षोडशी माता त्र्यक्षरा त्रितया त्रयी, सुन्दरी सुमुखी सेव्या साम-वेद-परायणा ।
शारदा शब्द-निलया सागरा सरिदम्बरा, शुद्धा शुद्ध-तनुः साध्वी शिव-ध्यान-परायणा ।
स्वामिनी शंभु-वनिता शांभवी च सरस्वती, समुद्र-मथिनी शीघ्र-गामिनो शीघ्र-सिद्धिदा ।
साधु-सेव्या साधु-गम्या साधु-संतुष्ट-मानसा, खट्वांग-धारिणी खर्वा खड्ग-खर्पर-धारिणी ।
षड्-वर्ग-भाव-रहिता षड्-वर्ग-परिचारिका, षड्-वर्गा च षडंगा च षोढा षोडश-वार्षिकी ।
ऋतु-रूपा क्रतु-मती ऋभुक्ष-क्रतु-मण्डिता, कवर्गादि-पवर्गान्ता अन्तःस्था अन्त-रूपिणी ।
अकाराकार-रहिता काल-मृत्यु-जरा-पहा, तन्वी तत्त्वेश्वरो तारा त्रि-वर्षा ज्ञान-रूपिणी ।
काली करालो कामेशी च छाया-संज्ञाप्यरुंधती,निर्विकल्पा महावेगा महोत्साहा महोदरी ।
मेधा बलाका विमला विमल-ज्ञान-दायिनी, गौरी वसुन्धरा गोप्त्री गवांपति-निषेविता ।
भगाङ्गा भग-रूपा च भक्ति-भाव-परायणा, छिन्न-मस्ता महा-धूमा तथा धूम्र-विभूषणा ।
धर्म-कर्मादि-रहिता धर्म-कर्म-परायणा, सीता मातङ्गिनी मेधा मधु-दैत्य-विनाशिनी ।
भैरवी भुवना माताऽभयदा भव - सुन्दरी, भावुका बगला कृत्या बाला त्रिपुर-सुन्दरी ।
रोहिणी रेवती रम्या रम्भा रावण-वन्दिता, शत-यज्ञ-मयी सत्वा शत-क्रतु-वर-प्रदा ।
शत-चन्द्रानना देवी सहस्रादित्य-सन्निभा, सोम-सूर्याग्नि-नयना व्याघ्र-चर्माम्बरावृता ।
अर्द्धेन्दु-धारिणी मत्ता मदिरा मदिरेक्षणा, इति ते कथितं गोप्यं नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।
सुन्दर्याः सर्वदा सेव्यं महा - पातक - नाशनं, गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं कलौ युगे ।
सहस्र-नाम-पाठस्य फलं यद् वै प्रकीर्तितम्, तस्मात्कोटि-गुणं पुण्यं स्तवस्यास्य प्रकीर्तनात् ।

पठेत् सदा भक्ति - युतो नरो तु यो निशीथ - कालेऽप्यरुणोदये वा,
प्रदोष-काले नवमी-दिनेऽथवा लभेत् भोगान् परमाद्भुतान् प्रियान् ।

॥ ब्रह्म - यामले षोडश्यष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्रीमकरन्द स्तव-राजः

'ॐ श्रीं'-वीजे नाद-विन्दु-द्वितीय-शशि-कलाकार-रूप-स्वरूपे,
मातर्मे देहि ऋद्धिं जहि जहि दुरितं पाहि मां दीन-नाथे !
अज्ञान-ध्वान्त-राशिं क्षपय सु - रुचिरे प्रोल्लसत्पाद - पद्मे,
ब्रह्मेशाद्यैः सुरेन्द्रैः सुर - गण-नमिते संस्तुते त्वां नमामि ।। १

'ह्रीं' लज्जा-बीज-स्वरूपे त्रि-जगति वरदे क्रीडया या स्थितेयम्,
तां नित्यां शम्भु-शक्तिं त्रि-भुवन-जननीं पालयित्रीं जगच्च ।
सर्वाशानां निदानं सकल - गुण-मयीं सच्चिदानन्द - रूपां,
तेजो-रूपां प्रदीप्तां त्रि-भुवन - नमितां ज्ञान-दात्रीं नमामि ।। २

'क्लीं'-वीजे, काम-रूपे, धृत-कुसुम - धनुर्वाण - पाशांकुशा तां,
वन्दे भास्वत्-सरोजोदर - निभ-वपुषां मोहयन्तीं त्रिलोकीम् ।
काञ्ची मञ्जीर-हाराङ्गद-मुकुट-लसत् - स्वर्ण - माणिक्य-रत्नैः,
भास्वत्-सिन्दूर-वक्त्रां स्तन-भर-नमितां क्षीण-मध्यां त्रिनेत्रां ।। ३

'ऐं'-वाणी-वीज-रूपे त्रिभुवन - जड़ता-ध्वान्त-विध्वंसिनी त्वं,
शैव - ब्रह्म - स्वरूपा श्रुतिभिरनु - पदं गीयमाना त्वमेव ।
मातर्मे देहि बुद्धिं मम सदसि पर-द्वन्द्व - संक्षोभ - कर्त्रीं,
ऐन्द्रीं वाचस्पतेरप्यति - विविध - पदं त्वत्-पदाम्भोजमीडे ।। ४

'सौः' शक्तिः कार्यमन्ते घट-पट - प्रभृतौ दृष्ट - हेतोः सहाया,
माया काचिन्महत्त्व - प्रभृति - परिणता मूल-भूता त्वमेव ।
केचिद् बाह्य-प्रपञ्चा-मणि - निवह - तनौ तन्त्र-भूता त्वमेव,
विद्या-जन्मादि - वृन्दं क्षपयति जगतां मे निरे शुद्ध-भावाः ।। ५

'ॐ' मातस्ते नमस्ते श्रुति - प्रथित-गुरु-व्यक्षर - ब्रह्म - रूपे,
मिथ्या - मोहान्धकारे पततिमनु-दिनं पाहि मां भक्ति-हीनं ।
मोहः क्रोधः प्रलोभः प्रथम-मद - चयैः शत्रुभिः पीड्यतेऽसौ,
पत्नी-पुत्रादि-भृत्यैर्नत - विविध - जनैः शृङ्खलाभिर्निबद्धैः ।। ६

'ह्रीं'कारे ह्रीं-स्वरूपे मम दह दुरित व्याधि - दारिद्र्य-वीजं,
मातस्त्वत् - पाद - पद्म - द्वितय-परिसरे प्रार्थये भक्ति-लेशम् ।
त्वं वाणी त्वं च लक्ष्मीस्त्वमसि गिरि-सुता ब्रह्म-विष्णु-स्मरारे,
चित्तं नित्यं शरण्यं कृतमिह जननि ! त्वत्-कटाक्षैक - वृन्दैः ।। ७
'श्रीं'कारे श्री - स्वरूपे वितर मयि धनं धान्य-हृश्त्यश्व-युक्तं,
स्वर्णं माणिक्य-रत्नाद्यभिलषित-युतं त्वत्-पदार्चासु योग्यम् ।
विद्यां त्वं देहि मोक्षं भव - भय - दहने देवि ! दं दह्यमाने,
योगेन्द्रैः सेव्य - माना हत - कलुष - चयैर्मोक्षमन्वेषयद्भिः ।। ८
कामो योनिश्चतुर्थः स्वर - त्रिदश - पतिर्भौवनेशो च वीजं,
तावद् वर्णावली त्वं नत - जन - वरदे, भक्तिमीहे शरण्ये ।
त्वत्-पादाम्भोज - युग्मं हृदय - सरसिजे सन्निधायेक - चित्ते,
ध्यात्वा तत्-कर्म-बन्धं त्वति-विमल-धियो मुक्ति-वन्तो मुनीन्द्राः ।। ९
ब्रह्मेन्दुः काम - देवो वियदमर-गुरुर्भौवनेशो च वीजं,
तावद् वर्ण-स्वरूपैर्घटित-तनु - लतां त्वां प्रपन्नोऽस्मि मातः !
विष्णु-ब्रह्मेश-मूर्ति-स्थित-मुकुट - मणि-प्रोल्लसत्-पाद-पद्माम्,
योगीन्द्रैर्ध्येय - पादाम्बुरुह-खर-नख-द्योत-विद्योतितां त्वाम् ।। १०
इन्दुः कामः सुरेशा वियदनलसद् - वाम - नेत्रार्द्ध-चन्द्रैः,
युक्तं यद् - वीजमेतत् तदपि तव वपुः सच्चिदानन्द-रूपं ।
बाला त्वं भैरवी त्वं त्रिभुवन - जननी तारिणी नील-वर्णा,
त्वं गौरी त्वं च काली सकल-मनु-मयी त्वं महा-मोक्ष-दात्री ।। ११
'सौः'-कारो बीज - राजस्त्रिभुवन-जननी शक्तिराद्या त्वमेव,
त्वद्-युक्तः शम्भुरेषः प्रभवति चलितुं त्वां विना जाड्य-वान् सः ।
ब्रह्मा विष्णुः कपर्दी जननि ! तव कृपा - लेश - मात्राच्छरीरं,
गृह्णन्तः सृष्टि-रक्षा-प्रलयमभिलसच्चक्रिरे त्वद् - वशस्थाः ।। १२
'एं' वीजं वाग्भवाख्यं त्वमिह जड़मति-ध्वान्त-चक्षुः प्रकाशान्,
मातः ! कारुण्य-धारामृत-बलि-दृशा पश्य मां दीन - नाथे !
मोह्यन्ते मोहितास्ते तव जननि ! महा - मायया बद्ध-चित्ताः,
कारुण्यं प्रार्थयन्ते तव पद - युगले ज्ञान - वन्तो मुनीन्द्राः ।। १३

(शेष पृष्ठ ११७ के नीचे)

श्री आवरण सहस्राक्षरी

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसः ॐ नमो भगवति, अक्षोभ्ये, रूक्ष-कर्णे, राक्षसि, पक्ष-त्रणे, क्षपे, पिङ्गलाक्षि, अरुणे, क्षये लीले, लोले, ललिते, लूते, लुलिते, लम्बिके, लङ्केश्वरि, लासे, विमले, हुताशनि, विशालाक्षि, हूँकारे, वडवामुखि, महा-रवे, महा-क्रोड-क्रोधिनि, खरास्ये, सर्वज्ञे, तरले, तारे, दृष्टि-हृष्टे, खग-कन्धरे, सारसि, रस-संग्रहिणि, ताल-जङ्घे, करङ्किणि, मेघ-नादे, प्रचण्डोग्रे, काल-कर्णि, चेल-प्रदे, चम्पे, चम्पावति, प्रचम्पे, मलयान्तकि, पितृ-वक्त्रे, पिशाचाक्षि, पिशुनि,लोलुपे, वानति, वानरि, वायु-विकृतास्ये, वायु-वेगे, बृहत्-कुक्षि-विकृते, विश्व-रूपिणि ।

यम-जिह्वे, जये, दुर्जये, पुमन्तकि, बिडाल-रेवति, पूतने, विजये, अनन्ते, क्रन्दिनि, चण्डि, रेकणि (सर्व-संक्षोभिणि, सर्व-विद्राविणि, सर्वाकर्षिणि, सर्व-वशङ्करि), सर्वोन्मादिनि, सर्व-महांकुशे, खेचरि (ख-चक्र-धारिणि), सर्व-बीज-रूपे, महा-योनि-रूपे, त्रिखण्डे !

अनङ्ग-ब्राह्मि, अनङ्ग-माहेश्वरि, अनङ्ग-कौमारि, अनङ्ग-वैष्णवि, अनङ्ग-वाराहि, अनङ्ग-इन्द्राणि, अनङ्ग-चामुण्डे, अनङ्ग-महा-लक्ष्मि, प्रकट-योगिनीशि, चार्वाक-दर्शनाङ्गि, त्रैलोक्य-मोहन-चक्र-स्वामिनि !

(पृष्ठ ११६ का शेषांश)

'क्लीं'-कारो वीज-रूपा तव जननि ! मनु-श्लेष-मध्य-प्रवेशात्,
साक्षाद्-ब्रह्म-स्वरूपी मदन - तनु - लता ब्रह्मणो मोह-कर्त्री ।
साज्ञानं स्मेर - वक्त्राम्बुज-कुहर - लसत् - सुप्त-पीयूष-धारा,
वेदाश्चत्वार एते तुहिन - गिरि-सुते ! प्राप्तमीनेन्द्र-रूपे ।। १४

'ह्रीं'कारोङ्कार-रूपा त्वमिह शशि-मुखी ह्रीं - स्वरूपा त्वमेव,
त्वं सिद्धिः त्वं च ऋद्धिः स्मर-रिपु-मनसस्त्वं च संमोहयन्ती ।
त्वं क्षान्तिस्त्वं च कान्तिर्हरि-हर - कमलोद्भूत-रूपा त्वमेव,
विद्या त्वं मुक्ति - हेतुर्भव-जलधि - जनुर्दुःख - हन्त्री त्वमेव ।। १५

'श्रीं'-वीजे, श्री-स्वरूपे, मधु-रिपु-मनसो मध्य-मध्या सिता त्वं,
मातस्त्वद्-दृष्टि-लेशादमर अपि मनसा प्राप्तवान् बुद्धि-सारं ।
इत्येवं षोडशार्णं सरस मनु - दिनं स्वर्ग - मोक्षैक - हेतुं,
सिद्धीरष्टौ लभन्ते यः इह मनु - वरं श्रेष्ठमेनं भजन्ते ।। १६

।। श्रीरुद्र - यामले मकरन्द-स्तव-राज-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

कामाकर्षिणि (बुद्ध्याकर्षिणि, अहङ्काराकर्षिणि, शब्दाकर्षिणि, स्पर्शाकर्षिणि, रूपाकर्षिणि, रसाकर्षिणि, गन्धाकर्षिणि, चित्ताकर्षिणि, धैर्याकर्षिणि, स्मृत्याकर्षिणि, नामाकर्षिणि, बीजाकर्षिणि, आत्माकर्षिणि), अमृताकर्षिणि, शरीराकर्षिणि, गुप्त - योगिनीशि, बौद्ध-दर्शनाङ्गि, सर्वाशा-पूरक-चक्र-स्वामिनि !

अनङ्ग-कुसुमे, अनङ्ग-मेखले, अनङ्ग-मदने, अनङ्ग-मदनातुरे, अनङ्ग-रेखे, अनङ्ग-वेगिनि अनङ्गांकुशे, अनङ्ग-मालिनि, अति-गुप्त-योगिनीशि, रौद्र-दर्शनाङ्गि, सर्व-संक्षोभिणि-चक्र-स्वामिनि, पूर्वाम्नायेशि, सृष्टि-प्रदे !

सर्व-संक्षोभिणि, सर्व-विद्राविणि, सर्वाकर्षिणि, सर्वाह्लादिनि, सर्व-सम्मोहिनि, सर्व-स्तम्भनि, सर्व-जृम्भिनि, सर्व-वशङ्करि, सर्व-रञ्जनि, सर्वोन्मादिनि, सर्वार्थ-साधनि, सर्व-सम्पत्-प्रपूरणि, सर्व-मन्त्र-मयि, सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्करि, सप्रदाय-योगिनीशि, सर्व-दर्शनाङ्गि, सर्व-सौभाग्य-दायक-चक्र-स्वामिनि !

सर्व-सिद्धि-प्रदे, सर्व-सम्पत्-प्रदे, सर्व-प्रियङ्करि, सर्व-मङ्गल-कारिणि, सर्व-काम-प्रदे, सर्व-दुःख-विमोचनि, सर्व-मृत्यु-प्रशमनि, सर्व-विघ्न-निवारणि, सर्वाङ्ग - सुन्दरि, सर्व-सौभाग्य-दायिनि, कुल-कौल-योगिनीशि, सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिनि ।

सर्वज्ञे, सर्व-शक्ते, सर्वैश्वर्य-प्रदायिनि, सर्व-ज्ञान-मयि, सर्व-व्याधि-विनाशिनि, सर्वाधार-स्वरूपे, सर्व-पाप-हरे, सर्वानन्द-मयि, सर्व-रक्षा-स्वरूपे, सर्वेप्सित-फल-प्रदे, निगर्भ-योगिनीशि, सर्व-रक्षाकर-चक्र-स्वामिनि, दक्षिणाम्नायेशि, स्थिति-प्रदे !

ब्लूँ वशिनि, कलह्रीं कामेशि, व्ल्यूँ मोदिनि, य्लूं विमले, ज्म्रीं अरुणे, हसलवरयूं जयिनि, भ्रमरयूं सर्वेश्वरि, क्षम्रीं कौलिनि, रहस्य-योगिनीशि, शाक्त-दर्शनाङ्गि, सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिनि, द्रां क्लिन्ने मोहन-काम-बाण, द्रीं शोषण-काम-बाण, क्लीं नित्य-सन्दीपन-काम-बाण, ब्लूं मन्द-सन्तापन-काम-बाण, सः द्रवे उन्मादन-काम-बाण, द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः ।

जम्भिनि ! जम्भय जम्भय, मोहिनि ! मोहय मोहय, आं आकर्षिणि ! आकर्षय आकर्षय, स्तम्भिनि ! स्तम्भय स्तम्भय, ऐं कामेशि ! क्लीं वज्रेशि ! सौः भग-माले !

अति-रहस्य-योगिनीशि, सर्व-सिद्धि-मय-चक्र-स्वामिनि, काम-राज-विद्या-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मातः, परापर-रहस्य-योगिनीशि, सौगत-दर्शनाङ्गि, सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिनि, पश्चिमाम्नायेशि !

श्रं आं सौः त्रिपुरे, ऐं क्लीं सौः त्रिपुरेश्वरि, ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुर-सुन्दरि, हैं ह्क्लीं हसौः त्रिपुर-वासिनि, हसैं हसक्लीं हसौः त्रिपुरा-श्रि, ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुर-मालिनि, ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुरा-सिद्धे, हस्त्रैं हसकलरीं हस्त्रौं त्रिपुराम्बे, हसकलरडें हसकलरडीं हसकलरडौः महा-त्रिपुर-भैरवि, श्रं कामेशि, आं भग-माले, इं नित्य-क्लिन्ने, ईं भीरुण्डे, उं वह्नि-वासिनि, ऊं महावज्रेश्वरि, ऋं शिव-दूति, ॠं त्वरिते, लृं कुल-सुन्दरि, ॡं नित्ये, एं नील-पताके, ऐं विजये, ओं सर्व-मङ्गले, औं ज्वाला-मालिनि, अं विचित्रे, अः कामेश्वरि !

विद्या-मालिनि, अकुले, कुलाकुल-महा-कुले, सर्वोत्तर-पञ्चार्थ-ज्ञान-प्रदे, सर्व-दर्शनाङ्ग-मयि, सर्व-दर्शनोत्तीर्ण-स्वरूपिणि, सर्वाध्व - शोधनि, काल-कालेश - वर्णे, नवाक्षरि, बाल-विद्या षोडशाधिका च नव-कूट-द्वयं सहखफ्रें आनन्देश्वरि, घोर-कालिनि ! अम्बा-श्रीपादुकां पूजयामि हंसः श्रीं ह्रीं ऐं ।। इत्यावृत्ति-सहस्राणां-विद्या त्रैलोक्य-पूजिता ।।

श्रीषोडशी सहस्र-नाम स्तोत्रम्

कैलास-शिखरे रम्ये नाना-रत्नोप-शोभिते, कल्प-पादप-मध्यस्थे नाना-पुष्पोप-शोभिते ।
मणि-मण्डप-मध्यस्थे मुनि-गन्धर्व-सेविते, कदाचित् सुखमासीनं भगवन्तं जगद्-गुरुम् ।
कपाल-खट्वाङ्ग-धरं चन्द्रार्ध-कृत - शेखरं, हस्त-त्रिशूल-डमरुं महा-वृषभ-वहनम् ।
जटा-जूट-धरं देवं कण्ठ-भूषण - वासुकिं, विभूति-भूषणं देवं नील-कण्ठं त्रि-लोचनम् ।
द्वीपि-चर्म-परीधानं शुद्ध-स्फटिक-सन्निभं, सहस्रादित्य-सङ्काशं गिरिजार्द्धाङ्ग-भूषणम् ।
प्रणम्य शिरसा नाथं कारणं विश्व-रूपिणम्, कृतांजलि-पुटो भूत्वा प्राहैनं शिख-वाहनः ।

कार्तिकेय उवाच–

देव-देव, जगन्नाथ, सृष्टि-स्थिति-लयात्मक, त्वमेव परमात्मा च त्वं गतिः सर्व-देहिनाम् ।
त्वं गतिः सर्व-लोकानां दीनानां च त्वमेव हि, त्वमेव जगदाधारस्त्वमेव विश्व-कारणम् ।
त्वमेव पूज्यः सर्वेषां त्वदन्यो नास्ति मे गतिः, किं गुह्यं परमं लोके किमेकं सर्व-सिद्धिदं ।
किमेकं परमं श्रेष्ठं को योगः स्वर्ग-मोक्षदः, विना तीर्थेन तपसा विना दानैर्विना मखैः ।
विना लयेन ध्यानेन नरः सिद्धिमवाप्नुयात्, कस्मादुत्पद्यते सृष्टिः कस्मिंश्च प्रलयो भवेत् ।
कस्मादुत्तीर्यते देव ! संसारार्णव - सङ्कटात्, तदहं श्रोतुमिच्छामि कथयस्व महेश्वर !

ईश्वर उवाच–

साधु साधु त्वया पृष्टं पार्वती-प्रिय-नन्दन, अस्ति गुह्य-तमं पुत्र ! कथयिष्याम्यसंशयम् ।
सत्वं रजस्तमश्चैव ये चान्ये महदादयः, ये चान्ये बहवो भूताः सर्वे प्रकृति-सम्भवाः ।
सैव देवी परा शक्तिर्महा-त्रिपुर-सुन्दरी, सैव प्रसूयते विश्वं विश्वं सैव प्रपास्यति ।
सैव संहरते विश्वं जगदेतच्चराचरं, आधारः सर्व - भूतानां सैव रोगार्ति - हारिणी ।
इच्छाज्ञानक्रियाशक्तिर्ब्रह्मविष्णुशिवात्मिका त्रिधा शक्ति-स्वरूपेण सृष्टिस्थितिविनाशिनी ।
सृज्यते ब्रह्म - रूपेण विष्णु - रूपेण पाल्यते, ह्रियते रुद्र - रूपेण जगदेतच्चराचरम् ।
यस्या योनौ जगत्-सर्वमद्यापि परिवर्तते, यस्यां प्रलीयते चान्ते यस्यां च जायते पुनः ।
यां समाराध्य त्रैलोक्ये सम्प्राप्यं पदमुत्तमम्, तस्या नाम-सहस्रं तु कथयामि शृणुष्व तत् ।।

ॐ अस्य श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-सहस्र-नाम-स्तोत्र-मन्त्रस्य श्रीभगवान् दक्षिणा-मूर्तिर्ऋषिः । जगतीच्छदः । समस्त-प्रकट-गुप्त-सम्प्रदाय-कुल-कौलोत्तीर्ण-निर्गर्भ-रहस्या-चिन्त्य-प्रभावती देवता । ॐ वीजं । ह्रीं शक्तिः । क्लीं कीलकं । धर्मार्थ-काम-मोक्षार्थे जपे विनियोगः ।

(ऋष्यादि-न्यासं कृत्वा ध्यायेद् । यथा—)

ॐ आधारे तरुणार्क-बिम्ब-रुचिरं हेम-प्रभं वाग्भवं ।
बीजं मन्मथमिन्द्र-गोप-सदृशं हृत्-पङ्कजे संस्थितम् ।।
विष्णु-ब्रह्म-पदस्थ-शक्ति-कलितं सोम - प्रभा-भासुरं ।
ये ध्यायन्ति पद-त्रयं तव शिवे ! ते यांति सौख्यं पदम् ।।

मानसोपचारैः देवीं सम्पूज्य नाम-साहस्रं पठेत्--

कल्याणी कमला काली कराली काम-रूपिणी ।
कामाख्या कामदा काम्या कामना काम-चारिणी ।
काल-रात्रिर्महा-रात्रिः कपाली काल-रूपिणी, कौमारी करुणा मुक्ति-कल्मष नाशिनी ।
कात्यायनी कराधारा कौमुदी कमल-प्रिया, कीर्तिदा बुद्धिदा मेधा नीतिज्ञा नीति-वत्सला ।
माहेश्वरी महा-माया महा-तेजा महेश्वरी, महा-जिह्वा महा-घोरा महा-दंष्ट्रा महा-भुजा ।
महा-मोहान्ध-कारघ्नी महा-मोक्ष-प्रदायिनी, महा-दारिद्र्य-नाशा च महाशत्रु-विमर्दिनी ।
महा-माया महा-वीर्या महा-पातक-नाशिनी, महा-मखा मन्त्र-मयी मणि-पूरक-वासिनी ।
मानसी मानदा मान्या मनश्चक्षू रणे चरा, गण-माता च गायत्री गण-गन्धर्व-सेविता ।
गिरिजा गिरिशा साध्वी गिरिस्था गिरि-वल्लभा ।
चण्डेश्वरी चण्ड-रूपा प्रचण्डा चण्ड - मालिनी ।।
चर्विका चर्चिकाकारा चण्डिका चारु-रूपिणी, यज्ञेश्वरी यज्ञ-रूपा जप-यज्ञ-परायणा ।
यज्ञ-माता यज्ञ-भोक्त्री यज्ञेशी यज्ञ-सम्भवा, सिद्ध-यज्ञ-क्रिया-सिद्धिर्यज्ञाङ्गी यक्ष-रक्षिका ।
यज्ञ-क्रिया यज्ञ-रूपा यज्ञाङ्गी यज्ञ-रक्षिका, यज्ञ-क्रिया च यज्ञा च यज्ञा यज्ञ-क्रियालया ।
जालन्धरी जगन्माता जात-वेदा जगत्-प्रिया, जितेन्द्रिया जित-क्रोधा जननी जन्मदायिनी ।
गङ्गा गोदावरी चैव गोमती च शतद्रुका, घर्घरा वेद-गर्भा च रेचिका सम-वासिनी ।
सिन्धुर्मन्दाकिनी क्षिप्रा यमुना च सरस्वती, भद्रा रागविपाशा च गण्डकी विन्ध्यवासिनी ।
नर्मदा सिन्धु कावेरी वेत्र-वत्या सुकौशिकी, महेन्द्र-तनया चैव अहल्या चर्मकावती ।
अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवन्तिका ।
पुरी द्वारावती तीर्था - महा - किल्विष - नाशिनी ।।
पद्मिनी पद्म-मध्यस्था पद्म-किंजल्क-वासिनी, पद्म-वक्त्रा चकोराक्षी पद्मस्था पद्म-सम्भवा ।
ह्रींकारी कुण्डलाधारा हृत् - पद्मस्था सुलोचना ।
श्रींकारी भूषणा लक्ष्मीः क्लींकारी क्लेश-नाशिनी ।।
हरि - वक्त्रोद्भवा शान्ता हरि-वक्त्र-कृतालया ।
हरि-वक्त्रोद्भवा शान्ता हरि-वक्षःस्थल-स्थिता ।।

वैष्णवी विष्णुरूपा च विष्णुमातृस्वरूपिणी,विष्णुमाया विशालाक्षी विशालनयनोज्ज्वला ।
विश्वेश्वरी च विश्वात्मा विश्वेशीविश्वरूपिणी,विश्वेश्वरी शिवाराध्या शिवनाथा शिवप्रिया।
शिव-माता शिवाख्या, च शिवदा शिव-रूपिणी,भवेश्वरी भवाराध्या भवेशी भवनायिका ।
भव-माता भवागम्या भव-कण्टक-नाशिनी, भव-प्रिया भव-नन्दा भवानी भव-मोहिनी ।
गायत्री चैव सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्म-रूपिणी,ब्रह्मेशी ब्रह्मदा ब्रह्मा ब्रह्माणी ब्रह्म-वादिनी ।
दुर्गस्था दुर्ग-रूपा च दुर्गा दुर्गार्ति-नाशिनी, सुगमा दुर्गमा दान्ता दया-दोग्ध्री दुरापहा ।
दुरितघ्नी दुराध्यक्षा दुरा दुष्कृत-नाशिनी,पञ्चास्या पञ्चमी पूर्णा पूर्ण-पीठ-निवासिनी ।
सत्वस्था सत्व-रूपा च सत्वस्था सत्व-सम्भवा,रजस्था च रजो-रूपा रजो-गुण-समुद्भवा ।
तमस्था च तमो-रूपा तामसी तामसप्रिया, तमो-गुण-समुद्भूता सात्विकी राजसी कला ।
काष्ठा मुहूर्ता निमिषा अनिमेषा ततः परं, अर्द्ध-मासा च मासा च सम्वसर-स्वरूपिणी ।
योगस्था योगरूपा च कल्पस्था कल्प-रूपिणी,नानारत्नविचित्राङ्गी नानाऽऽभरणमण्डिता ।
विश्वात्मिका विश्वमाता विश्वपाशविनाशिनी,विश्वासकारिणी विश्वा विश्वशक्तिर्विचक्षणा।
जपा - कुसुम - सङ्काशा दाडिमी-कुसुमोपमा, चतुरङ्गी चतुर्बाहुश्चतुराचार-वासिनी ।
सर्वेशी सर्वदा सर्वा सर्व - दायिनी, माहेश्वरी च सर्वाद्या शर्वाणी सर्व-मङ्गला ।
नलिनी नन्दिनी नन्दा आनन्दानन्द-वर्द्धिनी, व्यापिनी सर्व-भूतेषु भव-भार-विनाशिनी ।
सर्व-शृङ्गार-वेषाढ्या पाशांकुश-करोद्यता, सूर्य-कोटि-सहस्राभा चन्द्र-कोटि-निभानना ।
गणेशकोटिलावण्या विष्णुकोटयरिमर्दिनी, दावाग्नि-कोटि-दलिनी रुद्र-कोट्युग्र-रूपिणी ।
समुद्र-कोटि-गम्भीरा वायु-कोटि-महा-बला, आकाश-कोटिविस्तारा यमकोटि-भयङ्करी ।
मेरु-कोटि-समुच्छ्राया गण-कोटि-समृद्धिदा, निष्कस्तोका निराधारा निर्गुणा गुण-वर्जिता ।
अशोका शोक-रहिता तापत्रय-विवर्जिता, वसिष्ठा विश्वजननी विश्वाख्या विश्ववर्द्धिनी ।
चित्रा विचित्रचित्रांगी हेतुगर्भा कुलेश्वरी,इच्छाशक्तिर्ज्ञानशक्तिः क्रियाशक्तिः शुचिस्मिता ।
शुचिः स्मृतिमयी सत्या श्रुति-रूपा श्रुति-प्रिया, महासत्वमयी सत्वा पञ्चतत्त्वोपरिस्थिता ।
पार्वती हिमवत्-पुत्री पारस्था पार-रूपिणी, जयन्ती भद्रकाली च अहल्या कुल-नायिका ।
भूत-धात्री च भूतेशी भूतस्था भूत-भाविनी, महा-कुण्डलिनी-शक्तिर्महा-विभव-वर्द्धिनी ।
हंसाक्षी हंस-रूपा च हंसस्था हंस-रूपिणी, सोम-सूर्याग्नि-मध्यस्था मणि-मण्डल-वासिनी ।
द्वादशार-सरोजस्था सूर्य-मण्डल-वासिनी, अकलङ्का शशाङ्काभा षोडशार-निवासिनी ।
डाकिनी राकिनी चैव लाकिनी काकिनी तथा,शाकिनी हाकिनी चैव षट्चक्रेषु निवासिनी ।
सृष्टिस्थितिविनाशिनी सृष्टिस्थित्यंतकारिणी,श्रीकंठप्रियहृत्कंठा नन्दाख्या विंदुमालिनी ।

चतुष्षष्टि-कलाधारा देह-दंड-समाश्रिता, माया काली धृतिर्मेधा क्षुधा तुष्टिर्महा-द्युतिः ।
हिंगुला मंगला सीता सुषुम्ना मध्य-गामिनी, पर-घोरा करालाक्षी विजया जय-दायिनी ।
हृत्-पद्म-निलया भीमा महा-भैरव-नादिनी, आकाश-लिंग-सम्भूता भुवनोद्यान-वासिनी ।
महत्-सूक्ष्मा च कङ्काली भीम-रूपा महा-बला, मेनकागर्भ-सम्भूता तप्तकाञ्चन-सन्निभा ।
अन्तरस्था कूट-बीजा त्रिकूटाचल-वासिनी, वर्णाख्या वर्ण-रहिता पञ्चाशद्वर्ण-भेदिनी ।
विद्याधरी लोक-धात्री अप्सरा अप्सरः-प्रिया,दीक्षा दाक्षायणी दक्षा दक्ष-यज्ञ-विनाशिनी ।
यशः-पूर्णा यशोदा च यशोदा-गर्भ-सम्भवा, देवकी देव-माता च राधिका कृष्ण-वल्लभा ।
अरुंधती शचींद्राणी गांधारी गंधमालिनी,ध्यानातीता ध्यानगम्या ध्यानज्ञा ध्यानधारिणी ।
लम्बोदरी च लम्बोष्ठी जाम्बवन्ती जलोदरी, महोदरी मुक्तकेशी मुक्त-कामार्थसिद्धिदा ।
तपस्विनी तपोनिष्ठा सुपर्णा धर्म-वासिनी, त्राण-चाप-धरा धीरा पाञ्चाली पञ्चम-प्रिया ।
गुह्यांगी च सु-भीमा च गुह्य-तत्त्वा निरंजना, अशरीरा शरीरस्था संसारार्णव-तारिणी ।
अमृता निष्कला भद्रा सकला कृष्णपिङ्गला, चक्र-प्रिया च चक्राह्वा पञ्चचक्रादिदारिणी ।
पद्म-राग-प्रतीकाशा निर्मलाकाश-सन्निभा, अधःस्था ऊर्ध्व-रूपा च ऊर्ध्व-पद्म-निवासिनी ।
कार्य-कारण-कर्तृत्वे शश्वद्-रूपेषु संस्थिता, रसज्ञा रस-मध्यस्था गन्धस्था गन्ध-रूपिणी ।
पर-ब्रह्म-स्वरूपा च पर-ब्रह्म-निवासिनी, शब्द-ब्रह्म-स्वरूपा च शब्दस्था शब्द-वर्जिता ।
सिद्धिबुद्धिः पराबुद्धिः सन्दीप्तिर्मध्यसंस्थिता,स्वगुह्या शांभवी शक्तिस्तत्त्वस्था तत्त्वरूपिणी।
शाश्वती भूत-माता च महा-भूताधिप-प्रिया, शुचि-प्रेता धर्म-सिद्धिर्धर्म-वृद्धिः पराजिता ।
काम-सन्दीपिनी कामा सदा कौतूहल-प्रिया, जटाजूट-धरा मुक्ता सूक्ष्मा शक्ति-विभूषणा ।
द्वीपि-चर्म-परीधाना चीर-वल्कल-धारिणी, त्रिशूल-डमरु-धरा नर-माला-विभूषणा ।
अत्युग्ररूपिणी चोग्रा कल्पान्त-दहनोपमा, त्रैलोक्य-साधिनो साध्या सिद्धिसाधकवत्सला ।
सर्व-विद्या-मयी सारा चासुराणां विनाशिनी, दमनी दामिनी दान्ता दयादोग्ध्री दुरापहा ।
अग्नि-जिह्वोपमा घोरा घोर-घोर-तरानना, नारायणी नारसिंही नृसिंह-हृदये स्थिता ।
योगेश्वरी योग-रूपा योग-माता च योगिनी, खेचरी खचरी खेला निर्वाण-पद-संश्रया ।
नागिनी नाग-कन्या च सुवेशा नाग-नायिका,विष-ज्वालावती दीप्ता कलाशत-विभूषणा ।
तीव्र-वक्त्रा महा-वक्त्रा नाग-कोटित्वधारिणी,महा-सत्वा च धर्मज्ञा धर्माति-सुखदायिनी ।
कृष्ण-मूर्द्धा महा-मूर्द्धा घोर-मूर्द्धा वरानना, सर्वेन्द्रिय-मनोन्मत्ता सर्वेन्द्रिय-मनोमयी ।
सर्व-संग्राम-जयदा सर्व - प्रहरणोद्यता, सर्व - पीडोप-शमनी सर्वारिष्ट-निवारिणी ।

सर्वैश्वर्य-समुत्पन्ना सर्व-ग्रह-विनाशिनी, मातङ्गी मत्त-मातङ्गी मातङ्गी-प्रिय-मण्डला ।
अमृतोदधि-मध्यस्था कटि-सूत्रैरलंकृता, अमृतोदधि-मध्यस्था प्रवाल-वसनाम्बुजा ।
मणि-मण्डल-मध्यस्था ईषत्-प्रहसिताननना, कुमुदा ललिता लोला लाक्षा-लोहित-लोचना ।
दिग्वासा देवदूती च देव-देवाधि - देवता, सिंहोपरि समारूढ़ा हिमाचल-निवासिनी ।
अट्टाट्टहासिनी घोरा घोर-दैत्य-विनाशिनी, अत्युग्र-रक्त-वस्त्राभा नाग-केयूर-मण्डिता ।
मुक्ताहार - लतोपेता तुङ्ग - पीन-पयोधरा, रक्तोत्पल - दलाकारा मदाघूर्णित-लोचना ।
समस्त-देवता-मूर्तिः सुरारि-क्षय-कारिणी,खड्गिनी शूल-हस्ता च चक्रिणी चक्र-मालिनी ।
शंखिनी चापिनी बाणा वज्रिणी वज्र-दण्डिनी, आनन्दोदधि-मध्यस्था कटि-सूत्रैरलंकृता ।
नाना-भरण-दीप्ताङ्गी नाना-मणि-विभूषिता,जगदानन्द-सम्भूता चिन्तामणि-गुणान्विता ।
त्रैलोक्य-नमिता तुर्या चिन्मयानन्द-रूपिणी,त्रैलोक्य-नन्दिनी देवी दुःख-दुस्स्वप्न-नाशिनी ।
घोराग्निदाह-शमनी राज्य-देवार्थ-साधिनी, महाऽपराध-राशिघ्नी महा-चौर-भयापहा ।
रागादि-दोष-रहिता जरा-मरण-वर्जिता, चन्द्र-मण्डल-मध्यस्था पीयूषार्णव-सम्भवा ।
सर्व-देवैः स्तुता देवी सर्व-सिद्धैर्नमस्कृता, अचिन्त्य-शक्ति-रूपा च मणि-मन्त्र-महौषधी ।
अस्ति-स्वस्ति-मयी बाला मलयाचल-वासिनी,धात्री विधात्री संहारी रतिज्ञा रतिदायिनी ।
रुद्राणी रुद्र-रूपा च रुद्र-रौद्रार्त्ति-नाशिनी, सर्वज्ञा चैव धर्मज्ञा रसज्ञा दीन-वत्सला ।
अनाहता त्रि-नयना निर्भारा निर्वृतिः परा, पराऽघोरा करालाक्षी सुमती-श्रेष्ठ-दायिनी ।
मंत्रालिका मंत्रगम्या मंत्रमाला सु-मंत्रिणी, श्रद्धानन्दा महा-भद्रा निर्द्वन्द्वा निर्गुणात्मिका ।
धरिणी धारिणी पृथ्वी धरा धात्री वसुन्धरा,मेरु-मन्दर-मध्यस्था स्थितिः शङ्कर-वल्लभा ।
श्रीमती श्रीमयी श्रेष्ठा श्रीकरी भावभाविनी,श्रीदा श्रीमा श्रीनिवासा श्रीमती श्रीमतांगतिः ।
उमा सारंगिणी कृष्णा कुटिला कुटिलालका,त्रिलोचना त्रिलोकात्मा पुण्यपुण्या प्रकीर्तिता ।
अमृता सत्य-सङ्कल्पा सा सत्या ग्रंथि-भेदिनी, परेशी परमा साध्या परा-विद्या परात्परा ।
सुन्दराङ्गी सुवर्णाभा सुरासुर-नमस्कृता, प्रजा प्रजावती धन्या धन-धान्य-समृद्धिदा ।
ईशानी भुवनेशानी भवानी भुवनेश्वरी, अनन्तानन्त-महिता जगत्-सारा जगद्-भवा ।
अचिंत्यात्मा चिंत्यशक्तिश्चिंत्याचिंत्यस्वरूपिणी,ज्ञानगम्या ज्ञानमूर्तिर्ज्ञानिनी ज्ञानशालिनी ।
असिता घोर-रूपा च सुधा-धारा सुधा-वहा, भास्करी भास्वती भीतिर्भास्वदक्षानुशायिनी ।
अनसूया क्षमा लज्जा दुर्लभा भरणात्मिका,विश्वघ्नी विश्ववीरा च विश्वघ्नी विश्वसंस्थिता।
शीलस्था शील-रूपा च शीला शील-प्रदायिनी,बोधनी बोध-कुशला रोधनी बोधनी तथा ।
विद्योतिनी विचित्रात्मा विद्युत्पटलसन्निभा,विश्वयोनिर्महायोनिः कर्मयोनिः प्रियात्मिका ।

रोहिणी रोग-शमनी महा-रोग-ज्वरापहा, रसदा पुष्टिदा पुष्टिर्मानदा मानव-प्रिया ।
कृष्णांग-वाहिनी कृष्णाकृष्णा कृष्ण-सहोदरी,शाम्भवी शम्भु-रूपा च शंभुस्था शंभुसंभवा ।
विश्वोदरी योग-माता योग-मुद्राघ्न-योगिनी,वागीश्वरी योग-निद्रा योगिनी कोटिसेविता ।
कौलिका मन्द-कन्या च शृङ्गार-पीठ-वासिनी, क्षेमङ्करी सर्व-रूपा दिव्य-रूपा दिगम्बरी ।
धूम्र-वक्त्रा धूम्र-नेत्रा धूम्र-केशी च धूसरा, पिनाकी रुद्र-वेताली महा-वेताल-रूपिणी ।
तपिनी तापिनी दीक्षा विष्णुविद्यात्मनाश्रिता, मंथरा जठरा तीव्रा अग्निजिह्वा भयापहा ।
पशुघ्नी पशु-रूपा च पशुहा पशु-वाहिनी, पिता माता च धीरा च पशु-पाश-विनाशिनी ।
चन्द्र-प्रभा चन्द्र-रेखा चन्द्र-कांति-विभूषिणी,कुङ्कुमाङ्कित-सर्वाङ्गी सुधा-सद्गुरु-लोचना ।
शुक्लाम्बर-धरा देवी वीणा-पुस्तक-धारिणी, ऐरावत-पद्म-धरा श्वेत-पद्मासन-स्थिता ।
रक्ताम्बर-धरा देवी रक्त-पद्म-विलोचना, दुस्तरा तारिणी तारा तरुणी तार-रूपिणी ।
सुधा-धारा च धर्मज्ञा धर्म-संगोपदेशिनी, भगेश्वरी भगाराध्या भगिनी भग-नायिका ।
भग-बिम्बा भग-क्लिन्ना भग-योनिर्भग-प्रदा, भगेश्वरी भगाराध्या भगिनी भग-नायिका ।
भगेशी भग-रूपा च भग-गुह्या भगावहा, भगोदरी भगानन्दा भगस्था भग-शालिनी ।
सर्व-संक्षोभिणी शक्तिस्सर्व-विद्राविणी तथा,मालिनी माधवी माध्वी मधु-रूपा महोत्कटा ।
भरुण्ड-चंद्रिका ज्योत्स्ना विश्व-चक्षुस्तमोपहा, सुप्रसन्ना महा-दूती यम-दूती भयङ्करी ।
उन्मादिनी महा-रूपा दिव्य-रूपा सुरार्चिता,चैतन्य-रूपिणी नित्या क्लिन्ना काममदोद्धता ।
मदिरानन्द-कैवल्या मदिराक्षी मदालसा, सिद्धेश्वरी सिद्ध-विद्या सिद्धाद्या सिद्ध-संभवा ।
सिद्धर्द्धिः सिद्ध-माता च सिद्धिः सर्वार्थसिद्धिदा,मनोमयी गुणातीता परंज्योतिःस्वरूपिणी ।
परमेशी परगा पारापरा सिद्धिः परा-गतिः, विमला मोहिनी आद्या मधु-पान-परायणा ।
वेद-वेदाङ्ग-जननी सर्व-शास्त्र-विशारदा, सर्व-देव-मयी विद्या सर्व-शास्त्र-मयो तथा ।
सर्व-ज्ञान-मयी देवी सर्व-धर्म-मयीश्वरी, सर्व-यज्ञ-मयी यज्ञा सर्व-मन्त्राधिकारिणी ।
सर्व-सम्पत्-प्रतिष्ठात्री सर्व-विद्राविणी परा, सर्व-संक्षोभिणी देवी सर्व-मङ्गल-कारिणी ।
त्रैलोक्याकर्षिणी देवी सर्वाह्लादन-कारिणी, सर्व-संमोहिनी देवी सर्व-स्तम्भन-कारिणी ।
त्रैलोक्य-जृम्भिणी देवी तथा सर्व-वशङ्करी,त्रैलोक्य-रञ्जिनी देवी सर्व-संपत्ति-दायिनी ।
सर्व-मन्त्र-मयी देवी सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्करी, सर्व-सिद्धि-प्रदा देवी सर्व-सम्पत्-प्रदायिनी ।
सर्व-प्रियकरी देवी सर्व-मङ्गल-कारिणी, सर्व-काम-प्रदा देवी सर्व-दुःख-विमोचिनी ।
सर्व-मृत्यु-प्रशमनी सर्व-विघ्न-विनाशिनी, सर्वाङ्ग-सुन्दरी माता सर्व-सौभाग्य-दायिनी ।
सर्वज्ञा सर्व-शक्तिश्च सर्वैश्वर्य-फल-प्रदा, सर्व-ज्ञान-मयी देवी सर्व-व्याधि-विनाशिनी ।

सर्वाधार-स्वरूपा च सर्व-पाप-हरा तथा, सर्वानन्द-मयी देवी सर्वेच्छायाः स्वरूपिणी ।
सर्व-लक्ष्मी-मयी विद्या सर्वेप्सित-फल-प्रदा, सर्वारिष्ट-प्रशमनी परमानन्द-दायिनी ।
त्रिकोणनिलया त्रिस्था त्रिमात्रा त्रितनुस्थिता,त्रिवेणी त्रिपथा त्रिस्था त्रिमूर्तिस्त्रिपुरेश्वरी।
त्रिधाम्नी त्रिदशाध्यक्षा त्रिवित्त्रिपुरवासिनी,त्रयीविद्या च त्रिशिरा त्रैलोक्या च त्रिपुष्करा ।
त्रिकोटरस्था त्रिविधा त्रिपुरा त्रिपुरात्मिका, त्रिपुरा श्री त्रिजननी त्रिपुरा त्रिपुरसुन्दरी ।

फल-श्रुति

इदं त्रिपुर-सुन्दर्याः स्तोत्रं नाम - सहस्रकं । गुह्याद्-गुह्य-तरं पुत्र ! तव प्रीत्यै प्रकीर्तितम् ॥१
गोपनीयं प्रयत्नेन पठनीयं प्रयत्नतः । नातः पर-तरं पुण्यं नातः पर - तरं तपः ॥२
नातः पर-तरं स्तोत्रं नातः पर-तरा गतिः । स्तोत्रं सहस्र - नामाख्यं मम वक्त्राद् विनिर्गतम् ॥३
यः पठेत् प्रयतो भक्त्या शृणुयाद् वा समाहितः । मोक्षार्थी लभते मोक्षं स्वर्गार्थी स्वर्गमाप्नुयात्॥४
कामांश्च प्राप्नुयात् कामी धनार्थी च लभेद् धनं। विद्यार्थी लभते विद्यां यशोऽर्थी लभते यशः ॥५
कन्यार्थी लभते कन्यां सुतार्थी लभते सुतम् । गुर्विणी जनयेत् पुत्रं कन्या विन्दति सत्-पतिम् ॥६
मूर्खोऽपि लभते शास्त्रं हीनोऽपि लभते गतिम् । संक्रान्त्यां वार्कीमावस्यामष्टम्यां च विशेषतः ॥७
पौर्णमास्यां चतुर्दश्यां नवम्यां भौम-वासरे । पठेद् वा पाठयेद् वापि शृणुयाद् वा समाहितः ॥ ८
स मुक्तो सर्व-पापेभ्यः कामेश्वर-समो भवेत् । लक्ष्मी-वान् धर्म-वांश्चैव वल्लभस्सर्व-योषिताम् ॥ ९
तस्य वश्यं भवेदाशु त्रैलोक्यं स-चराचरम् । रुद्रं दृष्ट्वा यथा देवा विष्णुं दृष्ट्वा च दानवाः ॥१०
यथाहिर्गरुडं दृष्ट्वा सिंहं दृष्टा यथा गजाः । कीट-वत् प्रपलायन्ते तस्य वक्त्रावलोकनात् ॥११
अग्नि-चौर-भयं तस्य कदाचिन्नैव सम्भवेत् । पातका विविधाः शान्तिर्मेरु-पर्वत-सन्निभाः ॥१२
यस्मात् तच्छृणुयाद् विघ्नांस्तृणं वह्नि-हुतं यथा । एकदा पठनादेव सर्व-पाप-क्षयो भवेत् ॥१३
दशधा पठनादेव वाचा - सिद्धिः प्रजायते । शतधा पठनाद् वापि खेचरो जायते नरः ॥१४
सहस्र-दश-संख्यातं यः पठेद् भक्ति-मानसः । माताऽस्य जगतां धात्री प्रत्यक्षा भवति ध्रुवम् ॥१५
लक्ष-पूर्णे यथा पुत्र ! स्तोत्र-राजं पठेत् सुधीः । भव-पाश-विनिर्मुक्तो मम तुल्यो न संशयः ॥१६
सर्व-तीर्थेषु यत्-पुण्यं सकृज्जप्त्वा लभेन्नरः । सर्व वेदेषु यत्-प्रोक्तं तत्-फलं परिकीर्त्तितम् ॥१७
भूत्वा च बलवान्-पुत्र धन-वान् सर्व-सम्पदः । देहान्ते परमं स्थानं यत्-सुरैरपि दुर्लभम् ॥१८
स यास्यति न सन्देहः स्तव-राजस्य कीर्त्तनात् ॥१९

॥ श्रीवामकेश्वर-तन्त्रे षोडश्याः सहस्र-नाम-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्रीत्रिपुर-सुन्दरी पुष्पांजलि-स्तवः

'क'ल्याण-दात्रि, कमनीय-तमु-लते ! त्वां, कं चापि कालमनु-चिन्त्य हृदब्ज-मध्ये ।
कामं प्रहर्ष-भरितेन मया तवाद्य, पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब ! कीर्णः ॥ १

'ए'तन्मदीय-सु-कृतं परमं पुराणं, यत् त्वामहं प्रति - दिनं मनसा भजामि ।
साक्षात्-कृतेन तव रूपमनेन चाद्य, पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब ! कीर्णः ॥ २

'ई'शादि-देव - महनीय - महानुभावे, दीनं त्विमं भव - भयेन परि-स्फुरन्तम् ।
दीनार्ति-हन्त्रि ! दयया परि-पालयाशु, पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब ! कीर्णः ॥ ३

'ल'ज्जां विहाय बहुधा बहवोऽपि देवाः, सम्पूजिता जड़-धिया न तु कोऽपि हृष्टः ।
लब्धं तवैव रमणीय-वपुर्दृशा मे, पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब ! कीर्णः ॥ ४

'ह्रीं'कार-मन्त्र-निलये ! बहुशो भवाब्धौ, मग्नः परन्तु न कदापि गतोऽस्मि पारम् ।
तत्-तारणे निपुणमोस्त्रिपुरे ! मयाऽद्य, पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब ! कीर्णः ॥ ५

'ह'स्तेषु पाश-महनीय - सितेक्षु - चापे, पुष्पास्त्रमंकुश - वरं ललितं दधाने !
हेमाद्रि-तुङ्ग-तर-शृङ्ग-निवास - शीले, पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब! कीर्णः ॥ ६

'स'र्वेषु देवि ! समयेषु गतिस्त्वमेव, नान्यं कदापि मनसा समनु - स्मरामि ।
सर्वत्र रूपमतुलं तव पश्यताद्य, पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब ! कीर्णः ॥ ७

'क'स्ते पुरेशि ! विधि-वत्तु समर्हणायां, शक्तः समस्त-परि-बर्ह-युतोऽपि धीमान् ।
हृत्-पङ्कजेन भवतीं भजता मयाऽद्य, पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब ! कीर्णः ॥ ८

'ह'न्ताति-रूक्ष-भव - पावक - शोषितेन, कुत्राप्यलब्ध - शरणेन सरोज - वक्त्रे !
अन्ते मयाऽत्र भवतीं शरणं गतेन, पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब ! कीर्णः ॥ ९

'ल'क्ष्याऽसि देवि ! बहु-जन्म-तपो-बलेन, लक्ष्मीश-धातृ - परिपूज्य पदाम्बु - जाते ।
आलक्ष्य-रूपमरुणं तव विस्मितेन, पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब ! कीर्णः ॥ १०

'ह्रीं'कारमेव शरणं जगतां वदन्ति, ह्रींकारमेव परमं भुवने रहस्यम् ।
ह्रींकारमेव सततं स्मरता मयाऽद्य, पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब ! कीर्णः ॥ ११

'स'र्वस्य देवि ! भुवनस्य निदान-भूता, त्वय्येव सर्वमनघे ! विलयं गतं स्यात् ।
संचित्य चैतदधुना त्रिपुरे ! मया ते, पुष्पांजलिश्चरणयोरयमम्ब ! कीर्णः ॥ १२

'क'श्चिद् यदा भव-नियन्त्रि! विचिन्तयेत् त्वां, दीनं तदेव हि कटाक्षयसे दृशा त्वम् ।
एवं विचिन्त्य भवतीं स्मरता मयाऽद्य, पुष्पांजलिश्चरणयोरयमम्ब ! कीर्णः ॥ १३

'ल'ब्ध्वा त्वदीय चरणाम्बुजमम्ब ! जन्तुर्नावर्तते पुनरपि प्रभवाय लोके ।
वेदोक्तिमेवमसकृत् स्मरता मयाऽद्य, पुष्पांजलिश्चरणयोरयमम्ब ! कीर्णः ॥ १४

'ह्रीं'कारमेव जपता प्रति - वासरं च, ह्रींकारमेव भजता सकलेष्ट-सिद्धयै ।
ह्रींकारमेव परमं शरणं गतेन, पुष्पांजलिश्चरणयोरयमम्ब ! कीर्णः ॥ १५

'श्रीं'कार-मन्त्र-कनकाब्ज-निवास-शीले! श्री-रूप-धारिणि, शिवे ! श्रित-कल्प-वल्लिः ।
श्रीमद्-गुह-स्तुत-महा-विभवे, पुरेशि ! पुष्पांजलिश्चरणयोरयमम्ब ! कीर्णः ॥ १६

अपराध-क्षमापण-स्तोत्रम्

किं किं द्वन्द्वं दनुज-दलिनि ! क्षीयते न श्रुतायाम् ।
का का सिद्धिः कुल-कमलिनि ! प्राप्यते नार्चितायाम् ।।
का का कीर्तिः सुर-वर-नुते ! व्याप्यते न स्तुतायाम् ।
कं कं भोगं त्वयि न चिनुते चित्तमालम्बितायाम् ।।

सकुसं सकुसं रम्भ स्वारिता मोक्ष - विभ्रमे !
चिच्चन्द्र - मण्डलान्तःस्थे नमस्ते हर - वल्लभे ।।
जगदुद्धारणोद्योग - योग - भोग - वियोगिनि !
स्थिति-भाव-स्थिते देवि ! नमः स्थाणु-प्रियेऽम्बिके ।।
भावाभाव - पृथग् - भानानुभावे वेद - कर्मणि ।
चैतन्य - पञ्चके देवि ! नमस्तुभ्यं हराङ्गने ।।
सृष्टि - स्थित्युप - संहार - प्रत्युर्जित - पद - द्वये !
चिद्-विश्रान्ति-महा-सत्ता-मात्रे ! मातर्नमोऽस्तु ते ।।
वह्न्यर्क - शीत - किरण - ब्रह्म - चक्रान्तरोदिते !
चतुष्पीठेश्वरि, शिवे ! नमस्ते त्रिपुरेश्वरि ।।
चराचरमिदं विश्वं प्रकाशयसि तेजसा ।
मातृका - रूपमास्थाय तस्यै मातर्नमोऽस्तु ते ।।
स्मृता भव - भयं हंसि पूजिताऽसि शुभङ्करि ।
स्तुता त्वं वाञ्छितं वस्तु ददासि करुणा-वरे ।।
भक्तस्य नित्य - पूजायां रतस्य मम साम्प्रतम् ।
वाग्भवादि - महा - सिद्धिं देहि त्रिपुर - सुन्दरि ।।
परमानन्द - सन्दोह - प्रमोद - भर - निर्भरे !
दुःख - त्रय - पर - परिम्लान-वदनं पाहि मां शिवे ।।
शब्द - ब्रह्म - मयि यच्च देवि, त्रिपुर - सुन्दरि !
यथा - शक्ति जपं पूजां गृहाण मदनुग्रहात् ।।

अज्ञानादल्प - बुद्धित्वादालस्याद् दुष्ट - भावतः ।
ममापराधं कार्पण्यं क्षमस्व पर - देवते ।।
अज्ञानामसमर्थानामस्वस्थान - निवासिनाम् ।
अशुद्धं बलमस्माकं शिशूनां हर - वल्लभे ।।
कृपा-मयि ! कृपां भद्रे ! सकृन्मयि निवेशय ।
तावदहं कृतार्थोऽस्मि न ते किञ्चन हीयते ।।
यन्मया क्रियते कर्म जाग्रत् - स्वप्न - सुषुप्तिषु ।
तत्-सर्वं तावकी पूजा भूयाद् भूत्यै रमे शिवे ।।
द्रव्य-हीनं क्रिया - हीनं विधि - हीनं च यद् भवेत् ।
तत् - सर्वं कृपया देवि ! क्षमस्व पर - देवते ।।
यन्मयोक्तं महा - ज्ञानं तन्महत् स्वल्पमेव वा ।
तावत् सर्वं जगद्धात्रि ! क्षन्तव्यमयमञ्जलिः ।।

।। श्रीत्रिपुरार्णवे अपराध-क्षमापण-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

चक्र-स्तोत्रम्

प्रोक्ता पञ्च-दशी विद्या महा-त्रिपुर-सुन्दरी, श्रीमहा-षोडशी प्रोक्ता महा-माहेश्वरी सदा ।।१
प्रोक्ता श्रीदक्षिणा काली महा-राज्ञीति संज्ञया, आगमेषु महा-शक्तिः ख्याता श्रीभुवनेश्वरी ।।२
महा-गुप्ता गुह्य-कालो नाम्ना शास्त्रेषु कीर्तिता, महोग्र-तारा निर्दिष्टा महा-ज्ञप्तेति भू-तले ।।३
महानंदा कुब्जिका स्यात् लोकेऽत्र जगदंबिका, त्रि-शक्त्याद्याऽत्र चामुंडा महा-स्पंदा प्रकीर्तिता ।।४
महा-महाशया प्रोक्ता बाला त्रिपुर-सुन्दरी, श्रीचक्र-राजः सम्प्रोक्तस्त्रि-भागेन महेश्वरि ।।५

पञ्चदशी विद्या 'महा-त्रिपुर-सुन्दरी' और श्रीमहा-षोडशी विद्या सदैव 'महा-महेश्वरी' कही गई है। श्रीदक्षिणा काली को 'महा-राज्ञो' नाम से कहा गया है और श्री भुवनेश्वरी आगमों में 'महा-शक्ति' नाम से प्रसिद्ध है। शास्त्रों में गुह्य-कालो नाम से 'महा-गुप्ता' का वर्णन है और पृथ्वी पर महोग्र-तारा 'महा-ज्ञप्ता' बताई गई है। जगदम्बा कुब्जिका इस लोक में 'महानन्दा' है और त्रिशक्त्यात्मिका आद्या चामुण्डा 'महा-स्पन्दा' कही है। बाला त्रिपुर-सुन्दरी 'महा-महाशया' कही गई है। हे महेश्वर ! इस प्रकार तीन भागों में श्रीचक्र-राज का वर्णन है।

—ब्रह्मीभूत पूज्य श्रीस्वामी विद्यारण्य की कृपा से प्राप्त

पाठान्तर : दूसरे श्लोक का प्रथम चरण—लोके ख्याता महा-राज्ञी नाम्ना दक्षिण-कालिका।

श्रीचक्रम्

बिन्दु - त्रिकोण - वसुकोण - दशार-युग्मं, मन्वस्र-नागदल - संयुत - षोडशारम् ।
वृत्त-त्रयं च धरणी - सदन - त्रयं च, श्रीचक्रमेतदुदितं पर - देवतायाः ।।

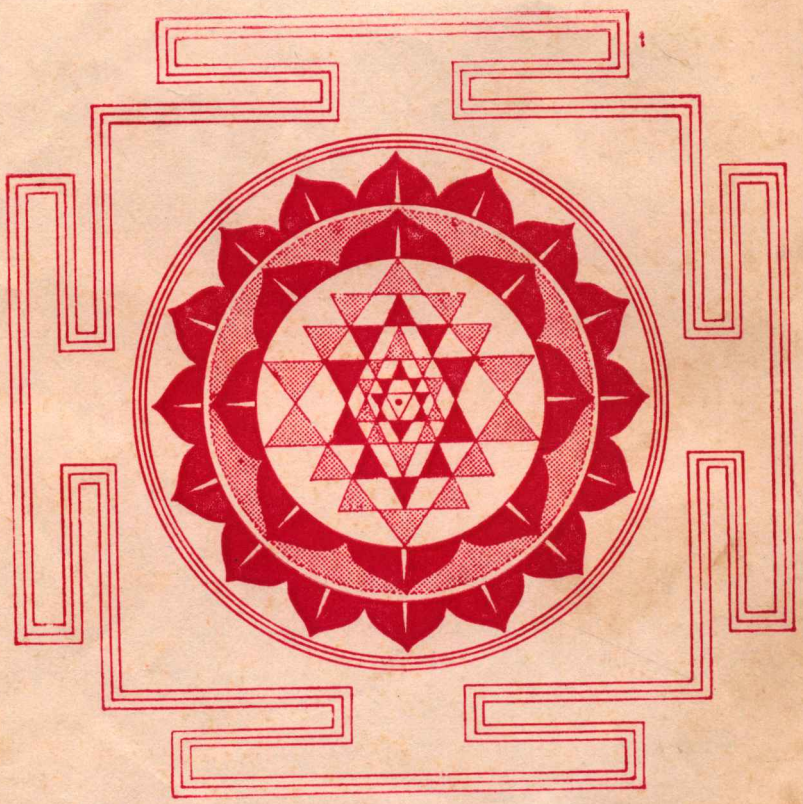

कोटि-लिङ्ग-प्रतिष्ठायां यत्फलं समुदाहृतम् । तत्फलं लभते नूनं श्री-चक्रस्य प्रपूजने ।।
सर्व-देव-गणास्तत्र सर्वे धर्माश्च तत्र वै । गङ्गाद्याः सरितः सर्वाः पुष्कराद्या जलाशयाः ।।
पुरुषोत्तम-मुख्याश्च क्षेत्रानन्दा वनादयः । वाजि-मेधस्य यज्ञस्य पुण्यं त्वविकलं भवेत् ।।